

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
लाहोरमें लालामेहरचंद म्यानेजर संस्कृत पुस्तकालय
सेद मिष्ठाबाजार,
मुंबई पंडित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजीकी पुस्तकोंकीदुकानपर
मुंबादेवीकेपास
'' श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णु, खेमराज
श्रीव्यंकटेश्वराख्य (छापखाना)
मुंबई.

					0		_	1 -	-	1			_
*	स	सूची	মূ ।	प	सं	सूची	पृ	प	सं	सूची	1 व	प	
	9	मंगलाचरणम्	9	9	38	अंधादि	90	3		सामान्यभानि	2	0 9	
	2	भवमानानि	9	97	34	जातिभा नि	99	9	8	वस्त्रादिधारणं	3.	E	
4	3	नंदादिति थिफलम्	3	પ	36	भवृसाणि	99	2		म्बेतबस्त्र	20	90	
	8	प्रत्येकफलम्	२	90	30	विकभादियोग	99	3	100	रक्तवस्त्र	20	93	1
	y	तिथिस्वामिनः	3	9	30	करणानि	33	9	109	कपिलपीतवस्त्रं	20	94	
	٤	नंदादितिथय:	3	3	38	भद्राविचारः	93	Eq .	७२	नीलक्यामबस्त्र	30	36	
	9	शुभागुभः	3	٦	80	भद्राक्तम्	93	9	50	पदृबस्त्र	20	90	100
	b	यसरंभाः	8	3	89	भद्रामुखपुच्छे	93	99	30	कीं अयवस्त्र	२०	20	
	9	कर्कियोग:	R	૪	83	भद्रावासः	93	93	७५	रोमजबस्त्र	29	9	*
	90	संवर्तः	R	પ	४३		93	93	७६	स्त्रीणां विशेषः	29	3	
	99	अमृतः	8	ex	88	भद्रांगानि	38	9	७७	दंतादिचूटकं	29	8	
	93	इर्न्यलमानि ।	8	9	४५	भद्रानाम	38	9		स्वर्णादि	39	E	R.
	93	दग्धादि	R	5	86	भद्रारूपम्	98	2	७९	कोर्ममणिचूडक	29	6	
	98	इह्रन्यभानि	8	9	800	भद्रास्तोत्रम्	28	E.	50	विशेषः	29	99	17.34
		त्रितयः	8	90	8=	आनंदादियोगः	94	9	=9	सत्ल्कंचुक	29	98	
•	98	विषमतिथयः	8	99	86	ग्रहणामस्ययाज्यत	94	3		स्वणादिजत्		*	
		इस्त्यतिथ्यादिः	4	9	40	होलिकाष्ट्रकम्	984	8	८२	मिश्र ्	29	36	
	9	सिद्धितययः	4	2	49	नीरमानम्	36	u	113/85	वस्त्रादिभारणोत			
	26	सर्वार्थ सिद्धियोगः	ध	3	163	त्याज्यसुहूर्ताः	98	a		पशुद्धिः	39	NAS	HAV
	20	वज्यीनि	4	8	५३		984	10		नस्त्रवाराणां /	MEN.		B
	29	परिहारः	4	4	48	अस्तादीमोखाज्यना	984	6	28	प्रत्येक फलम्	2/2	Draw 20	9
	33	रवियोगः	ध्	9	५५	अयवादः ू	38			अथावश्यके 🛚	33	8	1
		तिथिनां प्राह्मना-	ध्	3	५६	क्रकादीनांवाधेका	90	3	= 84	वूले बस्त्रेदम्धे	35	7/21	430
	18	ख्यादीनांस्यामिनः	Eq	R	40	क्षयमासः	910	92	=19	अन्नकाणि	93	-	
	२५	सर्वकार्यश्चभाः	9	9	५८	अधिमासः	910	50	55	वस्त्रनिर्माणं	33	99	No.
	२६	कस्मिन्बारेसिध्यति	9	2	49	न्योदशाह	90	4	56	मनांतरं ,	23	92	1/4
	20	उक्तेषुसिद्धिदाः	9	2	exo	11/611/21	95	Eq	60	तारणसुहू ते	23	38	
	30	अभ्यंगफलंबिधिय	9	8	६१		95	98	69	वासोरजन	23	96	
	36	वारे प्रवृत्तिः	9	9		3 11 31	4 7 7	94	63	वासः क्षालभ	38	3	
	30	कालहोरार	19	33		33 211 4 1 411.	9=	984	63	कस्ताबधन	28	8	140
		नस्त्रस्वामिनकार्य		int of	8,3	राशिसंज्ञाः	90	VOT.		उपानन्यरिधानं	4		
	39	चिष	U	9			1.50	9	68		100 40 10	ex	
1	33	ध्रुवादिनस्त्रनाणि-	90	9	६६	ग्राह्याभास्य सत्रा	0		eu	कुस्तमधारणा	28	The same of	-
	33	<u>प्रधीमुखादि</u>		3		कल्कोलः		9	68	बंदनधारण	38	39	
			100	1		The Court of the C							

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

लाहोरमें लालामहरचंद म्यानेजर संस्कृत पुस्तकालय सेद मिष्ठाबाजार, मुंबई पंडित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजीकी पुस्तकोंकीदुकानपर, मुंबादेवीकेपास '' श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णु, खेमराज श्रीव्यंकटेश्वराख्य (छापखाना)

मुंबई.

					100		-	P KY				-	
	सं	सूची	P I	प	सं	सूची	पृ	प	सं	सूची	पृ	प	
	9	मंगलाचरणम्	٥	9	38	अंधादि	90	3		सामान्यभानि	20	9	
	2	भवमानानि	9	97	34	जातिभा नि	99	9	६	बस्त्रादिधारणं	3.0	E	
	3	नंदादिति थिफलम्	3	4	36	भवृक्षाणि	99	२		य ते बस्त्र	20	90	
	8	प्रत्येकफलम् े	3	90	30	विकंभादियोग	99	3		रक्तवस्त्र	20	93	
	v	तिथिस्वामिनः	3	9	3=	करणानि	93	9	29	कपिलपीतवस्त्रं	20	94	
	٤	नंदादितिथयः	3	2	38	भद्राविचारः	93	Eq -	७२	नीलझ्यामवस्त्र	30	96	
	9	शुभागुभः	3	٩	80	भद्राकृत्यम्	93	9	103	पृष्ट्वस्त्र	20	90	
	4	यसरंभाः	8	3	89	भद्रामुखपुच्छे	93	99	80	की शेयवस्त्र	२०	20	
	9	कर्कियोग:	8	8	83		93	93	७५	रोमजबस्त्र	29	9	*
	90	संवर्तः	R	ષ	83	भद्रास्करवम्	93	93	હ્ય	स्त्रीणां विशेषः	29	3	
	99	अमृतः	8	84	88	भद्रांगानि	86	9	७७	दंतादिचूटकं	२१	8	
	93	इर्न्यलमानि-	a	9	४५	भद्रानाम	38	9	30	स्वणाद	39	E	
	93	दग्धादि	R	5	86	भद्रारूपम्	98	2	७९	कोर्ममणिचूडक	२१	6	
	98	इस्न्यभानि	R	9	810	भद्रास्तोत्रम्	28	E.		विशेषः	29	99	
ì		त्रितयः	8	90			94	9		सत्ल्कंचुक	29	98	
•	98	विषमतिथय:	8	99		ग्रहणामस्ययाज्यता	१०५	2		सुवर्णादिजंतु	W		
		इरन्यतिथ्यादिः	4	9		होलिकाष्ट्रकम्		8	c3.	मिश्र ,	29	984	
	90	सिद्धितिययः	a	3	49	तीरमानम्	36	ų	=3	वस्त्रादिभारणोत			
	36	सर्वार्थ सिद्धियोगः	9	3	183	त्याज्यसहर्ताः	98	ex		पशुद्धिः	39	NAS	HA
	20	वज्यीनि	4	8	43	याह्यसुहूर्नाः	984	10		नक्षत्रवाराणां 🗸		-	0
	29	परिहारः	q	4	48	असादीगांखाज्यना	964	6	-8	मत्येक फलम्	32	Draw	0
	33		ध्	9			984	98	८५	अथावश्यके 🐰	39	8	1
	23	तिथिनां प्राह्मनाः	ध्	3	५६	राजादीनांबार्धका	90	7	- 64	रूले वस्त्रेद ^{म्} धे	33	u!	-
			Eq.	8		क्षयमासः	910			अत्रचकाणि	33	£21	* :
	२५	0 20	9	9			90	30	50	वस्त्रनिर्माणं	23	99	
		कस्मिन्बारेसिध्यति	0	2	2.4	<u> त्रयोदशाह</u>	90			मनांतरं	23	92	
	20	उक्तेषुसिद्धिंदाः	9	2	840		95	Ex	60	तारण्युहूर्त	23	98	
		अभ्यंगफलंबिधिय	e	8	६१	मन्वादितिययः	95	98	29	वासोरंजन	23	99	
		वारे प्रवृत्तिः	6	9	६१	युगाचा	95	94	63	वासः क्षालभ	38	3	
,		कालहोरा	9	93	६३	कें द्रादिसंज्ञा.	95	984	2.00	कस्ताबंधनं	28	8	E A
	÷.	नस्त्रस्वामिनकार्य			83		90	96		उपानन्यरिधानं	4		No.
	39		U	9		A	38	DAKAL S		वर्मकत्यंच	38	es	
	32	धुवादिनस्तत्राणि-	90	9	द ह	ग्राह्याभास्य संज्ञा	The second	1414		कुसमधारणा	28	0	
	33	<u>प्रधीमुखादि</u>		12		कल्कोलः		9		चंदनधारणं ।	28	99	1
	1 2			1	1			137	17		100		

100				1 .			1	Ta	1.			-	_
	सं	सूची	पृ	पं	सं	सूची	पृ	+	सं	The second second second second second	- B	7	7-
	وقد	पुष्पमालाधारणं	28	93	30			1	६४		3:	Page 1	9
	0/2	कालकज्जलधारण	138	94	39	विपणि	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	95	छ्प	The second secon	3.		a
	es.	नवपात्रेजलधारणं	158	984	33	लतासारोपण	20	100	ध्य		3:	3 9	9
	9	. 0.	OF DESIGNATION OF	35	33	ओषधीभस्तणं	25		1	धनुषिगुणारोप	100000		0
	900	1 1	28	29	38	रसभसणं	२८		६८		33	1 3	0
	909	Approved the second second	24	9	34	पिप्पलादिभस्पण	-25	9		सन्नाहादि	33	37.	
	205	राजदर्शनं	२५	3	38	अहिफेनविषभस	: २=		90		33	1	1
	903	दीक्षां-	24	4	30	मांसादिभस्पण	150	99		वारापदि	33	"	, 1
-	8	वीराभिचार	24	0	11	ओषधनिर्माणं		33		TOTAL CONTRACTOR OF THE PARTY O	33	3	
	4	मचारंभ	24	3	36	रससाधन		1 700	65	7.0	33		1
	ex	संन्यास	24	99	80	-बूर्णा दिसाधनं		90	38	नबांगनाभोगः	33	1 ,	
	و	बह्मज्ञानं	24	33	89	तेलोपवेशन्		90		स्त्रीसंभोगः	33		1
	-	गीक्रय	24	94	83	चमनादिक मी	20			भीतादिकसं नहादिकत्यं	33	30	-
	9	पर्माद्मन	34	90	83	हुताशकर्म	100	8.7	100	वंशास्क्रस्	38	39	
	90	नसाकर्म	24	95	RR	ब्रतनबृक्षाकला दि	30	1	3.4			3	
	99	महिपादीनां 💮	24	20	84	स्चिकर्म	30			वाचारभ	-	3	
	92	व्याघादिपालनं	२६५	3	४६५	अन्बक्रमी	29 20			भेशेबादन	38	es 0	
	93	वानरादिपालनं	રહ	3	80	अन्बारोहण	26			काहराया	38		3
100 all		कुकुटादीनां पालनं	३६५			अञ्चनके.				वादित्रसमय	1 1	1000	-
2000	The second second	The second secon	२६			पल्याण्चक				धृगया	38	'	
-		पक्षिकर्म	26	90	wo.	गजकम				गागुराचक	36		
-	90	01	281	99	49	गजांकुदा				नलयंत्र	1	5	
	95	Manufacture and the second		93	17	ध्वजादि				इरह दृचकम्	34	3.5	
	98	सामान्यपकरस्मा					Harrison III	100		नलाहायः	340	1	
	20		२६	90 1	48	गजबधनः				लादिहान	34	16	
-	29	अजादीनां	२६	20	وبر :	गजारोहणं			10 10 10	नां नर	340		
	100	0 1	-1		200	गजनक	39	15		पचक	त्र ।	1	
-		n -	20			भूषणघटनं			१ क	ासारचक्रम्	36 3		
-		0		8 0	15 1	स्वर्णकार				ापी चक्रम्	बुद्ध ह	The same of the same of	1
	24	7		ور ا	187	12 करता प	39 0		10	उचकम्			1
	1000		20	= 4	نره ۲	फलं बांतिस्व		00	6	पनकम्	380		
1	20		20	90 8	19 7	रलयुग्धटन	. 1	3 6	1	16.	38,00		19
1				92	42	मुक्तायुजा ।	32 3	\$ 60			300		
1		परायक्रयिकयी	والا	93	ध्या	पात्रभोजन	22/			विकाक्तस	30 3	1	No.
1	. 1	ck	C-0 Ka	shmir	Rese	earch Institute. Digitize	ed by e	Gang	otri	March of James	1		4

	and the second	"			2							
	ं सूची	पृ	मृ	सं	सूची	पृ	पं	सं	सूची	पृ	4	1
3	ट शिविकाचकं	30		२८	णन्छेदः	89			नेलिकचकम्	84	3	1
8	तरिघटनं	30	4	२१	करिणासिक्षेप-	89	36	६१	इस्करसादिची		0	7 1
3		30	E	30	रक्षोटजं		910		कम् र	84		Name of
9		30	6	39	धान्यद्वेद	83	98	६३	उपलेबिदारणं ।	84	90	
3	रज्याबंधीनं	30	35	33	धान्यसंग्रह	82	9	83	चकंच	84		
6.	6 1	30	94	33	बीजसंग्रह	80	8	६५	कुंभकारक त्य	84	98	
8	301	30	9=	38	बीजबंधनें.	85	4	६६	बकंब	84	94	
8		30	15 0		धान्यस्थापन,	83	9	६७		84	95	
E		30	9		निः ऋम्पााः	83		حرق	माणकारकत्य	84	9	
9	1101111	3=		30	कणमर्दनं	83	9		नापितस्त्यं	४६५	4000	
0	1 3	35	ex	35	धान्यबंधन	83			11.01.010	क्षस्		
6	रहादिऋय	36		36	-श्रान <u>यन</u>	23			प्लगङ		E	*
90	1111-1-4	35	30	80	स्थापन			40		Red		
	निधिनांगुप्त			89	पाकिकया-				बित्रकारकर्म	88	i	1
39		30		165	धान्यस्थिति-			28	make place and the later of	४६		
0.	1 101 1011	3=		83		83		od		८६		
33	The state of the s	3=	- 23	RR	तर्पसाः	४२			व्याधादिक	85		
	अलाग्नहाणां	36	9	Rd	दाससमह	४३	3	OO	purpose of the second second has an	BEN	300 E	
00	6	36	d	४६	सुद्रापातन-	83	8		विलाकारकर्म	85		
36	and the second s	36	9	80	शोतिः	83	3	90		४६	7.65	
20		36	33		ब्रारंभोत्सगी	83	1000	60		808	D. C.	IV.
000		36	93	88	होमेभाइतिचकं	83			लिपिकरकमी	80		
36		36	38	40	अजावश्रषः	83		23	THE RESERVE AND DESCRIPTION OF THE PERSON OF	80	,	1
	उसातफलझा				बन्हिवासः	88	9	53	पश्चिवाशिनां स्वर्णाकारकर्म	80	The Atlanta	
20	1 2 3	80		dd	रामुबंधनं ।	88	8		- 6	80		
39	योक्तादेसाधन		9	43	मेत्रीः	88	Ex	टप	शह्मणादिकम्	60	14.59	
23	बीजोक्तिः	80	6	५४	नस्त्रम्बर्धा	88	6	ट्य	एपास्वनावक मे	80	,	
33			99	44	सर्पदनेस .	RR		60	विभक्तत्वं	80	100	
38	3 4	80	33	५६	रोगसुक्तस्नान		33	CC	ध्रमस्य	80		
34	and the same of the same of	89	984	40	भोषधिस्नान	88	98	66	वेश्यकत्ये-	80		1
38	9	89	90	10-16-	रोगमुक्तस्यग्	Rd	3	60	ग्रद्रकत्य	80	1	-
8	कुल्यामूलबंध		35	40	मनं \			63	लग्मद्री	80		-
500	नम् ।	83		46	अडच्छेदन	क्षद	8	63	धूनेकाचें-		18	-
13	धान्यामध्यार		CC	0 Kas	hmir Research Institu	te. D	gitiz	ed by	eGangotri	80	190	-
	MANUAL TRANSPORT OF THE PARTY O		200			Section 1		ATTENDED			APPLIES TO SERVICE	070

-	=1	11-1	-	TF	=	सूची	lo	।प	सं	सूर्वी	प्र	पि
+	स	सूची	य ४	प	स		पृष्ठ	90		कोवा	0	93
		सर्पयहाणाविष्टा			BILL	मूळशाती		11/3				10.00
		मंत्रयह्णं	THE REAL PROPERTY.	98		प्चगव्य	dd	11.5	६२	नाम	६्२	
		शिल्मारभः	80		30	पचलकपछुवे-	uu	-		बहुनाम्		98
	60	फारसीविद्याः	80	1	39	दशमूल	५५			अष्टराज्ञी		900
1	66	जेन्विया-	86	9	33		५५	93	६५	कुत्रकोवाः 📑	E 3	
	99		86	٩	33	सम्धान्य	५५	93	६५६	इातपद्	६२	20
0	300	परीक्षा	80	3	38	एतोषधि	५५५	98	६७	तवपादेराशय	६२	9
	9	मथन	४९	9	34	अलाभे पकार	प्ध	98	ध्र	गोचरफ लंबे धा	६४	9
	3	गोदोइनं	86	9	38			984		श्व े		la pi
	3	सेवाः	86	90		नसत्रकछोल	प्ध	2	६०	~ 3	६५	3
	-	अग्निसाध्यक्तसं	86	93	35	संक्रातिसंता.	40	9	00	चंद्र	ह्रप	3
	4	रूजनसंमार्जनी	86			दिनरात्रिफ लं	40	2	90	भीम	स्प	
	Eq	पंचकंलत्यंच-	86	984	THE RESERVE	पुण्यकाल-	410	90	७२	बुध .	६५	4
	9	ब्रु थपंचकं	40	Eq		स्पष्टकाल	413	4		जीव	24	4
	-	श्रवशांति	40	e		चलसंकाति	५६	-	7	क्रिक	84	٤
	6	उ नलदाहः	yo	93		अयनासाधनं	4=	90		इानि	8414	1.00
	90	अरिवलकर्म-	ų e	98		संक्रांतिस्नानं	45	94		रा-के-	६५	-
	99	गंडांनं 💮	40	90		प्रत्येकसंक्रातिषु	46	9		विचारं	द्युप	9
	33	The second secon	49	9	85	संक्रांतिचाहनारि	49	9	1 1 1 1 1 1	साधारन्येन	स्प	9=
	93	अस्मिन्यादितांरू	49	A CONTRACTOR	80	संकातिस हुनी	ero			स्नातीष ध्य	ह्द	9
	98	गंडेशांति		93	1	1	६०	3	50	मुणयः-	घ्द	2
	94	अभुक्तमूलं	५२		80	A Complete Complete Company of the C	६	1000	=9	यहगो चरं	६५७	8
	98		43	4			६०		53	ग्रहणीयतीच	840	E
	90	9/ 9	५३		49		६१	3	c 3	100	8,10	e
	9=		42	9	42	20	६११	3	58	स्येचंड	eys	b
	90	मुलफलं	५३	6		0 0	فرع	8	44	. ` ` .	8,5	4
	20	मूलवास	11	0	48	1	छ्व	y	= 54	DOMESTIC CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE PART	8 5	4
	29	अस्त्रेसाचकं	77	2		•	فرم	· ·	50			9
	23	जीलाम न	43	٦	५५		71	9			६९	1
	23	ज्येषाफलं अन्तेषां पुरुषं	43	2		अपर	ध्व	4	55		0,0	2
The same	58	ज्या क्षेत्रक	५३	as .		पल	100	9	1. 1. 1. 1. 1.	परिहार	६९	
	24	1 12 (1 96)	५३	8	1000	त्रिकोणा	ध्य	1	20	ग्रहबल		3
	100000	6.014 (18911	43	8	46	संक्रातिकल्लाल		3	60	124.4	90	ey
1	284		48	9		नाम				· Þ	9	9
-		चाति.	48	5	er o	जन्मराशो कुन	६३	e	63	विचार	७३	3
1			CC-0	Kasl	mir F	esearch Institute. Dig	itized	by e	Gango	tri		

T.	4	
•	_	•
		80

1	9	स्वी	प्र	पं	सं	सूचीः	प्र	पं	सं	स्ह्वी	폋.	पं
	69	स्त्रीणां 🥦	00	٤	22	इाां ति	95	5		<u> भड्डारोहण</u>	54	
1	९२	कुटुंब	100	5		धर्मा	30	90	५६	दुग्धपान	-4	4
		सेनायां 💮	00			स्नान	30	39	40	र(हुचक	eu'	92
	28	चंद्रबलातपेशा	00			गर्भाधान	95	2	40	रुडचर्ऋ	=4	92
		चंडावस्था-	100	98	28	विद्योष	90	9	40	सर्यावलोकनं	100	29
1	રહ	मवासादिक-	60	v	20	ऋतुरात्रिफलं	90	93	60	अभिचंडयो	and the same of	94
6	رن	निथ्यादि नादान	49	5	35	विशेष-	७९	98	89	निष्क्रमणां 💮	54	90
		गतव्यराहोशक	49	9	36	छंसर्वतं ।	७९			कच्छावधतं	टब्	90
6	26	समयतः	ه و	90	30	वारफल	50	9	ह्य	भस्ममवेशनं	च्छ	9
8		रत्नयाणः	99			अतवलोभनं	50	90	83	कटिसूत्रं	Ceq	9
- 1		ज्ल्यभो जस्मित्।	1 22 2 2	17	32	सीमंत	20	99	24	अन्नमासनं	- Eq	92
		वारे तथाय्मू लेतं	Section 1		200	गर्भिणीधुमी				विशेष	ए ध्य	20
	9	पघत्कार्थे ।	99	92	38	कदाकार्य				घाणबंध	- छ्य	9
-	2				34	पतिधर्मा	59	98	CAR.	तांम्बूलन्यसमे	c 10	93
1	70 9 1	त्रिप्ताकि-	93	9	36	जन्मभविष्ये	59	96	63	कर्णवेध	50	98
1	R	स्र्यकारानलं	७व्	9	3/0	विष्णु पूजा-	=9	29	00	खुची	00	29
1		The state of the s	93	3	35	स्तिगेहवेश	No. of the last of		19	विशेष:	-6	9
- 1		र्व्यादिचकाणि	७५	9	36	मासेइ॥	-9			वर्धापनं ू	==	90
1	3.75	कोटचर्क	be	9	80	स्तिकार्य	-3	ex	७३	अन्दम्ती		93
		गोचरकछोल	•	8	89	जातकर्म ,	E 3		20	चीलं ।	==	93
1	4.0	अयमार्तवेतिथि	७६	3	83	जातकमतिता)	८ ३	50	७५	केंद्र प्रहेषु		94
	90	वार	७६५	8		रक	c3	14	७६	मातरजिस	56	954
	1 7		હ દ્ય	ų	83	जन्यदेवता	2	२५	20	<u>ज्येचेच</u>	= 0	3
	0.1	योग	७६५	E		स्तन्पानं	53			जन्यमासि	= 6	3
	13	करण	७६५		84	पथ्य	E 3		90	विशेष	-6.	4
1	96	मास	थथ	9	४६५	काय	-3	3	20	क्षीर	26	93
	१५		७७	2	80	रमान	-3	a	=9	रमञ्जूर्भ .	00	3
1	१६५	समय	थथ	3		शतायिपक्	=3	0	८२	सन्यासिनां	60	ų
		वास	ww	8		नामकर्म	-3	90	c 3	असतायः	60	0
1	95	वर्ण	eve	4		मासनाम	=3	29	58	चक	60	99
	96	मान	ee	e	60 % 1 %	नाक्षत्रनाम	08	3	eu	मंगलं ।	60	92
	60.	प्रतिप्रसर्व	ve	4	43	कुमारी-		90	CEN	उपनयनं	60	93
1	२१	विधि	30	3	43	दतजनन	E. 8	93	=10	उ रुबलं	60	
	33	शाति	30	0	48	दोलोरोहणां	=8	1	4	रविबलं	eg	2
1				1	1		,	1	*		1	1

		The second second		,			-	,				-	-,
	सं	सूची	पृ	पं	सं	सूची	न्य	पं	सं	सूची	पृ	पं	
		चेत्रपाशस्य	69	9	23	वनगमन	era	3	पद्य	यह चर्क	3	3	
	90	मदोषः	69	92	38	मत्यागमनं	600	8		गणक्र	and	9	
	109	अनध्यायः	69	4	२५		60	4		भक्ट	3	9	
	23	पुनर्वसानिषेधः	29	90	२६	छुरिका चर्क	60	8	40	षडां छकं	8	12	
		मासाः	69	9	२७	विद्यारंभ	20			हि इशिं	8	3	
	58	वाराः	69	3	३८	विद्यायोग	05	92	६१	त्रिनाडिः	8	96	,
		विशेषः	69	2	36	वागी श्वरः	62		६२	च तुर्ना डि	8	0	
	९६	ज्येष्ठनिष्धः,	63	3	3.0	ज्योतिसु-	66	3		पंचनाडी	cq	6	
	१७	अनध्यायेषुः	63	8	39	गस्मित	66	4	६४	पूजी	4	93	
	60	विभागा	63	ų	32	थ्याकरणादि	65	84	छ्प	1000	u	984	
	66	सोपपदा	63	Eq	33		66			वंगी	4	8	
		क्रवापस्विशेषः	63	9	38	वेद्यगारुड-	66	6	EVO	वडाधकादिका	E	5	1
	9	नक्षत्राणि	63	b	34	सांख्यवेदांन	99			मेलकापवादः	E	93	
	3	तिथय:	९३	9	384	नाट्यारभः	66	93	६०	यास्यादि ।	84	90	
		काल	63	90		लिय्यारेमः	66	98	00	निश्चयमु	E	29	1
	8	लयकादिः	63	99	3=	धनुर्विद्यारंभः	66	984	90	कन्यावरणं	Ey	Ex	1
	×	देवस्वामिनोवेद		9	36	शिल्मारभः	66	96	७२	ब्रवरणं .	0	90	1
	8	भानिच	38	2	80			20	७३	सीभाग्यासक	9	93	-
	9	खुरिकाबंध-	68	3		जैन्धर्मारमः	88		30		9	88	
	b 6	केशांतसमावतन		8		चेत्रक	900			गोर्याद	0	30	
-	2000	~ ~	68	4	83	पारायणमु-	900	6	७६	दानपशंशा	9	29	
1				9		पुराणश्रवण्		33 1	60	जन्ममासादिनी	0	1	
1			en	3		मंस्कारक ल्लोल		4		वेधः		2	,
	33	प्रनांतराणि ।	24	8 3	30	देवज्ञपरिस्ता				येषे	5	90	
	3 5	वेदपतिबलं .		9 8	En .	3.1413.11				मार्ग	4	30	
5	8 6	हेंद्रभावफलं ।		5 8	10 3	ग्याः .	300	50 6	:0 3	गतिकू छं		9=	
7	ال	बांदाफलं					3000	30 0	9 =	व्यमे दिविशेषः	U	6	
7	4	गहांशफलं ९		200		उपाः		200	-	गेचर		93	
7	3 8		स्			इयच्क				नान्पोतिके	cashir se	96	
7	E 64		ed 3:		9 त	ास-		1 5	8 2	वेलाके विवोपः		50	
1	14	हानामीत्रतं ए	er o			ो निमंत्री		200	East Section	वेद्योषः	- 第	90	
10	130	हुतीकं ०		1000		गेनयः ।				_		30	
		गचकं १			8 0							39	
(।स	मावर्तनः । १९	9 3	· ·	1 3	कयोनाचिक	3 3	8 2	elt	तेथयः	99	93	
	No.					H BOTT LANGE TO SE	- 1		1		1		

1	+	सूची	वृ	पं	सं	सूची	पृ	पं	सं	सूची	Æ	मे
1	:	वाराः	99	98	33	विवाहस्त्यं	59	300	५६५	निश्चय	32	90
-	9	दशमहादोषः	99	9=	23	तेलारंभ	29	90	-	विवाहकल्लाल		84
6	0	यान	99	20		कंकणारंभ	2.9	95	dia	मवंद्रोदिनानि	- 33	29
. 6	9	युनि	99	29	34	काजिककरण	29	59	40	भानिवाराविच	- 33	4
6	2	ल ता	93	9	38	स्तेभस्थापनं	22	9		विबाहाअयम	मा	
6	3	यु ति	92	3	२७	दलनादीनि-	23		-	सेषुभर्गरहिष	न	
9	8	पंचवालाका	93	3	२८	तेलसंखाः	23	9		. ग्रहच	33	92
0		सप्तशस्त्राका	93	B	36	वेदलक्षणां	33	=	80	पितृ गृहागम-	1 33	93
1	२६५	विंशतिशलाका	93	9		रवद्गविवाह	53		83	बृ त्धाप्नं	23	ou
1	210	अंशवेधः	38	9	39	संकीणिना	33	193	1	वधू भवेश:		0
	ट्ट	दग्धादिभानि	3.6	3	33	रबडु-ब्कं	53	7		र दिरागमेकाल	38	8
	99	6	ord	9	33	वधरण	33	100		३ मिति इफिक्तं	38	En
9	600	यामिञ-	94	cx	38	विशेषः	3			४ मिनिमदाबः	38	9
	9	यामित्रकलं	94	10		वर्चकं	5.	-		ध्यन्बोटापाकं	38	9=
	3	बाराः .	194	0	35	अपरं	53	1		द्विरागमन		2
	3	एकार्गल .	964		30	लमविचारः	3,			६ अप्याध्यानक	ल ३५	9
	8	उपयह	1984	1	30	समूबर्गः	3.			७ पाकय्ता	34	9:0
	ч	दग्धा	30	3	36	राज्ञीक्याः	5			ट महाहाम	Bed	0
	ह्य	तिथिगंड	984	8	80	होरा '	3		6	९ प्रणोहित-	30	
	0	क्रांतिसाम्य	300	14	80	द्रेकाण		8 3	1	» अवभृत्य <u> </u>	30	93
	5	भगेड	910		85			8 3	00665	भ अनचकारि	J 35	98
	9	लमगंड	919	1	83	नवांश		प्	1 3	१ पचाग्कुड	30	
	90	विषनाहि .	30	1	88	त्रिशाश	15 3	43		१३ फलानि	3/2	,
	99	स्फुटभुक्तकरण	90	9	RA	द्वाद्शाश		84 6		॰ ध तुरंगचक	30	
100	13	वातावयः	3=	Ex	86	उचादि	3	ध्य	110	१५ गजनके	3/2	8
9	3	भवकलं	95	5	80	लगसाधनं	2	Ex .	3 13	५ रथनकं	30	9
12.13	36	अंशकृद्धि	96	9	8=	लमसारिणी		0	1 13	७ शनिफलं	3=	9
9	M		106	u		नन .	3	0	9/1	०८ वान मस्यमु	हुते: ३ =	99
	१६५	विज्ञोपका	36	364	40	दशन	1	1	0	. (सि ज्यास	30	194
33	Na.	कर्तरि	96	30	49	शेवभागाः	6	61	10 .	^{६०} दीक्षाः	3.	= 90
	=	अयबादः	50	9	43	दशमसागिष	而	30	3	-१ स्जाणा	3	= 36
7	10	गोधूबी	20	6	43	समवर्गादि		d .	3	८२ पुष्पादिस	गनं वि	- 39
	10	अंधादिलमा	29	6	148	एकत्रिशानिद	ाषः	33	E	ं अ्ग्याधान	4.)	
	29	कुलदेवनास्था	: 99	99	wa	मतिकूलं -		30	20	८३ बोल-		18
1	52.0	3	1	1	1						لا	1

								1			_		7
	स	सूची	पृ	पि	सं	सूची	पृ	पं	सं	सूची	पृ	पं	1
	= 1	र राजाभिषेक काल	36	4		अंधादि	84	1	49	हिंबर	48	50	
	=		13,6	9	90		84	3	५२	घवाडकं	48	29	
	-6	(धिपी)	1	3	96	भवृक्षाणि	84	8	43	विघकाल	مربع	20.00	1
	=	आतपत्र चत्रं	80	2	20	योगिनी (84	4	48	दग्धादिदिशा	44	8	
	=	छत्रधानि ।	80	3	29	तिथिकाल-	84	عر	ध्य	परिधः	44	4	
	-	1 126 24 11 11 113	80	4	22	योगिन्यंतरं	84	0	ष्ध	धाना-	५६	9	
	60	अभिषेकनं	80	3	23	पाज्ञादी नांगणिः	Ra	=	dia	विचार	५६५		1
	60	and the second s	89	3	२४	योगिनी विचार	88		45	परिष्युक्त -	५६५	7112	١
- 3	63	सभापवेदा	89	=	24	विद्योषः	86	-	40	विकण:	५६५	8	
	63	दामबंधनं	89	9	રથ	दिवारात्रिविभाग	80	9	60		40	9	
	68	1	89	200	20	अपर	80		६१		40	100	l
	ود		89	33	२८	चंद्रफल	80	,	100	विभादीनां	40		
		सनारचन	89	30	26	घट्यात्मक	80	3	ह्य	योगादयः	46	3	
	७७	युवराजािमपेक	49	984	30	राहुचक	80	90	68	विजया	46	ex	
	60	चामरादिधृति	89	25	39	लासारिकाचक	100	99	६५		५९	6	
		राज्याक्मिषेक्स्चोल		90	33	लालाटिका .	80	33		तिथिदों हने	५९	9	
	66		89	50	33	उषःभाशस्य	80	9		भदोहद	49	30	
1		भतिकाकं	89	29	38	यात्रालपं	80			बारद्दिद	80	9	
	9	शानाज्ञातजन्मन	183	6	24	रक्षकादि ,	80	33		दिग्दोहदं	६०	2	
	3	मश्म ्	४२	9	361	विंशीपक	do	3	00	दिग्वाहन	840	3	
1	3	यात्राभेदाः	25	88	30	भावफलं	40	ex	9	प्रस्थानदिन	840	8	
1	8	समयः	83	900	30	विशेषः	49	9	७२	दिक्त प्रस्थान	80	K	
1.	es es	गयादि	४२	96		चंद्रयुतीः .	49	3	७३	प्रस्थानविधि	छ०	EX	
1		मासा	83	9	80	प्रत्येकफलं ।	200	3	80	दुग्धादिनिषे-	ह्य०	3	
1	9	ऋतवः	83	3	89	जीवमृतपसो	49	98	७५	मेथुने विचारः	E 3	3	
1	5	Common de la commo	83	3	83	फलं	५२	9	७६	अकालवृष्टिः	६११	ध्य	
	0 0	तिथयः	83	8	83	उदाहिति:	43	9	00	गमनविधि	६१	5	
1		निंदास्थितिः	83	u	88	कुलाकुल	43	5		कस्माहुहान्-	६५१	984	
1	9	मासेषुविद्योषः	88	3		विचार	43	6	06.	मंगलानि ।	59	90	
			88	R	88	तिथयः	43	8	50	स्वरमुः	ध्य	96	
3.			88	4	80	धर्मादि	48	9	29	राकुन	६२	9	
	8	विदिज्ञाः	88	Ex	80	राजुरा	48	8	63	अप्राकुन	६२	3	
9	1	बृह धात्रा	88	0	86	114141	48	6	23	आवइयके भि			
9	8	वारकाल	84	9		161201 11 11	48	34		जित् र्	६३	3	
	1	STATE OF THE STATE	CC-) Kas	hmir F	Research Institute. Dig	gitized	by e	Gango	otri	Mark.		

सं	सूची	मृं '	पं	सं	ज्यनी ।	TT	पं	सं	-		
C3.	विचार	ह्य			स्त्र <u>ची</u> विचार	पृ ७३		49	सूची चक्र	ष्ट	पश
-3		ह्य	94	919	अर्धयाम	७३	a	1 201	CARL SOM	09	94
=8	हिकाफलं	ह्य			कालशंन्यंशः	७ व	v 20	43	दिक्ताधनं आयादि	0 9	90
24	वक्रच	ह्य	9		ACCUMULATION OF THE PARTY OF TH	93	, 5	100			4
= 84		58	9		महारस्थ ल	,	355		वास्तुफ्लं	63	3
50	अम्बेगितं	६५			अपरं त्रिनाडिक	४ ६	300	Lis.	यहबल.	63	96
50	अस्तींगितं	६६		33	नात्कालिकं	98	400	410	हारंकन्यं धुवादिज्ञानं	68	2
56	सारमेथेगितं	६६	ų	33	र्गारकारिक	1 12 1 20				68	3
90	काकेगितं	80	100	28	हसचारचऋं	७४			च् क	68	8
	मात्राचकं				कमः गुभाशुभं चूते	७५			आयादि विचारः	24	2
1 24	गणनं	845	9	35.	जयोष ध्यः	७६५	2		चर्क	ey	3
	अपरं	छ्ट		20	अशुभविन्हं	७६		200	_{पक} मासफलं	24	4
	गणनं	ELE		25	शुभानि।			6.3	गेहारभे		92
- 1	अपरं	60	9		शिवालि स्वित)	ادادا	94	68	तिथिकलं ।	2.0	984
	गणनं	६०	200		क्रम	00			वारफलं	24	20
	वर्णास्वर	६०			संकेत	00			वृषचेकं	964	2
	द्वाद्वावार्षि	00	1		नामा निकमीणि	100	100		काष्ट्रविचार-	6ह्म	8
99	~ 0 •	00	1.34	33	रन्यादियु	ى د			वृक्कचेदः	68	9
	अयनं	100		38	चतुर्वमासेषु		2	60	<u>शिलास्यापनं</u>	९६	99
9	वर्णम्बरचक्रं	00	8		दिमासेषु	28			खननविधि	९६ ५	94
2	ऋतु	00		38	मुहूर्तमानं	50	1	33.74	फलं ३	20	9
3	मासा द्यंतरं	109		30	प्रवेश	50		V.5	शंकु मानं	60	a
8	अष्टस्तरा	59			यात्राक छोल-			60	शिलन्यास	60	99
u	उषांकार्याणि	109	1		भूमिपरिस्	0			तासामानं		93
Ex	<u>जयपराजयं</u>	92	1 ,	89	ग्धाः	50	98	७५	वास्तुस्थानं	60	
6	भूबलं	92	2		जाति	55	9	७६	स्तभ	90	1
6	राशिचकं	७२		83	शकुनं	55	E		अंगुर्ल	95	4
6	रविहत-	७२	1	88	दुर्गारम	55	12	102.0	स्वमपरिक्षा	6=	0
90	चंद्रहतग्रदशह	1		84	वक	55		10 p	वेधं	6.0	
99	स्वरवलं	30:		88		56			उपवेधः	66	1 ,
93		9:	1 46			56			A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	66	
	गयुबल	10:		800	पदाकु चकं अध्यदं		9	E3	कस्यहस्तेन भूमिस्त्रमता-		95
98	मोर्हितिकराह	93	0		Contract of the Contract of th		93	=3	राहोर्सु रवादि	3 (5)	A CONTRACT OF
94	योगिन्यर्धमहर	1 9:	9	u e	शुभाराभं		96	E8	चकत्रयं		0 9
1	1	1	11.	1,	शल्यज्ञान	1	1,6	1	पनान प पनान प	14.	11

-	,		-	1 -			1 _	-			,
स	सूची	पृ	प	स	स्त्रची	पृ	4	स	सूची	पृ	पं
50	द्वारविचार	200	3	96	ग्रहमतिखा	E	2	५१		93	3
CEN	द्वारफलं	200	3	20	कुंभचकं	E	3	५२	ज्वाला मुखी	93	3
20	द्वारचऋं	9	9	२१	देवारायादि	E	فر	43	गताब्दकरणं	98	10
c c	देहलीचकं	9	2	23	पुरवेशः	E	93	48	इषकात्वानयनं	98	9
26		9	3	23	शत्रो:पुरवेशा	Ex	94	نربر	वर्षेष्टसारिणी	98	2
60	ग्ट्हेकूपं	9	8	२४	यात्रानि बृत्ती	ex	90	पह	रक्षाणाचर्ऋ	94	3
69	कूपेजल	9	4	२५	पुण्यार्जनं	6	9=	410	त्रिराशिका	94	R
63	वणैद्धाः भ	9	ध्य	२६	विद्योष:	9	9	45	हद्दा	94	9
63		9	9	२७	लमफलं	5	4	49	त्रिशाशा	94	E
68	प्रत्येक्फलं	9	5	२८	भावफर्ल	5	9	20	पंचाधिकारी	94	9
64	ग्हिस्थितिकुं ह	9	6	26	रवेर्बीमादि	5	3	६१	मुंथानयनं	30	9
ee	दूष्यानिर्माणं	2	8	30	नूतननगरे ।	9	20	६३	दिशिचकं	94	a
60	गेहोपकरणं	2	en	39	बुषदाा लायां	9	8	ध्य	सुद्दा	984	4
60	इंश्कियाननं	3	9		गज	8	4	88	योगिनी	984	ь
66	चित्रकर्म	3	0	33	भया	3	६	६५	पताकी	984	28
30	इहभवृक्षा	3	984	38	यहोपस्करं <u> </u>	3	ह्य		रचना	984	93
19	अणुमवस्या	3	99		देवादिस्थापनं	98	90		मिश्रक छोलं		98
3	भागादशबूना	2	29		उपसंहारः	90	99		प्रणासा मान्यं	984	98
3	द्वालयार्भ	3	2		वेदायतिभाक)		93	६०	सिध्यसित्धी	984	96
8	मसाद्यीरंभ	3	8		स्थी	7	90	00	कदाभिविष्यति	90	38
14	पुरादीनां	3	E	35	ग्टहाणांजन्मिती		9		संतितर्भवि ।		99
B	भनोलीर चृनं	a	90		श्यादि ।	90	3	199	ष्यति ।	900	
8	पुरवासन	3	94	36	रव्यादिनकं	99	3		यमलयोग	95	13
6	भ तालीचकं	3	984		इानि पाद	93	4	७३	इत्यशाल	95	
6	वत्सच्कं	w &	900	89	भस्मयोगः	93	D	28	मूर्वारप्यु	95	20
30	वसचक्रे-	8	4	83		93	90	७५	दीमाशा	96	3
99	111/2	8	ex	83	इश्सिद्धि	93	93	36	जीविष्यति ।	96	8
33	वास्तुरचना	8	33	RR	यमकरी	93	98	00	त्वाम	96	99
33	मवर्गभद:	4	9=	84	हंस		964	195	नचलाभ-	20	S
178	मासाद	4	9	884	अप्टिसिद्धि	93	9	90	पतित धनलाभ	50	94
34	विधि	وم	9	80	यमदंषुा	92	E	50	-बोरहति	50	
38	जीणविशः	y	90	80	यमदंडे	93	9	62	चीरज्ञान	29	93
300	साज्या 🧷	ч	96	86	कुदुष.	93	95	23	दिग्ज्ञान	Track Labor III	354
95	आभ्युदियकारि	8	50	No	राक्ष्म-	33	20	53		२२	9
1			1	1		1					1

सं	सूची	प्र	पं	सं	'arfr	-	Ţ.	÷			-
		पूर व	93		सूर्ची हिनालाकद ०	पृ	9	सं	सूनी पूर्वी	भू र	पं
54	इषी	23	6	96	काक्रशब्द	30	7 2			Sa a	مر ١
			910		दिनमिति	39		1	उत्तरा	Rad of	
	तीता		94		N. Carlotte and M. Carlotte an	30	4 20	10	हस्त	300	
		28	2		पादछाया अंगुलं	39	0 3		चित्रा स्वाति	4 4	
	कयास्तरतं	Allers Committee		33	नवुरू चर्क	39	9		विशारवा	88	100
	प्रकारां तरे <u>।</u>	ak	90	38	पक. समायुक्तं	30	700	1.767			100
	अपरं	88	9=	33	एकविंशांयुलं	100	व अ	20	अनुराधा ज्येषा	88	99
	अपरं	28	29	25	समनाडी	2 4	1		मूला	88	A
63		24	3	20	विचारः	र र १		69	तियीनांक छा। तियीनांक छा।	80	
1000	उत्तरोत्तरं	عرم	8	30	पक्षीपातफलं	38			वारकष्ट	80	74
	उत्तराधरादि	२५	ų	20	सप्तनाडी	38	Second 1	100000000000000000000000000000000000000	शांति	80	
99	अस्रोपसा.	२६५	9	30	मत्येकफलं	34			सबेषिध्याद्य ।	vo vo	3
	शुभासुभ	26			सरदफलं		1		भावे		
90	गर्गमनोरमीयं	200		10	पद्धी शब्दफलं	34	The Real Property lies		कचांतरं	40	08
	श्रीरामोक्तं	200			चेक्रम्	3 8			जननलमफलं		96
The Contract of the Contract o	भ्यक्षेत्र ।		94		स्वमिवचारः	३६५	1	1	किमपिजन्मफल	34 939	
9	वर्षसुभासुमं	20	The second second	10	युभस्वमा	36			काकविष्टाफलं		984
12	जन्मात	500	93	38	अम्त्वमा		9	100	संकाति विचार		
3	कूपादिवाहन	२5	2	30	शांति				मीनसंकाति वि		
8	शृंगोनितफलं		,		अंगस्फुरणं	36	Comme	60		3	94
4	उदयफलं	36		30	उसाताः	00			विश्विक संक्रों।	48	
Ex		ء و		80	युगादि		93		तिविचार-	1	39
9				500	गज्छाया				वृषसंकाति	Colo	1.
0		3	1 20	100	अधेदियः	eso	900	100	अर्ध विचार	در	9
6			8	1	अयादयः	6	9	- 100	जनाव पार		199
9.			= 6	50	अश्विन्याष्ट्रकं	8	3	100	कुह्च कथोग		186
	१ भूकंपफलं		5 33		भर एवां	8	0	101	- यहमीग- १ वरणालसणं	1	130
		1.8		C/0 15 (1)	र किता						499
9. 1	१ इद्रमङ्ख	3	2 2	0 8	रोहिण्यां	8		100	ज्याल सणं		ध २१
	३ वारुण				जाद् <u>री</u>	1		3	र रोमकूपं	200	
	४ अग्नि		6 0	6	इन-		2 4	0	॰ जानु		2 8
3	५ वायु	1 3	20	3 8	९ पुष्प		36	20	१ विंग	de	- C - C - C - C - C - C - C - C - C - C
0	ध काकनीडच				॰ अऋेपा				२ वृषण	di	990
1,	७ काकमे युनं	13	0 9	1 4	१ मघा-	8	35	0 6	३ माण	1	999

THE THE	रीस्प्रस	T	पं	सं		10	पं	7
स	सूची	मु	94	-		पृ	9	+
		The Late of		95		6,9	3	1
-	शुक्र स्फिक	12	90		शेख	فرم	W 1	
-10	निक् निक	17 6	95	20	ललाट	६५१		1
-	कटि	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	96	24	ऋदित	ध्य	90	
-0	जंडरू		२०	23	इसिनं	ध्व	99	
66	पार्श्व		9	२३	र्सेलाटरेखा	ध्यु	35	
60	कुस्मि नाभि	५७		28	बारो	89	90	
67	नाभ		E	२५	केश	ध्य	29	
64	विल	40	9	२६५	व्यासेनफ लं	६व	व	1
53	पार्श्व	40	90	20	स्त्रीलक्षणं	६४		
26	चूनक हृदय	પદ	33	२८	सामुद्रिकल।	ध्यप	9	
60	हृदय	40	10		C 4		3	
910	जानु	थट	98	26	डिंग बास्वर विचार	स्य	3	
	शिवा	40	30	३०	उलुकरुत यथिवय-	ध्र	3	,
00	प्रम			39	ययविषय-	६९		
56	कस्मा	45	Laborator			4/6.		San San
	-अंश	45	1000					
9	वाहू	45	9					
a m	अयुनि	पट					1	
8	हस्त	49						
	नरव	46						
L	यव	40	२०					
હ્ય	रेरवाफल	46	90					
9	चुंबुक	ue	29		The Marian			-
6	चुबुक ओश्च	६०	3					
0	जिन्हा	६०	3 8					
90	नासु	६०	8					
99	सुरव	00	y					
35	रमञ्ज	६०	9					
33	रमञ्ज कण गंड	8 6 6 6 6	90			15.7		
98	गड	ह्य	93					
130	नाशा	60	-					
984		8,00						
919	नेत्र	the same of	75					
1.1			113					

महूर्तरत्नाकराख्यः संगहः

30

श्रीगणेशायनमः॥॥ एंकारपञ्जरश्रकीमुपनिषदु

चानकेलिकलकण्ठीम्॥आगमविपिनमयूरीमार्यामंत
विभावयेगोरीम्॥१॥ध्यायंश्र्येतसिचरणोद्रुतकनकिम्भा
वनर्घमणियुक्ते॥नमनोचतहरिहरयोभिसापालाशतांनी
तो॥२॥पीताबारक्तत्होयावकलञ्जाप्रदोधन्यो॥देव

शिरोमणिमाल्येर्हतोनुतोकस्यश्रभदोन॥२॥शंकरभा
लिवभूत्यागंगासिललाद्र यास्पृष्टो॥अपिचललाटस्थ गितवृतीयनेत्रामिसंत्रहो॥३॥चरणावनिशंमंतध्वी
तध्वंसविधायचात्यंतं॥स्वातंकुरुताशांतंप्रथातंचाय्य
विद्यान्तम्॥४॥अथमुहूर्तरत्वाकराख्यःसंग्रहःकियते॥तत्रादेशेयोपादेयविचारकछोलः शरभः॥॥॥

अथनव मानानिः

学者,少朝,	राष्ट्र वर्षे वर्षे	क्षा प्रमार्थ
१भमानमितिः		ध्युरुमानम्
गुर्वसगेबारः	६० पलम् १	गुरार्मध्यमानेन
पलानां	६० घटिः १	एक गशिभोगो गुरुवर्षः
घरीना	६० भदिने १	७ देचमानम्

२ चंद्रदिनमा	३ सावनमानः	मकरार्कादिमास
नं	A THE RESERVE TO SERVE AND ASSESSMENT OF THE RESERVE OF THE RESERV	षर्कं देवानां दि
एक तिथिमि तं	इनो दय ह्यांत रं	नं कर्का की दिमास षर्क
४ सोरदिनं	५ पेत्र्यंदिनं	देवानांशितः
प्रतिदिनं स्फुटभु कि मितिः	विधोर्मासः	मासादी नं। वर्षः कल्पनावर्षाणां

मासादिकत्यना स्फुटेवमनोर्ब्रह्मणस्नु संख्या हमानगे युगेः ७१ भवेत् ब्रह्ममानंतु कत्यः सर्वएवयस्यदिनं ३० तथाचवर्षायनर्तु युगपूर्वकम त्रसोरान्मासास्तथाचिति थयस्तु हिनांश्वमानात् यत्कच्छ्र सूतकचिकिस्तितवासरा चंतत्सावनाच्च घटिकादिकमार्समानात् नंदादितिथीनां फलं ५नंदासुचित्रभवनोत्सव नृत्यक्रमभद्रा सुमांगितक

चांद्र -	गंद्रनाक्षत्रसावनसोरमानम्									
3109										
3	9.3	94	0	घ०						
42	30	30	0	प०						
30	2,2	52	0	वि॰						
0	30	30	0	अ०						

योज्यामुजयसाध र्याज्ययामुजयसाध नमंत्रवादान्त्रिक्तामु-नोयमपरासुश्वभं न दर्शज्ञानासिदेकर्मणि पोष्टिकेच अवेचशस्ताष्ट्र

	तिथीनांस्वामिनः														
मं	6-	~	64	30	5	w	9	V	o	90	56	26	93	26	2°E
शुन.	E S	THE K	TE STATE OF THE ST	ग्रीया	मन	उन	सर	शिव	450	सम	विखे	alt.	कामदे	िन	4
अ.प	त्रास	विश्वाप	माधव	यम	वंस	कुमार	· Ex	वस्	卡	धर्मस	शिवं	出	मदन	कि	ान् वृष्ट
	नंद	ादि	ति	यय:					T	मात्र	म त	तिथ	यः		
नंद	श्र	1	E	99		· A		2	\$	पक्	Ŧ	क	धार	ाक्ष	F.
91	दा	2	v	92				9	1	فع	99	9	8		99
जर	ग	3	6	93				3	#	3	35	3	1	9	95
T	रिक्ता ४ ९ १४								98						
पूर	र्गी	ų	90	90	3			इक्त.	म	ध्यः	१५	श	मध	平	५ शहर

तिपदा दिश व्यायामशिल्पोषधमंगलेषु यात्राविवा हा दिष्च हि तीया १ बी जो ति दास्यासव संप्रयोग ते या तृतीयो प्रविधोच तृ श्रीमांगल्य कत्येषुच पंच मीस्यात् पष्ठी क्ष्रवेक मीणिन प्रयाणो १ क्षत्र याणाभरणा दिकेषु स्यात्स त्र मी हा खलु मंगलेषु से नासुयात्रा दिषुचा हुमी हा पापो प्रसिद्धोनव मी बिरिष्ठा १ द इाम्य भी हागमने प्रवेशे मांगल्यक मीस्विह पो ष्टिकेच एका दशी मंगल सिद्धेच क्षत्र कियायांच महान सेच ४ क्ष्रवेसपा णि यह णेनिधाने स्या ह्या दशी सिद्धिकरीन याने त्र यो दशीक मिण मंगला हो सिप्रस सो भाग्य विधो क्षेत्रच ५ चतु र्द शीसिद्धिक दुयकार्यन तुप्र याणेन खलु प्रवेशे मांगल्य य (४) मुहूर्तरताकरः जादिषुपोर्णमासीदशीनशस्तः पितृकर्मणीष्टः ६ अत्रकेषां चिन्मतेनवमीपक्षरं ध्रतिथिनिमृतिपत्सितामध्यमाविषमासुस

मासु २ १० शस्ताः	पक्षरंभ्रतिथयः					
कर्कियोगः शुभाः	४ ६ ८ १२ १४ ९ तिथयः					
	९ ८ ४ १४ २५ २५ वर्ज्यघरा					
र चं मं बु ब शु श	सवता ऽशुभाः					
92 99 90 9 = 9 &	वारा षु र वारी					
अमृतयोगः शुभः	तिथ १ ७ अभुभाः					
स् चं म ब र म श.	अययोगः केषांचिन्मते ऽ रुष्तो मृत्युसंज्ञः तिथिशून्य लगा कृषाः					
9 2 9 3 8 2 9	9 3 4 9 9 99 93					
8 8 8 8 9 90	तु सिं मि ध क ध हुः					
99 92 99 93 98 92 94	मः मः कः कः सि मीः मीः					
रग्धादियोगाअश्रुभाः	गृहम ल भाष्ट्र					
	रिं। वेशेमी ८ द कि एक					
	मानि ह है। मि					
	थाः जीता है जिल्ला					
	The Full Full File					
The same of the sa	1 9 . E. W					
त्रितीययोगः अश्भा	शानरा है ज है।					
र चं मं बु रू रह श श	णाविवाहगुरुष्ट हा प्राप्त					
4 & 9 = 9 90 99 3	यंवज्जयेत ल ह प्र					
ह. मु अ अ पच रे रो वि	पमात्ययापिवज्या । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।					
	गाइ। प्राणावशावत्र वर्ष रहिमाः प्रतिः					
"यत्सितामध्यमाविषमासु सम	ासु २।१० शुभा					

चेत्रादिषुश्रूत्यति थ्यादिकमशुभं									
चै. वे. जो. आ. आ. आ. का. मा. पो. मा. फा.									
9 92 93 6 3 9 90 98 8 8 8 3									
c 92 98 & 2 2 99 4 C 4 4 8									
फुं भी रु पि में फं रु मु ध क म सिं									
अ. चि. उषा पू. उका शः पू. रु. चि. ह. श्र. म्.									
एं. स्वा पू ध श्र र फाम वि आ मू जैं									
सिद्धितथयः शुभाः सर्वार्थसिद्ध्योगः शुभाः									
युः बः मंः शः वः रः वं मं बुः वः युः शः									
१ २ ३ ४ ५ हि. श्र. अ. रो. रे. रे. श्र	- 11								
ह									
वर्ज्यानि उ. मृ. उप्ता ह. पु. ज्ञू स्व	T.								
६ तेलं पु. पु. कु. कु. अ. पुन ॰									
ट मांसम् अः अनु ॰ मृ ॰ श्र. ॰									
१४ क्षोरम् तिथयोमासश्र्न्याश्रश्रन्यारुप	П								
३० मेथनं नियान्यपिमध्यदेशेविवज्योनि									
93 मर्दनं द्याणीतरेषच १ पंग्वंधकाणार	2								
३० ७। १ धात्रीफलस्तानं क्वानिमामश्रन्याश्वराशयःगीर	३० १ १ धात्रीफलस्तानं क्यानिमामश्रन्यास्वराशयरगोरमा								
१।३१६। १११ रिववारः त्रवयोस्त्याज्या अन्यदेशेनग	Es.								

ताःकुयोगास्तिथिवारोत्यास्तिथिभोत्याभवारजाःहूणवंगरवशेष्ट्रेव वर्ज्यास्तितयजास्तथा अयोगेसुयोगोपिचेत्स्यात्तदानीमयोगं निहं सेवसिद्धितनोति परेरुम्रश्रुख्या । वंद्रसूर्योपरागश्राद्धादिषुदंतधावनं कुयोगादिनाइंदिनाधित्तरं विष्टिपूर्वेचशस्तम्रवियोगःस् र्यभाद्देद४ गो९तर्क६ दिग्वि१० श्व१३नरव२० संमितेचद्र र्क्षरवियोगास्युदीषसं चिनाशकाः अत्रतिथयःदेवेपूर्वा ण्हीकीयात्याश्चाद्देकुतपरोहिणाः पार्वणेवापगण्हस्थाव्रते तत्कर्मकालिकी नक्तव्रतेषुप्रदोषव्यापिनीयात्याः यां तिथिसमनुप्राप्यउदयंयातिभास्करःसानिथिःसकताद्दो याव्रताध्ययनकर्मसु अपरेउदयमित्यत्रास्तपदमाहः

					A		7		
र्व्यादिवाराणास्यामिनः									
रिव.	चंद्र-	मंगळ.	बुधः	बृहस्प.		शानिः	वाराः		
शिवः	शिवाः	गुह.	विध्यु.	ब्रह्मा	इंद्र	काला	देवाः		
वन्हिः	जल.	भूमि.	हरि.	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	अदेवा		
युक्ट.	स्यी.	पुरु.	नपुं.	पुरुः	स्री	नपुः	त्रस्		
क्षत्रिः	वेश्य.	क्षत्रिः	श्द्राः	ब्राह्म.	ब्राह्म	म्ले च् छ	स्वाः		
निपाभिषेकमांगत्यसेवायानास्त्रक- मैषिपाइवधान्यादिविधे।	शंखमु कांबुरज्ञत्य से स्वीभ्षण उष्णीतकत् सो गदीनिः	विषामिबंधवं धनस्तेयसंपिविश्व हक् क्णिषात्वाकर प्रवात्आदीनि	गृत्यशित्यकत्रागीतितिष्टिम्रसमं गृहविवादादीनिः	यस्पोष्टिक मांगत्यस्वर्णवस्तादिभ् वर्णयत्म इ सादिरोपुणं	हिलगीतादिबादिशस्वर्णास्त्रीरत्नभू विणभूषण्यो त्सवादीनिः	त्रपुशीसायसभ्यमादिविषदानम्ग यान्ते आसवस्थिराणि.	एतानि दि झ्यात्रं द्शितानि.		

*	र्वकारे	षुश्रुभ		उक्तेषुविहिसा						
यं वुः	the second secon	मीसिडि काः	中	उक्तसिद्धिकराः						
यहस्यो	यहस्योपचयस्थस्य ३।६।१०।११वारेकार्य्य प्रसिद्धृतिनेवाप चयसंस्थस्ययलाद्धिकतंनरेः जनमलमादिदंबोध्यम्									
reieta		अभ्यं	गफलं	विधि	श्र-					
म्.	मं	मं.	बुः	गु	तप्र	श.	वारा			
1000	लिय भी में में में बी की भी									
- हु,	0	त्में खे	0.	र्फ़्र	संजे	0	पातन			

इद्यतिलतेलपरम् सार्चपादिकंतुनतेलं तथा गंधवा सितमपितेलिभिन्नम् ता दशंतेलाभ्यंगोनकस्मिन्निए दृष्टः अथवारप्रवृत्तः चरार्द्ध देशांतरयोवियोगयोगो व्यपानीयपलेश्वसम्यक् सूर्योदयाद्ध्वमृणेधनेधोवार प्रवृत्तिंमुनयोवदंति इदंचस्क्ष्मम्स्थूलंतुदिनमानंनि शार्धचपंचदश्वभ्य समन्वतं वारप्रवृत्तिकालःकालही राःवारारंभाद्धतानाड्योद्धाभ्यापंचिभराहृताः वभेशा त्यष्ठपष्ठादिकमेणहोरेशाभवंति यथास्य्योद्धार्वःभा र्गवाद्यंद्व एवंवारेप्रोक्तंकाल होरासुकर्त्तव्यमितिः

 		707	THE STATE OF THE S			
		नक्षञ				
अ.	<u>ਜ</u>	र्छ.	रो.	मृ.	उनाः	
नास.	यम.	वन्हिः	ब्रह्माः	चंद्र:	रुद्र.	
बस्त्रोपनयनक्षोरसीमंताभरण <u>न</u> कियास्थापनेभाष्यकार्याः	वापिक्पत डागविषशस्त्रोधदा रुणबिरुप्रवेशागणितानि.	अग्नाधानास्त्रशास्त्राभ्तंविधि ग्रहदारुणसंग्रामोषधिवादि न्रादीनिः	सीमंतोनयनो हाहव स्त्रभूषा स्थिरगजवास्त्रभिषेकाः	यतिष्ठाभूषणोद्याह्मीमंतादिसो र बस्त्र यात्रादीनि.	ध्वजतोरणसंग्रामश्रकारास्त्र कि कियाश्रुक्ताः संध्यादिः	
			त्राणिः			
प्रनः	पुष्य-	अश्हे.	मधा.	पूर्वाः	उ०फा.	
आदि.	ईज्य.	सर्प-	पितर.	भगः	अर्यमा.	
यतिष्ठायानसीमंतवस्त्रवास्त्रप्यना यनं सोरश्यकमादितिभोवधियन्या न्यभूषणं	यात्राप्तिष्ठासीमंत्रवतंब्धभवेशः न कर्महविनासवेशुभः	अनुतं व्यसनं द्यतं को पास्त्राविषदा क्रि हक्वाद्वाणि ज्यपिशहन कर्म.	क्षिवाणिज्यगोधान्य रणोपकर्णा दिक्षिवाह नृत्यगीता दानिस्वितं.	रणदारुणशस्त्राभिषानुषाद्विषादि कविवादभेषजंकमें प्रवीत्रयेमासिविक्सं	बह्योपनयनोद्धाहवास्तु सन्ध्यत्रवेशनं अश्वयतिष्ठासीमंतिमिकमोत्तरात्रये.	

मुह्तीसंधुः

			नक्ष	त्राणिः			
E°	चि.	स्वाः	बि-	श्र-	ज्ये.	मू.	यू.
रिव	त्वष्टा	वाञ्च	शकानी	मित्रं	इंद्र.	निञ्चर.	जलं.
मतिधोद्याहसीमंतयानवस्त्रोयनायनं क्षीरवास्त्वभिषेकादिश्वभः	प्रवेशवस्त्रसीमंत्रमतिष्ठा बत्वंधनं चा एमेवास्त्रविकेच सीरभ्षर्शकर्मे.	यतिष्टोपनयोहाहवस्त्रसीमंतभ्षणं विवाहाष्ट्रेमकष्यादिसोरकर्म.	वस्त्रम् बए। वाणिज्य वसुघान्यादि संग्रहं. चत्यगीतिशिल्प छेरवनकर्मः	प्रवेशस्थाप्यनोहाह्रव्रनबंघाष्ट्रमंगलं. वस्त्रभूषशवास्त्यधंसंधिवयहा.	स्रास्त्रशस्त्रवाणिज्यंगोमहिष्यंबुकर्म यत् नृत्यगीताद्यशिल्यत्वेहाश्मलेखनं	विवाह क्षिवारिज्यवाहरणाह्यमेषजं चत्यशिल्पास्त्रसंधिविघह लेखनम्.	व्फासमम्.

नक्षत्राणि.

					गाए।.	And the Assessment of the Asse	to the second	
3		ऋ.	श्च	धः	श-	पूर	3.	रे.
वि	श्ये	विधि:	गोविंदः	यसु.	वरुणः	ग्रजचा.	न्यहिनुध्र	पूषा.
	उकासमम्	उफासम्	अतिष्ठायान सीमंतस्तीरीयनयनी षधम् युरारामगृहार्गं यह्बंघनं	बक्त्रोपनचनक्षीर मितिष्ठायानमीषधं पास्न- श्रीमित्मवेशाउवेसमूष्णं	ज्ञवंशस्यापनं हो। स्मतिष्ठायानमे षजं अश्या नर्शासीमंतवास्तु कर्मेः	प्रमास्त्र प्रमासम् zed by eGanç	यूफासमम्.	निवाहमतवंधाश्चमतिष्ठायानभूषराम्. प्रवेशवस्त्रस्त्रीमंत्र होरिभेषजे.

मुहूर्नसिंधुः

			ध्रवादिसंइ	Π:		
रिव	चंद्र	भीम	बुधः	जीयः	गुकः	গ্নি:
उ.३ रो.	स्या युनः श्रः धः शः	पू.३ भःमः	ह. वि	ह · ऋ · पुष्य · ऋभि ः	मृ. रे. चि अनु.	म् ज्ये या ग्रेम्स
धन स्थिरं	चरं चल	उम्रं क्रं	यिस्त्रसा धारएां	क्षिम लघुः	मृदु मेन	नीक्गा दारुणः
शांतियुधिगृहारंभाद्वसामारो प्योजीषयभूत्रक्मभिताः	गजगोश्वादिद्मन सेतुक्ंधन प्रयाणारामकार्थालाचरा जि	नुमहारशस्त्राद्विपनीः बारनशा भुमहारशस्त्राद्वीपाणिः	च्याग्निकार्यहाबोत्सर्गामिश्र कर्म.	मित्रकार्थ-ग्रह्मामप्रवेशनंर निभ्षावस्त्रगीनमंगत्वादिचः	स्त्रीकार्यरत्यादिवादादित्त्वा में संचः	वेतात्रभूतमंत्राभिचारिकंषि ह्यानरीद्रसंत्रासानि.

उर्ध्वमुखादिभानिः

Company Name of the State of th		
उ.भुरव.	तिः सुरवः	ग्रा मुख
रो-उ-३	प्रभू छ.	मु-१-बि-
प रा अ	भन्म विन	स्यान्त्रजुन्हर
पुः श्राः	ग्रम्हे.	पुष्प न्ये श्राश
मुं	बाह्यामनंगंत्रीयंत्रमजीष्ट्रकं. रथनीयान कुलाय ह्यकर्म.	बिलप्रवेशगासिनंभू तमेनविसेरवनं बननंशित्यक्षणाद्गिक्षेपोद्धरस्यादिः
मग्रहाराभ नार्लाध्यजनभन- द्नेदिकोदान मक् राद्यं	हल्पबाह्गामनंगंत्रीयंत्राजीष्कं खरगोरधनीयान कुलाय ह्यकः	THE PART OF THE PA
सुस्मिगृहाराम् नार्लाध्यः मासाद्वेदिकोद्यान् मकु राद्यं	विभे	世學
नि नि	<u>जिं</u>	- Here
自自	न न	गारी पुरु
र्गरव	विष्	विश्व
सिद	हत्त्रम्	मनं मनं
网口	he b	C 2

	3114311		
ग्रंधः	मंदः	मध्यम	मुखी.
रोःपुरवर	मृन्य्र-हु-	श्रावानिः न्ये ऽभीष्ट्र	ये. ये.
विन्यु ध	श्च-उ-शः		पु. पूर स्वा. मूर
रेः	श्राः	भः	भगुन्क.
खंघेगनपस्त लाभः पूर्वस्योदिशिवस्तु.	मंदेयते न लाभः दक्षिणगतंगमु.	स्पाद्देश्रवंशं पश्चिमे वस्तु.	सुद्धोचने श्रव्यामिष्न. उत्तरगतंबस्तुः

मुह्र्नसिंधुः

	जातिनक्षत्रािंग.										
बाह्म.	क्षत्रि.	गेष्य.	श्रद्धः	कर्षक.	उग्र.	चांडाल	जातयः				
स. ३	उ.३	हः श्रीभा श्रीश्री	-	निः मृः जेयः धः		भन्त्रम्धे वि-श्र	भानिः				
एषांनक्षत्राएगां उल्कापाते न भीमनारेण केतुस्पर्शनेन शनिनारे ए प्रतेक जातीना पीडान्ते पा.											

धिष्णारुसाः

ग्र	भ•	क.	रोन	मृः	न्याः	पुः	पुष्प	ऋ	मः
विषः	ग्राम् क	उद्वंबरः	जवुः	स्वदिर	करिः.	गिप्पस	नाग	वंशाः	बर.
ु •	3.	ह	बि ः	स्वाः	विः	ऋं	मं	मूः	युः
यात्राश	युक्तः	ग्रार्ष	बिल्ब	ग्रार्जुन	वेतसः	बकुरु	उस्पीः	सर्ज-	बकुल.
3.	म्ब्र-	घः	शः	पूर	3	रेः	स्वर्धाः	रक्षः पूज	नीय:्स्वा
पनस	ऋर्क	शमी	कदंब	चूत.	निंबः	मधूक	रिभव विना	सःपीडन	<u>चिःश्रेयो</u>

विषंभादियोगाः स्वामिनो वर्ज्यनाडयश्चः

वि	मी	श्रा	सी.	शो.	श्रम	मु.	धृ.	श्र.		库信
यम.	विष्णु.	बंद्र.	धान्.	जीव.	चंद्र:	इंद्र.	जल•	सर्प-	o	क्षामिच्यते इंनिसिच्यति
3	0	٥.	0	0	E	0	0	cy	0	
गं-	₹.	A.	थ्या.	ह.	व.	सि-	य∙	ब.	9	निसुद्यीपि यत्रकतंमंग
पन्हि	रवि-	भूमिः	सद:	वरुए।	गरोश	रुद्र:	कुबेर	लह.	٥	
E	0	0	3	0.	3	60	६०	o	٥	ו בו. עווו
प.	शि.	सि	साः	यु .	अष्ट	শ	हें.	चें.	o	यिं ने
मित्र-	कुमार	सावि	कमला	गीरी.	नासस्यो	पितर	आदिस	अदिः	O	फ.टा न्ये थां नामतु पात्नेधृतीत्र्यप्श्वंवर
30	0	0	0	31	0		•	20	o	मुक्

			oks.	क	र्णविच	ार <u>ः</u>			Turk	
श्रु.	9.	વ	3	8	4	قر	·o	-	3	शु-पृक्षे
ष-द	किं.	या .	市.	ब∙	व∙	की.	गर.	न्त-	ग-	पू.द.हे.
पद.	खंब.	की.	गर.	चि.	वा.	ते.	च∙	ब-	को.	परदले.
₹.	9	٦	3	8	4	E	e	c	9	रुषाप्
प्∙द∙	वा.	4.	य∙	च-	को	ग- ,	चि-	वा-	ते.	पूर्द.
रद '	को.	ग.	वि.	या-	ते.	च∙	य-	को.	को	परद.
करः	बच-	बार	की	नेति.	गर.	विणि-	निय-	शकु.	चतु∙	कर.
स्याः	इंद्र	भजाप-	मित्र-	अर्य-	र्म.	उस्मी	यम•	किः:	रुद्र.	स्वामि
	ब्देपीएिककार्या (ता.	सुस्थिरंगात्स्वारबे पर्मिकयाहिजाहेताभि	(सच्यतिषित्रकरागा (नवक्रोत्ववे:	सोभाग्यसम्बयग्रहा मिन्देतिछे	रुषिबीज्यहाश्रय जानगरे:	यस्तिभुचकार्यच- शिक्यतयः	75 13	पोष्टिक्योवपारिश क्रमेम्लानिमंत्राः	गोकायािशिचतुष्यदे दिजपितृतुद्दिश्यका	નાણ

करणविचार:

॥ गतिथिदिंगुणितापूर्वीर्धंकर

99	92	93	98	94	श्रु.
ग∙	19.	教	ग.	वि.	घू.दः
वि-	वा:	र्भेत	य.	ब•	प-इ-
99	93	93	38	30	鉅.
च.	की	ग.	वि.	चतु.	यू.द.
बा •	育.	यः	eT.	नाग	पःदः
हें स्तु फि					स्रा
	गः वि- व- व- व- स्त	पः धः विः वाः १९ १२ चः कीः वाः सैः	च च की वि वा ते वि वा ते वा ते वा ते वा ते वा ते वा ते	च को म वि वा ते च १९ १३ १४ व को म च ते च	चि च की म चि च च च च च च च च च च च च च च च च च

रणंभवेत् से १ कंस्याद्यरार्धतुय वाद्यारव्यंचरंतुयत् भूतार्धाच्छ कुनादीनिस्थिराणि करणानिच ॥ श्रायभद्रानिएियः॥ शन् कुपक्षे=।१५ पूर्वदलेभद्रा४।१९ परदलेक्ष्यापक्षे ७।१४ पूर्वदलेभ

दाशा परदले भद्रा दिनाभद्रा रात्रोशुभा रात्रिभद्रा दिनाशुभाः ॥नकुर्यान्यंगलं विष्ट्यांजी वितार्थक दाचन कतम्बतानतः सिमं तस्तर्यनाशमामुयात् यनुभद्रा कृतंकार्यभसादेनेवसिध्यतिः

CC-0 Kashmir Research/Institute, Digitized by eGangoti

मुहूर्तसिंधुः

संवासेषोडशेमासेसम् छंति इनश्यति ॥ त्र्यमद्राकृत्यम् ॥ च धबंध विषान्यस्त्र छेदनो चाटनादिकं ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादिकर्म विष्ट्यांचित्रध्यति ॥ १॥ युद्रतथाभूप विलोकने चभयेवने धात विधोह ठेच ॥ वैद्यागमेपो नगमेचशत्रो रुचाटनेकर्मि एसंप्रति छा ॥ २॥ सिंहोष्ट्ररासभलुलायगजाश्वकर्मि स्त्रीत् विष्टिः स्याध्हरितालिकार्चनि विधावुस्तर्गजातिकया वैमेयेषुशियार्चयोः फलवती होमे सदे वार्चने सोपाकर्मह ताश्चनीजलधरा चापाक्यजिक्या स्वारद्धेध्वरकर्मणीष्ट्यजने भूपप्रदानेतथा ॥ ३॥ भद्राविहितकार्याणां च्पभूदेवता ज्ञया ॥ च्एांस फलयत्य र्थसावाभर्गसपर्यया॥ ४॥

अरा	सायामगराग्यमगा।												
शुक्रे	5	भ	द्राया	सुरव	पुछे		कृष्णेः भद्रायामुखपुद्धेः						3 .
8		८ ११ १५ तिथि.							פי	90	9	8	तिथि.
es		2	9	8		या • ऽऽ घ • ५			3	E)	यामा । घटि :५
6		9	દ્ય	3		या.ऽ घ.३	v	•	2	eg		8	यामे। त्य-घ-३
	भ	द्रावा	सः	(\$22);			भद्रायादिङ्यु रवम्.						
8	4	33	92	मर्स्य	98	6	9	94	8	90	99	3	तिथिः
9	2	3	ь	स्वर्ग	र्य.	आः	द∙	并.	प.	ग-	3.	char	मुखं-
w	9	9	90	पाता ले.	4	2	3	8	43	દ	e	ь	पहरेम <u>ु</u> रवं.

मुहूर्तसिंधुः

भ	भद्रांगस् घटीनां ३०										
4	4 9 99 8 6 9										
कार्यहा नि	माराना श्रा	द्रव्यनाश	किति.	श्रयंना.	मंद.						
मुख	गरेड	यक्तः	नाभिः	कटी-	पुछ.						

अयेनिद्याष्ट्रिनः शम्मायातुः क राही १ नंदिनी २ रोद्री ३ सुमुखी ४ दुर्मुखी ५ विन्याच ६ वेष्णावी ७ हंसी ८ भद्रानामाष्ट्रकं कमात्॥

भद्रारूपम्.

देखेंद्वेःसमरेमरेषुविजितेषीशः क्रधादृष्ठवान्साकोपाकिल निर्माता खरमुखीलांगूलिनीचित्रपात् विष्टिः सप्तसुजामृगं दगलका सामोद्रियोतगादेख्यीमुदितेः सुरेस्तुकरण्यांते नियुक्तातदा त्र्यावश्यकेभद्रास्तोत्रपाठः धन्यालधोमुखी भद्रामहामारिखरानना कालरात्रिर्महारोद्रीविष्टिः श्वाकुलप् त्रिणी भेरवीचमहाकालीदेखानां चक्षायंकरी द्वाद्येतानि-नामानियातक खाययः पढेत् नतु व्याधिभवेत्तस्य रोगीरोगा त्रमुच्यते ॥यहाः सर्वेतुकूलाः स्युस्तस्यविद्यं नजायते रणेरा जकुले यूतेसर्वत्रविजयीभवेत् सर्वाधिसिद्यस्तस्य भवंत्य त्रनसंशयः रत्नकोशीभद्रास्तोत्रं स्तोतव्यः पूजनीयाचनर स्तदोषशांतये.

मुह्तिसिंधुः

5	m	跃.	(वं	56	मा	站	站	0	(ह्वर्यः	o	
211	نظ	भं	英	计	ितः	塔	茶	0	-7F	0	
	195	対	啦	村	tie	आ.	in	0,3	·两·	23	
	DESCRIPTION OF THE PERSON OF T	di	計	存	اب	कि	भंद	c	<u> </u>	•	
	兹	in	150	ارط	भंद	स्ताः	前	6	गदः	6	1
	京	अंव	¥.	対	片	कि	惊	٦	मुबादः	8	4
	6	श.	林	iv.	या	ře	对	0	3मर्स्	0	2
	मंद	ध.	ti	市	तिः	his	वि	0	: स्प्रह	0	9
	缸	郑	4	स्ट्रिं	(त्वे	अं	स्र	0	:क्रीमी	0	
	坊	功.	b 6	并	刘	मं	कु	8	ग्राक	c	1 6
	來	شا	知	京	田	체	tie	0,3	र्म दि:	93	Cu Chimicata Cara
	वि.	50	सं	i	सं	तिः	सं	03	उतात.	0,3	
आन्द्राद्वागाः	स्ताः	tic	対	in	岛	ربط	अं	8	:क्रेड	A	
5	मं	惊	対	if	H.	対	मं	8	संदर्भः	8	E
5	tic	垓	in	श्रः	以	读	आ	•	सिनाम	•	
<u> </u>	लं	4	56	सं	ti	市	सुः	0	· 床和	0	1
Tr.	56	包	前	郑	in	lis	त्वं	0	FE	•	18
* 7	मं	许	惊	सं	150	F	N.	8	सुद्धाः	x	1.5
	村	hic	सं	100	냚	核	山	s	ं फिट ह	3	
	ربط	in	कु	56	냚	i	枯	0	जीवस:	0	174
114	तंत्र	100	豆	मंध	क्रि	h	Fis		कुद्धः	0	
	京	甘	学	惊	椋	14	计	8	:म्श्रास्य	30	
	tiv	掠	fie	南	Fis	ti	新	٥	: 西 族	0	
	市	وبط	in	40	عظ	15	ti	•	. गिनाः	0	
	is	ونط	pic	定	tic	林	h	6	ं भिन्ने	6	
	节	草	मं	to	城	掠	156	0,3	कायदंह:	03	
	京	in	क्रं	tie	京	his	龄	0	ज्यान्दः	0	
	1	tr	·ti	fon	tiev	pin	क्रि	pris	:ाम्फ्र	1373	l e
				-	2016			100			

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गानंदादियोगाः

मुहूर्नसिंधुः

मर्थियासे दिन ॰ पूर्व पर ३ वर्ज्या नि शर्मे साधारण यहणात पूर्व दि १ पर दि ३ वर्ज्य के चित्तु ३ । ७ दिने उत्पातात् दिवसानियोह्य नि भोसानमा ६ वर्ज्यम् सर्वयापे सप्तपंच त्रिष्ठ स्त्रान् पूर्व वर्ज्य येद्या नामो ज्युं हा हा दिषु आवश्यके न्ये कं विपाशे रावती तीरे श

		त्य	ज्य	मुह	र्नाः	later in	श्रुमाः								
₹.	र्च-	मं.	<u>a</u> .	ब.	श्र-	श्र	वारा:	₹.	मं	मं.	कु	च.	श्र-	शः	गरा:
28	33	32	b	82	28	92	इ. धा∙	3	9	2 क	६	4	4	9	शुः
38	92	90	b	E	8	2	कुरि	2	2	9	2	2	ε,	93	श्रु
E	8	2	38	92	90	6	. इस	ч	6	3	90	3	30	98	र्युः
6	٤	8	2	98	92	2	काछ	99	94	92	0	90	93	984	श्रुं.
0	93	3	2	94	ч	99	अर्धया	92	33	8	0	0	94	ч	मु.
90	٦	E	8	٦	38	92	यमध्	2	90	2	٥	9	38	0	मुं:

नद्रोश्चित्रपुक्ते विवाहादिश्वभेनेष्टं हो िक ग्रागित्नाष्ट्रं श्रामित्रपुत्रम्य विश्वामित्रपुत्रम्य तेष्ठा पार्याच्य विश्वामित्रप्रम्य के प्रमानि स्वामित्रप्रम्य स्वादीनां त्याच्य माह स्वस्ति मिगुतनये नारी िप्रयते हह स्पती पुरुष दंपत्यो सह मरणं उदि तेके ते करमहणे नष्टे चंद्रत्याशक के नष्टे चे वह हस्पती मंगल नित्यो हाहं त्यरिनोपित्रकारयेत् भृगः उपाक मीत्सर्जनं च पित्र चंद्रम्यनापणां स्वयरोह स्तृहे मंतः सर्पाणां विकिर्ष्यका ई शान स्यर्व के विष्णीः श्यनं परिवर्तन् कुर्याच्युक स्यचगु रोमीं द्येपीति विनिश्चयात् धर्मप्रदीपे गोदावर्या गयायां च श्रीशे के प्रहणहये अयने विषु वे चेव चातु मीस्य व तेषु च उत्स

मुह्तिसिंधुः

वश्व सर्वेषु सीमतऋतु कर्म सः सुरा सुरे ज्ययो खेव में दियदो यो नियद ते बाल्यभावःस्त्रियंहन्याहरभावःप्रतितथा तस्माह् ल्येच वाध्येचिववाहंनेवकारयम् अध्यक्तकजीवचंद्रमसांबाल्य वार्द्धके भूगोबल्यंपूर्व ३ त्रिदिनपश्चिमे १० दशादिनानिः पूर्वभूगायस्तेष १५ क्षंवार्धकं पश्चिमे ५ पंचिद्नं जीयस्यो-भी १५ बाल्यवार्धकी चंद्रस्यदिनार्द्धवालत्वं वार्धकं त्रिदिनं अत्रकेचनपक्षांतरेर्बहुविधमाहः दशा १० दिन ७ सप्तदिनं ३ त्रिदिनंगुरुक्तकयोर्बाल्यवाईक्ये अन्येरस्तदिनचतुर्योश मिते सर्वेषांबाल्यवाध्येभिहिते देशपरत्वेनापरे यथाचग र्गः शक्कोगुरुः प्राक्परतश्चबाल्येविध्येदशा १० वंतिषुस प्तक रात्रंहणे षुवंगेषुचषर्चपंच धाद शेषेषु घरत्रत्रयमेव वर्ज्यम् न्यूनाधिमासयोः शाभकर्मनिषेधः न्यूनमासस्तुर विसंक्रमद्यवाश्चांद्रोमासोभवति सचबह्रभिर्वत्सरेःसमा-याति गतस्यमासाद्यरं स्वयमासः १४१ वर्षेः समायाति क चित् १६ वेषेः समायाति एकएवयदामासः संक्रातिद्यसंयु तः मासद्यगतंश्राद्वंतिसान्नेवप्रशस्यते तिथ्य धेप्रथमे यूर्वी दितीयेथे नथो नरः मासा विति बुधेई यो सयमासस्यम ध्यमो मासक्षयेम्छे छपती वसंधरा क्षयमासो भव दासि स्तिसिन्बेषेथविप्रहं दुर्भिक्षंवाथवापीडांराष्ट्रभंगंकरोतिवा त्र्यथिमासस्तुरविसंक्रमरहितश्चांद्रोमासःसच ३२।१६।४ साय यये मसि भीवाभिकाण्या स्थापमण श्राहदूले भने भागा सेन ग्रात्रका

याणि शरददेवानिक माणिक नेज्यानिश्तभानिच मिलिनेन निवोक्तानिमासिपेत्राणिचोभयाः गर्भाधानादिका ग्रन पाशनांतामालम्खंच ग्राक रिवधात्संस्कारानान्यइत्या हभास्करः प्रवृत्तंमलमासात्माग्यरकाम्यमसमापितं स्त्रा गतेमलमासे पितत्समा प्यमसंशयंद त्रयो दशाह पक्षोपि शत्मकर्मणिनिषदः पक्षेविनष्टसकतं विनष्टक सिंहस्य दिएरोनिषदं गोदोनरक् उद्मागीरिथयाम्यनटां तर्विवाहिन षेधः सिंह सिंहांशक गुरी नान्यत्रदोषः मेयरवीन प्रतिषेधः प रंसिंहाशकगतः सर्वत्रवर्ज्यः एवंमकरस्योपिसर्वत्रवर्ज्यः के विदेशपरत्वेनाहः एवमती चारगोपियर्ज्यः यात्रोहाहप्रतिषा श्वगृहचूडा बनादिकं वर्जये यत्नन श्रेवर्जा वेवकानिचारमे शीनकः गुर्वादित्येदशाहानिगुरासिहेदिमासिकं गुरुव-कातिचाराभ्यामसाविशतिवासराच् त्रान्या ध्याभाः

मन्बादितिथयः												
के. कार	वें	ज्ये. शहः	श्रा श्रा	श्रा• रुः	भाः	भा शहर	काः	मा-	यो ।	मा शु	फा. श्र	
3.	o	94	90	30	3	43	90	٩	99	. 0	94	
	युगा	धाः		कं	द्रादिर	पंज्ञा.						

-		युगा	धाः		क	द्रादि	पत्ता.	सा	शसना-		
	श्र. भाः	ये. शुक्तः	भां.	मा •	केंद्र	पए।का	श्रापी किस्म	चर.	ास्थर	द्विस्त्य भूग	
	8	a	93	a o	9 =	a 3	3	3.9	23	3	
					. g	3	e ex	8		६	
	月日	走	E Tro	किति	90	99	35	90	99	92 E	
-1	-		(0.00)			1	L DI III	d by o Canastri		3 N	

CC-0 Kashmir Research Institute, Digitized by eGangotr

मुह्तिसंधुः

LA PA	श्रायदिवारात्रीभ् मुहर्नाः														
राओ	म्र	मारु	नस	भर्त	विष्णु	जीव	बंद	धार	वर्द	यम	नस्य	ध्या.	यहिंबु-	याजचर	शिव.
दिवा.	भग.	श्चर्यमा	श्रद्धीश	र्स.	शकाणी	इंद्र.	विधि-	वेधस.	वर्रान:	站	43.	षितर.	सर्प.	मंग.	शिव.

दिवासुह र्ना रुद्राहि मित्राः पितृ वस् ज लं विश्वभि जि हु ह्म शकें द्राभिकां रोशपाशिनः अर्थमाभगइत्येनरात्रेराशाजपादि तः दशभेशारुद्रहीनाहरीनत्वाष्ट्रयायवः यस्मिन्भेयत्रक में नितननाथ मुद्र निके दिक्श्र ला यं चिनेनी यं तद दंड श्व यारियः व्यर्थम्गोर्केतुहिनिकर्णेराक्षसबाह्मसंज्ञीपि ज्ये ते यो सितिसति देने चंद्रपुत्रेभितिच त्यबाह्योभृगुस तदिनेराक्षसारव्योचजीवेभीजंगेशो सवितृतनयेवर्जनीयो मुहुनी पीराणिकारीद्रसिनमेत्रवारभवाः सणाः सावित्रश्वा-थवैराजोगांधर्यश्चाष्टमोभिजित् रोहिएगोब उसंज्ञश्चविजयो नैर्नात्तम्या इंद्रोजलेम्बरः पंचदशमोभगसंज्ञकः रोद्रगांध र्वयक्षेशाश्चारुणोमारुतोनलः रक्षोधानातशासोम्ययम जोवाक्यितस्ततः यूषाहरिर्वापुनिर्द्यसमूहर्नारात्रिसंजिताः क्षणोत्रदिनमानस्यरात्रेश्चशरभूलवः श्वेतोमेत्रोविराज श्वसावित्रश्चाभिजित्तया बलश्चविजयश्चेवसुहृतीः कार्य साधकाः न्यष्टमोयोभिजित्संज्ञःसएवकुवपःस्मृतः तसि न्कारेशस्याचाविनायाम्यंशस्याभवेत् इतिमुहर्तरलाकरे त्यादिमः संज्ञा यात्यायात्यादिक होतः १ सामान्यतयाशुभा

का भक्तालि रोहिलयश्वमृगः पुष्योहस्त वित्रोत्तरात्रयं रेव तीश्रवएष्ट्रवेवधनिष्ठाचपुनर्वसु यनुराधातयास्वातिः शुभा न्येतानिभानिच सर्वाणिश्वभकार्याणिसिद्धंत्ये बुचभेषुच पू र्वात्रयं विशारवाच ज्येषात्र्याद्रचिम्लभं शतताराभमे तेषु कत्यसाधारणं समृतम् भर्णाकितिकाचेवमघा म्हेषात थेयन अत्युयद्वयक्रमाणिएषुभेषुविधीयते श्रयसामा न्येन नूतनवस्त्रातंकारादिधारए। म् रो.उ.६रे अविव ह चि स्वा वि स्मनु पुन पुन्य धनि एषु भेषुरिका ४। ६। १४ ३० मारिहतिषोशानिभोमचंद्रान्विनाचरराश्युदयं ११४१० 190 विनाष्ट्रमक्त देवंद्रतारा नुकू छेवा सोधार्य्य ।। त्र्यथि शेषतः श्वेतवासोमुहूर्नम्॥ उ०३ रोन्हः स्मिश्वियुव्यन्विः स्वानि त्रानं धानि पुने रे एपु भेषु क्रक्रबुधजीववासी इ तरदोषरहितेकाभम्॥ रक्तवस्त्रधारएां॥ स्प्रिविधनिष्ठाः ह. ५३. एषु भेषु रिभोमगुरु शत्कवासरेइतर दोषराहित्ये कपिलपीतयोर्मु-॥ धावः लघुः विः स्प्रनुः रेः स्प्रिविः धनिः विः युष्य एषु भेषु बुधजीवर विवासरेः इतर दोषराहित्ये॥नी-लक्यामयो मूहर।। उर्वपूर्वधारहर विर खा विर युनर त्राधिर भ र एषु भेषु शनिरविवारयो रितरदोषाभावे॥ पर्वरक्रमुहू।। उ-३ रो- हा-श्राधि-पुष्प-चि-स्वा-वि-श्रानु-ध-पुन-रे- मृन्य-एषु भेषु चं र का ह बु एषां दिने पूर्व कि दोषरहिते। कोशेय वरम्भमु।। म् ज्येन्या ग्राष्ट्रे वि रु एषामन्यभेर जी च

गाम्हमसिधुः-

वारेषु पूर्वी कदोषरहित्ये॥ रोमजवस्त्रमु ॥ इन्बि स्वा विध पू. ३ उ. ३ पुन-पुष्य-रे स्मार्श्व एषु भेषु र का का वास रेषु पूर्वी क्तदोषाभावे ।। ऋत्रस्त्रीएगां विशेषः॥ उ.३ रो-युन-पुष्य-एषु भेषुसुभगान्दध्यान्वासः॥ स्त्रीएगांदंतादिचूडकमुग क्षय मासाधिमासयोः शतकेज्ययोरस्ते धनुमीनस्ये सूर्येसिंहगे जीवेदेवशयनेचनबिभ्यान्।। स्त्रीएगांस्वरणिद्धारएं॥जी व-काक्र-र-चं-एषां वारेह स्तपंचकं ५ धनिष्ठा रे न्यारिव एभि भें! पूर्वीक्तदोषाभावे स्वर्णरो प्यपाषाएग शरवसुक्ता च्यकी कविद्वमदंतचूडकाधारयाः ॥कोममणिचूडकमुः॥ मधाः न्यार्द्रा- श्रान्ह मृदु विशा स्वा वरु त्राधिव पूका धनि एषु भेषु शुः जीन्रः चं गारयुः इतरदोषाभावे॥ ऋत्रहारीतः॥ युनवस् त्तराषुष्यरोहिएय कि शिवनीषुच ॥ पतिजीवित मिच्छंतीनेव स्त्रीकनकंस्पृशेत् पोष्णवसुतुरंगेषुरोहिण्यासुत्तरात्रये पितर्जावितमिच्छतीनेवस्त्रीकनकंरपृशेत्।। सतूलकंचुक धाः युष्यः उ.३ त्रानुःरेन्धः त्राधिः हः निःस्वाःरोः एषु भेषु नं जी का वासरेसिनथो॥ स्तवर्णरजनतंतुमिश्रधाः॥स्तव र्णनंतुसंिमश्रंवासोधार्यं रवोकुजेराजनंति इक्रिके छोवस्त्र-धारणभेषामं। ऋथवस्त्रादिधारणेलग्नशुद्भिमाह॥६।२। पाट ॥११ लमे बुशाभमह युक्ते बु केंद्रेशाभयुने वस्त्रंधारितंशु मं ऋष्टमेशान्द्रे १।४।७।१०।६।६।१२ मंजीरं एषुशामदं ५। रा निहार एक्टरने स्व Raslaren Prestitute Agilizad by हत्तान्ता देश भावेषुश्चम

मुहूर्नसिंधुः

योगेकरकांगदकर्णकभ्षारशनाहारादिधृतंशभंस्यात्॥ मत्येकंनक्षत्रवारफलानि॥ प्रत्येकमिदंसमानफ्लच॥

	नक्षत्राणिः								बारा.		
श्रा	भः	क्ट -	रो.	मृ∙	श्रा:	मु.	ति.	भ्र	₹.	चं •	मं-
बस्प्रयाप्ति	हरणम्	वन्हिमा	धनलाम.	शजमी	इब्रीह.	धनाप्ति.	ऽथागिम.	शोक.	जीवीं.	जलाई.	दुः स्वदं
मं •	पू.	3.	ह.	नि.	स्वान	वि-	श्रम	ज्ये-	बु.	ह.	भ्र-
मृत्य	(क्स)	र्मपद.	कर्मासि	इस्राप्ति.	द्धार्न	शम्	बहुसल्.	(मेत्राप्तिः	धनः	सानं	सीखा
₩.	पूर	3.	श्चर	थ.	शः	पू.	3.	रे.	श.	श्रया	वेवाहा
त्रं वर्द.	मिथिछ	सेगा.	मिह्यानं	नयनस	धार्च	विषमी:	जत्रधी.	रत्नाप्ति.	मउं	द्यावश	यके हिजा ।जदत्तंच

_ वर	यस्त्रचर्कः							
दे.	रा		•	₹.				
म.	रा			म.				
दे	रा	T		दे.	100			
अपरचर्कः								
र्द्ध	म्		ال	याः	1			
3.	0	RAME TO SERVE		₹.				
वा.	प-		并					
भ्राष्ट	रि-	4 2	F.	म.	1			
92	9	2		3				
	99: 0		STEEL ST	1	11			
99:	8	0		8	1			

नियेषिधार्थं नूतनवस्त्रेदेवाद्यं स्कृति पंकादिति हे देवम नुष्यां शेष्ठभम् भोगप्राप्ति र्वतां शेनरां शेमित्राप्तिः रक्षों शेमृत्यः प्रांत्ये सर्वां शेनिष्टं त्र्यप्रचक्रयो स्नु मध्यत्र्यं शेच मध्येचको छेचो ध्वाधरेमृतिः प्राच्यां तत्रभ येखस्मीरा ने य्यामित्र जभयम् याप्यायां जायते व्याधिने कित्यां पुत्रवर्धनम् वारुण्यं धनसंप्राप्तिर्यायव्यां धनलुख्ये उदीच्यां नु महोद्देगमेशान्यां धर्मरुद्धिकत् नवधेतत्क लं जो यं को प्रसंधी फलद्द्यम् ध्वजपद्यां कु मुह्तिसिंधुः

शच्छत्रचंद्रदीपारुतिः भा निंदात्रिकोणासूर्यादिकव्यादि कृताक्तिः कोष्ठेशम्भेशमं विन्ह्यतीवक्रहंभंवत् नियेनि द्यंत यादु एमन्ययामध्यमं फलं वारं वारं यस्यवस्त्र दूषितं दहनादि भिः तस्यविद्यभवेदाशकतत्त्याज्यंशकमिच्छना दग्धमात्रंत्य जेहरूनंस्ना वाविधे श्वरंयजेत् एक हां एक मानेनिं दांषद्पर्य तोधिकम् नदीयोरक्तवस्त्रोस्यादीर्णकेशियपदुजे भूषएोहे-श्चिरतादी नित्यधीन तिदुर्छ भे एवमेवराशिचके विवस्त्रफ लंबोध्यं रिश्वकेचाधिकफलं बोध्यं केषां विनाते चलारोदेव नाभागाद्दीभागीदानवानां उभीमानुषीभागश्चेकोराक्षसा नां उनमंदेवताभागेदानवरोगसंमवः मध्यमेमानुषोलाभा राक्षसंपरएांयुनः ॥ न्य्रथवस्त्रनिर्माराम्॥ रोतरे विन्त्र्यनु मृ उ.३ एषुभेषुश्निभीमं विनातंतुभिः परसाधनं क्रमं॥ त्यन्ये पामतेतु॥ लघुः मृदुः क्र-पुनः ज्ये का जीः चं रः नक्षत्रवारयोः सुलमे चीरनिर्माणमाहः त्रान्ये वेचमाहः चर मृदु क्षिप्र रो ज्या एषुभेषु र चं राषा वारेषु का भलमे चीरनिर्माए। मिष रंज्ञानादिकंपाहुः॥ नानाच राला । मु ।। चि श्र श्रमु रो मृ रेन्ह्र-ज्यं स्वा पुष्य एषुमेषु शामवारे पुराशी १।३।५।७।१। ११ सूर्यक्षीत् १०।१४ चंद्रनक्षत्रभिन्नेशहमं स्ममुमेवसूचीकर्म णिक्षममाहुः॥ वासोरंजनसुहून। युन-युष्य-हन्विःस्वानिः त्रान् अधिन त्राधि एषुभेषु मं गु का वासंर त्रात्रापरे चर स्थिर त्यानु निः मृग च्या निष्य मूर एषु भेषु र जी नं कर वास

रेशोभन उमेरिकामारहिति विधोवस्त्र रंजनमा हुः॥ व स्त्रालनसुहर्तः॥ युनःपुष्यः स्त्रश्विःधः हः विःरवाः विः अनु एषु भेषु पुंतरमे बु श विनारिक्ताषषी आद्ध पर्वदिनानित्य का॥ कछाबंधनम् त्रयोत्तरावसुयुनर्वसुरेवतीषुपुष्याशि नीधात्भतस्त्रयंच एतानिकच्छाविधिबंधनानिसोस्यग्रह रयदिवसेचसितेचपक्षे॥ ऋशोपानत्परिधानंचर्मरुखंच॥ चि.पू.३ त्रानु त्रा न्ये श्रायके मं मृ वि हा मूरे एषुभेषु सु बु शासारे त्रापरेचेवमाहः मृत्यू ३रे विजये त्राम् धन्हःचि एषु भेषु कार शनिवारेचर्मकत्यं ॥ कुसुमादिधारएां॥ अधिश त्राशि पुष्य पूषा न्य्रानु ह नि स्वा पु रे मृ शतभवासरे चंदन त्रागरकस्तृरिपुष्पाणां धारणंशरभम्।। चंदनादिधारणं॥ मुंगा लघु चर मृदु ज्ये पूषा एषु भेषु युं लग्ने ११३।५।७।६।११ शुभग्रहवासरे कपू रकस्तुरी हिंगु क अगरु गोरोचन चंदन धारएं। शुभा। पुष्पमालाधारए। सु।। मः नी श्र-ध-शन्ता-एषु भेषु जीव शु चं वासरे चंदा लोकित विषमल भे १।३।५।७।२।११ कुक्तममाछाधारएांशुभम्।। काचक ज्ञाउयोधीरएा स्वा ध मृदु वि त्याध -एषु भेषु र श शुक्र वारेशु भंम्। त्र्यथनवपात्रे जलधारणम्। जीव-का-चं-वारेषु-का-स्वा-मृ- त्रादिव-स्थिर-ध निः सूरमः युनः युष्यः एषु भेषु॥ त्र्यथशय्यासनारंभः॥ युनःरोह पुष्प-उ-३रे त्राशि-मून्म-चि-एषुभेषु-जी-चं शत्बु-वारेषु नमृतयोगे सिहियोगेजययोगो च दीपिका नामरखत्रदो त्रा शाच्या सनादि शिर्म। त्राध्यात्रेभोजनम्। त्रामृतयोगिसिद्ध्योगेनवान्न CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्तसिधुः (२५)

भक्षणीक्त काले पात्रभीगरुहभः॥ नवभांडादिसाधनं॥ मृदु ध्रवः चरः क्षियः एपुभेषुशानिभी मान्यतरवारेषु शरभितथी शर भलमेलोहधातुत्र्यश्मम्ताष्ट्रापणादिनूतनंशामा। राज दर्शनमु-॥ श्रन्धन्शन्मृदु-क्षित्र-अन्व एषुभेषुक्रभवासरे ससुमे केंद्रस्थेषुकाभेषु यात्राभिषेकोक्त योगेश्व। दीक्तामुः॥ मृदुःधुव चरक्षिप्र एष्भेषु अर्केवारे स्वदेवितिथिभेचश्रभलमे १० जीवे पांपेबल हीनेदेशमेः शत्मास्थिरेचलमे ॥ वीराभिचारमु ॥मन त्याः भः मूः मृः एषु भेषु बुध वासरे कुंभ उमे श्रष्टम शर्धे शरके तुर्ये ॥ मद्यारंभमु०॥ मन्त्रान्त्रान्त्रान्त्रन्त्रन्त्रान्यन्त्रन्तेन्त्रुभेषुत्र्य मृतयोगेपुंलमे १।३।५।७।९।११ शक्तचंद्रयोक़ेंद्रगयोःशनि-वासराभावे।। ग्राथसंन्यासमुन्॥ उन्द्रो एषुमेषुजीवरविवा रयोः पांपेर्निबलेः अष्महानेविधो ६ ११०१ १। बृहस्पतीस्थिरल मे ३।६।११ शनी १२।६ भार्गवेश्रभाय॥ त्यब्रह्मज्ञानीयदेशः॥ चंद्रेमियुनकन्यागतेशा भयहेषुलभगेषुपापग्रहरहितेलभेपा पत्यमरहिनेशहभिवधो शहभवारेशहभई बहुभः ॥ स्रयगो ऋय-विकयो ॥ हन् श्राश्वि पुष्य ग्राभि क रे मृ पु ज्ये श थ एषु भेषु श्रमवासरे ऋथपश्रनांदमनं क्ररो हस्या पुष्प श्रभ मृ एषु मेषु स् मं वारे रिक्तातिथो त्र्यश्यस्यनसाकमोदि कं। रेम् चरस्थिर विन्त्रानु ग्राधिक हा पुष्य ग्राभि एषु भेषु भीमशनिबुधभिन्नवारेश्रमं॥ ऋशोष्ट्रमहिषाजाव्यादीनां निश्चित्तकर्म। तिर्यद्भारवन् सन्त्रे पुषा स्म ध शा एषु भेषु

र-चं-बु-जीय-का- गरेषु के चित्रानायी प कमलमग्रह योग। न्यथाव्याधादीनांपालनमाह ॥ मित्र लघु न्याः रो ज्ये पू ३ एषुभेषु शार गु भी मवारे पालना दिकर्मशक्तं॥ ऋष्यवान र रुचीदिपालनमु ।। त्याः स्थिर उद्यु चर मः एषु भेषु रः चं बुः जी शह वासरे षु रवेलन पालनादिशहभं ॥ त्रायकु कु रादीनांपालनमुः॥ निर्यद्भारवर्धमुखभेषु रः चं बुधः जीव शारेषु शारेषु शासियों शकुंतपालनमभिनवपहरांचश भं॥ न्यथमत्स्यभहणं सुः॥ शःस्वाः रोः प्रवादारुणभःहःए षुभेषु-भी-शह-र नलजंतूनां कुब्राएयां स्थाप नंचशहभं॥ त्रा थपसीएगांकमिएयाह।। चंद्रेपिसदेकाएगोलप्नेशम्यके वुधमंद्योः सबलयोः पक्षिद्रेकाणः तुलामध्याते सिंहा यः कुंभा द्योद्रेकाएगः पक्षिद्रेकाएगक्रभस्वामियुनो दृष्टोवावत वान्भवति एताहशेशकभम्।। श्रथव्यालग्रहः।। पूर्भः म एषु भेषु वारे भी शन्योशमम् तिशीरिकायां ॥ त्रायसा मा न्येनपशर रक्षणप्रवेशः॥ उ.३ रो. श्राचि एतङ्गिनमेषुभो मंगिनारिक्ता ४। र्।१४। ८।३० रहितितिथिषु शहभयुतलमेत्र ष्ट्रमशाद्धे पश्रत्योनिनक्षत्रे चरेलये शहभः त्यत्रापरेभी मस्या नेरविमाहः ऋषविऋषाविवकार्योपश्चाम्॥ श्रायगवां कर्मशर्रिद्रः॥ लघुः शः रेषु वि न्ये ध एषुभेषु चं बु इ शर वारेषुक्रभाः॥ अययमानामेषीमहिषीणां सत्यं।। पू.३विः रे मू मृ ति ध पु श क्षिय एषु भेषु स् चं स् श वारेषु शहभं

मुहूर्तिसंधुः

॥ वामीगरुत्मतवरनो कृत्यं॥ हुन्त्र्यश्वि ज्येष्ठा मृदुन्स्वा पुन्एषु भेषु स्रचंशाः एषांवासरेशाभम्॥ त्राथर्षमादीनाव्यव हार्शि दिः॥ चरः क्षिपः मृदुः क्रबः एषु भेषु चं बुः इः शरः वासरेषु ४। ६। १४। ६। ६। ३० वर्जितासुतिथिषु १८ भा।। ऋथनवीन रष-कृत्यं।। वि.यु ज्ये लघु धिन शारे एयु मेयु चं वु र श वासरे व शत्भयोगे शिर्षत्यमेष शत्मम्।। त्यानमेषमहिषीणां कत्यं।। मून्युनिकारेन्यू अक्षिप्रमृन्धावि एषुभेषु सून्यं काजा वासरे वुक्तमं॥ त्राथउष्ट्ररवरघोटकादीनां कृत्यं॥ हु ज्ये व्यावस्थाव त्रानु-पुन-एषुभेषु र-शा-वारेषुप स्यादीनांचकर्मशाभम् ॥ श्रथपशाधनधानुवस्त्रधान्यादीनां ऋयविऋयशाद्धिः॥ ल घुन्यव्यक्तयेतेवतिवपुव्यविक्ति कामयहवासरेकामस्॥ त्य श्विनिमयसुहूर्नः॥ श्वमृ०३उ० ग्राष्ट्रसु श्रव्धारे निविष् एषुभेषु चं का हे वासरे स्थिरल मे कमेषु केंद्रगतेषु ।। त्राथपरा एयक्रयविक्रयमुन।। पूआन् उभान्युष्य हन्म्नाव उन्दर्न श्राव्यान् १०।११।१।१।४।४।६ सुभेरेपएयकर्म। स्रथ विक्रयमुन। प्रवि कन्त्राष्ट्रे भा एषु भेषु कुंभविनासितियो १।४।७।१०।५।६ १६भी: ३।६।११ पांपेशुभः॥ न्य्रयविपिताः॥ मित्रः फ्राय० क्षिप्र एषु भेषु चंद्र शतके १२। पापवर्जिनयोः २।११।१० क्रभेषु।। अथलतागुल्म इक्षरोपणं।। हृद्युष्यव्यविभाग विब्सदुव्म् व्याव एषु भेषु या भरे सानियो १।४।७।१० गुरीपा परहिने चंद्रेवारिचरराशी शत्मयुक्ते चतुर्थेशतमं ॥ त्र्यथीयधी

भक्षणं ॥ इः विः स्वाःरेः ग्राश्वि पुष्यः ग्राभिः मृः ग्रानुःश्वःधः श मूर्गषुभेषु ३।६।६।११ लमेषु नं बुर हरका लमेवारेवा सूर्यवाल ग्नात् ७। न ११२ शहरे सातिथी जन्म र्सन १ वैद्यो ४ स्थोपधं ७ व्या धि १० रोगिकमाच्छ्रभयुक्तेतस्य तस्यक्रभम् पापस्केतस्य-हासः अथरसभक्षणम् चर मृद् एषु भेषु नंदा १।६।११ भः द्राशाशास्त्रासुतिधिषु चं राका जी एषुवारेषु पुंलसे ११३। ५।७।६।११ चंद्रेषूर्णे।। ऋषिप्पछीहरितक्योर्भक्ष्णमुन।। लघु रेन्मु अन्ध शा एषु भेषु र चं जी शह चारेषु भद्रा २। ७।१२ रिक्ता ४। ६ ११४ रहिति विधिषुशुंख्या ऋभ सर्गं शर्भं। अया-हिफेनविषभक्षणामुः॥ चरःस्थिरः लघुः मृःचिः एषु भेषु रःशः चं भी वारेषु॥ त्राथमां समुदूर्न मर्क मजून् मुहूर्न ॥ शाउमा दारुण एषु भेषु र भीः श शि वारेषु पर्वरहितदिवसे ॥ त्या-थीषधनिर्माणम् चर-धिम-मृदु-भ्रव-एषुभेषु शनि भी-र हित्यारेषु १।४।०।१० कंद्रगतयोः सूर्यबुधयोरत्या शतभेश्व ॥ अयरससाधनं ॥ मिश्र-ग्रा-मू-ग्रा-मू-ग्रे-ध-ह-एषुभेषु-भीम र जी एषुवारेषु जया ३। = 193 तिथी गुरुभी मधीरनसे धनुमीनान्यगसूर्य।। श्रथचूर्णीद्न। श्रमृतयोगे क्षिप्रन्तर एषुभेषु स् बुः वारयोः १४ शत्मस्वामियुत हुए योः इंदो शत्क पक्षीये तेल घृतसाधनंच ॥ अथवात रोगादो नेलो पवेशनं ॥ श्राष्ट्रे मन्यू विन्या भ क एभ्योविना चं बु श वास्तरेतृ तीयात्रिशनाश्के॥ ग्राथ्यमनिवरेचनधूमपानस्वेदनर

CC-0 Kashmir Research Institute Digitized by eGangotri

मुहूर्नसिंधुः

कस्तावाणां मुनाहाचि स्वा पुष्य त्याभि भा रो मृ य त्यानु ज्ये एषु भेषु सूरभो जी वासरे कभितथोरक स्नावे भोमहोराभो मवारी १।४।७।१० कु जेशनीरवीचाकेंद्रे द वर्जितरव ले युवस्वरे षष्ठेसकूरेचर १।४।७।१० लग्नेकर्मपंचकंशामम् अथहताश शस्त्रियामुः॥भित्रःशःदारुणः ग्राधिः विःप् ३एषुभेषु भीः र वारयोः कमम्॥ अधनूतन इसे भ्योफलपुष्पाद्याहरणम् ॥ कर्कराद्याहकारोक्षभरवामियुने कम्पगरेकमियोकम नक्षत्रेच॥ ग्राथसूचिकर्म॥ पुःधःचिः त्रानुः मृः ग्राश्यः एषु भेषु कमवारेकमितिथोकम्युके क्षिते तनो ॥ त्र्ययाक्वरूय म्।। रवा-पु-ध-श-क्षिप्रह-स्रश्चि-पुष्य-स्राभि-मृदुः स्थिरएषु भेषु रिकारहितिथोभोमरहितवारे धपतुविशेषारसूर्यवासरेचरे १।४।७।१० लग्ने शमे ३।११।०।४।७।१० स्मायकें द्रेगेः वाजिक मिहितंस्यात् लग्नेगु कि सुतेशाश चंद्रेषोषे: ३।६।११ हप कर्मकर्भ घृताई चएक सीरनंब त्एगादि भक्षणे अन्नपा-शनवत् सर्वाणिकार्याणिषुरुषाणामिवविचार्याणि॥ श्र थाश्वारोहणं॥रे त्र्यश्विशास्वास्यास्विःयुःहःयुष्यएषुभे षु भोम शा विना सिनिधों के १।४।७।१० द्रस्थे र्वपरे: ३।६।११ क्रमलग्ने त्रायाश्वचके॥ सूर्यभात्पसंधे १०पृष्ठे १पुच्छे ४पादे ५उदरे १ मुखे त्र्यर्थ लाभो मुखेलेयो वा नश्यतिचोदरे चरणस्थेरणे भंगोजायापुछे विनश्यति ऋ र्धसिद्धिर्भवेत्पृष्ठस्कंदेस्कंध्यतिर्भवेत् चक्रेश्वेशिरपंच

केसरवकराः पृष्ठेचिरग्ठाभदापुच्छे हेग्हिणीविनाशनकराः पा देखिभगोभवेत् नारांचोदरपंचिभश्चकुरुतेचास्येहिठाभोभ वेत् देहेचानयरोहणे फठिमदंसूर्यर्झतोबाकमात् सूर्यर्झात्बो ध्यम् ५शिर १०पृष्ठे २पुछे ४पादे ५उदो २पुर्खः

पल्याणचकंदिन ३ समस्ते त्र्यर्थायः

र्धास्त्रेयं नूतनप ३ मुखं कामायः

त्यारगनिर्मारोग्रा ५ त्हद्ये श्रेषाः

रोहरोचध्यें ४ सम्मप्त दोः द्वा

श्रायगजकर्मा ४ पश्रात्पदोः मांद्यदाः

४ पृष्ठे व्ययाः

त्रानु मृ रे विव ह

त्र्यश्विष्पक्षि रचा पुन न्या ४ मुखे धनं

ध-श-एषुभेषुरिक्ताभीमंशनिविना ३ ३ शिरे-छाभं-

१२। =। ऐषु प्राभव्यतिरेके ३।६।११पांपे ४ पृष्ठे - श्रियम्

राजयोगसत्वे दशमकाध्दीचकाभम् ८ पादे - भयं

त्राथगजस्यां कुशं शत्मिदिने शति ६ त्हद्ये - सुरवं

थीं शनिवासरे १०११ लग्ने॥ धजत्रांवारिगदीसुद्रत्त ॥ ल धुः वि युन खाः चरः खिर ग्राः पुष्यः शत्मवासरेशतमं॥ दं त छेदसु ।। पोषचेत्ररितेमासे ग्रचतुर्मासे छष्णपक्षेन रात्रीनभोमार्कदिनव्यातेरिकेशतभिदनेशतभर्द्यं ग्रान्यत्कर्मम नुजद्रव॥ ग्राथगजबंधनसु ।। तिर्यङ्गुरवनक्षत्रेषुगजच

मुहूर्निसंधुः

करान्ते व शन्रजीन् वारेषु स्थिरलसेशन्ते केंद्रिकोणे ११४ ०११-१५। ६ शत्मितधोशतमं ॥ स्थागजारोहणं ॥ स्रिकिः रे-श-स्वान्म्-चि-पु-पुष्य-स्र-एषुभेषु शतभवासरेशतभित धोशतभत्तसे ३।६

	यथगजनकम् सूर्यभात्						
3	कंभे	लस्भी					
3	शंहे	संभा					
2	मुखे	मरएां :					
3	स्हि	ुस्तरवं 💌					
8	ग्रगपादी	च्याधि					
8	पश्चात्पदो	भीति					
8	युच्छे	मृति					
8	पृष्ठे:	ज्याधिः					

श्रविके स्वतंगज कार्याणां क्रिध्विंध्या ॥ श्रथभूषण घटनं ॥ त्रिषु करिदनेस्वान्पुः श्राधनाः हः श्राश्वः पुष्यः श्रा भिः उद्देशे रिक्ताभी मरिहतेशु भग्रह युने लग्ने ॥ श्राथस्वर्ण कारस्यमुः॥ चरः मिश्रः चिः मृः लघुः एषु भेषु चं चुः कर्राम रेइ। नाव्यापाः । श्रास्कृति

थिषु तथा १।६।२०।६।१२ एषु त्रग्नेषु चंद्रजीवयुक्तेषु॥ त्र्र धित्रपुक्षरियुक्षरी॥ २।०।१२ तिथो सूः मंग्शः वासरे पुरु फाः विग्रणार्थः भाः नक्षत्रेत्रयाएगं योगेत्रिपुष्करः पूर्वोक्ति थिवारयोः मृब्विब्ध्व भानिस्युद्विपुक्षरः एतो हानि हिद्दिकार्य षु त्रिगुणाद्विगुणादो त्रिपुक्षरमृते पंचक इव्णांतिः कर्तव्या त्रिपुक्षरेत्रयः कार्याः पुत्तत्वाद्वोदिपुक्षरे मृतस्यचसमीपेच स्थाप्यापिष्टमयास्तथा कार्यादाहस्तुतत्सार्धस्ततकांतेतुशां तिकृत् कृत्वागाश्चद्विरण्यंचदद्याद्नंच्याक्तितः त्रिपुक्षरमृ

तेददा हो त्रयंमू ल्यमेचवा हि पुकरेचगो पुग्मंततो दाहोन-दोषकत्॥ श्राथरत्युग्भूषणद्यदृनं ॥ ज्येन्स् ग्राष्ठेन्त्राः पूर्भाशाः एभ्योविनाः १।५। ९ लग्ने॥ अथसुक्ता सहितं॥ स्वा यु श्र ध श र रो म् रे वि त्यन् ह स्थित पुष्य त्य भिः एषुभेषु सिन्धो कभवासरे कभग्रहाणां लग्ने॥ ग्रथपा त्रभोजनं ॥रोन्म् हः सिन्स्वातीः रेन्य्रान्यन्थाः युः पुष्यः ग्रानुः उ.३ सिनथोशाभवासरे ॥ श्राथशास्त्रघटनं ॥ क्ररःतीक्ष्णः मिश्र एषु भेषु बज्जयोगे शन्जी मं बारेषु शत्भं मूल्रो पुष्य श्र त्यश्वि त्यनु शक्तेनंद्रेवारे नंदापूर्णातियो मृत्ययोगेव्यवा रेच घटिनं पराजयकरम् स्वान्रेन्धन्धा एषु भेषु घटिनं को शाप त्नीनाशनं चि-उ-३ एषुभेषु घटितंशस्त्रं पुत्रनाशादं मृत्रू-ए षुभेषुघटिनंभयदंभवति क्रिविरएषुभेषुभोभेजया ३। = 193ति थी घटितंशस्त्रं संग्रामेजयदं ॥ त्र्यशस्त्राभ्यासः॥ हः विः स्वा स्र यश्वि पुष्य पु क र ३ जन्मभेसर्वशस्त्राणां स्रभ्या सः बुः जीःभीः रः एषां हो राया मेषा मेवल मे सबलेः केंद्र गेःबन जीन्मो रिविभिस्तथा उपचय ३।६।१०।११ में : १६ भें : त्राथवा ५६ वस्दु लघु अ । एषुकेचन कथयंति॥ श्रथधनुरभ्यासः॥ ह-चि-स्वानि- ऋश्वि-पु- हा-उ-३ शतभातिथोशतभवासरेशतभः॥ ग्राथधनुषिगुणारोपः॥ स्थिरवारलमयोः शहभर्सनियो ॥ त्यथसामान्येनशस्त्रधृतिः॥ पुःति हः वि रो मृः वि त्रानुः ज्येषा-उत्तरा ३ व्याचिनी-रेवती एषु भेषु सु जी शा वारे रिका

मुकूतिसिधुःविवाह --- (३३)

रहित तिथीगोचरेण रवेः शुध्दिरपेक्षिता पुंराशोजययोगे युव रवरोदये॥ ऋथनूतनसन्नाहरवेटकमुन्विः पुन्या न्यानु रेन्य श्वि उ ३ रो । एषु भेषु जी । यह । या र व वासरे ल में चंद्र युक्ते शुभेः ७।४।१० पापे६।११ गतेः॥ ऋथरव इग तोमरक टारिकाधार एा ।। रे स्वा वह त्संज्ञ पुष्प वह ज्ये विव ग्राव्य एषु भेषु का शब्र भीमवासरे तथेषांलयेच॥ यथबाए।धनुभिडिपाल धान। यन्हन्यानरोन्यूषानस्थिरनिन्धनमृद्वनिन एषुभेषुर्चन भीवशवरव वासरे भद्रावपूर्णाव जयाव आसु तिथि शतभल मे शहभाशिते॥ अयनिलकादिशस्त्रविधाने॥ उम्र दारुए। स्वानरे विवित्ति वह वयव मिश्रव एषु मेषु शव भीव रव वासरे रिका जयाति थिषु पांपेः ३।६।१०।११ उपचयगेः रिश्चिककुंभर पसिंहलग्ने वन्हिमुक्तपरमास्त्रविधानंसत्॥ श्रयशत्रुस धिगा अनु मन्ति एषुभेषुविष्यांतेतिलेसह्छेलमेन ११२ति थ्यो ॥ ग्रथनवांगनाभोगः॥ श्रव्धव्शव्यव्यव्सवावस्वह ग्रानु॰रो॰ एषुभेषुष्रभातिथी शामवासरे द्विपद चलचरराशि उमे शहभयुत द्षेउपचयगे चंद्रेपर्वरहितदिवसंशहभं ॥ अथ स्त्रासंभोगः॥ पर्वरहितेदिवसेनिदाद्ये १५ दिनेः हेमतेनित्यं-अन्यर्नुषुत्र्यहेः कामयेत अपरेत्यहाहसंतशरदोः पक्षाहर्षा निदांघयोः सेवेनकामतः कामंहेमंते शिशिरेन्छी।। ऋथगी तन्त्यादिक्र ।। रेन त्रानुन्ध शन्ह ने ग्रेन्ति उट अए मुमेयुरि क्तारहितिथो यहभवासरेशहभस् ॥ ऋथनरनर्तकारुत्मम्॥ CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

33		•
.R	मूर्धि	शहभं
8	मध्ये	शत्मं
8	पूर्व	कामनाश
8	दक्षिणे	कामनाश
8	पश्चिमे	कामनाश
8	उत्तर	कामनाश
8	नहे	क्रमं.

पुर्नाव्यव्यव्यव्यव्यक्षित्रभम् ॥ अय्य-भेर्याचाद्रने मु ।॥ भेत्रः चर्रुष् बुधरहितवासरे शत्मलग्ने जयापूर्ण तिथिषुचीएगादिचयतमं॥ अय्यकाह लग्नेपिका आस्रेव्स् प्रचेव्सव्यव्य एषुभेषुरिक्त तिथीयापग्रह्गारे॥ अय्

वादित्रसमयशाल ग्रामृतसिन्द्यादियोगेभद्रार्हितेशारार्।५ र एषुत्रनेषुशुभम् ॥ त्र्यथमृगया ॥ तीक्एा चर् उमः मिश्र एषुभेषुवत पर्वदिने र श भी गासरे ऋषमहादश शह्दे ऋकिमादिव ८।१४।२० समेमृगोबद्धः शेषेः समेर्ग तः विषमेरातः वागुरा श्राधाः ३ बंधाः ४ खंजाः १० तरु एगा १० दूरे याति खंजाविद्धा त्रापिदुले भाः ऋधावंधा लभ्यं ने दिन ऋ सा इध्यभांनंग एाये त्वाख्य क्षी हिनक्षिन्तं श्रंधारतुकोष्ठम-ध्यस्यावधास र्वत्रबंधिताः सन् ७ लग्ने१शो सहिती मृगया सिधिदी कुजबुधी पापांशका गतीमृगयाभंगदीलभेकभेसप्तमगेकूरेसिध्दः जलरा

शोजलगहे जिल्जमृगयास्थलजें स्थलजाः शत्मेलगं श्रम समयावतां दृष्टिस्तावत्मं स्व्यम्नाणिवधः वक्रेउचे त्रिगुणं शत्मे भभेषतमं पापे के शः पापं वे धे शी मंदिन स्थिं में ध्येया वं ति पा पिष्ट्रानितावतां वधः शत्मयुक्तानां पलायनं नस्त्रज्ञातिव ज्ञातिं पापसं योगाच्चतु श्वरणेषु त्र्ययपश्चात्माक्षृष्ठयो क्र् यात् मातं स्वांशेयहे द्विगुणं देकाणे स्वीयेवको चे त्रिगुणं वदे त् योनयो विवाह प्रकरणे वस्य माणा बोध्याः॥ श्रयजल-यंत्र सुहूर्तः॥ मः सूरमुल्यास्थे प्रश्चाण्युभेषु रुचं बुर्जी शतः वारे रिक्तारहित तिथो शतकु पसे जलराशिणतेचे दे उत्तरा यणे चे त्ररहिते मार्गसिहते गुरुशको दे थे शत्में हरहटचकं सू

4	मस्तक	शस्य
es	गर्भ	त्रानिष्
4	मध्य	ग्रानिष्
ч	मस्तके	श्रम
v	नले	श्रम

यभात्वोध्यं॥ श्रयसर्वजलाश यमुहूर्त्तसाधारएयेन॥ त्रानुः हः उत्भराधारायेन॥ त्रानुः हः द्रेवारिराशोपापेहीनबलैः बुन्हः लसेभृगुः १० चं बुन्ह । कान्यरे -कामित्रथो तत्रादो जलदिग्जान म पुरात्प्रामाद्दाहुताशने ऋ

त्य वायव्यदिशोमुक्काजलाशयः कार्यः मनांतरं शापुः मः तिग्विः पृषाः स्थिरः मृःहः धः एषु भेषु चं शः जीः वारेषु उन रायणे विचेत्रे समार्ग गुरुशाक्षोदये चंद्रशाकजीवयुनल मे न्यूनाधिकमास राहित्ये वापी कारनार कृप कुंद्रानांसि CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangori ध्दः कृपचन्ने राहिण्यादिभानि ॥ त्र्यथकासारचन्ने भानिरो-हिण्यादीनिः

	क्पनकः कासारचक								
3	मध्ये	शत्म	3	मध्य	क्रभ				
3	पूर्व	शत्म	3	पूर्व	भागाम				
3	श्राम	श्रभ.	3	भाग्ने	अधिमः				
3	दक्षिण	दुष्ट.	a	दक्षि.	अशभ				
3	नंर्भः	शहभ	3	नेक्स्य	श्रहभः				
3	पश्चिम	दुष	3	पश्चि॰	भाषाभः				
3	वायव	दुष्ट	3	वायच्य	भ्रामः				
3	उत्तर	अरुभ	3	उत्तर	श्राशास				
3	ईशाने	दुष्ट	3	ईशान्य	श्राशुभ:				

गिपचकेपिरोहिएयादिभानि॥ ग्रथकुंडचकेभानिरोहिएयादीनि

9	वापीचकं कुंडचकम् केचिद्रविभात्कृपच				,पचक्रमाहः			
8	कोष	शहभजतं	0.0	मध्ये	५ शहभ	3	मध्ये	श्रम
8	नाभो	बुध्दिनाश	8	पूर्व	र शहभ	3	पूर्व	शहभ
8	त्हरि	स्थिरना	3	आमे	शहभ	3	श्राग्ने	दुष
8	गरें	किंख	8	दक्षि॰	: शहभ	3	दक्षि	दुष
8	नेत्र	इिएगं	2	नेर्न्यः	अहभ	3	नेर्नर्य	दुष
6	पारो	अनर्घ	8	पश्चिमे	र श्रम	3	पश्चि	शम:
द्याधाः वि.ए	अधरथ्कत्यं वरमेत्रत्युः रोज्येः वि एषु मषु र चं बु शर ब वारेनया			वाय॰	: श्रम	3	गय-	दुष्टः
नंदापूर्णात्थिषुदुधः जीः शुक् स्वाधिकलप् ७१४१६ शत्मग्रहे			8	उत्तरे	शहभ	3	उत्तरे	श्रमः
*411	नकल भे वा	४। २ क्रमग्रहः	3	ईशाने	शहभा:	3	ईशान	श्रमः

अयरथवकंस्र्यभात्बाध्यम्॥ शिबिका समस्तरुः उ. ३ ज्ये त्उधुः मे

3	श्रम	किल						
3	क्रवरे	मृति						
Ex	शक्यो	नय						
Eq	संध्या	धननाश						
E	शं नस्सध्यो	भाति						
3	गर्भे	शामं.						
ग्राधा	ग्राथशिविकाच-सूर्यक्षित्							
y	पूर्वे	स्करवं						
٠	दक्षिएं।	रोग्						
9	पश्चिमे	भयं						
4	उत्तरे	पीडां						
3	मीली	क्रमं						
8	दंडयो ।	श्रमं						
त्राध	नोकाचकं ग	विभात्.						

श्राम

मध्ये

मुख

पाठाएो

स्करवाएगो ऽ शतभ

श्रामे

श्रायहम

वप्रभ

१ वस्म

र वप्रम

अप्रभ

	The second second
	१रभगहं श्रुः ३।६।१०।११ उपचयेपापेषु
	शहभदं ॥ त्राथनिश्वटनमाह ॥ मू.
-	
	ग्रशिः तिः मृदुः याः यः पूः स्वाः एषु भेषु
	चं यु रू शु वारेषु चरल मे १।४।७।१०नं
	दाभद्रातिथ्योः शत्मयुनलग्ने ॥ त्राय
	जलेतरिमोचनं॥ लघुन्याधन्यनुन्मः
-	एषु भेषु चंद्र जीवका वासरे जया पूर्णाक
	एउस व यह जात सा नारा जा रहे
	निशिषु नल चररा शीलमे चंद्रबलेच॥
	श्राथास्यार ज्वायं त्ररामाह ॥ रिश्व
	करहितेलमे बुध जीवयुक्ते रवले ब्ल
1	रहितेः १० क्रके चंद्रेजलचरराशी।।
	ग्रधास्याक्रपकमुः॥ शन्त्रान्त्र-अ-उ-६
	रोन्ध-निष्पएषुभेषु रिकारहिननिथो
	र भी श वासरे ॥ ग्राथास्यांवस्तुपूर
	एाँ।। स्थिरमृदुः क्षित्र एषु भेषु पूर्णा ज
	ह गसरे स्थिरलग्ने चतर्थाष्ट्रमशह्दे॥
100	F. C. 16-4 14-514 (3. A. 11. 12. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 11. 12. 12

न चर एषु भेषु चं बु र कर गसरेनं

दाजयायूणािनिधिषुकेंद्रेशशाणा

बंधनसुः॥ पूषाःशः मृ उद्युः आन्धः एषु भेषु रः जीत्याः या सरे रिकार हिति तथों न सने यु वेध रहिते यु सूर्या कम ए। वर्जिते षु ४।१२।२।११।६।३ लघेषुकंद्रेश ५ पादी शिमाः भसहिते पांपे ३।६।१०।११ क्रमं।। स्र ५ भंशो शास्त्र थसेत्वंधचकेसूर्यभाङ्गानि॥ ऋ उदरे शिभाः थप्रयासुहूर्तः॥ भद्राक्षयदिनचद्रिः संदे ऽ शहभाः : शस्ताः काः एतान्यर्जियताः जलराशीचंद्रेश

गेषारी हा । १। ४। ७। १० १६६दे १६म गृहसे नादि ऋयिक्यः मृन्यू-पू-३ आशिन्मारेन्विन्अनु-पु-एषुभेषु-जीन्का-वासरे नंदापूर्णातियो अष्टमशाध्ये आयगते बलवति ॥ अथया णिज्यं। त्रानु उन्द्र प्रेरो मृ ह वि त्राधि एषु भेषु श्राभ दिनेशाभितिधीचशामायहंभवति लमादिशाधिस्यापेक्षि ता॥ त्यथद्रव्यनिधीनांगुप्तस्थापनमुः मृदुःतिः स्रिशिःरे पुःविन्याधारा एचपित्रांधभे ४।१ शाभयुक्तेजीववासरेश-निवारेच दी पाराशाशाशाशाश किमोः पापेः १२ ही नैः लयंच-स्थिरमेवधात्यम् पूर्णातिथीच ॥ ऋषदत्तः द्रव्यस्यालाभः॥ म् ज्ये न्या साक्ते विक्त उर्शे पूर्भ भारवा मूरण सेषु य-इव्यंदनं यचस्थापितं ऋणदनं चौरेणहृतं नष्टं चतन ल भ्यते एवं विख्यां पाते चफलम् ॥ ऋथद्रव्यमयोगः॥ स्वाः युः मृःरेःचिः त्रानुःचिः पुष्यः स्रःधःशः एषुभेषुचरेलसे ४।८ ार्ट श्राह्देएषुश्राममृए।दानम्।। ऋथऋए। ग्रह्णानिषि CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्तसिंधू.

घ्दकालः ॥ भीमे इस्तेर्कवारेसं कांती पंचकेत्रिपुकरहि-पुकरयोश्यय हणां तन्नयाति हिध्दयोगे संक्रमापरिदने चनएं। गही यात् ऋणछेदं कुजेकुर्यात्संचयंसोमनंद ने धनादिस्थापनेकूराः ३।११।६रवि१० शहभा = ११२ चर्जि ताः क्षणोपद्ये वंद्रः प्रभोन ॥ ग्रय रध्यथेधान्यदानं ॥ वि-रो-ज्ये-पु-ग्राश्व-श-पू-भा-३उ-स्वा-ति-शाभतिथिवारयोः ॥ श्रथहलपवहणमुः॥ म्रिमःस्याःपुःश्रःधःशःउः ३रोः मृरे कि अनु ह अश्विति अभि एषु भेषु स् शा विनापापे हीनब्छेर्जलचरराशी चंद्रेसितचं शः पृष्ट्सितिगुरुर्लं ने २।३।६।८।८।१२ लमेषुरिक्तावषी विनासूर्यभुक्तनक्षत्रातृ ३८१६भः ततः - शाभः ततः ६।२१६भः ततः - १६भः एता हरोदिनेह छपवहणंशाभं ऋपरेचेवमाइः का भागान्य श्ते पू इन्ये एतानिनसत्राणि भी बु श वारान् दुष्योगयु किथि तया र। ४।६। ८। ६।११।१४।३० एता स्वत्यत्का स्वड लंचभद्रांचिवर्जयेत् लग्ने शश्री हिताराबलेच हलच-

		माइ (गनाड	।।ध्य	
	3	श्रायाः	3	ऽ शहर्भ
	4	मितर	3	मना मिता
	3	ऽ श्राष्ट्राभ	3	ं शहभे
g	उ	शहभं	4	शहर्भ
	3	५ वह भं	3	ऽ शामं
1	3	मित्र	es	शहर्भ .
	3	१ अप्रभ	3	ऽ शहभी
	3	भूतह	3 cc	0 Kashmir Researc

कशाध्येभेरविगतशासिभूता गंधाक्षतेभूमिंपूजियताय हान्यजापतीश्चयदक्षिणांक त्वाफाते हेमंसंधर्ष्यउत्तरा-भिसुरवोनवाभ्यां हुषभाभ्यां.

पंजानेक्यादक्ष्मकार्गः तस्मिन्स-

मये यदिश्यभी युद्धेतेतदाविद्यं यदि क्रमेउत्यद्यते तदीजा यावधः श्रामिभयं च ईषाभंगेमरणं युगेभग्ने पुत्रनाशः श्रा यरिमन्वाल कष्टं योक्र छेदेशास्यहानिः व्यासंगः यदोको-श्यभः पतेत् श्रथवावं ध छेदः तथा ज्वरातिसाररोगेण कृषि भंगः युक्तमात्रणवशीद्यं चलति चतुर्गुणं शस्यं यदिसर्प उत्यद्य तेनदा जीवित संदेहः अनिष्टेषुशांतिः स्वर्णहलं विप्रायदेथ मंत्रेणाह तयोविधेयाः वसवः श्रह्मः पृथुः राम चंद्रमापरा-शरः बलभद्रः स्मर्चव्याः सर्वविद्योपशांतये॥ श्रथयोक्रा-दिसाधनश्रः॥ मृदुः स्थिरः क्षिप्रः मृः चरः एषुभेषु सृः चं बुः जीःश्रः वारेषु पूर्णाजया नंदातिथिषु श्रामाचर्जितासु॥ श्रथबीजोतिः॥ मेनः स्थिरः लघुः क्रः मृः धः श्रः एषुभेषु चं बुः जीःश्रः रासरेरिका ४।१४।१।३० मारहितिथों कुपांबुः

	Company of the Control	, , , , ,	Additional Property of the Park		
कीरिभ	3	शिरः	श्राम	6	उक्स
कज्जलं	3	गल	रक्षम	3	शहभ
अन्नरः	93	मध्यः	शत्भ	9	ऽश्रम
निस्तंडुलं	8	पुच्छ	ऽशु भ	33	क्रभ
ईतिभ	S	पुच्छाः	ध्यु भ	9	ऽश्रम
फिएिच	त्	3	क्रभ		
		9	उक्रभ		
MADE THE					4

CC-0 Kashmir Research Institute, Diditized by eGangotr

डुललंकमाल्यादीति प्रभवंभयंच पुषितोबीजो प्रिकालेकी भात् पूर्व छिखतचके एवरविभा इएायेत् चंद्रोलप्रेगुरुः केंद्रे कर्मलग्नयोः क्रभदृष्टयोः क्रभशकुने पृ ख्यादिपूजीनरं रो रे हःतिः ऋनु उ ३ एषुभेषु चं बु जी का वासरे २।१२।६। द लमे षु मंत्रः त्वं वैवसुं धरेदेविशीतपुष्पफलपदे नमस्तेमेशामंकत्यं क्षिमेधाकरीशुभे॥ कुदालककृत्यं॥ इलप्रवाहमुहूर्नेहलचक कार्द्वी त्राथम स्यां कुररोपः॥ हःचिः स्वाः उः ३ मूः धः राः मृःपुष्यः ग्राधिक त्रानु मा एषु भेषु काभवासरे विरिक्त तिथी।। श्राथसस्य हक्ष लतानां वापनं से चनं च॥ अधिः रे म् अनु यु मू ध रो चि स्वा-उ-३ शुभवारारेशुभितथो। ऋषकुल्याबंधनं ॥ स्थिरःमेत्रः एषुभेषुस्थिरत्यमे २।५।८।११।४।१०।१२ भोमरहिनवारे॥ अथ कुल्यामूलबंधनं ॥ इत्यन्धन्शन्हन्तिन्य्यन्म शुभवासरेशुभित थो स्थिरत मेवारिबंधनंशुभम् ग्रयधान्यमध्यान्त्ए। छेदमुः ॥ चरः क्षिप्र एषु भेषु रः चं बु जी कि वासरे विरिक्तामा ४। ६। १४ 1३० दिनेचरतनी १।४।०।१० शुभं।। ऋ शक्षेत्रेकरीषादिक्षेपएं। ॥ चरः मूः ग्राः पूभाः ति एषु भेषु क्रभवासरे विरिक्तामाति ४। ६। १४।३० थोकाभम्।। ग्राथक्षेत्ररक्षोटजं।। अवः मेत्र-एषुभेषु पंचकहीनेषु मं र गारी वर्जियत्वा क्र वि रहितदिने विरिक्तेश्वभः ॥ ग्राथधान्यछेदः ॥रेन्ह्नम् श्रन्यम् यूफान्यन् मन्यन्यन् एषु भेषु शु जी वारयो रिक्तामारहित ४।६।१४।३० तिथो तथासिंहल-में चंद्रयुते ऋष्या पु. ३ भ. उ. ३ म. ज्ये. आ आ आ हा हा स् रहा ति

हः चिन्स्वा एषु भेषु विभीमश्निरिक्तामासु ॥ ग्रयधान्यसंग्रह ॥ रो उ ३ ति भ ज्ये मूर्रे हा आश्वि वि आ आसु यु चि वि ए षुभेषुजी र चं कि चारेषु रिकामारहितितथी स्थिरलमेषु॥ श्राधनीवसंघहः॥ हन्वि पु स्वा रेन्ध्राधः एषु भेषु जी वारेषु क्रक वारयोश्वस्थिरत्ये॥ ऋषजीवबंधनं॥ रो रे स् स्वा ह स् पूषा - उ - ३ पूमा - एषु भेषु शत्मवारे विरिक्तामाति थी। ग्रयथान्य-स्थापनं भन्यु म ज्ये उ ३ एषु भेषु शतभवारे मीनलमे ऋषमशुदे तनी॥ अथिनिकमएां थान्यानां उ.३रो.धःशः एषु भेषु परंभवा सरेक्मितियोक्मिलयेच।। अयकणमहनं।। अवः अन्यूरे मः पूफा उफा ज्ये रो एषु भेषु शत्मितयो शत्मवासरे शत्मतन च ॥ ऋषतृ ए। रज्जु भिर्धान्यवं ।। स्वाम् इरे पृषा उषा पृ भाँ उभा रो मु एषु भेषु सतिथी कभः। ऋषधान्यानामानय नं ।। हः विः स्वाः उः ३ मूः धः रोः मृः तिः स्त्रिविः स्त्रावुः मः एषु भेषु शः भीवासरे ॥ ऋषस्थलां तरेधान्यस्थापनं ॥ कि पूभा रो मू श उमा प्रभवासरे॥ अथस्याद्यनादिपाकिकया॥ मू चि ग्रानु विक.मृ.उ.३रो ज्ये रे चरलमं विनापसंरंधतिथिविनाशनिंवि ना॥ अथकोष्टादिषुधान्यस्थिति॥ मृःपुःरे स्मनुः स्राधाना श्वि-ति-रो-उ-एषुभेषु सतिथी सू-चं-यु-शार गरे॥ अयधर्मिक या जय होम रुद्रानुष्ठान रूपा मृरे कि ग्रनु ह ग्राधि ति ग्रा स्वान्यु श्रम्ध शाः उ ३ रो एषु भेषुक्रभवासरे ३।६।६।१२ लग्नेषु एषांचर्गेच कर्त्रग्रुरु बलेसिन्युभितथी अथितृनर्पणंशस स्नापस्नपसिमधुकामाधेवेमासियोग्यं मेत्रंपूषाध्वकरसहितंचार्क भंचादितिश्व नंदापूर्णाजयतिधिशाभावासरेचंद्रजीवे सीम्ये क्रकेमुरवकरजलोत्सर्गकर्मप्रकुर्यात् ॥ अय दास दासीसं यहः॥ उन्दरो कभवासरेसिनथो ॥ स्रथसुद्रापातनं॥ उन्द रो मृ रे चि त्रानु स्वा पु श्राधाश ह ग्राश्व ति ग्राभि एषुभे षु शनि चंद्रीविना ३।५।८।१०।१३।१५ निथिषु गुरुशकास्तेन कार्य लग्ने क्रभग्रहेसिक्रभम्। अयथगांतिसुहूर्नाः॥ हन्त्रशि युष्यः ऋभिःरे उ १ रो यु स्वा स्थ थ श ऋ तु म एषु भेषु श भय हवासरेशस्मितिथोच गुरुशस्मास्तादिरहिते न्यावश्यकेशस्मा स्तादाविषिधिया ४ विधी १० रवी १ जीवे ०।१ पापवर्जितेच ॥ अथवतारंभोत्सगी। मृदु-अव-क्षिमः चरः एषुभेषुक्रभवास-रे तत्तदेवतिथोशशांकार्कसुरेज्यबले १ गुरोर्ट ११२।३।६लमे षु सोम्यायनेयाम्यायनगवतानांनदोषः स्वयमताभ्यामूने शुभेः केंद्रत्रिकोएगें। त्रास्तादिवर्जिते त्रायहोमे प्रहस्रवेत्रा ग्राच जन्यादिसंस्कार निधान हृतयःपापमहेनशुभं॥

	सूर्यभात्.										
र	رنوا	क्रं	श	चं	मं	त्य	रा	के			
3	3	3	a	3	w	·m	w	3			
रः	बु-	चं:	श	शु	म	न्	गः	के			

होमे होमे दिरायाश्चहरेः कतोस्यात् नित्ये यहेशे चहुनाश चकं नेमिनिके दोषयहं नश्श्वत जात-

कर्मादिविधिहोमेल स्म्याहोमे हरे हों मे नित्यय जे यहे छी यह यते वे श्वदेव हो से अधिन बक्कि बिला रोज आ आहा मोदी बन्हिया- सवः॥ तिथ्यः शुक्तिदिशित्या सेकाकार्याधारयुना चतुर्भि स्त ष्टाशेषे ०१३ सुविवन्द्रिवासः सीरव्याय एक १ शेषेस्वर्गवा सः प्राण नाशाद्धि २ शेषे पातालेवासः अर्थनाशः इदमपियू विकेषनावश्यकम् ॥ अयशत्रुबंधनं ॥ मं शः वारयोः हिंद्यो गेरुद्धस्वरेश्टंखलाह्काणे १२१४ अंत्यः हिश्चिकस्याद्यमध्ये एषु ४ हकाणेषुशुमं ॥ अयमेत्रिसु ०॥ शक्के ७ जीवे श्वा ० शनो १ शुक्रेवा ६ शनो १ सितेशह भित्यो शहस वासरमयोः आ

,	कष्टावरी.													HIA	
	श्य-	भ	कं	ग्रेः	मृः	श्रा.	ब्रे.	तिः	ऋं.	मंः	वे.	3.	ह	चि.	भानिः
	33	99	w	છ	30	म्:	9	૭	मृ.	20	मृ.	19	94	99	दिवसा
	भोजन.	गोदान.	स्वर्ण.	घुत.	तित.	गोदान	पितत्त.	नेऽस.	गोदान	नस्त्र.	मोजन.	ऽन्त्वा	तिस.	दुग्ध-	द्गन.
	स्याः	वि.	ऋं.	ज्ये	म्.	ब्र.	3.	* 31·	ध	शः	यू.	3.	₹.	o	भानिः
	र्म.	32	स्थिः	मृ•	4.	मृ.	30	99	94	99	मृ.	10	स्य	0	min
	गोहान.	स्वर्ण.	घृत.	मिख.	भूष	गोहान	मोजन.	श्रीफल	अप्रवदा	अन्तदान	मोजन.	ऽन्यदान	ट्यक्रा-	00	दान

लाजा कुट फुल प्रियंगु मुंथा गीर सर्वप हल्दी दारु हल्दी लोभ ए भिः ॥ अध्यरोगिनिर्मुक्तस्यविह्णमनं ॥ अधिन्मः पुष्यः अनुः पुः रेः हन्त्राधः क्षभवासरे क्षीविद्यलमे २ ११ १६ १६ १६ १६ १९ । अध्यन्ति कर्कमे ॥ अधिन्रे रेन्हः स्वाः अन्धः पर् पुभेषु रिवभीमयोः ॥ अध्यते लिककर्म ॥ अधिन्रे रेन्हः चिः अनुः ज्ये धः पुः तिः एषुभेषु क्षभवारे विरिक्तमा । योगिषु शुभराको ल ग्ने क्षभयह युक्त केंद्रे ॥ अध्यते लिकचकं इस्कर सादि यंत्रच कंचसूर्यभात् गएना ॥ अध्योपलियदारक कर्माह तथातसाः

नैतिक चक्रम्.											
e	श्रंगे	संपन्									
a	श्रेत	शोक									
٩	, तले	वियत्									
e	कर्री	धनम्									
3	दारुयुः	ऋदि									
ध	संभार	स्पर्यं.									

उपत्र	बेदारिणां च	i	कुलालच्ये.				
2	अध्म	α	श्रधः	5 शहभंम्			
4	अप्रभ	8	पूर्व	ऽशासम्			
4	दश्रमं	8	दक्षि	ऽ शहभम्			
4	श्रमंद्रष्ट	8	पश्चि	श्राम्			
ष	चतुर्विश	a	उत्तर	शहभम्			
4	0	8	कुंभ.	शहभग्			
y	0	ક	एंडे-	क्रभम्.			

॥हः चिः मिश्रः स्वाः दारुए। ए षुभेषु १३।८।११।१२ श्रासुति थिषु श्राफ्रभग्रहवारे चरलं ने खल्येटसुते पाषाणालोह म एगकाष्ठ विदारणाचकम् श्रय कंभकारकर्मिणाभादिशुद्धिः पुः हः मृदुः ज्येः रेश्वः स्वाः रोः एषुभे षुशुभसूर्य गरेचरल्ये जलचरल ग्नयुक्शनो ॥

श्राधोकुलालचकं रविभात्। श्राध लोहकारकर्मस्या ज्ये सू विश्रा भ रु रो एवुभेषुर मं श वारे स्थिरलसेशुभिष्योक्षभं॥

ग्रथमिए। कार कर्म भ कि भ ज्ये स्वा रो चि ग्रा वि एषुभे षु र भी शनिवारे स्थिरत्ये ॥ ग्रयनापितकर्म ॥ चर ज्ये चि उधु रे मृ एषु भेषु शत्भवासरे उने चशत्भयुते उषी स्मि नेकाले कम नारया विरिक्ता मानियो। अथमा उककर्म ॥ यूषा चर ग्राश्व ति म चि मृ एषु भेषु चं जी शर वासरे न रराशी लमे पापेषु कंटकभिन्नेषु ॥ श्रथपलगंडकर्मिशाभा दिः॥ ध्रयः कि श्रा क्षिप्रः ज्ये रेः एषु भेषु रः मं श्रा शावासरे स्थि रोदये चतुर्यदशमयोः शम्योगे ॥ त्र्ययतंतुवायकर्म ॥ चरः मृदुः क्षिपः रोः ज्ये एषुभेषु र चं का जी वासरे का भग्न हाएां। राशोलमे ॥ त्रात्रेवश्चिककर्मशाभदं योक्तं ॥ त्र्ययचित्रकर कर्माह।। क्षिय पु पूषा कि स्मनु खा मृ स्म ध श एषु भेषु र नं शर गासरे शरभितिथिलने ॥ अथनमेकार्यकार्ये ॥ मृः पूर्वे वि ज्ये आ। मू ध इ वि एषु भेषु श. र श वारे ॥ अथ जायाजीवबल वयोकर्म।। चर स्थिर मेत्र चि मृ ग्या ति मृ एषु भेषु र जी का वासरेक भत्रमे ॥ त्रायव्याधदासकोरिक त्रांत्यवशापिनांक ॥ पूर्वस्वानिकशक्ति भन्ती एरा उपार्षे भेषु र मं श वासरे पायल मे १९ पायम है।। स्मयम्लेच्छ कमिण शुः ॥ त्यान्यः त्र्यस्ते भन्यभा उभा वि एषु भेषु चं का वा सरे पापल मे पाप युक्ते॥ ऋयशिले हिका कारयोः कर्म।। ज्ये म् धीर रे उद्य अमि अनि एषुभेषु र जी का वासरे शुभ तिथी। अथवीरकर्म पूधा उधा दारुए उधा वि वि मयारिह

तेषेषुभेषु र श श भी वारे रिका जयातिथिषु शकुनमाब ल्ये। निर्धेयचार्याकयोः कर्म। चलः मृः ऋशिः चिः एषु मेषु बु चं शरुवारेषु जया पूर्णातिथी चरल नेशरभाकां ने ॥ व्यथि-पिकरकमे।। चरःमूः हः चिःमुः आःश्रः एषुभेषु शःजीःषुः गलम ह रहिन दिने केंद्र १।४।७।१० गतेजीवे र बुधे ११ शुभे ६ पापेशभ यहत्त्रमे।।गत्त्रमहास्तु॥ चतुर्द्श्यादिच १४।१५।३०।१ तारि सप्तम्यादिदिनत्र ७। ८। ६ यं चतुर्थीचेकनः योका अष्टायेते गलग्रहाः ॥ ऋषपत्रीवाशिनां कर्माह ॥ श्रन्थ-शा-यु-लघु-वि-ज्ये मृ पू भा रे एषु भेषु बु र नं एषां वारे ३०। द रिका ४। ९ १४ रहिति तिथो। रचणिकारकर्म।। चलः मिश्रः चिःमः लघुः ए षुभेषु चं जी शर र भी एषांल ने चं जी युक्ते॥ ग्राथब्राम्ह एकिमीिए।। ऋध्यापनं १ ऋध्ययनं २ दानं ३ याजनं ४ यजनं ५ प्रतिग्रहः६॥ स्त्रियस्य॥ ऋध्ययनं १ दानं २ यजनं ३॥ ये श्यस्य।। ज्यापारः १ श्रद्भस्य गो दिजशुश्रूषा १ त्र्यंत्यजानां।। सर्वाणिनिषिद्वानिस्युः॥ यद्यह्णिजस्तन्कर्मसिध्यति त-त्तरकर्मकाले।। त्र्यथेषांस्वभावकृत्यान्याह।। शमःदमःसत्यं-न्यार्ज वं क्षमा शोचं तयः ज्ञानं कथा स्तरार्चनं तीर्थः स्त्रास्ति क्यः सत्संगः यज्ञः बतं ब्राह्मणानां ॥शोर्यः बतं धेर्यधृतिः धृ-तिः मृधं ईश्वरता विद्यासुदीसा दानं सत्रियाएगं ॥वाशिज्यं गा जीवनं कर्षरां वेश्यानां ॥दिजसेवा श्राह्मएगा ज्याधर्मा चरएं। श्रद्वाणां स्वभावकर्माहित्वा ऋंत्यज्ञएवभवति॥ ऋषविमकत्ये

का दिमाह नि रो ह श्र मृ उषा एषु भेषु र जी शु वारे उमे रिक्तामारहिततिथो॥ ग्राथसत्रियकमरिमे॥ मिश्र ज्ये ह शाः उन् ३ श्रा श्राश्विरे त्रानु एषु भेषु रामं चं जी जियापूणोति धीसुयोगे ॥ श्रायवेश्य कृत्येभादि ॥ श्राधःपुःति सृ स्राशि वि ग्रनु मू एषुभेषु शु जी बु वं शाभतिथो कुयोगराहित ॥ श्राथशृद्धकर्मारंभेशुध्दिः॥ पू. १उ. १ स्राश्वि स्त्राः चि स्त्रानु मू स्वा धरे एषु भेषु बु चं शु वारे विपर्वरिके ॥ ऋथेवां च तुर्गालमक ध्हिमाह।। पुंलग्नेखमह दृष्युने ३।६।११ स्राप्त भैः केंद्रे १।४।७।१० शहभयुते शिषीदयलग्नेषाधिष्ठितेशुभा य॥ त्र्यधूर्तकार्य॥धःस्वाःज्येन्मन्हःविन्भःशन्यः इतिन्एषुभेषु शर जी चं गरे नंदा १।६।११ पूर्णी ५।१०।१५ तिथो११।६।६ लमेगु भं॥ अथमलुयुद्धुः॥ अश्विःमृ रे अवः एषुभेषु मं बु र वो जया३। = 19३ तिथो ४।५। १० लग्ने।। ग्राथसर्पग्रहणविद्यारंभः॥ हः चिः श्रनुः रेःपूः १मः विः इः एषु भेषु ॥ श्राथमंत्रग्रहणम् ॥ त्रा श्वि-रो-रचा-वि-ह-ज्ये उफा उषा एषु भेषु वे स्ना का न्याश्वि मा र्गःचे फा एषुमासेषु चं श वर्जितवारे २।५।७।१०।१३।१५तिथु षु ग्राष्ट्रम्यांसंकातीरविचंद्रग्रहेषु माघोपिविहितः विषडायग ताः पापाकाभाः केंद्रगाः॥ श्रथशिल्यविद्यारंभः॥ मृत्रे चिन्त्र नु उ ३ रो ह श्राश्व ति स्याभि स्वा पु सम्ध श एषु भेषु बु र लमे १० चं बु जीव वर्गे।। श्रयफारसीतुरुकविद्यारंभः॥ज्ये त्रायरहे मू पू अरे ध्वा प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त पार्य वासरे स्थिरत्रको।

॥ अथजेनविद्यारंभः॥ पृ०३ स्रानुःभःस्वा युः श्रन्धःशः एषुभेषु जयापूर्णातियो सू- शु-वासरे १ १६ भत्रमे।। ग्रयशयनेदिक्फलं ॥ यूर्वेलस्मीः दक्षिणेस्तरवं पश्चिमेनिता उत्तरेहानिः ॥ ग्रयपरी क्षादीनां विवादीनां हःयुः श्रः ज्येःति एषु भेषु ८।१४ रहितियो भद्रा शन्मं विनाजन्मनक्षत्रमासरहितेजन्मनक्षत्रतः १०।१।१६ नाडिनक्षत्रमासरहिते जन्मराशितः द सूर्य बेद्रोत्यत्का स्थिररहि ते तमे नवांशे चशाशिगुरुतारा का थ्ही ॥ अयमंयनं ॥ ऋषि रु मु-तिःमः पूका हः चिन्त्रमुः मू व्वा श्र-धः प्-भा एषुभेषुशुभ वासरे न्य्रमारहितिरथो॥ ग्रयगोदोहनं॥ भ-पुः ग्रयहे स्वा ज्ये शः एषुभेषुविषमदिने॥ श्रथसेवासुः॥ हः श्रविः तिः स्रभिः मृः रे. चि. यानु एषुभेषुस् बु. ब. कारेकाभे उसे रः मं १९।१०सिन ग्राथन्यभिसाध्यक्तत्यं विक्तःसुर रेन्सेन्ति ज्येन्य १३६ श्रानुन्त्र स्वा-उषा-युः ग्राश्व-धः एषुभेषु चं-बु-ह-शः-वारे १।४।७।१०।६ ।५। सू चं मं सु ३।६।११ बु कि श।। अयनूतनसंमार्जनी।। मृ स्वा ग्राश्व पुःति धःचि नये ग्रानुःम एषुभेषु चं का जी वारेशु भितथो परमत्रधः शंवर्ज्यपंचकगत्वात्।। अध्यपंचकंनत्स्त्यं च॥ धनिष्ठोत्तरखंडादारभ्यरेवत्यंतं पंचकं त्राथवाधनिष्ठामा रभ्येव ग्रात्रमेतदाहंदक्षिणगमनं॥ शय्यावितानंगृहगोपनं काषादिसंमहोगोमयसंग्रहस्यवर्ज्यः तृणसंग्रहः केविदम श्रवएगमध्यंगीकृत्यनिषेधयंति ज्योतिः सागरे छेदनंसंय हंचेवकाष्ठादीनांनकारयेत् श्रवणादीबुधः पद्गेनगच्छेद्धि-

एगांदिशं।। अभिदाहो भयंरोगो राजपीडाधनस्यः कमार निषादिषुकत्येत्एगादिसंयहे ग्रामिभी कली रोगः दंडः अर्थहानिः क्रमाद्वस्यादिषु पूर्वार्द्धनाति दोषायदाह नक्षण संग्रहे यानगोपनशय्यायांसंपूर्णवासवंवर्ज्य केप्याहुः सं करे पंचनाडिकाः क्रमा ३।१।२ ध्द्रिनिष्ठादीनां चर्ज्या। त्र्यपे रुध्इपंचकंचाहुः॥ धनिष्ठापंचकेचंद्रेसूर्येपेत्रारिफंचके॥हे दनादिनकर्तव्यंगृहार्थतृएकाष्ट्रयोः पंचकमृतेदाहेचशांतिपु नली पंचकराहे युनलिधिः शांतिर्नपंचकमृते ऋशिवन्यांदा हेशांतिः युन्तलदाहोनएवं भरण्यामिषशांतिः चत्यारः युन्तलाद र्भमयाः स्थाप्याः दाहयितव्यश्च स्तकांतेशांतिः कांस्य पात्रं-घृतंच तिलगोहिरणयदानंच वासवेचरूनं शतेगुडंपूभा स्वर्णे उ भा गोह्यंरेवसुवर्णवास्त्रंवादद्यात्कल्योक्तांतांक्रियीत्॥ श्राथपुनलदाहः ॥ सूनकमध्येयथासंभवंवर्षाभ्यंतरेयाम्याय ने वर्षानंतरं सोस्यायने शुक्रुपक्षे सू चं बु रू वारेषु मू ज्ये ग्रा श्राम्हेरपुः ३भामारेशाः एभ्योविनात्रियुक्तरंविनान्यूनाधिमासगु रुशुकारतभद्रावैधृतिसमुदायेषिनकार्यम् ॥ ऋखिलकर्मणि॥ भादि॥व्ययाष्ट्र ११८देजनाराशिभ्यां ३।६।१०।११ उपचये लमेशाभहण्युते चंद्रेपीहश्येवसर्वारंभाःसिध्यंति॥ ऋथगंडां तं॥ तचित्रिधिं तिथिभः लगस्वरूपं तिथ्यंतं दिघरिभांतं॥ १घरित्रयं लगांतार्धघरी । ३० त्याज्यं नाक्षत्रंमातरं तिथिजं पितरं लयजमात्मानं कमतो हं तिद्वाजंपितरं रात्रिजंमातरं

मुहूर्नसिंधू:

संध्याजमात्मानं हं तिन सत्रगंडे तिथिगंडे संध्यायांमानरं रात्रीतातं दिवास्वात्मानं उपगंडे संध्यायांतातं रात्रावात्मा

	ग्रापिवन्यारीनां तारास्यरूपम्.													
ऋ∙	भः	क्र.	रो.	मृ.	भ्याः	3 .	ति-	आ.	म	व्र.	3.	इ .	कि	भानि
3	3	દ્ય	अ	3	9	R	3	9	ઝ	3	2	eq	9	तारा
श्रवमे.	भगवत्.	क्षुरव.	शक्टं-	एणास्य.	मणी.	स्ट्रं.	वाएग.	वर्भः	भवनं	मंचक.	श्राच्याः	क्रि.	班	क्पा.
स्वा•	वि॰	अ्य नु	ज्ये.	मू.	3.	3.	श्रमि	श्चर	র্ফ	शः	मूं.	3.	रेः	भानि
9	8	3	3	99	4	a	3	3	x	900	2	2	32	तारा
विद्यमः	नोरणं.	बिछ .	कुहुतं.	मिंह्यु छ.	गजदन.	मंचक .	अस्त्र.	त्रिवाद.	मृदंग .	वर्तुल.	मंचक.	यमल.	मृदंग.	ह्यापि

नं दिवासातरंहित शोनकीये पुत्रोयदिषितुर्गेडेदिवाचेवप्रजाय ते कन्यकाजननंरात्रोमातृगंडेतथेवच संध्ययोधिनगंडेचपस् तिर्यदिजायते विनाशोजायतेशिद्यंमध्यमंतिद्वपर्यये पत्रगं डेकूरयुतेमहादोषकरंभवेत् क्षभग्रहसमायोगेईषच्छुभकरंभ वेत् एवमेवदिनस्यय्यतीपात्याद्यात्त विष्टिचेधृतिश्र्लगं ड त्रातिगंड परिद्य यमघंट ब्रह्मदंडः मृत्युयोगः संक्रांतिः शिनी वाठी कुह् दर्शः ३० कृष्णचतुर्दशी सोदर पित्समजननभ म धाःचंद्रसूर्योपरागेषुजातः शांत्यहीभवति त्र्यथात्यरिष्टदः गंड जातानांपरित्यागः शांतिः वएमासादर्शनंवेतित्रयः पसाः वि वाह्रेमृत्युः जातकेकुलकष्टं यात्रायांधननाशः त्र्यन्यकर्मणि-कार्यनाशः गंडांतेसाधारएयेन १६ पत्रित्मतकांश्यपात्रस्थितां

CC-0 Kashmir Research Institute Digitized by eGangotri

राजनचंद्रप्रिमांश्वेतपुष्प १००० सहस्रेरभ्यच्छीतां तिल्याचं चब्राह्मणायकल्योक्तप्रकारणदद्यात् ॥ ऋषोभुक्तमूलि-चारः॥ वहस्पितः ज्येष्ठांत्यघटी १ मूलाद्यघटी २ द्यंज्येष्ठांत घरिकार्धमूलार्घघरिकाद्यं लल्लः ज्येष्ठांत्यघटी १ मूलादोघरि

	श्रयोपूरुपुरुषस्यागघटीन्यासः											
मूर्धि	मुखे	संधे	बोही	हस्ते	रहिंद-				नु पार	इ. श्रंग.		
es.	9	8	-	3	3	2	90	દ્ય	٤	घिट.		
नुपोभने	पन्नोधृति	महाबल.	चत्री.	हत्याचि	मंजें.	अह्मिति:	मामी:	मेधावी	मी	फलानि.		
मूलोडून कन्यांगविभागः												
मू	मु	. F	५इ∙	वा	ह.	गु	जंध	जा	नु पा	र् अंगः		
8	ex	ď	98	8	A	8	8	٩	The second second			
पशुनाश.	धनहानिः	धनागम्.	क्षीरस्य	बितागम	द्याधर्म	श्रीतकाम	मातुःनाश	नाया	नेप्रकात	फलानि		
			मूल	इस्रि	चार:							
मूल	स्कं.	्व-	चा व	गारवा	पत्र	पुष	। प	. es	शिखा	-ग्रंगा-		
•	5	. 9.	9	99	93	4		8	3	घ.		
मूलनाश-	abit. ive	वर्षा १	भारकेश	मातुलक	राजा.	मं ब्रह्मां अर्थां						
	Į	्त फल	5.				मूर	उबास	•			
9	१ २ ३ ४ पादा-					ग्राषा ग	गद्र	न्यापि	व माघ	स्बर्गः		
0	0	0	0	4	रह इ	प्रा-	का	考.	थे।	भूमी.		
पित्ना-	मात्नाश	धननाश.	塑		-	ភា•	मार्ग	वेशा	, ज्ये-	पानाढे		

मुहूर्तसिंधू.

श्र्यन्त्रेषाफलम्											
9	3	अ	8	पादा-							
श्चर.	धननाश.	मात्नाश-	पितृनाश्-								

	ज्येषाफलम्.										
9	2	3	8	4	भागाः						
ह-नश	माताम हना.	पातुल नाशः	यातृना श.	याय नामः	फलानि						
E	6	b	4	90	भागा						
आसनाश	कुलना-	ज्ये भ्या ना श.	श्रमाना	धननाश	फला नि.						

	ग्रम्हेवायाः पुरुष चक्रम्											
म्.	मु.	ने.	याः	स्कं	£.	₹.	नाभोः	गु∙	पादे	• ग्रं•		
4	4 9 2		3	8	ь	99	Eq	6	4	चन्न-		
राज्य.	पितृहा.	मात्हा.	नेपर	गुह	स्त्री.	は一世	अम.	नक्रोधन	धनहानि	मिखदी.		
	ऋष्ठेषा वृक्षम्.											
फल्ड.	TO ALL	चु.	दस्त.	शा-	57	r.	ल.	कं		भा.		
90	TO	ष	ર	v	9	3 .	92	8		घ.		
华	4		राजनीरः	ह्यानेः	THE STATE OF	4.02	पित्रहा.	आत्महा.		मख.		

भूता मातुर्शी चक्रें। १ १ ४ ४ ५ ६ मागाः १ मातुर्थ संस्था

कार्धकं नारदः ज्येषांत्यघरी १ इयं मूलादिषरी १ इयं ज्ये ष्टांत्यघरी १ मूलादिषरी ४

घरीनतुषं सार्यम्याभयोरिय ग्रान्ये न्येष्ठांत्यघरी ५ म्लार् घर्यः = एषु जातंशिशुंत्यजे दथवाष्ट्रसमामुखनिवलोकयेत्।। नारदः ग्राभुक्तम्लजंपुत्रंपुत्रींवापिपरित्यजेत् ग्राथवाहाष्ट्र कंयावन्युखनिवलोकयेत् ग्राश्यनी रेम् भेषिशांतिकर्तव्या CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

घरिकाक्रमः।। ग्राथात्रिमिपरामर्शः।। बादरायणः॥ सार्प नैर्कतगंडांनिवषकन्यादियोगजा नस्युरुक्तफलंलमेयदित इंगरामहाः मूलसार्पादिजंदी एयंस्पादपश्यति लग्नपेसकू रे जैचिवलेशाभरिषिविचर्तिते किंच पितृमात्र रिष्ट्रमिपम् लजनने नदेव यदार्कशनीदिवाजनानि स्योजराशिगोनचंद्रशु की समराशिगीन ॥ पितृमात्यही नस्तीयद्योगसमराशिगी॥ कूर्मयामले॥ स्वाद्यः पष्ठस्त्रयोविंशोदिनीयोनवमोष्टमः स्वष्टा विंशभ्यम्लस्यमुहर्नादुः खदाजनो रिवयुक्तािवनीसोम्यादित्य हस्तादिकंत्रयं भेत्रंचरेवतीज्येषातदामूलंनदोषकृत् रथे। य १वः मृः पुः हः चिः स्वाः ऋनुः रेः ज्येः गते मूं लोनदोषाय तृतीया दशमीषषी शनिभीमसमन्विता शक्काचतुर्दशीमूलेजात्संह रतेकुछं शाके १५ पदांचगंडांने मूलेचा एसमामता मासानां नवकंसार्पत्यजेत्संदर्शनंशिशोः भुक्तमूलर्सजंबालंषणमासं नावलोकयेत् भुक्तसार्पर्सजंदिनानि २७ सप्तिवंशितः त्यंत्ये पिशात्यादिकं विधायपिता लोकयेत् शांति मुहूर्तः सहारे सिन्धोसद्गेगुरुप्येसुलमे चंद्रबलेतनद्गंडांतदिनेन्यास्म न्वादिने त्रयसामान्येनम्तरशांतिरन्येषांशांतिश्व श्रयातः संयवस्यामियूलजातिहतायच मातापित्रोर्धनस्यापिकुलशां निहितायच॥ सुसमेभूपदेशेतुमंडलंकारयेद्ध्यः पुण्यिर्मिमं त्रितेस्तोये:मोक्षितायांक्षितीततः तत्रीदकुंभंसुश्लक्णंरकंब एाविचर्जितं स्मरूष्ट्रम् तंनिर्णिकं पूर्येनिर्मतांभसा चस्त्राव CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गुंढितंकुर्यात्पृरयेनीर्थवारिणा कूर्नहेमसमायुक्तं मूलपल वशोभितं स्विक्तिकोपरिविन्यस्यस्वीरद्वमसुपत्त्वेः द्वोणवी ही स्वनिक्षियाईशान्यांचिनवेदयेत्। पंचरत्नानिनिक्षियस वीषि धिसमिन्वतं ऋर्षितंगधपुष्पाद्येः श्रीरुद्रंचजपन्स्पृशे-त् इत्यादिमंत्रेः पंचामृतंपंचगव्यंपंचलक्पंचपलुवाः सप्त मृदःपंचरतानि सप्तधान्यानि शतमूलं दशमूलंग कलशोनि क्षिया नक्षत्रदेवतारूपं वर्णेनिविधाय पंचगव्यं गोमूत्रंगो-मयं भारं ३ दिधि ४ सर्षि ५ गजमदं ६ पंचरतं बज्ज १ मोकि कंश्येड्रपंश पुष्परागं ४ इंद्रनी लंभ पक्षेतु रजतं १ कांचनंशता म्नं ३ विद्रुमं ४ तीर्थवारि ५ पंचलक्पसुचे उदुंबर १ वट२ त्र्यश त्य ३ यु साथ ज्यास्म ५ दशासूलं कुषु १ मांसी २ हरिद्रा ३ सुरा ४ शलेयं ५ चंदनं ६ वचा ७ चंपकं ८ मुस्ता ९ मृदः १० त्राश्यस्या न १२गजस्थान २ वत्मीक ३ संगम ४ न्हद ५ गजदार ६ गो ए० तिल भाष २ यय ३ बीहि ४ गोधूम ५ त्रियं गू ६ च एक ७ श तीषधीनामानि बर्हिशिखा १ हरिकांता २ सहदेवी ३ पुनर्न वा ४ शरपुरवा ५ वराही ६ का कर्जा था ७ लक्ष्मणा - तुंबिका १ कर्कध्व कर्प्रा ११ कारवसीका १२ कर्कोटिका १३ चक्रांका १४ खेतार्क १५ व्याघ्यत्र १६ रुदंती १७ त्र प्रचगंधा १८ मुश ली १९ गिरिक णिका २० इंद्रवारुणी २१ त्रापामार्ग २२ शंखपु ष्पी२३ कुमारिका२४ स सुकी २५ गंधारी२६ निर्गुडी २० देव दारु२ - वट २९ शमी ३० पू स ३१ पलाशा ३२ त्रप्रवत्य ३३ चूत

त ३४ उदु बर ३५ जंबु ३६ नंदी ब हा ३७ वेत स ३० युन्नाग ३९ ऋ न ४० शाक ४१ बकुल ४२ त्रायमं ४३ शाल ४४ ताल ४५ त माल४६ पारल ४७ शानपत्र४८ मधूक४९ शिरीष५० श्रीर क्ष ५१ बहती इयं ५३ बसा ५४ मातिबसा ५५ पाठा ५५ नाग-बला ५७ जाति ५८ चकुल ५६ केतकी ६० कदली ६१ मातुलुं गी ६२ जयती ६३ यवानी ६५ वंडिका ६५ द्वी ए। युक्यी ६५ कुभी ६० श्रीपणि ६ - तमन६९ चंपक ७ ॰ पद्मकं ७१ कांचनयुष्पिका ० सिध्हेश्वरी ७३ बद्री ७४ राज इस ७५ धव७६ कुंद ७७ मुचुकुं दण्नगोजिव्हा ७६ सीरकंदुका ८० दाहिमी ८१ बाजपुरी ८२ बाह्मी = ३ आमलकी ८४ भूंगराज ८ ५ श्राधोमुखी ८ ६ मतस्या-सीटि ग्रारु स्वीकाट्ट तरंगिणीट ९ गुडूची ९० निशा ९१ शत म्ला ९२ वाकुची ९३ काक जंघा ९४ वर्वरा ९५ तुलसी ९६ कुश ९७ काश ९८ इक्समुलं ९९ सर्वपमूलं १०० त्रालाभेचोक्त एक्षा णांसहसाणांसमाहरेत् मूलनामानिगृणहीयाद्भताभावेवि शेषतः शांत्युक्तप्रकारेणशांतिंकुर्यात् मूलादिजातायाः क न्यायाविशोषतः॥ मूलजाश्वसुरंहंतिच्यालजाचतदंगनां मा हेंद्रजायजंहांतिदेवरंतु द्विदेवजा ज्येषायां ग्रम्रेषायांचेव ए कनक्षत्रजननेपिशांतिः चतुर्दशीशिनीचालीकुहूदशीनांशां तयोविधेयानिबंधेभ्यः व्यतिपातादिषु चापि इतिनक्षत्रप्र-करणं २ श्राथसंक्रां निप्रकरणम्॥

मुहूर्निसंधू.

	संव	मांनी	नार	रंजा.	•		1,04	3	9	6	99	षडुशीत्यान
₹.	चं •	मं.	बु.	ब-	श्र-	श.	वा-	3	4	6	99	विष्णुपद-
उम	लघु	चर	मेत्र	स्थिर	मित्र	नीस्ण	भानि		9		હ	विषुव.
बारा	आंक्षी	महोद	मंदा किनी	मंदा	मिश्रा	गशसी	संज्ञा	30	99	92	9	सोम्यायनः
शदान्स-	वैश्यान्स	गेय-सः	ख्यतीन्स	थिया	ग्यून्सं-	असरानं	कुल.	8	4	६	Ġ	याभ्यायन
共	#	執	到	धिमान्सुरव.	ं स	ച.		6	ę			यन

दिनस्यप्रथमन्यंशेमेषादिसंक्रमणेन्पजान्हंति मध्यत्र्यंशेहि जान् परन्यंशेवेषयान् संध्यायांश्द्रान् निशाप्रयमेषिशाचान् हितीयेनकंचरान् तृतीयेनटान् चतुर्थेपशुपालान्हंति सूर्योद येसकलिंगिजनंहं ति दिवाजसंक्रमेनर्थकलहो गत्रोसुभि क्षं संध्ययोर्रिष्टः १०।४।१।२।१२ संक्रांतयोनिशिसुरवदा ३।५ ।६।७।६।११ एतादिवाशाभदाच्यत्यये च्यत्ययदाः मेषादिवा तुलां रात्री तराकामं यर्यातिथोतुलासंकांतिक्तस्यामेवयावनीषंसं-क्रमेश्रभं न्यूनातिचारे दुर्भिक्षंराष्ट्रभंगंजनक्षयं कुजार्कार्कियीरे संक्रमेदुर्भिक्षादयः॥ श्राथपुण्यकालनिर्णाः संक्रांतिसम यादुभयत्र१६ बोडशद्यरिकायुण्यकालः राज्यधीत्यूर्वसंक्रमेयू विदिनाधीत्तरं राज्यधीत्यरंसंक्रमे ग्रागामि दिनाधीपर्यतं पुएय कालः राज्यर्थेसंकमेपूर्वापराहांतिमपूर्वार्थयोः पुण्यंक र्ममरायो विशेषः यद्यर्धरात्रात्परेयाम्यसंक्रांतिर्भवति नदातस्मिन्नेविदने मध्यान्होत्तरंपुएयं ऋध्रात्रतः पूर्वेयदिसोम्यसंक्रांतिर्भवति त दापरिनेपुएयं ऋत्रापिविशेषः ऋर्धविंबास्तान्निनाडी पर्माताः

सायंसंध्या ऋर्धविंबोद्यात्यूर्वत्रिना शप्रमितापातःसंध्याः यदि सायंसंध्यायांसोम्यायनंभवति नदानस्मिन्नेवरिनेपुण्यं यदिमातसंध्यायां याम्यायनं भवति तदापरदिनेपुर्यं यदिदि नेसंक्रमेसतितदा ४।५।२।११।८ एषामादीयुण्यकालः१।७ मध्येकातः पुण्यस्य ६।३।६।१२।१० एषामंतेपुण्यकातः स्पष्टका लानयनं षष्टि ६० इबिंबं यह भुक्तिभक्तं संक्रांतिनाडयो विलध्रम क्रत्ये सर्वेषां धट्या १६।१।१३।१।३।१।६।८।८।८ रच्यादिनां ग्रा थायनांशसंस्कृतसंकांत्यानयनं ॥ श्रायनांशाः षष्टि निद्याभा नुभुक्तिविभाजिताः रुखेनोनाभवेयुस्ताश्चरराख्यानीवयुएय दा। श्रयात्रेवायनां प्रज्ञानं ॥ भूनेत्रवेद ४।२१रहिनशाकः -स्वाशांश १० ही नितः षष्टिभक्तीयनां शारव्याः सीराश्वालन् चालिताः नवभरविराश्यर्ध युता यथा शको १८०४ भूने भवेद ४२१ रहितः १३८३ स्वाशांश १३८।१८ हीनित १२ ४४। ४२ षि ६० भक्त २। ४४। ४२ ग्रयनांशकाः प्रतिमासे-४।३० विकलार्यध्दः ग्रायसंकाती विरुध्हायां स्नानंतगर१ सरोरुहपन्न २ हरिद्रा ३ श्वेनसर्षप ४ लोध ५ सर्वासु संकांति षुसाधारएयेन.

मुहूर्तिसंधू.

				मत्ये	इ.संच्	क्रांति:	षुस्ना	नम्.			
9	ع	3	8	م	ex	9	b	ds.	90	99	92
कुंकु. रोचनं	कुंक एला	उशीरं पद्मक		पुत्रकं रोचनं	हरिद् <u>वा</u> वाल	रोचन श्रगरं	100000000000000000000000000000000000000	प्रगार मीकिक	रोच बाल	ग्रंथिय एखा	क्ष्रेरं फडिः
मांसी	मिद्धा	कुष	मुस्ता	मुस्ता	कुष	कुष	मांसी	कुष्ठं	पद्म	केशरं	एला
मुरा	रीचनं	रोचनं	मुरा	मांसी	मांसी	पद्मक	पन्नक	रीचन	कुष	जाति पत्र	मांसी
चंदन.	चंद्रम.	मंथिप.	शेलेख.	त्वम्.	चंदम.	उद्यीर.	रोचना.	प्तु.	उद्यीर.	रोचन.	र्वदन.
यात्स.	श्वेत.	कुक्रम.	चंद्रनं	चंदनं	रोचनं.	अक	आगुर	पद्मक.	पत्रक.	0	पदाक
हिरिद्रा.	गोमुत्र.	अगर.	हरिदा.	0	٥	इरिद्रा.	मुस्ता.	मुरा	ह्यास्या.	0	बाल्डकं.
कर्प्र.	0	0	. विक	•	o	माउ.	केख .	मांसे	वाल .	0	सं
۰	0	3	٥	•	0	o	0	•	•	0	उशीर.

मुहूर्नसिंधू:

	, 5	प्रथर	विसं	क्रांते	करए	म्परत्	वंबाह्रन	10१%	गदय	:	
9						विष्टि		नाग	चतु	किं.	करणा
सिंह	व्याघः	वराह	गधा	गज	महिः	न्प्रश्व	१वा-	मे.	गी.	णायु.	वाह
१वे न	पीत-	हरि	पांडु	रक्त	ईयत्छ	रुष्ग	चित्र	कंब	तय	मेघन-	वासां-
संस्कृ	गदा	खडू	दंड	धनु	तोम	कुंज	पाश	श्रंकु-	शस्त्र	बाएा	ऋायु
ग्रन	पायस						चित्रान		घृत	शर्करा	भक्षाः
कस्नुरी	कुंकुम	चंदन	मृगय-	गोरोच	महाब-	विस्ताः	हरिता.	कम	काला गुरु	कर्षूर	लेपा.
देवता	भृतः	सर्प.	पक्षीः	पश्रू.	मृग-	ब्राह्मण	क्षत्रिः	वेश्य	श्रद्भ.	संकर	
नागकें शर्	जलव.	बकुरु:	केतकी	बिल्ब	श्चर्यः	दूर्वा	कर्ष्र.	मालित	गुलाब	गुल्हड	वुष्या
निवि	निवि	उत्थित	सुप्त.	निवि			उ थित		स्तम	उत्थि-	श्रव स्थाः
सम	सम	इष्ट	श्रुति	सम	सम	सम	इष्ट	श्रुति	ऋ नि	इष्ट	फराः
संबं	जिस	हर्तः		1	विसंत्र	ां तिभ	निजन्म	1 3:	राग्रां व	ांतिय	

संक्रांति सुह त	f:		रविसं	कांति	भान् जन्म	तुला	संकांति	फल.
उ-३ रो-चि- पु-	सं. इहत्	मुक्	w	शिर्ष	भूपाल.	ધ	शिर	मानंः
मः रे वि श्रानुः इ स्थितः ति श्रा	सं	मु.	3	मुखे	पंडित:	ч	मुखे	वेरं.
धः रू.मि. यू.३ मू.	सम	30	4	त्द्रये	धनसाभ	8	,हदयः	रताभं:
त्ये अस्टे ग्रा स्वा भ	मं∙	30	आरसे	वध्रं	साम.	90	हस्ते	भोगं.
	जघ	94	a.	गमे	भिक्षा	٦	चरएा	त्रासं,
			જ	दःगांदे	यात्रा.	इदमा	प रवि	संक्रांति
la gra			3	वा-पा-	मृत्य.	भाज्ज	न्मभान	•

38- ज्यातिष्

						- 01	6/2			
	सर	.रसं २	कांतिः		क	र्कसंकां	ति.	विदुव	गिति श	्राटा १२ सं.
1			न्प्रर्थ त	100	3	शीर्षः	खाम.	9	मुखे.	दुः स्वं -
		मुखे-	मिछ्प	नि.	34	मुखे.	मिष्टान.	4	द-हस्ते-	
	9	द•हस्ते•	ऐश्वय	f-	ч	त्हद्ये-	ईहित.	2	द पदे	भ्रमण.
	9	वा इस्ते	मान		8	द•हस्ते	एश्वर्य-	3	वा • पदे	
	2	द-स्कथे	भ्रनुपर	द्व-	8	वा ह	न्प्रनश्वर्यः	4	,हदये.	कांता सोरय
	2	ग•स्कं•	खागवि	तं चित्	8	इ पारे	प्रवास•	8	ग्र-इ	वंधनं:
	4	त्ददय	ईहित		8	वा याद	ऽयात्रा •	2	नेत्रे	सन्मान.
	1	नाभी	किंचि					٦	नेत्रे.	-सन्मान-
		गुदे	ईहित		नं:			3	मस्तके	न्य्रायुष्य.
	9	पक्षे-	प्रवास		भांतेवा	मं	늄	9	गुत्हो.	मृत्य.
		सर्व	संक्रां	ते.	नेनाम		•			
	9	श्रहे	मृत्यः	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH		w	धनः	विष	गुपदीषु	
	2	पाईर्व	खाभ:		ममां	as	हानि	9	मुखे	रोगः
	2	पाइर्व	लाभ:					8	र बाही	भोग
	2	मध्ये	स्तरवं	•	王	u S	यस्त्र-	3	इ.पदे-	-प्रधाः
	प	पूर्व	जय.		लधरमाज्य	ed	यथा	3	वा पदे	र्व धर्न
	4	दक्षिणे	धनः	and all a		arter	- 2	8	गा हस्ते	वंधनं.
	2	पश्चिमे	विभूत	1.	मिना	w	भोगः	५	,हिंद	भ्रम.
	3	उत्तरे	राजम	ान -	郡		पंथा.	8	नेत्रे. नाभी	रेश्वर्य
		साधा	.राजम रण्येन		•	CA.	पथा-	2	नाभी	राजपूजा.
		120340	18 11.50			मानि	फ.	9	गुदे.	श्राप मृत्फ
'स्रिशिश्विकः	मवास.	भोग.	लाभः	ज्वर.	आये.	न्यनिष्ट.	निकोएंसम्, तत्रमंसंकातिमा ज्यमानं गणनीय	नत्र प्रवासी भोगः	तामश्वज्यागिने. सापसंपदीविज	योमृत्यु स्थांतिः फ.
7 6	as	u	d	w	a	w	在上位	मि	हे हि	म ची

नेकोणानम

harana.	त्रिको	गच	त्य
9	90	96	भवासः
2	99	20	भोगलाः
3	92	29	ज्यरः
8	93	22	श्रमिभी
3	98	23	ताप.
w	94	28	संपत्
9	98	24	विजयः
6	90	३६	मृत्यु .
re	95	20	श्रर्थाप्ति

समेन यथा कमम् कमे ए। प्रथमदश् मेकोन थिंश भेषु प्रवासः इत्याद्यप्रकाषि बोध्यम् रियभोसमां दियुत संक्रांती दुर्भिसादयः शेष वारेषु शर्भं इतिसं-क्रांतिः ३ श्रूषणोन्चरं तन्त्र जन्मरा शेनी मराशेर्चा विवाहे सर्वमागत्ये-यात्रादी ग्रहणोन्चरे जन्मराशेः प्रधा नत्यंना मराशिन चिंतयेत् देशोगा मेग्रहेषु ध्देरोवा यांच्यवहारके ना मराशेः प्रधानत्यं जन्मराशिन चिंतये

त् काकिन्यांवर्गगुर्धोच्यादेयूतेस्वरोदये मंत्रेषुनर्भूवरणेनाम राशेः प्रधानता जन्मनत्तायतेयेषांतेषांनास्त्रोगवेष्यते नामच प्रमायेन जागर्तियेनगछितशब्दितः तत्रनाम्त्यादि मोवर्णा प्रात्यस्तस्माङ्गिर्णयः बहूनियस्यनामानिनरस्यस्युः कथंचन तस्यपश्चाद्ववंनामपात्द्यंस्वरिशारदेः यवनास्तुयत्रस्थितःशीत करोनराणां तजन्मराशिंसमुदाइरंति यथातथायेषुरवर्गाः स्तत्रमः स्थितानतेसमकुत्रीभवंति त्र्यतोष्टराशिर्मनुजः त्र्यथकुत्रकोराशि प्रात्यः भोगादीत्रभ्रमंयोज्यं राजकार्यर्कमंत्रथा चंद्रभंक्रभकार्थे षु संयामादीनभोमभं विद्याभ्यासेषुधर्सन्विगाहेगुक्भंस्मृतं शु कंपुरमंप्रयाणेन्दिक्सायांशिनभंबुधेः त्र्यथात्रशतप्रथार्य मवकहद्यनक्रम्॥

मुहूर्तसिंधू.

						श	नपश्	यम्-		100				
अ	भः	ક્રે	रो.	मृ.	श्रा·	A ·	नि •	भ्र	म-	पू.	3.	ह.	बि.	भा.
चु∙	'છે∙	ऋ∙	and the second second	र्भंग	<i>₹</i> .	के	ह.	डि.	म∙	मो	हे.	g .	ये.	माः
बे.	ख∙	hir	र्ग :	बो •	यं	को	chie	हुं.	मि॰	र•	दो •	ष.	पो-	पा॰३
चो	रें:	3	वि	क∙	ऊं	ह.	हो	्रंड .	मु ·	रि-	पः	एा-	₹.	वा-३
ल.	लो	ए.	बु-	कि	छ.	段.	इ∙	डो.	मे.	हुं.	षि.	ह-	रि.	षा ४
स्वाः	विः	अ	ज्ये	म्	पू	3	अ	श्च-	धः	शः	यू.	3.	₹.	भा.
£.	नि •	न	नो	पे	3.5	आ	जु	रिव-	ग∙	गो॰	से	Marie Commence	दे.	या- १
₹.	तु∙	नि	य	यो	ध	भो	जे	रचु.	गीः	साः	सोः	थे	दो	या २
से.	ते.	नु	य	97	फ	ज	जो	रवे.	गु.	सिः	₹.	ħ -	च•	याः३
न∙	तोः	न	मु	भि	ट	जि	रंब	खो	गे	मु.	दिः	अ•	चिं-	पा•४

त्र्ययनग्पादेः प्रत्येकंराशयः

मे-	₹.	मि	क.	सिं	कं.	तु.	₹·-	ध.	म.	₫ .	मीः	रा∙
मुं:	इ.	क∙	हि.	म∙	रो.	₹.	तीः	ये.	भो	गुं	दिः	ऋ∙
नेवं	3.	कि	k.	मि	ч.	1र-	न∙	येा.	ज़	गेः	दु.	ऋ∙
चो.	ऐ.	क्र	tie	मुं	्पि∙	सं∙	िं	भ∙	जि.	गो	थ∙	श्च-
छ.	डो ·	ध	हो	मे.	a .	रे.	चु.	भिजु	जु.	स∙	झ	ऋ.
छि•	बं•	ड़-	इ∙	मो •	ष.	गे.	र्म	मु.	जे.	सि	अ	श्र
छ.	बि.	छ.	डि -	ट-	एा.	नः	नो -	धः	जो.	मु.	हे.	ऋ∙
हे.	बुं.	के	डुं.	रि:	3.	तिः	ब •	फ्र	खं खं	से∙	दो.	भ्यः
हो.	बे.	को.	डे ·	रुं	षे.	ब∙	षि.	ड.	खः	सो	च.	श्रा
ग्र∙	बो:	ह.	डो -	टे	पो.	ने:	यु.	भे.	खी. गगि.	इ.	चि.	ऋ

मुहर्तसिंधू

1 10 10		West of the	ग्रथगं	<u>चिर्प</u>	त्तं वे ध	उद्ध ः		Wil-	
सृ	चं.	मं.	व.	हा-	श्र.	श.	रा.	के.	ग्रह-
स्थान नाशः	श्रम्ब जाभ	शत्रुभी	वंधं.	भयं-	स्रयं	भ्रंशं	हानिं	रोगं	9
भयं-	वित्तनाः	धननाः	धनं	धनं	धनं	बसे शं	नेखं	वेरं	٦
श्रियं	द्रव्यं	धनं	शत्रुभीः	भयं	मुखं	स्राभं	धनं	मुखं-	3
मानक्ष यं.	<u>कृक्षिरो</u> ग्र	शत्रुभी निः	धनला	श्रर्थना	धनं	शत्रुदृद्धि	वेरं	भीतिः	8
दैन्यं	कार्यना	धननाः	मांद्यं -	स्तरवं	पुत्रं	पुत्रादि नाः	शोकं	शुनं.	प
रियुनाश	वित्तता भः	धनं	न्यिति	श्चं	शत्रुद्धि	नामं	वित्तं	वित्तं	8
यात्रां-	इयसा	धनना -	पीड़ां.	भूपमाः	शोकद-	दोषं	किंछ-	गतिं	9
पीडां.	श्रपमृ- रकः	भयं	धनला	मृत्युरो	धनदः	पीडां	व्यसुं	गदं	h
शुएयना	च्यम यं	भुचं	धननाः	मुखं.	स्त्राभं	धनना	पापं	पापं .	do do
कर्मसि	सुर्ख	शुचं	सुखं	देन्यं	त्र्यसुरवं	वैमनस्यं	वेरं	शोकं	90
लाभं	धनं	लामं	-प्रर्थ	ધનં	धनं	विनं	सुरवं	यश:	99
0	o	o	a	ð	0	s	ð	o	0
द्रव्यना	रुजं	धनना शं	धननाशं	पीडां	धनं	न्यनर्थ	हानि	वेरं	92
\$199 E(190	9019 3199	3189	२१४१६ ८१९० १९	र्वावव ७। ७	वर । द	9913	3199	३।१९ ६।१९	शुभाः
S. S	3199	20.00	15.00 m	216190	31 2 2 2 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3 3	Sala King	27.2%	13/6g	वेध:

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्तिसंधू.

	र	विचे	ध						चं	द्वे	धः					भीः	श	•	रा के
र		₹.	₹.		₹.	नं		चं.	dı	ř.	चं.	7	į.	चं.	. 67	गे	श	•	रा के
w		90	3		99	90		3	9'	3	ġ		ध्	v		ધ	99		3
92		8	3		ч	8					બ	9	12	٦		3	ع		92
A.P.		बुध व	गेथ	7			15	वि	धः				1	મૃગુ	ये	धः			
3	8	६	c	90	99	4	٩	5	v	99	9	٩	3	8	14	6	ક	92	99
e,	3	ક	9	6	92	8	92	90	3	6	6	B	9	90	ક	4	99	w	3

इदंच यहाधिषित राशितोचेधमाहुः श्रपरे जन्मराशि-तो नामराशितोचा विषरीतचेधे शतभाशतभ वेषरीत्यं यथा ६ सूर्यः शुभः चेन्नद्वादश शनिवर्जितः कोषिमह स्रो नत्र तदानशतभः १२ सूर्यः त्राशुभः चेद्रि ६ पुगतः शनिवर्जितमहोनमहास्रो न्नाशतभः

	साधारणयेन गोचरम्.														
स्र∙	चं.	भो	बु.	जी.	१शु.	श.	रा के	ग्रहाः							
3 1Ec 90199	9 1 2 1 3 4 1 5 1 9 5 1 9 0 1 9	3 Ex		२।५१७ ६ । ११			३। है ०१०।११	गुभा:							
91214 ७१ ६	0	વારાષ્ડ્ર હાર્ટ	भाव पाणार्ट		पार्घ ७११०	१।२।५ ७।६	शशाप हाज	पूज्या:							
35	92 81c	92	92	१२	92	११ ८	92	निंद्याः							

मुहूर्तसिंधू.

918	Simple Simple	mp)	ग्रथर	यादि	षुविरु	देषुरु	गनोष	ध्यः	HEAR BUFF	
म्.	चं.	भी	बु.	बु∙	का∙	श	रा•	के	सूर्य.	चंद्र.
- Kit	Sales .	· Ka	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	· A	l'a	E.	香	N. S.		So.
N. S.	Who	KS.A	AS S	St.	E.	le la	A.	AS.	A Second	Mr.
\$ 25.5	A.S. R.	TE SE	J. K.	45	je je	Se Se	A. S. Kar	The state of the s	S. S	Na San San San San San San San San San Sa
N. Car		(in)	A.	S.A.	· A	A. C.	Sales Allender	No.	Kings.	Ke.
6	E	É	The	The state of the s	K.	-Kr.	Ja .	ka ka	Sp.	No.
A.	Jan San San San San San San San San San S	Alt.	- King	No.	A.	E.	JE S	The state of the s	&S	· A
Sel.	Ski	A.S.	No.	The state of the s	, ,	Jan .	(Se	A. C. C.	Mr.	The state of the s
A. S.	* Ko	Tion	o	5°4	•	0	· A	15 Est	· Kar	S. Son
Te B		AL A	o	•	٥	0	The state of the s	STA STA	X's	\$55
•	۰	STATE OF	•	0	•	0	X.	. 0	:Kit	in his

श्रथेषा धारणमणयः

A Report	(RE	A. C.	E.K	, King	X Sign	N. Comments	- Kar	Sec	0	O
A.S.	· Star	Ke Ke	No.	TK.	Se de la constant de	- Rie	to the	Jess Service	ø	0

मुहूर्तसिंधू.

तर्चनादादिजदेववंदनाच्छ्रेयस्कयाकर्णनतोमखेसाणात् हो माज्जपादागमपाठदानतोनपीडयंन्यंगभृतः खगामिनः ग्रष्ट वर्षां तंवालानांफलं पितरि विवाहोर्ध्वस्त्रियाभर्तरि फलपाको बोध्यः ॥ त्र्ययप्रहणेगोचरं ॥ तत्रजन्मर्समहादेवकष्टदं जन्म र्सदशमेएकोनविंशोभेग्रहणमपिकष्टदं जन्मसूर्यात्रांतराशोचेहुरः

						Am one		The Contract				
	यसा	#	गोध्म	माशिक्यं	नाभ	भ	युड	रक्तवस्त्र	सूर्यः	भीग	गांनिस्मा मादियुनी	नम् सोमान्यू
괴	नहुं	द्य	दुग्ध.	शर्करा	शंरवं	स्कार	सितबर	धृत कत	सं.		वासक	हरिद्रा
स्मिय	करविसु	न्यं	गुड	रक्तथ	गम्मा	गोध्म	भवात	कत रुषो रुण	平		रूर्वा -	शमी.
ताम्मयश्रंग स्वर्ण चंद्रयुक् मस्तकः	रंत	कां स्य	帮	到	यािव	क	नीत्वरः	मुद्र	띠		ग्रांबुज सर्घप	कमरह शंखपुष्यी
विद्रयु	युस्तक	युत	हारी	शर्करा	च्याक	षीतव.	हेम	事:	₹.	यहराना॰	पंचवर्गी मृतम	गुडूचीः
क्मस		मंध	क्य	नंडुला	श्वेतव.	श्राज्य	शर्करा	घोटक	शु.	40	पंचपसे व- पंचगव्य	श्राम्यप लुबाः नागर्भश
31	कुलिय	मक्ष	뀤	नील तेल	अं र	माथ	रुष्गव	रुषागी	शः			र. भिद्रार्थ.
	111	कंबल	म्बं	नं युक्ति	स्रें,	नीलब.	類,	सप्तथान	্ন			चंदन
	0	म	अत्वर्ग	कस्तुरि	北 .	類.	र्ध्या	खुगा.	क्र			पद्याक ।
	적	괵	괙	य	츽	젂	괙	寸	知			416.40.

पित्यक्षत्तेशदः चंद्राक्षांतराशो मातृपक्षनाशाय पितृपक्षिविनाशा य सूर्यस्थानेभवेद्गहः मातृपक्षिवनाशायचंद्रस्थानेभवेद्गहः हो रायां ग्रहणांचेनाहारोगं मरणांचा जन्मभ पूर्वापरभयोरिपग्रहणांरोcc-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangatri गादिकरं राज्याभिषेकभेचे द्वहं णंतदाराज्यभंगं मित्रनाशं मरणंग तथासस मबर्ष ११६१२५ शपंचिषशतिमित भेषिप यह एां कष् दं तदर्ष जप होमशांतयः नागदानंबा विधेयं निबंधोक्तम्॥

	जन्मराशेः सकाशात् यह एो फलम्										
9	ર	3	æ	ď	a	9	6	é	90	99	92
धात.	इति.	꺽	व्यथा.	चिता.	सीरवं.	कं खंत्रना -	सृतय.	मानना.	सुरव.	लामः	श्र्याय.

त्रायतारावलमा ह।। रुष्णाष्ट्रम्यूर्ध्वतोग्रात्यंदशाहं तारका बलं॥परतोञ्जबलं यात्यं सर्वमंगलकर्मक जन्मसंपद्दिपत् क्षेमप्रत्यरिः साधको वधः मैत्रातिमेत्रतारास्युस्तारानामस इक्फला ताराबलेन हीनोपि चंद्रः शतक्लेबलीयुभः शतभं तारावलंक्रणांयदिचंद्रोप्यनिष्टदः नबलंशशिनःक्रणोशत क्लेताराबलंनवे यातेस्वामिनिदेशं जायाप्रकरोतिसर्वका र्थाणि त्रात्रापितारापितवीर्यमेववदंतिपस्तिद्वतयेपिके-चित् के चिच्नतारावलयुक्त मिंदोर्बलं सदादेयमिति बुचंति क ष्णोपिपक्षेविध्वीर्यमेवभवेस्यधानंनतुतारकायाद्धःस्यः रू शोवापतिरेवयद्दरसर्वाणिकार्याणिविधापयीत विहायता राबलमोषधीशाः पक्षद्वयेपीष्टफलं नयसमात् श्रापायाजाया नुमतंहिलोकेनकार्यसिध्दोपुरुषः समर्थद्त्यादिवनोभिः सं शयोभवित तथापि पूर्वीक्तमेवरमणीयम् जन्मभादिनभांतं

मुहूर्तसंधू:

गएगयेताराभवंतिः

9/160	जन्मनक्षत्रात्तारा चकंदानं चासां													
ज्ञ.	सं	चि.	स्रे	भ.	साः	ब.	मे	आ:	जः	सं•	वि॰	क्षे	प्र∙	तारा
9	9	3	8	×	w	6	ባ	A>	90	99.	92	93	98	भा
मः	A.	ऽश्र	कुं	१श्र	<i>३</i> फ.	232:	<i>इफ्र</i> ∙	शः	मः	शः	2 शु	३ उ.	ऽशुः	ग्र-
शाक	o	गुड	0	व्या	c	과의	0	c	शाक	0	गुड	0	क्षा	细
सा	ब-	भे.	ऋ∙	ज्ञ	स∙	वि.	क्षे	य-	सा	य	并	त्र्य	ना	एा
94	98	90	95	99	ર્ ૦	29	22	23	28	२५	३६	20	भा	निः
शुः	ऽञ्चुः	श्रु	शुः	म-	शु.	১শ্র	क्र	ऽश्रुः	श्रु.	१ स्रे.	श्रुः	শ্ব	श्र [•]	भाः
o	सु· ति·		o	शाक	٥	गुड		न्द्रण		सु.		•	0	दा

अधनारायाःपरिहारःप्रथमार्नोम्सुविपत्यत्य रयोवर्जाः दि तीयार्नोविपत्यत्यरिमृत्यूनां क्रमात् प्रथमचरण चतुर्थत् तीयचरणा वर्ज्याः तृतीयार्नो सर्वास्ताराष्ट्रभाः नारा बत्तत श्रंद्रश्रंद्रबलाङ्गास्करस्तस्य बत्ततः सर्वेरवेदाः सबला स्त्रनापिचांद्रमेववरम् त्र्यप्रगाहु गोचरः स्वतंत्रोनतत्रचांद्रम् धानं त्र्यथचंद्रबलं चंद्रेस्वोद्यत्रिकोणगेमित्रर्धगेनारादीस्थ मिवन जन्मभात् ६।५१२ क्रक्लेक्स्भक्त्यो। ऽक्रभः सितादीस चंद्रेपसे शुभः सकलः कृष्णोदुष्टेचंद्रेसकलः पक्षः क्रभः व्य त्ययेव्यत्ययंत्रयात्रचक्रम्

FIRST	जन्मराशेःसकाशाचंद्रफलं										
9	9 2 3 8 4 5 6 90 99 92										
पुष्टि	ऽसुरंबं	लाभ	रोग	कार्यः नाः	द्रव्याग	राजमा न	मर्गा	भयं	कार्यर धनं	ता रहाभ	ज्ययं.
ज∙			श्राष्ट	म्बङ्गा	निः	(delt	10.00		राइ	गमधि	का.
जना	कर्म,	। संध	T F	ामु भ	वेना	मान्द्र	देश	जा	ति	इति	0
मृत्स	कर्मन	ाः बुंध	नाः सु	खना र	रेहनां.	मनस्तापं	देशन	ा जिति	ाना व	धीना •	फलं.

केत्वारार्कियुतंभोमचक्रभेदेनदूषितं हतसुल्कोपरागाभ्यांस्वभा-वान्यत्वमागतं याडितंभवित निरुपद्गतभोनिरामयः सुरवभाद्भृष्टी पुर्वलान्वितः षड्पद्भतभो विनश्यिति निभिरन्येश्वराहावनीश्वरः शुभ योगेशासं विवाहोध्वंगर्भसंस्कारभिन्नेकर्मिश भर्तृगोचरेणास्त्र यावलं चनार्याः पाणियहणादिविधी तियत्रीर्वलं वितनीयं त था कुरुंबेस्वामिनोर्थाज्ज्येषस्यसेनायां मिषस्वाभिनः पाणिग्रहां-गादिविधीन् नार्याः वित्रोरदश्चंद्रमसोविचिंत्यं राष्ट्रीबलं नेतुरगार कारगांतथानुगानांचयुधिध्यजिन्याः ग्रयचंद्रवतंकेषुनिक्तम साहनदोहदस्यविचारे नथाभिसोः नथोपानाध्वरस्य सहस्त्रचं द्रवतकर्त्रत्र साध्यसाध्वान विंतनीयं चंद्रबलं नदोहस्यामृतिषं इसारं भिक्षोरुपात्ताध्वरदेवतस्य सहस्त्रचंद्रवनकर्तुराद्येरसाधुवा साधुनिनंतनीयं ग्राथचंद्रावस्थाःगतनक्षत्राणि श्राश्वन्यादीनिध षष्ठिगुणितानि वर्त्तमाननक्षत्रस्यस्यष्युक्तघटीयुतानि ४ चतुर्गुणि तानि ४५ पंचचलारिशद्भक्तानिलब्धं गतात्र्यवस्थाः स्ता श्रयपा स १ नाश २ मरएां ३ जय ४ द्वास्य ५ रितः ६ क्रीडित ७ सप्त - भुक्त ईज मुहूर्तसिंधू.

र १० कंप ११ स्थिरता १२ सेषस्थे प्रवासाद्याः रषणे नाशाद्याः नियुन गेमरणाद्यागणनीयाः त्र्यभे प्ये वस् के कित्सर्वराशिषु प्रवासादिगण नामाद्वः याद्वगवस्थो विश्वस्तादक् फलंददाति तेषु दिवसेषु त्र्यत्रगत नक्षत्रघटिकाः षष्टिद्वाद्व त्र्याश्वन्यादिषु स्पष्टा योज्याः नाष्ट्रवर्तमां नभघटिकाः षष्टिद्व गुणिताभभोगभाजिताः स्पष्टाः स्युर्यथा चे ताभवंति तथाविषघटिस्पष्टी कृतो विवादेषस्पते.

	प्रवासादि फलम्.										
प्र∙	नाः	म.	ज.	हा-	₹.	कीः	सु	मु	ज्य•	कं∙	स्यि
भवास	धनना०	मृत्युभ य	जय-	बिलास	रति.	सुखं	नदा किं	भोजनं	तापं	हानि	सुरवं

ग्राधीत्रावश्यके निष्यादीनांदानं.

	वा॰	भेः	नाड्यं	युती	चंद्रे	भद्रा	तारा -	पृज्या.
नंदुरु.	रत	गी:	स्वर्ण	स्वर्ण	शंख	धान्य	खबएा	दाना-

गंतव्यराशे:प्राक्फरं समयत:फलदाः

स्र वं भी बु र श श श स्र वं भी बु रं श श श

द वं भी बु र श श श स्र वं भी बु रं श श

रत्नयासः

इ बु पू श आ ने पन्नाः हिंगः साति. इ गु स्र भी दुः पंख मणा गुन्नाः के बा श प गुन्नाः उसवः नीलः नेदः राहुकेनवोगासत्रयं माक्यलदाः ग्रहदोष्ट्यपरि हारायोर्मिकाजन्मभोषस्मिन्वारेनत्फलंनथाक-स्यकस्यमहस्यबलेनिकंकिंकार्यमिनिबोधना यनकन्यासः क्रमेशा ऋषगोन्दरावबोध्या

	चक्रमः	11 15 12	1.000				March 1	2	
II.	ц.	ग्रं	₫.	ज.	<i>₹</i> • <i>1</i>	श.	सः	ep.	78.
मार्ग	श्रान्त	श्रातिभी	सन्ति	वस्त्रला	स्कख	दु:ख	0	0	मासभक्त
नृपालोक	The state of the s	THE RESERVE OF THE PARTY OF THE	Control of the Contro	विवाह		दीसा	पाप	कोर्य	कर्ता.

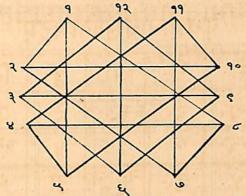
सुहूर्तसिंधू.

र्थसर्वतोभद्रादि चऋन्यासोन्यस्यते.

	वैधज्ञानायसर्वतोभद्रम्									
श्र-	क .	रो	मृ.	श्रा-	युः	ति-	श्र-	श्र्या•		
भः	3.	শ্ব-	यं.	क.	he	3.	₹·	ਸਂ·		
ग्र	स्ड-	रह∙	ď	3	K	•सः	म•	र्यू:		
रे.	चं.	9	द्धाः	नंः मं	31	બ	-	3.		
3.	द.	92	वि-अष्ट-	यू- शः	भें बु	EX	प∙	ह.		
यू.	स∙	99	ग्र	ज. रू.	刻・	9	₹.	निः		
श	ग.	रो.	90	3	6	रो.	त•	स्वाः		
धः	ऋ.	ख	ज-	भः	य•	न	₹.	चि.		
र्द.	श्र	श्र-	3.	व्र.	मू.	ज्ये.	श्र-	इ.		

भमो ऋ से स्रोहानिः स्वरे व्याधिर्भयं तिथी राशिवेधेमहाविधं पंचिविद्धो नजीवित वेधस्व भरएयकारो हृषभंचनंदां भद्रां तकारं स्रवएां विशारवां तुत्रांचिविद्धोदनत्र र्धगः वकारमी कार सुकारदास्रो स्वातिरकारं मिथुनंचकन्यामभिजिदंच रो हिएगांच्यदावकस्तदावेधोशिवनी गतः रोहिएयांच्यदाशी छोवेधः स्वात्यां तुवामतः रोहिएयांच्यदार्भिजित्तदा श्रभवेधे श्रभम् पापवेधे- दुष्टम्।।

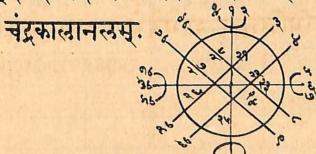
मुह्रनिसंधू:



यथाराशिगान्यहान्दत्वाराशोविदेभयार्तयः यहास्तृतिहि नगादेयायहिनमपेक्षितं शत्भाशतभकतेः सूर्य कालानलम्



ग्रार्कभनः स्वनामभंयत्र समायानंतारक्फलंनलेकमान् विंनायधप्रति बंधः श्रंगद्वयेरुग्भंगी श्रृलेषुमृत्यं शेषेषु जयलाभाभीष्टार्थिति-द्वय इदंगदे वादेरणेद्रायाणे चिंननीयम्



CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तिश्रलसंस्थं निधनायन् नमं तर्वहिस्थं चज्याय इदमपिवर्न माननस्त्राज्जन्मभानं नामभानं वागणानीयं ग दप्रयाण यात्रादिषु विचारणीयम्

रवि	चक्रम्	चं	द्रचक्रम्	भी	मचक्रम्
3	भूप	9	धनं	3	सुखंः
8	विदेश.	3	शुभे:	8	क्छेश.
8	विदेश.	ર	भयम्	90	पीडाभयम्
8	दरिद्र .	8	गमनम्	æ	लाभम्.
8	दरिद्ध.	દ્	लाभ.	ď	कष्टं.
4	रहिमी:	8	विमुः	3	स्करवं.
3	भोगवान्	५	साम्य	जन्मभ	ा <u>द्री</u> मभांतंग
जन्मभा	लूर्यभंगराये	2	स्तरवं.	the arma and and another appoint	फलंध्येयम्.
(फलं क	मास्येयम्.	जन्मभा	<u>हर्तमानभंयावत्</u>	गणयेत.	
बु	धचकम्.	17	भीवचऋम्.	श	अचकम्.
3	धनम्	æ	नृपती	3	कांतिं
3	सत्यम्	3	धनम्	b	स्करव
5	श्रक्तरवं	8	मृत्य	٦	रोग.
9	स्करवम्	E	भयरोगी	.4	जयम्.
4	लाभ	فع	धनस्तरेव	E	भयम्
Ex	खाभ	9	सुरवम्	3	निधनम्.
9	क्षम्	8	धनलाभः	ननाभा	रार्ग बभां तंगरगचे त्
जन्मभा	हुध भांतंगणये	ज्यभा	ज्जीव भांतं गरा		
न्:		यत्.			

मुहूर्तसिंधू.

शनि	चक्रम्.	शान	नचक्रम्.	राष्	हचक्रम्
٩	धनस्	9	मु-भोजनम्	· v	श्रर्यहानिः
ď	न्यिति	×	देह लाभः	٠,	संताप.
b	दुः स्वम्	દ્	पदी १ पर्यट -	3	भयम्.
3	रक्तरवम्	8	वावाः रागः	3	रितिकाश्यं.
3	दु: खम्	ч	रहि श्री:	9	कुभोजन.
2	कष्म	3	मस्तं राज्यं	S	मृत्य.
शनिभा	ज्जिनिभांतं ग	વ	नेत्रे सत्यं.	9	नाशः
एायेन्		ع	गुर्धे मृत्युः	a	प्राणनाश-
	29.6	शनिभाज्ञ	नमभां तंगए। येत्-	राहुभाजन	म्भांतं गए। येत्ः

केर	उचकम्	कोटचऋम्-
2	नेत्रे. शोक.	हर् ग्र. म
ч	मुखे. खाभः	रो- पु.पु. ४
3	मस्तः राज्यः	H. 341.
8	दहः यशः	भ ग्रहे हिंच स्वा वि
8	गान्हरं भयर	STATE OF STA
9	नाभीः नाशः	THE TOTAL STATE OF THE PARTY OF
2	गत्येः मृत्युः	व राज ज
હ્ય	पादयो धननाश	धः अः ज्यः

त्रात्रवके क्रांति श्रम्हे घ षा भ स्वाः वि श्राम् श्राभ श्राधः ग्राधि भ १२ एतानिबहिः रो प् पू फा कि त्ये उ श रे ट एता निमकारे मृ ग्राः उ ह मू पूषा पूभा उभा एतानिमध्ये ग्रा स्मिन्बहिः पापयोगे श्रमं ग्रानः पापयोगे कष्टं विस्तरमन्यतो ध्येयमिति इहिउपे ज्ञासस्थान स्वास्त्र स्वास्

(७६) सुदूर्तसिंधूः नत्रादी प्रथमार्त्तवफलमाहः क्रमाद्याति थियोगभ समयमा सल्यादीनां फलबोधाय प्रत्येकं चक्राणि

	incana 2 2	r	तथिप	ज्लानि	Ē,			वारफलानिः			
9	2	· 3	8	e,	E	e	r	Ħ.	में.	भीः	
सुभगा	भाग्यवती	सुतात्या	विधवा	धनास्या	क्छेशभाः	धनात्या	राक्षसी	विधवा-	मृतापसा	न्यात्महानी	
w	90	99	92	93	98	94	30	बु.	द्य.	शु श	
पापा.	घीतिस्रुता	सुताद्याः	दुर्भगाः.	दावी.	चंश्च लीः	सुप्रनाः	बीरा.	कन्यास्.	बु िया	पुत्रवती- कन्यास्-	

ग्रायनस्थन फलावि

					30.0	10 (31)	•			
ऋ.	भः	रहः	रो	मृं	श्रा•	मु.	निः	ऋ∙	म∙	पू.
धनादया	रोषसुता	सुयुना	धनादया	सुतादया	भर्तृत्रिया	पतिचतां	पतिज्ञता	प्रमती.	प्रम्यती.	युवती .
3.	te	चि	स्वाः	वि.	ऋ∙	ज्ये-	मू.	यू.	3.	श्चर
युवती.	मारका.	मारका	धनादया	धना द्या	विद्याः	विधवा.	नित्या.	नित्या.	सुभगा.	सुभगा.

भड़	ोष.			योग	फ ला	ने-			क	रणफ	त्त्रम्.	VIII
म्प्र,	ध	श.	वि.	श्र्यां	श्रू.	र्ग.	व्याः	य.	गा•	की	ते.	ग.
सुभगा	स्रीरणी	भाग्यं	दर्भना	वंध्या	श्रस्त्रपति	पुत्र्यकी	श्रात्मध	郑府	पुश्चिएी	यसदा	समना	नाश
पू	3.	रे.	य•	पा	प.	वें	0	ब •	वि	श-	ना•	किं.
भाग्य.	सुभगा.	भर्विषया	澌	पतिद्यी.	वंध्या	माराणि.	0 0	नष्ट्रभजा	वंध्या .	विधवा.	ग्रमुखं	विधवाः

मुहर्नसिंधू.

SELF.	मासफलानि.										
9	ع	3	8	٩	દ	9	b	5	90	99	92
धन वती.	रोगि छी:	मृता पत्याः	धना न्विता	दुर्भ गां	तप स्विनी	श्रत्या युः	बहु मजा•	पुंश्च ही:	पुत्रा दयाः	श्रीम ती	विध ग,

लगमलम्.

9	2	3	8	ય	٤	9	5	સ	90	99	92
ऋास	पुत्रि	कन्या	मृता	वेध	कंन्या	बहु	दुष्ट	पुना	सुरिव	एक	ऽस्यम
इत्याः	एी:	पर	पत्यः	यं:	प	पुत्रा	कर्मः	दयाः	नी:	चुत्रा	जाः

समयफलम्.

पूर्वा	मध्या	त्र्यप	संध्या	पूर्वरा.	मध्यराः	ग्र -सत्री	सर्वः	संधिः
पुत्रवती	क्रभाः	स्वेरि एगिः	वेश्या	विधवा	वंध्या	दुर्भगाः	दुर्भगाः	000

॥नीलवस्त्रेविधवा पीतेभोगिनी दृद्यस्त्रेपितव्रता शीर्णय-स्त्रेपितद्वेषा शोभनवस्त्रेसुभगा देवस्थाने पितृस्थाने निद्यस्था ने त्रान्यस्थाने वांडालस्थाने मार्गव निद्यस्थाने पितृस्थाने निद्यस्था म् ॥ शुक्लेसुपुत्रा शशशोणितालक्तरुमे कन्यापुत्रवती नी-लेमृतपजा कर्चुरेस्वयंस्त्रियते पिंगलेमृतपजा रूष्णेविधवा पां डुरेकाकवंध्या पीतेस्वेरिणी गुंजाभेसुभगा सिंदूराभेकन्याप्र-जा॥ त्राथशोणितप्रमाणं॥ शोणिते बिंदुमात्रे स्वेरिणी त्राल्यःशोणितावरा बहुशोणितादुर्भगा॥ त्राथेषांप्रति प्रस्वः॥ गुरुशुक्रयुत्वसेपेक्षितेवात्रपुष्पजं निद्यंफलंस-

मस्तुं नुनाशमे तिश्रामं भवेत् पुष्टं द्वानिंदिने भेयदिस्याच्छां निंकुर्या दंगनानां वपूर्वं तत्सं योगं यसभावर्जि येयुर्यावड्मयः शस्तभेचेवरष्टम्॥ अधास्याविधिः॥ ऋतंकतामार्त्तवसं युनांचगेहेशभेदीपयुनेनिवेशयेत् निरानुहायूपयुनंचयूग स्त्रीभ्यश्चदद्यात् द्विजमत्रपूजयेत् ग्रारोपयेत्दिमांपुंजेख क्षतानां सुमंत्रिते पुएया हं वाचिय लातु ब्राह्म एगानो जियेत्सु धीः॥ ऋघास्याः शतिदः॥ भर्तृस्यस्याचनुर्धेन्हिदेवेपित्र्ये चपंचमे॥ अथशांतिः कल्योक्ता॥ धृतदूर्वातिलाक्षतेरष्टोत्तर शतंजुहुयादिति स्वर्णगोभूदानंच विस्तरंस्वत्रनिबंधेभ्यः॥ त्र्यथास्याधर्माः। त्र्यार्तवाभिष्ठतानारीनेकवेश्यनिसंश्रयेत् नस्यांत्यजनसंस्पर्शिस्पर्शिक्यांन्नकस्यिन् स्ववाक्यंश्रावये नेवनकुर्याद्दं नथावनं नकुर्यादार्नवेनारी प्रहारणामी क्षरांतया त्रांजनाभ्यंजनेंस्नानंप्रवासंवर्जये नतः नखादिकंतनंरज्जुता लपत्रादिबंधनं श्रोदनंनेवभुंजीततोयंचांजलिनापिबेत् स्नानंशीचंतथागानंरोदनंहसनतथा दिवास्वापंविशेषेरात थावेदंतधावनं मेथुनंचतथामांसंवाचिकंदेवतार्चनं वर्जये सर्वयलेननमस्कारंरजस्वला रजस्बलांगसंरमशीभाषरगं चरजस्वता त्यागंचेवच्यस्त्राशां वर्जयेत्सर्वथल्तः स्नाता न्यपुरुषंनारी नस्पृशे जुरजस्वला विलोकयेदुमाकां तंब्रह्म कूर्चततः पिबेत् पूर्वपश्ये हतुरमाताया हशानरमंगना ताह शंजनयेत्युत्रमतः पश्येत्स्वकंपतिम् ॥ ऋथरजोदर्शनस्मानं॥ CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ाहिस्वा ग्रिशि मुः अनु धाउ श्रो ज्ये एषु भेषु शहभिषों शहभवासरे शहभल नेशी घंगर्भलभते।। अध्याभिधानं॥ त्रिविधंगंडांतं जन्मतारां मूः भान्य रे यह एविने व्यतिपात वैधृति श्राध्हित दिवापरिघाद्यर्ध उत्पातह तमं जन्मराशिनो त्रिधमं पाप यह स्यभवनं भद्रापर्वित ४। ६।१४।६ तिथि षु संध्यायां सूः मं शा वासरान् रजोदर्शना चतुर्धरात्रोनशु भाः उ श्रमूः हः अनु रो स्वा श्राधः शा एषु भेषु १।४।७।१०।५ ।६ शहभेः शहा श्रानु रो स्वा श्राधः शा एषु भेषु १।४।७।१०।५ ।६ शहभेः शहा श्रानु रो स्वा श्राधः शा एषु भेषु १।४।७।१०।५ ।६ शहभेः शहा श्रानु रो स्वा श्राधः शा स्वा स्वा विषमराशिनवांश के चंद्रेशहमं चि पु ति एषु मध्यं॥ अधात्र किमिपिवशेषः॥ श्राधानादिगर्भसंस्कृतोस्त्रियागोचरोपिस्त्रियोजनमितने आ धानंनतद्यानिशिधेपितथाचगेदये तथा लग्ननाथेसू यांशुगे तथाष्ट्रम्यांचनयायात् युग्मासुपुत्राजायंते स्त्रियोऽयुग्मासु

	ऋतुरात्रीएं।फलानिः											
8	લ	E	6	J	ę	90	99	92	93	98		
पुत्रसत्मायु	कन्यापुत्रच ताः	पुत्रमध्यम्	कन्याश्चमना	धुन:ईश्पर्	क्र-याश्वभगा	पुञ:श्रेष्ठ.	कन्यापामा	पुत्रधर्मगद्	कन्यापायाण	पुत्रःधर्मतः		

94	98	रात्रय.
कन्याप विज्ञताः	इन सर्वभूता अयः	फलानि.

त्रायात्र का कास्तादिषु विशेषं उ त्सवेषु चरार्वेषु सीमंत त्रवतु जन्मसु सुरासुरेज्ययोध्येवमोद्यदोषोन्विद्यते त्यनेने वमलमासे पिकार्च्यम् स न्तियोगाशिष्टत्वात्

॥ श्रयपुंसवनं ॥२ हितीये तृतीयेवा मासि युंसवनं भवेत् य केगभैभवेरकायेसीमंतेनसहाथवा इदंचप्रतिगर्भकर्त्वयं इ. मृ. श्र.पू.मृ.तिः त्रानुः त्राधिवः पू.भाः एषुः मेषु रिक्ता ४ 1981 ई मतिपत् पर्वानेतिथी सूर भीरजीर वासरे मिथुनर हिने पुंलग्नेसत्वामिके क्रभो ६। = 19२ वर्जिनेः पापेः ६। १९१३ जीवेपारी १।४।७।१०।११ गते युंसवनं का स्राच्या पराशारः वेश्यश्रद्रयोः सप्तमेमासिप्राह रेवतींचाधिकाभेषु ऋथपुं सवनेवारफलं मृत्युश्चसीरेरननद्रानिरिंदी मृतप्रजापूंसव नेबुधस्य काकारव्यवंध्याभवतीहशक्तेक्स्रीयुत्रलामोरविभो मजीवे ॥ त्राथात्रेवेषुत्र्यनवलोभनारव्यंसंस्कारमुक्तं॥ त्रा यसीमंतः॥३ चतुर्थवाषष्टेमासिमासाधिपती सबसेदंपत्यो श्वंद्रातारा शुध्दी ति ह पु श्रम् म् रे रो उ ३ एषु भेषु ४। ८। ६। ६।१२।३० रिकातिथोशतवन्ते४।१४शतभारभो जीन्यासरेछ ष्णापक्षे १० म्यंतं पुंलमेशहभेषु पार्वा १।४।७।१०पापेषु ६।११।३ चंद्रे १२। = ११।६ वर्जिते जन्मलमराशिभ्यामष्टमभिन्नलमेपाप एकोपि । ११ ११ गर्भधातदः लग्नाद एमरा शीशकेंद्रगः शुभवी क्षितः यद्यद्षममस्योक्तंदोषमाश्राज्यपोहित केवियुंसवने भेषेवेदं कथयंति इदंचऋक्षस्यमध्यमपादह्येकार्यदिवेव कार्योसंस्कारावुभी वैषयश्द्रयोर्निषयाप इदंचसरुदेवका र्यं स्रात्रमोजनेपायश्वितमप्युक्तं ॥ स्राथिकागर्भिणीध र्माः॥ भ्रांगारभस्मास्थिकपाल चुत्रीशूर्पादिकेषूपविशेन्न-

नारीसोलखलादोहषदादिकेच यंत्रेत्षादोनतयोपविष्टा नोमार्जनीगोमयपिंडकादीकुर्यान्नवारिएयवगाहनंसा ख्रांगा रभूत्याननरेवेरिरवेर्ध्मांकितंवयुर्भगमधीनकुर्यात् नोमुक्त केशीविवसायवास्याङ्गक्तेनसंध्यावसरेनशेते नामंगळंचा क्यमुदीरयेत्सा शून्यालये इस्तलं नयायात् कर्ती स्णा कषायाणि ऋत्यकातवणानिच आयासंचव्यवायंचग र्भिणीवर्जयेत्सदा गर्भिणीकुंजराश्वादिशे उहम्यादिशेह एां च्यायामंशीघगमनंशकरारोहणंत्यजेत् शोकंरक्ति-मोक्षंचसाहसंकुक्करासनं व्यवसायंदिवास्वापंरात्रीजाग रणांत्यजेत् हरिद्रांकुंकुमंचेवसिंदूरंकज्जलंतथा कूर्पासकं चतांबूछं मंगल्याभरएांशुभम् केशसंस्कारक बरीकरकर्ण विभूषएं भर्तुरायुष्यमिछंतीधारयेद्गर्भिणीसदा केविन्न-धारयदितिप्राहुः परंबहुवाक्यविरोधाचोपेस्यं एनेनियमाः सीमंतोर्ध्वमवश्यमनुसर्तव्याः गर्भिणीपतिधर्माः सुंडनंपिं इदानंचमेतकर्मचसर्वशः नजीयसित्कः कुर्याद्विणीपतिरे वच शाध्हभोजनमियनकर्तव्यं सप्तमानासात् मुंडनश ब्देनेयकर्तनिषधोपि पिंडदानिषधस्तु पित्रोःपिंडदान-भिन्नविषयः समुद्रस्नानंचापि निषिध्हं तीर्थयानंच तचग याव्यितरेके त्रात्रसामं तेजनाम निषेधः वालान भुक्ते ब्रत्वंध नेच राजाभिषेके खलु जन्मधिष्यं शाभंत्वनिष्मानतं विवाह सीमंतयात्रादिषुमंगलेधितियसि छोक्तेः ॥ स्रथविष्युपूजा॥

श्राष्ट्रमेमासि श्रःरोनिन एषुमेषुक्रभलमेकामासरेक्रभिवाया वष्ट्रमशुध्देविधेयमिनि श्रायस्तिकायाः सूनिगृहमवेशः॥

	मासेशाः										
9	3	3	*	es	Ea	. 19	d d	3	90		
श्रह	सं-	ચૃ.	₹.	चं∙	शः	बु	स्य-	चंद्र	₹.		

रो मृ पुष्य स्वा श पु रे ह ध ह ३ यानु नि याशि एषु भेषुशु भवासरेशाभिकाषा एक एक विजितेशाभिक मेषुकेंद्र गेषुपापेषु त्रिपढायगेषु शुभांशेशुभदृष्टीच अथसूतिकागार म्॥ दशाहंस्निकागारमायुधेश्वविशोषतः वन्हिनातिंदुका लानै:पूर्णकुंभे:पदीपकेः सुशलेननथावारिवर्णकेश्वविशेषतः पुरुयाहवाचनपूर्वकं प्रवेशायेन् ॥ अथजानकर्म ॥ श्रुत्वाजातं पितापुत्रंसचेलंकानमाचरेन् एतञ्चरात्राविकर्तव्यं श्राधा दिचहेमाकर्त्रयं तत्कालेभावेस्तकां तेपिकर्त्वयं तदानक्ष त्रादिकंतु मृदु ध्रव चर क्षिम एषु भेषु क्रभवासर निधी ल येचगुरुशुक्रयोः केंद्रगयोः कर्त्तव्यम्॥ त्र्ययज्ञानकर्मानंत रकृत्यम्॥ लग्नंनिरीस्य नत्स्ययह दो स्थ्यपरिहाराययहरा-नंजपंवाकुर्यात् जातमात्रस्यम्लाद्यउत्पन्नस्यमुरवमालोक्यं स्नायात्॥ स्रथजनमदेवनानां यूजनादि॥ प्रथमेहनिष्धेवा दशमेचैवसर्वदा त्रिधाशोचंनकुर्वातसूतकेषुत्रजनमनिचकारा त्यंचमाष्ट्रमयोरिष तत्रप्रथमेन्हित्राभ्युद्यिकं॥ यंचमेजन्मदा विषयोः पूजनम् दशमेबितिदानं भ्रष्टमेश्चन्तदानं॥ भ्राप-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

स्तनपानम् ॥ उ ३ रो स्त्राश्व रे पुनि स्त्र सुन्ह चि सुन्ध श्राश शतियो शत्मवासरे स्थिरत मे॥ त्राथसूतिकापथ्यम्॥ यान्यायानोक्तमे तियोच दुर्योगादिवना॥ य्ययस्तिकाका-श्यः॥ भैषज्यगदिनेवारेनक्षत्रेचदुर्योगरहितेचशिशोरिष॥ श्र थस्तिकास्नानम्॥ इन्ध्नानु रोन्रेन्स्राधिन्उन्इस्वान्एषुमेषु रिकारहितिवधोपंचमशुध्दलभेशुभग्रहयुतेदोषवर्जितेशुभ-वासरे ग्राथशतभिषक्रमानफलं स्नानंकुर्वतियानार्यश्चंद्रेश तभिषमाते सप्तजन्मभवेयुस्ताविधवादुर्भगाभृशं यदाशत-भिषक्रनानंनारीएगांयदिजायते युजयेत्स्यामिनंभन्त्यात्र्या त्मनः सद्सत्कृतम् ॥ श्रथनामकर्म ॥ सूतकांतेनामकर्म कर्तव्यं स्वकुलोचित्तम् व्यासः नामधेयंदशम्यां तुकेचिदि छंतिसूरयः द्वादश्यामाद्वरन्येतुमासेयूर्गेतथापरे त्र्यष्टादशे हनितथा वदंत्येकेमनीषिणः चहरयतिः हादशेदिवसेवापि जनातीदिवसेशामे बोडशोविंशतीचेवद्वाविंशेवएनिः कमा त् मृःरेः चिः ग्रानुः उरो हः ग्राधिः तिः ग्राभिः स्वाः युः श्रः धारा एषु भेषु शुभदिने व्यतीयातसं क्रांत्यमा यक्षाच्छेद्र रि-क्तायूणिविधृतीशकुनिविधिकरणादीन्वर्जियत्वाशुभलमेशु भाशेष्ट्रमशुध्दो स्थिरलग्ने ८।१२ सर्वेनशुभाः सोम्याः १।४।७ १०।५। ई पा ३। ६। ११ पाचंद्रताराब रेपितृ पुत्रयोः दिवापूर्वा ण्ह एवकर्नव्यं तच्चवर्णक्रमेरा शर्मवर्मग्रसदासांनंविधयं॥ त्राथवाजननमासनामकं मासनामानि॥ कृष्णोनंतोच्यु

तश्चकी वेकंठो यजनार्दनः उपंद्रोयज्ञपुरुषोवासुदेवस्तया हरिः योगीशः पुंडरीका सोमासनामान्यनुक्रमात् स्रत्र मार्गशीषीदिश्वेत्रादिर्वाक्रमः नास्त्रनामापिकार्यमभिषा दनार्थं तत्रयस्मिन्येयद्सरंनद्सरादिकं रोरेममृज्येविषु विधिरादी टांत्येचवां त्यश्रवणाश्वयु सूत्रो वेषु नाम्बोः कपरस रोत्यः स्वा धारदीर्घः सविसर्गइष्टः ग्रापरेकुलेदेवतासंबध्द-माद्रः अयरे गुरुसंबध्दमाद्रः सर्वेषुं तद्यक्षरंवाचतुरक्षरंवावि वर्जयेदंनलकाररेफं दक्षिणेंकर्णे कथ्येत्पितासूतकांतकर एोनुमलमासशुकास्तादिविचारोनकर्त्रव्यः ग्रातिकांतकार कर्णेतु सर्वे विचा र्यम् ॥ अत्रकुमारी एगं विशेषः ॥ कन्यानदी पर्वतपादपानां नास्नीतथापुष्यभपिक्षनास्नी लताभुजंगाख रतांतनाम्नीं याज्ञोनकुर्याचिहतायनित्यं त्र्राथप्रधममासे युदंतजननफलं कमात्.

	चक्रम्.											
9	2	3	*	3	E	19	8	4	90	99	92	सास
चैस.	नाशा.	मार्ग	मृत्य	न्यू अ	भोगम्	भौगम्	पितुसुरं	पुष्टि	ल्सी	श्रम	श्रम.	अं :

जन्मकारेण्यसद्शन श्रात्मानं पितरंमातरंचनाशयित ऊर्ध्य पं कीदंतागमे विहिता विहितका खयोरिपस्य पित्रादिहा तदर्थशांति विधियाक ल्योक्ता अथदो ला रोहणं ॥ रिवयुग्मात् ५ ने रुज्यंत तः ५ मृतिततः ५ रुशताततो व्याधितः ७ सोरव्यं १।१२।१६।३२ एषु दिवसेषुशुभवासरे मृरे चिन्य्रन् हन्अ श्विष्य स्मिन्उ ३ मुहूर्नसिंधू.

राग्युभेषुरिक्तामारहितियो चरत्येश्वभेः ११११।०।६।१०।४।६ ग्राय्विभेः ३।६।१११६भयुग्लग्ने॥ ग्राय्ययद्वारोहएं॥ मृदु-अवः क्षित्र एषुभेषुरिक्तमारहितियो १६भवासरे १०।१२।१६।२२ प्राक्ति रसंवाल हरिस्मरएएपूर्वकं न्यसेत् ग्राय्वा १२ बालानां १३ कुमारी एगां॥ ग्रायदुग्धपानं॥ उ०३ इन्चिन्ध्र-धन्रेर ग्राश्विन्म-स्वान्थान्युन् तिन्योन्म् ग्रानु-एषुभेषु ६।४।६।१४।६।३० रहितियो विष्टिस्यि रकरणानिवर्जियला ग्रायुभयोगान्वर्जियला कृष्णदशास्यो ध्रिवर्जियला मासादुर्ध्व पूर्वान्हेमध्यान्हे दिवावलराशिषु रा-हुरुद्रयोगिना मुरवंवर्जियला चरयोगिन्याश्व योगिनी चरयो गिन्धो यात्रायां वेष्ट्यते राह्र रुद्दो चक्रेध्येयोः

Walke jo	राहुचकम्										
स्र.	चं∙										
यू.	दः	प-	3.	्यू.	द		2.	दिशा•			
			75	द्रचक्रा	Į.	*					
1911	94	२२॥	30	3011	80	५२॥	ह्य	घस्यः			
यू.	उत्त	श्रामिः	नेऋ	दक्षिः	पश्चिम	वायु	ईशान	दिः			

॥ त्र्ययसूर्यावलोकनम्॥ तृतीयेमासिकमवासरेकभिवयो-क्रमभेषु चंद्रताराशुध्दे चतुर्थमासि ग्रामिश्चंद्रस्यदर्शनं॥ त्र्य धनिक्रमणं॥ उफाःहाचि उषाःश्वाधः फारे ग्राश्वि श्वाचुः पुःति रो एषुभेषु क्रक्लपद्दे कृष्णेप्यं त्यत्रिकं विनारिक्ता ४। ६ १४। ६। ६। १२। ३० दीन्वर्ययित्वा ग्राक्तभयोग विष्टिशकुन्यादीन्या

र्जियत्वा २। = 19 लग्नांस्तथाचांद्रंवर्जितव्यं शुभलभेशुभवा सरे शत्मांशिष्ट्र मशुध्देशत्में ११।४।७।१०।५।६ पापे ३।६।११ स्मापितं कृतस्य स्पयनं बाउंदेवतालयेनीत्वा तत्रदेवतासंपूज्य पुनर्मातुलादिपहंनयेत्। ग्रायकछाबंधनम् ॥ शक्केपक्षे हः चि स्याः वि त्रानु । उ : ३ रो : पु । त्राध्व म : रे : शहभवासरे सिनिथो ॥ अयभूम्युपवेशनंकिरसूत्रबंधनंच॥ पृथ्वीवराहंचाभि पूज्यभोमबले पंचमेमासि उन्रोन्मु ज्येन् ग्रानु ग्राश्विनि ग्राभि रिकारिहतियो शत्भवासरे स्थिरेल प्रेबाले शुद्र घं दिका बंधन रुला भूमावुपवेशयेत् मंत्रः रक्षेनंवसुधेदेवीसदासर्वगतंशत भम् त्रायुष्प्राणं निरिवलं निक्षिष्य चहरिषिये वालाग्राइमा निस्थापयेन बस्त्र शस्त्र ते रवनी पुस्तक स्वर्ण रह्य्य यहालो गृणहा तितेराजीचीभवेत्॥ ऋायान्नप्राशनं॥ बालानांषष्ठ मासादारम्य सममासेषु कन्यकानाम्यं नममासादारभ्यविषम मासिषु कार्या मृररे वित्रा न्यानु ह न्याश्व ति ग्राभि स्वापु श्र ध-श-उ-३रो-एषु भेषु २।३।४।७।१०।१३।१५ तिथिषुशुभवासरे मीनमेषीलभीत्याज्यो जन्मलमराशिभ्यां अष्ट्रमभिन्ने लग्ने १।४। १।१०।५।६ शुभेः ३।६।११ पापैः १० शस्त्रे ६। ६ रहिते चंद्रे जन्मभः समधाराभंइतिके वित् गर्माधानादिसंस्कारे तथान्न प्राशनेशिशोः नतत्रगुरुक्षकास्तमलमासादिदूषएां ॥ त्र थात्रविशेषः॥ जन्मर्सश्ची सर्यविद्यात्कर्मर्सेचापिसीरव्यकृत् या आधान क्षेचबालानां भोजनं रोगनाशनं मिष्टान्नभुग्नीव

वनिशाकराभ्यांक्रकेएगवाग्मीरविणादरिद्री कुजेनरोगीश शिजेनभोगीक्षीणायुरादित्यकतस्यवारे त्र्यकींगारकमंदा नांचाराश्चापिकमाचहाः यदिचाराधिपिलिषे त्स्वोचिमित्रगर हेत्दा गुर्गिक्तितश्च जीवसीम्यसिताचांद्रेकाणादिवसांश-काश्चभव्याः चंद्रार्काकजास्जामकभाः २। ११।७।६।५।४। १० राशयः शुभाः १।० मेष रिश्वकीयज्ये केंद्रत्रिकोएगेरेः शहभेः पापे स्त्रिषष्ठताभगेः १२।६। = एषु चंद्रोनक्रभः तमस्योनीचगश्च निंद्यः रवीलमेकुष्धिरिगतनयेपिनगदाभाक् शनीवानव्याधिः कृशशिनिभिक्षाटनकरः बुधे ज्ञानी भोगीत्कशनसिविरायुः सु रगुरोविधीयूर्णयज्वाभवतिचनरः सत्रदइह त्यात्रत्मपदेन १ 1921६। = 191४। ७१९० भावागृहीतव्याइतिकेचिदाहुः त्रानुरा यांरिविदिनं षष्टींच निंदयंति इतिचबहुसम्मतं ॥ त्रायतांबूलभ-क्षणं ॥ उ.३ रो.मृ.रे.चि न्य्रनु.ह न्य्रश्व नि १भि श्रम्पु जरे स्वान्य एषुमेषु ३।६।६।१०।११।१२ लमेषु सीम्ययहाणां वारे १। ४।७।१०।६।५ शहरीः ३।६ यापेः सार्धमासद्यसमयेन्नाशनेवा ॥ अथकर्णवेधः॥ १२।१६ दिने ततो६।७। = मासिततो विषमव र्वे चेत्रयो चातुर्मास्यविना जन्ममासरिकात्र्यमा त्र्यवमदिन समवर्षे जनातारा १।१०।१६ विना श्रन्थ-पु-मु-रे-चि-त्रानु-ह-ऽश्विःतिःभिःएषुभेषुक्रभवासरेष्ट्रमशाध्द्रसुभे १।४।७।१०।६।५ शहभेः ३।६।११ पापेः २।७।६।१३ इत्रेषु गुरु सुतेषुकरगविधः शु भः सीवर्णा राजपुत्रस्यराजनीविप्रवेषययोः शृद्रस्य वायसी सू-

चामध्यमाष्ट्रांगुलात्मिकां सभूमोप्रांतरेरम्येशन्चोदेशें-बरेरवी संस्कृतेवेधयेत्क ऐर्गिस्त्रीयुंसीर्चामदक्षिएगे त्रात्रविशेषः गर्गः कार्तिकेपोषमासेवाचेत्रेवाफालगुनेपिवा फर्णवेधंप्रशंसं निशनक्रपक्षेशमभेदिने १९।८ रिक्तापर्वरहितनिथी शकुनिमभू तीनिष्निवर्जयेत् रुध्दनारदः रुषभेमिथुनेभीनेकुरीरेक न्यकास्त्रच तुलाचापेतुकुर्वातकर्णविधं शुभध्ईये मेषमकरो मध्यो सिंहरिश्वककुंभात्र्यधमाः गुरुः ८।६।१२ बुधः ५।८ शुकः ७। ट एतद्यतिरिक्ताः क्रभचंद्रः २।३।५।७।६।१० शुभः॥ ग्राथ-कुमार्या घाएविधः॥ कर्णविधोक्तभेः उन्३ शन्स्वा शतक्रवसम्प्रवी न्हेशाभवारतिथो ॥ अधाब्दपूर्त्तीवर्धायनं ॥ तच्च चांद्राब्दांतेस नाब्दांनेशाभेन्हिभद्रादिव्यितिरिक्तेकार्यशाभवासरादी॥ त्र्यथा-ब्दपूर्तिः॥ सापिसीरचंद्राद्यन्यतमरूपा न्यस्यांचपूजनं कल्योकं विधेयं।। ग्राथचीलम्॥ चूडावर्षातृतीयाहिषमेका यमिनुना पथमो ब्रोप्युक्तः चूडाकर्मिद्वजाती नांसर्वेषामे वधर्मतः प्रथमे ब्रे तृतीयेयाकर्तव्यंश्वितचोदनात् ज्येन्म्रिन्चिन्त्वान्युःश्रध्शन्ह् । ११वन्युष्य अभिएषुभेषु- २।३।५।१०।११।१५५ तिथिषुसोम्यवारेषुसोम्ययद्वेषु रुमेनवांशे याजनमलमजन्मराशिभ्यामन एमराशोत्र्यप्रमशुद्धेसित्रहक्रऋयाध्मोपिश्हमः पर्वविना चेत्ररहितउत्तरायणेलमात् अधारायोपेः केंद्रगेरेतेः फलंबदेतः

की ते केंद्रयहाणां फलानिः क्रम्माराणां पंचमासाधिकेमा स्ट शिल्व प्रच में के कि कि कि प्रक प्रक प्रका प्रमें प्रमें शुमें शुमें शुमें शुमें मृस ज्वरः फलू प्रमें में वोलं नस्यात . पंचय विधिकस्ये एं गर्भिण्या स्पिमातिर ऋतुम् त्याः स्तिकायाः

सूनोश्वीलिदिनाशयेत् उक्तंचपचेत्सा यस्यमांग्रिकंछ्यं तस्यमातारजस्वला तदासमृत्युमामोतिपंचमंदिवसंविना ज्ये ष्ठायत्यस्यनज्येष्टइतिके वित्जन्ममासे पिनिषेधः उक्तंच योज ममासे सुर कर्मयात्रां कर्णस्यवेधंकुरुतेतिमोहात् च्नंसरो-गीधनपुत्रनाशंप्रामोतिस्दोचधबंधनादि स्त्रथात्रविशेषः २। ४।६।७।१०।१२ लमेषुलमात्मसमेखोमृत्युः भीमेचशुक्रेसीख्यं विनाशः मंद्रभाग्यंशनेश्चरे त्रिकोरगकंटकेषुश्वभीवीबलोत्तम गुरोचुडायोगः १२ गतेशके खम्मे १० रवीकेंद्रगेगुरीचचुडायो गः॥ त्र्ययगशनो ४ कर्क ५ सिंह गयोर्ब धशुक्रयोः २।३ एष-मियुना द्यन्य तमेरवीयोगः॥ ११ रवी १२ बुधे १ काके केंद्रगे चंद्रे-चूढायोगः॥ त्यनिष्टगोपिकाभांशगोलमालोकिगुरुणादृष्टःशु भावहोभवति॥ अयसामान्यसोरमु ॥ चौलोदितवारभे क्षीरिदनादनवमिदने संध्यारिकापर्वरात्रित्र्यासनरिहत्यु-का अभ्यज्यचन तथायज्ञेविवाहे पित्रोमेरणेकारामोक्षेहि जाजयाचकुर्यात् सीरेपाणहरात्याज्यामघामेत्रंचरोहिणी उ त्तराक्षतिकावाराभानुभोमशनैश्वराः श्रक्षोरेपिचनक्षत्रेकर्त व्यंबुधसोमयोः तत्रापिचनकर्त्रव्यंसक्षमूलानुराधयोः चं द्रशुध्द्रियदानाक्षितारायाश्चविषोषतः अक्षोरिपचनक्षत्रेक-र्तव्यबुधसोमयोः माणान्सीरेहंतिगुरुः शरकः शुक्रंधनंरिवः त्र्यायुरंगारकोहं ति सर्वहं तिशनेश्वरः राजकार्यनियुक्तानांन राएगांरूपजीविनां अम्भुलोमनरवच्छेदे नास्तिकालविशोधनं

षर् क्रिनकाः पंचमद्यास्त्रिमेत्रो बाम्हा एको यश्च तुरुत्तरोश्च सी रंसवर्ष चतुराननो पिन्याणिती तिस्फुटः प्रवादः ॥ ऋष्यराज्ञां श्वाश्च कर्म ॥ नृपाणों पंचमेदिने सोरे नहात्रे श्वाश्च कर्म विहितं यदापंचमिदने सोर पक्षत्राभावस्त दातन्त सत्रस्वामिनो मुहू तेंकार्य ॥ ऋष्यसंन्यासि प्रभृतीनां सोरकर्म ॥ यूर्णा मावस्य यो सन्यासिनां विधवायास्तु सदा ॥ श्रुध्दादिविचारस्तुनो गिक्षि तः ॥ अधा सरारंभः ॥ उत्तरायणे ५ पंचमे ब्रेगणेशासरस्वति कृतदेवान्त्रत्वाभ्यर्च्यः हः पुःस्वाः ऋनुः ज्येः रेग् आश्चिः चित्राः अग्णुः भेषुः शुःजीः बुः वासरे सिनधो २।३।५।१२।१९ उभय३।६।६।१९ त नावशेच श्रुक्ते पक्षेच ऋष्यस्त्र हत्ये कुंभमासंविनाः शुभः ऋष्यात्रचकंरविभात् ॥ ऋष्यमंगलां कुरार्पणं ॥ शुभ

2.1.	न्म ना न	नवारान ना
3	मध्ये	मृत्यु
8	विंदी	भीति
8	प्रणवे	ग्रमं
8	ने	भयं
8	मे	श्रुभं
8	सी	कार मं
8	ध्दमी	श्रमं

वासरिधि भोदयेषु चंद्र तारा शुधीं चिधियं ॥ अधोपनयन सुहूर्तम्॥ विभाणांगर्भतो जन्मतोवा = वर्षवा ५ वर्षसित्रयाणां ६।११ वेषयानां =।१२ दिगुणोगोणं ब्रम्ह वर्च सका मस्यकार्यं विभस्यपंचमे राज्ञोब सार्थिनः व हे वै श्यस्यार्थार्थिनोष्टमे अन्न सक्स्यवणा

त्काम्यत्वं वस्तुतस्तु त्र्यापस्तंबः गर्भाष्टमेब्राह्मणसुपनयेत् गर्भे कादशेराजन्यं गर्भद्दादशेवेश्यं तिस्मान्द्रिगुणेतद्गोणं उत्तरायणे तत्रकन्याविवाहे कुमारस्योयनायनेगुरुबलं २।५।७।६।११ श्रेष्ठ१०

६।३।१पूज्यः ४।८।१२ निद्यः गुरुबलादिपकालबलंबलवत् कुमा रस्योपनायनेविवाहेपिरविवलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः १।२।५।७।६ पूज्यः १। = ११२ निंदाः २। ५। ६ त्रयोदशाहात्परतः शत्भः उत्तराय-गोत्राबादशु दे दशम्यंतं चेत्रेमासिर सोमीनेविबलेपिगुरी बटोः व्रतबंधः प्रशस्तः स्या चेत्रेमीनगतेरवी शहिद्धर्नविद्यतेयस्यवर्ष प्राप्तेष्टमेयदि चेत्रेमीनगतेभानीतस्योपनयनंशत्भम् गोचराष्ट कवर्गीभ्यांयदिशुध्दिनीवद्यते तदोपनयनंकार्यचैत्रेमीनगतेर वी॥ गुरुणागलयहोपिनिषिध्दः॥ प्रदोषेनिश्यनध्यायेमंदेरु च्योगलग्रहे मधुंविनोपनीतस्तुयुनः संस्कारमहीत प्रदोषस्तु सर्व मासेषुत्रीयाषश्रीहादशीनां क्रमात् १। १॥-२ एकसाध्देकिदिम द्वरात्री चतुर्थीसप्तमीत्रयोदशीप्रवेशः अनध्यायास्तु आषा-शु १० ज्येशुः २ योशुः ११ माशुः १२ तथा १४।१५।३०।१। द संक्रांति श्चपुनर्वसोनब्राह्मणस्य व्रतंनश्यासुनर्वसोइतियचनात् व्रते रोगबारामपिनिंद्यं ॥ व्रतेमासफरं ॥ माधेमासिमहाधनोथन यितः भाजोबलं फाल्यु ने मेधा वान् भवति बतोपनय ने चेत्रे चवेदा-न्वितः वेशारवेसभगः सरवी पदपतिर्ज्येषे वरिष्ठोबुधः त्र्याषा देचमहाविपक्षविजयीख्यातोमहापंडितः॥ वारफलम्॥ मे धांमानुदिनेपदुः शाशिदिने चंद्रात्मजेबोधिनाम् पंचलकुजमंद योर्थ्युक्तनेवाग्मीबलीयान्छुचिः षर्कर्मानिरतः सुरवीसुरगु रोविद्दांश्विरायुर्नरो धिष्ण्पपापनिपी डिनेन हिरवगो मू दोगता-युर्भवेत्। अत्रविशेषः॥ तस्माद्गहेभ्यः कालत्वाद्वलीसंवत्स

रः परः शांतिर्यहाणां कर्तव्यानतु संवत्सस्यसा बनका लेतु संपा प्रेयस्यशाध्दर्नविद्यते हत्वाचीशक्तितः पश्चाद्विधेयंमीजि बंधनं शरत्यीषावसंतेषु युक्तमात्तु हिजनानां मुख्यंसाधार एांनेषां नपोमासादिपंचक ज्येष्टमासे विशेषेएा सर्वज्येष्ठस्यचे वहि उपनीतस्यपुत्रस्यजडलंमृत्युरेववा विवाहेचोयनयने जन्ममासंविवर्जयेत् विशेषाज्जनमपसंतुवसिष्वाद्येरदात्ह तं जातंदिनंदूषयतेवशिष्टोत्यष्टोचगर्गानियतंदशातिः जा तस्ययसंकिलभागुरिश्चशेषायशस्ताः खलुजनममासि जन्म-मासनिवेधेपिदिनानिद्शवर्जयेत् स्रारभ्यजन्मदिवसाच्छुभाऽ स्यु सिषयः पराः यच्छक्णपक्षवचांसिश्रेष्ठार्थकताबोधका नि तानितुद्वितीयसंस्कारविषयकाणि त्यानध्यायस्यपूर्वेद्वर नध्यायात्परेहनि व्रतबंधंविसर्गचिवद्यारंभंनकारयेत्॥ स्रस् विभागः॥ व्रतस्यपूर्वोद्धरनिष्टकातोत्यनिष्टकारीयजुषांवटू-नां तदन्हिदीष्ट्यंरवलुसामगानांमथर्वणानामपरेन्हिदीष्ट्यं त्र्य एकासु चसर्गासस्यगमन्यंतरादिषु त्र्यनध्यायं प्रकुर्वाततथा-सोपपदास्विप ग्रायनेविषुवेच सिताज्येषेद्वितीयाच ग्राथि नेदशमीसिता चतुर्थौद्दादशीमाघेएताःसोयपदाःसमृताः य तुरध्दगर्गः त्र्यनध्यायेपिकुर्वातयस्तुनेमिनिकोभवेत् सप्तमी माध्यक्तेतृत्तीयाचाक्षयातया फाल्युनकृष्णतृतीयाच्छत बंधेशतभातया तयाकृष्णामितपदिचेवं सर्वमायश्चित्तार्थापन यनविषयं स्वाध्यायवियुजायसाः छष्णप्रतिपदादयः पाय-

श्चिननिमिनेतुमेखलाबंधनेमता इतिनेनेवोक्तेः तथाजन्मभइ वजन्मभात् १०।१६।१८।२३।२५ एतन्मित्मेषुश्रमंनाच रेदिति श्राचार्यसोम्यकाच्यानांवाराः शस्ताः शशीनयोः गरोतोमध्यफ उदावितरोनिंदितोबने सर्वेषां जीवसर्वज्ञ वाराः शस्ताबनेतथा चंद्राकेमिध्यमीसीमबाद्रजयोःकुजः त्र्यस्तंगतस्यसीम्यस्य वारोवर्ज्योद्विजन्मना कृष्णेचंद्रस्यवासरः॥ श्रथनक्षत्राणि ॥ त्र्याश्वि हः पुष्य अभि उ ३ रो अस्ते स्वा पु स्र ध श मू मृ रे चिन्त्रमु-प्र३ कुत्रचिक्रपेषापिगृहीता स्-चं-बु- ब्- शु,वारेषु त्र स्तबुधस्यवारोवर्ज्यः २।३।५।१०।११।१२ तिथिषुकेनचित्षस्य पिश्वामाक्ताशाक्ते पक्षे कृष्णे यं चंम्यंतं ग्रापरा हो नित्रधाविभ ज्यदिवसंतत्रादोकर्म वेवेदिकं दितायेमानुषंकार्यत्तीयेंशेतु येत्कं॥ त्रायलगाश्चिः॥ शःसःचंलग्नेशः६। नशुभाःचं द्रभागिवोत्त्रसाद्वादशेनशहभदो १।५। - यापानशहभदाभवतिः ६। = 19२ सीम्यानकाभाः ३।६। ११ पापाः क्रभदाः पूर्णवंद्री एष कर्कगतोलग्नेश्रेषोन्ययान यस्मिन्कस्मिन्नाशो चंद्रःशुभनवां शे चेनदाबतीविद्यानिरतः पापांशके चंद्रेदरिद्रः यदिककीशे तदादुः रवसहित यदि श्रःषुः नक्षत्रगचंद्रः कर्कोशगस्तदा धनवान्भवेत् वेदेशवारेलयेन्सहलेसत् सप्तशालाकान के वेघोपिद्रष्टचोभे वेदेशशाखेशयोर्बरं शाखाधिपतिचार श्रव शाखाधिपवलं शिशोःशाखाधिपितलग्नंचदुर्लभंत्रि तये वटोवर्णोधियनेब लोपेने उपनीतिकयाहिता सर्वेषांचगु

TELES	वेदस्वा	मेनोचेदभ	ानिच-	
ऋग्.	यजुः	साम	ग्रयर्गः	वेद:
	शन्त्र	मंग-	बुध.	स्वामिनं
		ऋाश्व-		
निःस्वा-	यनु·मृ·	ध-ति- ह	भ्याश्व.	भानिः
मू.पू.	युनि-	उ-३ ग्रा-	यू. इन	Heir
मृन्याः	उ-३ रो.	ऋष्ठे.	यु-ध-	Main

रीसूर्य चंद्रेचब लशालिन जी वेभगीरिपुगृहे विजिनेचनीचे स्यादेदशास्त्र विधिनारहितो मनुष्यः ग्रथ

गज्ञां कि कि वांचा चेत्ररहित बतोक्त मास तिथ्यादिषु भीमा स्तेन अथकेशांत समावर्तने ॥ केशांतं षोडशे वर्षे चोलो-

		चर्ग स	वक्रम्		
बाह्म	सत्री	येश्य	श्रद	म्लेख	वर्श
जीवः	सूर्य	- चिं	बुः	शः	स्या
शन्तः	मंगः		Marie de		मी:

कदिवसेश्रम्भं वतोक्तदिवसादी हिसमावर्त्तनिम ष्यते॥ आया

नापरोविशेषः॥ क्षितिकंपनकालतो ब्रतंनभसस्तारकपा तकालतः नबंधुर्घहतो शुचंद्रयोरग भिद्यामयु गश्चितं बुधाः प्रथमामर रुंडमूर्तिभृद्वगने के तुरुदेतिचेत्तदा व्रतकृत्यमसि ध्दलब्धिवत्स्मृतमा हायन मागमां वकेः त्रात्रागभिद्यामधु गपदेनमासत्रयं बोध्यते गर्गस्तु यहरिवंद्वारविष्ठमं पकेतु हमोत्कापतना निद्येष व्रतेदशा हानिवदंति तज्ज्ञास्त्रयो दशा हानिवदंतिकेचित् चंडेश्वरस्तु दाहेदिशांचेवधरा प्रकंषेवज्यप्रयोतचिवद्वित्वारणेय केतो तथो लका पतना दिद्येषेत्रय हंनकुर्घाद्वतमंगलानि एषांव्यवस्थाकालनेक द्येनस्याको-ह्या॥ अथबाह्मणादीनां पूजामाह॥ सदासपर्यादिश णातिदुष्ठे ४।=११२ शस्तागुरावादिभुवां तथेंदोरको त्याणांत्रि गुणाविशांसा चतुर्गुणात्मीयविकिकियार्हा अथगोचरा शस्द्वावष्क वर्गणापिशस्द्विविलोकियतव्या नेविणिकिर्षणो भावेनपद्दी मतेमोक्तोक् ब्यादशम्यं तंशां रवंस्तु ४। ६।१४। ८।१३ १९७१११९५ एताविनोभयोः पद्दायोर्घतबंधमाह अतिस्तु १० १९११५११६१३ शक्ते ३।५११०।६१३ कृष्णोश्वासः अथवेदप तोकेंद्रगेशभं ५ बुद्धिंशक्तगुरू षष्टोमृतिदी वर्णशवेदेशा-वष्टमाविजीवे १ शक्ते ५। ६ चंद्रेवाकाव्यांशेवेदवेनाभवेत् ॥ स्राथक्रस्युतगुरु शक्तिधूनांकरं क्र्रयुता श्रष्टमगाः पाणं

केंद्रभावफलम्. के ग्रहा: रा. मं. चं. श. ब. बु. 31. सू. के. भावा. के. के के. के. £. रे. रे. ऋरप न्यतिव चाडासी श्रांत्य यज्ञक शस्त्रजी फलड. कर्षक. गुएगी ज. T. गामीः ज. या. ची ।

					नग	शफः	रम्.					
9	ď	3	ጸ	ч	e	9	b	y,	90	99	93	ग∙
कुंब.	श्रुतियान्.	थकाः	मंड:	教化	धनी	युर्गी:	教	द्रूज्य:	रचलु:	प्रेष्य:	धीमत्	कसम्

मुहूर्तसिंधू:

		ग्र	हांशप	.सं.		
₹:	चं∙	मं •	म्बंग	इं∙	शः-	श.
क्राः	जह:	पापीः	पदुः	यज्या	दीक्षितां	मूर्गः
in the						

असद्ग्रहा:३।६।११ संदुपकारफलं कुर्वित षड्वर्गलगस्यचितनी यंचंद्रक्रास्तनोनेष्ठाः

सर्वनंदे व्ययेकिशः सितंदुलग्नपाः षष्ठे मों जिबियासकर्मसुलगे भानुरिषक्षभदः क्रभदो बलवा मानुर्लग्रगोदशमस्तथा सर्वशाः स्वाधिपोभानुस्सर्वेषां व्रतबंधने चंद्रः स्वो च्रगोषिलग्नेनिषध्दः नारदः स्वोच्चसंस्योपिशीतां कर्वितनो यदिलयगः तं करोतिशः शंनिः स्वंसततं स्यरोगीणां सिते पसेभवेद्यजास्यभे तुंगेविशेष त इतिबहस्यितः अनयोविरोधे बहस्यितवचनमेव समंजसंब-दुसंमतत्वात् अपरेतु केंद्रगंभानो व्रतिनो वंशानाशनं भोमेशिष्या चार्यिनाशनं मंदेतुलगदाः राद्वचनित्विनाशं केतावपीतिम् दूर्नसमये स्वस्त्रपेष स्ततोगायन्यपदेशः सण्वदेवारंभः ॥ अयमहानामीव्रतं॥ तिथिनस्त्रवारं शवणेदयनिरी क्षणं चीलवलसर्वमारव्यातं सगोदानवतेषुच ॥ अयसमावर्तनं॥ व्यायात्र कांश्वियो गान्यदर्शितुंचकंन्यसेत्।

मुहूर्तसिंधू.

(ill by			- Part		ৰঃ	कम्.					
स्.	चं.	मं	बु.	ब्र.	शह-	श्रा	रा•	कें	वे.	ब•	ग्रहा.
92	0	c	२	ंस् द ितं	92	. 0	0	•	•	0	वेदज्ञः
w	0	3	0	कें. च्रिश्	مىرس	99	0	•	0	o	वेद्रजः गु स्माज्ञभ
0	•	•	٥	के की	92	मीन हुवी.	٠	0	0	0	धनीः
99	शुंड्या	0	9	0	90	0	0	0	0	0	धनीः
य-	ब-		कें.	46	के	•	0	0	घ∙	0	धनी पं डितः
0	0	व	0	0	0	a	o	•	0	0	शियाना श
0	0	92	0	0	0	92	0	0	0	0	वंधदा-
0	मु.	o	ø	9	त्रि	0	0	0	0	•	वेदिषत्
3 99	अर्थे हैं ५ ००	र्जन	कें	कें	कें	99	9	व छव	य-	व∙	शुभा-
92	90	भीह		0	•	ह∙	•	0	o	0	विद्याहो निः
٥	ow b				976	खरे	शोषः	हा-			भाएगहा नि:
9	•	9	•			9	9 6	96	•	0	मरएं।
99	0	0	90	٥	9	•	٥	0007	0	0	धनी-
200	0	99	0	0	0	8 29	99	99	0	6	सीरवं
3 92 5 60	•	28399	٥	0	0	25000	28600	4 399 8 100	•	۰	जड़.

व्रतनक्षत्रे भी श वारभिन्न तराचंद्रविश्राध्दे मध्यान्हकाले उन् रायणेच ॥ त्र्यथवरोर्वनगमनक्षिद्धः॥ वरत्रमेव्यतोक्तिथिभो दयेषु॥ त्र्यथवनात्प्रत्यागमनेशुध्दिः॥ स्थिरल मेव्रतोक्तभेकभ वासरक्षरद्वीच ॥ त्र्यथराजां च्छ्रिका बंधः विवाहोक्तमा सेषु

ecenter's	YTZD .	in the contract of	eret.	फलम्.	romin		THE	
9	3	a	8	4	فر	o	٢	शेषा.
मं.	मृति.	जय.	रोग.	लाभ	द्धः स्व.	योत.	धनन	5
Chick Con-	rif ni	TVI		18.74	TATE	J. 11.7	굑	1 4

॥ अथविद्यारंभः॥ उत्तरायणे आश्विने बुधमाब्त्ये गणेशागि-रावभ्यर्च्य हः वि स्वा शु ध श पू श्रृ ग्रा पु ति उन्हे मू अशिक्ते अनु शुक्ते पह्ने वा वा ६।१०।११।१२ तिथिषु ७।१३ वा क्रको ग्रायन्यंशेनध्याय पर्वाणिविहाय बु.जी.शु.वासरेऽकी भीम लमान्वर्जियत्वा दिमूर्जिलमेषु ३।६।११ पापेषु ५।६।१।४। ७११ क्रभेषुपापभिन्नपंचमे अष्टमक्रध्देचरेलग्रेभ्यमस्थिरजा ड्यंभवति सर्वविद्यारंभः ग्रानध्यायस्य पूर्वापरदिवसी वाधिव-र्जनायी केषां विनाते नसार्प्यमिपिनिंद्यं बोध्यम् बुधवारे शहर में बुधलमें बुध होरायां बुधांशेच विद्यायोगः सोमवारहस्ते में बु थांशेचरेलमेर चं बु युक्ते विद्यायोगः बुधवारे हस्ते भे बुधहो रायां बुधांशक गोबुधि हिल भगोविद्यायोगः कन्याल सेबुधे प रमोचगरवियुक्ते बुधवारेच विद्यायोगः चंद्ररविवारयोर्मृगह स्तभयोः कर्कसिंहलययोः बुधांशके योगी बुधेवर्गित्तमे गुर्व शे बुरु शुरु केंद्रामु १३ तिथो १२ लग्ने विद्यायोगः कर्कलग्नेपंचमे CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शे एरुल से गुरुवारे गुरु होरायां युष्यर्क्ष वागा श्वरोयोगः विद्या रंभेबुधस्तूदिनः सबलश्चापेस्पः पूर्वीक्तचकंमात्कारव्यमत्रा पिवीह्यं।। ज्योतिःशास्त्रमुन। मून्युनिन्यारेन्हाशाः अधिर एषु भेषु शहभतारायां शनिभोमं विना शहभे लग्ने पंचमे शह धे। या थगितविद्यारंभः॥ शान्यःभाः अनुः अर्द्धाः रोनरे हनिः एषुभे षु राभितिथी बु र वासरे ॥ ग्राथव्याकरणन्यायवेदस्मृतिध-मेशास्त्रारंभएां॥ उ.३ रो.पु.ति. अ.ह. ऽश्वि. श. खा. एषुभेषुस नियो। अयथवा धर्मशास्त्रपुराएगारंभः।। ह-चि-स्वा-वि-अव-प्ररे श्राधि मृ श श्र एषु भेषु सियो। ग्राथवैद्यगारुड वि द्यारंभः॥ हःचिःस्वा नुःपुः श्राधःशास्र रेः १थिःति यहे त्रासुः एषुभेषु सिनथो स्रचं मं वारे ज्येषाहीने गारुडि॥ अयसाख्य वेदांतयोर्मु-पूर्वजन्य मान्धन्मुद्र-क्षिप्र-ग्रान्रो-एषुभेषु शुभवा सरसनिथो। अथनात्यशास्त्रमु।। हन्तिन्यू-फान्म्-ज्येऽनु-उ षान्त्रान्धान्धान्रे एषुभेषु क्रभवास्तरे ॥ त्र्यथित्यारंभः ॥ रेन ऽश्विन्द्य- ऽनु- त्यान्युनिन्ह-चिन्स्वा- एषु भेषु शत्भातिथो शतभया-सरे ॥ अथधनुर्विद्यारंभः ॥ धनुः तिःमः मृः एषुभेषु = ११२ तिथी शाभवासरे त्रान्येतु हुः चिःस्वाः विः ऽतुः ज्येः मूः त्राः त्राः पूषाः पू फाः अश्व-मृत्रो नित्रा एषुभेषु शुन्र मं वासरे सतिथो ॥ स्त्रथ शिल्पशास्त्रमु ।। स्थिर चर मृ ग्रा एषु भेषु का जी बु र चं वारेषु अनध्यायभिन्ते॥ अथतंत्रशास्त्रमु ।। अन्मन्म उफा वि एतन्नक्षत्र युड्यासेषुतथा त्याश्विने वेदिकानपि खनध्याय-

व्यतिरिक्तदिवसे मंत्रारंभः॥ यस्यदेवस्यतहारे तद्भेयक्षमंत्रा दिकं दारुणे त्याः तिः ज्येः ऽश्विःश्रःस्वाः विः उः ३ रोः एषुभेषु ६। १३ ।५।१०।१५।२। ११२ तिथिषु जीः वुः रः वारेषु केनचित् क्षत्रोष्यं-गीकृतः॥ त्र्यथं जेनधर्मारंभः॥ उःषाः ऽश्विः मःस्वाः पुः तिः श्रः

प्रयोग	गिदिमारंभे	वकंसूयभात्॥
3	मस्तके	सिध्दिहा
3	मु रव	सिध्दिः
3	कंट:	कालकृत्
8	हस्ती	रियु.
8	34:	इष्ट.
3	उदर	धनहाः
1	करि	साधनासकं.
3	चरणं.	साधनात्फलं.

धा मं चु भेषु नयापूर्णिति धो मं चु भा वासरे शमल मे ॥ श्रयपारायरामु ॥ दारुण उप्र एभ्योरहित भेषु-शा भिन्नवारे असल्यहे पंच मनवसयोर्नरराशो एति ॥ श्रयपुराराश्रवरामुहूर्ते ॥ रिक्तावर्ज्यतिथो मं शाभिन

वारेषु मृदुः भवः क्षियः चलः पृः ३ एषु भेषु चरेलगे शभ्यंद्रगे हादशाभिन्नतिथो रामायणं प्रातर्दशघटिपर्यतंन इतिसंस्का रः ५ त्र्यथिवाहः तत्रानाश्रमीनितष्ठेत् इतिवचना त्समाय र्ननोत्तरंवद्याभ्यासादनंतरंगुरोवरंदला तदाज्ञयागृहीभवेत् त त्रमथमंवरं पुंस्नानादियुनं कुलीनंगुणिनं बलशासिनंमार्गयेत् ततो देवजं फलपुष्य कनकादिभरम्यच्य विवाहंपरीक्षयेत् शुभेलये गुभेलये गुभेशक्ये गुभशकुनेविवाह सिध्दः व्ययेशोलयेल प्रेशोव्ययेविवाहः स्थि रलभेपायाकातेन चंद्रः प्रश्चतनुतः ३।५।०।११।१० जीवरृष्टः ७ में चंद्रत्येशी कंन्यालाभाय १ सहमेशचंद्री वरलाभ ४।०।२ लगे ८०० क्षे

षु राक्ष युन दृष्टेषु कन्यालाभः समल में चंद्र राक्षाभ्यां दृष्टेयुने कन्यासिः युंलमे युंग्रह युने क्षिते वरा िषः कृष्ण यक्षे प्रसल्यात्सम् राष्ट्री चंद्र वर्षे परणं चद्रेल मेभोमे शाम्यातः क्षाणं दुभोमशानिरिवः एषामे कोषि १ लग्ने मरणायक्रेरे ७ पंचर्ये वरस्य मृतिः प्रसा्धः १ रिवर्म् नम् जां १ लग्ने यूंश्वरीक्रेर रक्ष्रः सप्ताभिर व्हे भरणं शानिभोमो सप्तमासे मृतिः गुरु बुधोदी घाँ युषं ५ गोपुत्राच् ७ गोधनं कुरु तः लग्ना ६। व्हे श्वर्ण व्हानेर मृतिः लग्ने क्रूरः सप्तमेभोमः श्वर्णभर व्हे रहा लग्नात्यं ५ चमः पापः शत्रु दृष्टोनी चगोवा मृतयुत्रावा कुल टावा तत्रा-दे वरणोपयोगाष्टकं चक्रेः प्रदर्शने समासे नवणीवश्यं तथाताः राग्योनिश्व ग्रह मेत्रकं गणकू टंभकू टंचना हिचेते गुणाधिकाः च णादिषु गुणानारतम्यं यथा क्रमं ध्ये यं श्वर्ण स्वराश्वरं तथा सर्वा

3175		वर्णच	कम्.	Tie E
ब्रा-	स	चे:	श्रू-	वर्णाः
92	9	2	3	राश
8	थ	E	3	य
6	2	90	99	iver the second

वश्यम.

	प्रया	4	
हिपद	चंतुष्य द.	जल च-	सर्प.
मि क तु ध पू ५र्थः	मे ह सिं ध उ ५ र्ध	कुं. मी. म · कः प · ऽर्थः	रश्चिक.

दंपत्यो ४ वेदासा तृशेषेषाभं त्रात्येमध्यं स्त्री राशी तृत्ये-धिकेवाधमं त्रात्र वरेधिक् व णी १ गुणाः समवणी त्राधंगुणः

हानवर्णगुरगाभावः फलंचय रणिधिकेवरे उत्तमाप्रीतिःसम वर्णसर्व्यं हीनेवेरं ॥ ऋषवश्यं ॥दिपदराशेःसिंहंहीत्वा सर्वेवश्याः जलचराभक्ष्याः सिंहस्य सर्वेच- (902)

मुहूर्तसिंधू.

श्याः रिश्वकविना वर शेः स्त्रीराशोवश्ये २ गुणाह्यंभस्ये १ गुणः ॥ त्र्यन्यथागुणाभावः॥ त्र्रथतारामाह्॥ कन्यर्सा हरभं वरभात्कन्यर्सगणियत्वा ६ नष्टे ३ । ५। ७ शेषे १ सत्

	tri		नार	ाच	कम्				
a	अ	9	92	38	१६	29	23	74	ऽशु

उभंपने तिझ्न शेषेगुण नयं १ ऋन्यतर जंशामेशा सार्ध्हें उभयना श्रमशेषे

श्रन्यं गुराः अथयो निमेत्रमाह ऋतिये रोदासीन्यमेत्रातिमे

	H M	Orr	W.	Ti ji		योन	पः	N (No. N	f yr	(Bill	773
		164	JA. 14	168	HEAT	A STA	*	tel	Elles	tie	L'ELS	JES,	tel
भ्याधिव	भर	इनिः	रोहि	भ्रा	पुं	मः	उफा	民	चि.	ऋनुः	पूर्वा	उषा	धः
श्र.	रे.	निः	मृ.	联	ऽ श्खे	यू-फा	उन्भा-	स्वाः	वि-	ज्ये.		ऽभि-	

एषां वैरम्.

A.	E	本	1º	Z.	\$	to	Jan .
黎	不完.				ATTENTA .		

भाएगं ग्रह एगं तथा चैक योनो ४ गुरगाः एनदेवाति मेत्रंगोमेषादीनांमेत्रं तत्र १

गुणाः अश्वमेषादीनामी दासीन्यंतत्र २गुणोषानकमार्जारा दीनामिषवेरमञ्जेकोगुणः गोव्याद्यादीनांमहद्वेरं त्वगुणाभावः एकयो नाविषिषेषेषंगर्गः एक योनिषु कल हो गज्योःसिंहयोः शुनोः महद्वेरेषिसमतामहिषस्यकपेस्तया के वित्स्वभावतःक् राः के विच्छांतास्तथासमाः योनिसत्वाङ्कजंत्यत्र स्वसीलंचत-थामिथः सङ्गक्रदेयोनिवेरंमृत्युदंचपरित्यजेत् तत्रचेद्वहयोःस

मुहूर्निसंधू.

रव्यं नातिदुष्टं विदुर्बुधाः योनियेरं सदात्याज्यं स्त्रीपुंसो भिन्नितं गयोः एकितिंगजयोः मोक्तंमध्यमं नातिदोषदं ॥ श्राथयहमेत्रकस्॥५

	मेत्रीचक्रम्													
स्	चं-	भी.	बु.	जी॰	शह-	शः	महा-							
मं सं	स्र् बु	मृ. चं.	स्र-शह	स्र ^{्वं} • भीः	बु- श-	शु खु	मित्र							
बुं	मं रू	श. श.	मं हा	श्च	भी. हा.	ह्य-	समा.							
क्र-श्र-	. 0	बिंग	चं-	बुः शः	सू. चं.	स् भी	शत्रवः							

राष्यिधियत्येरिकत्वेमेत्र्यांवा ५ गुणाःसममेवे ४ गुणाः मित्रश बुले ६ गुणा समत्वे १ गुणोसमशबुले १ गुणः ४ उभयशबुले १ यथेशयोमिथोभावोदंपत्योस्ताहशोभवेत् दुष्टकृदं गुभंमेत्र्यां सङ्गोवेरिपशस्यते राशीशो सुत्हदोस्यातां जन्मकालेयदानदा क र्न्यात्कालमेत्र्येति श्राष्टाणकृदम् ६ एकगणे वद्गुणाः देव

	गणिकाम्.													
ग्र-वि-	र्मे.	रे.	至.	तिः	यु-	ऽसुर	श्र-	स्वाः	देव.					
पू.३	3.3	ऋा •	रो:	भ	0	•	٥	o	मनुष्य:					
क्	मं	ऽक्छं.	विं	श·	विः	न्येः	धः	मृ्	राक्ष-					

मानुषे ४ गुणाः देवराक्षासे २ गुणाह्यं मनुष्यराक्षसे गुणाभा वः स्वगणेनोत्तमाधीतिर्मेत्रीस्यान्नरदेवयोः ग्रामुरामुरयोवेरं मृत्युर्मानुषरक्षसोः रक्षोगणोयदिनरोत्तगणाकुसारीसद्राशि कूटरवगमेत्रभयोनिकाध्दिर्यद्यस्तितनकाभदं करपीडनंस्याद्वा मभुवांख्युयदानदिनाद्विद्यः सङ्गकूटंयोनिशुद्धिर्महस्तरव्यं गुणत्रयं एखेक तमसङ्घाचेकन्यारक्षोगणा कभा त्र्यथभक्कर माह ७ एकराशीपृथक्थिको पृथक्राशीतथेकभे एकांशेपि

	No.	MAR	वडा	ष्टकं.			-हिद्दिशं.							
9	3	2	9	99	42	9 3 4 9 8 99					रा॰			
E	ь	90	92	R	6	a	૪	ધ	5	90	92	श्र		

कतोडाहः श्रेष्ठोमध्योधमः कमात् एकराशीशाभोद्वाह एकभा रोस्तिमदः यदिभिन्नं भवेड्नंच करभदंशीनको व्यवीत् नाडीगरोो चैकराशी वित्यभिन्नभयोस्तया कृतिकाकुंभयोद्दीशस्वात्योः प्भाजलेशयोः एकराशोद्विनक्षत्रेषुं ताराष्रथमाभवेत् स्नतीव शोभनामोक्ती रक्तीताराचेदिनश्यति शत्भभानि रो स्थानम ज्ये क ति अरे उभा एक राशी शतभा दंपत्योरेकनक्षत्रेभिन्नपादे शमावहं दंपत्योरेकपादेतुवषंतिमरणं भवम् एकराशी महा मीतिश्वतुर्थदशमेंशामं तृतीयेकादशेविनंसुमजासमसप्तके समसमक्येक्रभदोघटसिं होपाणिपीडने कथिनोमकरेकर्वटे चैवकुंभेसिंहेनथेवच परस्परंसप्तमेषिवेधव्यंनिर्दिशेदरं मीना िक्यांयुतेकीरेकुंमेमिथुनसंयुते मकरेकन्यकायुक्तेनकुर्यान्न वयंचमे दिषष्टाभ्यांसमोराशिर्विषमोष्टव्ययान्विताः शत्भोवि लोमतोनेष्टः सिंहोपीष्टोबलानितः राशिनाथयोर्भित्र्यामल्यो दोषः दिर्द्धादशेष्यदोषः स्यादंशेकाद्वातिस्त्रयः धृत्यंशोत्यष्टि रंशो वापुंसों शकन्यकांशकत् आदिनाडियतिंहन्यादंत्यनाडि चकन्यका मध्यनाडिउभोहं तितस्मान्नाडीं विवर्जयेत् समा

मुहूर्नसिंधू.

सन्न वे धेशी घंद्रवेधे विरेणतु वे धांतरभमानेन वर्षदुष्टं प्रजा यते आदिनाड्यामे वोभयोर्भे निर्धनता मध्यनाड्यामुभयर्भे विनाशः त्र्यत्याङ्यामुभयोर्भे दोभाग्यं चतुन्ति द्वां ग्रिभोत्था याः कन्यायात्र्यश्यिभालकमात् वन्हिभादिंदुभान्नाडिं त्रिचतुः पंचपर्व सु जांगलेच चतुर्मालायां चालेपंचमालिका त्रिमाला नयेषु देशोषु विवाहे सुनिसंमतम् तत्रचतुर्नाडी पंचनाडिबोध नाय चके विन्यसे तेयथाक्रमेण एकनाडिस्थितायत्र एकन

			चतुः	नीडी	•	SET		पंचनाही.					
कृ.	म•	म्.	ज्ये	मूं	भ्र	3.	भ∙	मृ.	禹.	बि.	भ	धः	रोः
रोः	श्र	भं	श्च	मूं	धः	₹.	हि.	श्रा•	3.	स्याः	5	शः	कु.
मृ.	ति	tie	वि.	कें	श.	श्च	तृ.	मु.	र्व.	चि.	पूर्व	पू.	भं
श्रा	मुं.	वि.	स्याः	ऋं	म्र.	भः	ਚ∙	तिः	मं	श्र	Ħ.	3.	भ्र
			uru ayan	and the second		2000		श्र	0	ज्ये:	0	रे.	0

मंत्राश्चरेवताः तत्रदेषंरुजंमृत्यं क्रमेएाफलमादिशेत् पशुः प एयांगनामित्रदेशंमामंषुरंतथा एकनादिस्थितंभव्यंविरुध्दंचेधव र्जितं यनुरोहिएयाद्रीमृगद्रामिषुष्यश्चवएापेोष्णमं त्र्यहिर्द्धभ्य र्समेतेषांनादिदोषोनिवद्यते तद्ददिताय विवाहिश्षयंसंकीर्णिव षयंवाशुभनाङ्यांगुए॥ः श्चश्रभायांनिकमपीति श्चयपुंजि है

	THE RESERVE OF THE PARTY OF THE PARTY.	त-बक्र	AND DESCRIPTION OF THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NAMED IN COLUM		1
भक्त	श्रा-पुंति श्रा-म-प्र उन्हाचिः	ज्ये-उन्ध्र ध-ष्ट्-उन	म्:पू: शः	क्रमात्पू र्वमध्याप राः	
प्रविभाग	स्वाःविःशः मध्यमभाः	परभाग	ni sin	भागा.	17
पित्रभेष्ठ	इयोपीति	कन्याश्रेष्ठ		फलानिः	,

प्रभागेपतिश्रेष्ठेमध्यभागेचकन्यका परभागेच नक्षत्रेद्धयोःश्रीतिर्महीय सी॥ त्र्ययदूरं १०स्त्री राशिवरमदूरं कन्यादूरंमतंबुधेः व्यस्तंचदूरमशुभं वश्यत्वादपीष्टरम् शोनकः वर्गवेरंयोनिवेरंगएविरंन्दुःकर दु एक्टफलंसर्वप्रहमेत्रेणनश्यति नारदः स्त्रीधिष्णादाद्यनय-केस्त्रीद्रमिति निदितं दितीयेमध्यमंप्रोक्तं तृतीयेनवकेनृभम् अथवर्गः स्ववर्गात्यंचमेशत्रः स्त्रत् धीमित्रएवच उदासीनस्त

	वर्गास्तदीशाश्च म. १६ क.५ व.५ ट.५ त.५ प.५ य.४ श.४ पर्गा.												
अः १६	क.५	च.५	ट. ५	त. ५	4.4	य ४	श. ४	वर्गा.	किशामनः ग				
MRS.	Tage .	Ta's:	PERM	Bac	* A .	. 38.	致	A.A.	षुपुंजि वरव				

र्गेक्रभेषुगुणः १ अक्रभेषुगुणाभावः॥ अयषषाष्ट्रकेदयं॥ षषा एके गोमिथुनं प्रदेशं कांखं सरोपंय नवपंचमेच देशंचवस्त्रं कनकाश्वयुक्तंदिद्दान्यदशेब्राह्मणतर्पणंच निषिध्देमेलकेशांशि कलादानं यथों दितं ततो हा हं पक्वित प्रशस्त शकुना दिषु ॥ त्र थमेलकापवादः ॥ श्राजीजितासंधिल्याप्रीत्यादत्तातथाध्य रे स्वयमेयागताकन्यानेवास्ताशाध्द्रमेलको बहूनामेकजाता नांकन्यकानांकरणहे ज्येषायामेखकंवीस्यंखध्वानांनेयचित्रयेत् श्रात्रेकायवरायबहुकन्यादानेइद्रम् नतुकन्याद्वयदाने तस्यनि षिध्दत्वात् कन्याद्वयंनेकस्मि त्र्यासुरादिविवाहेषुराशिक्टंनिर्व तयेत् तथाव्यंगातिरुध्दानांदुर्भगानांयुनर्भुवां ॥ त्र्यथयात्या यात्यविचारः॥ गुरोःषोडशभिर्निद्यामध्यमाविशितस्तथा श्रे र्षेत्रिशहुर्णयाक्त्यरतस्तृत्तमोत्तमं ॥ सङ्गङ्करे ॥ निद्यंगुरोरिशिति भिर्मध्यंबारगाधि अकैर्मनम् तत्वरैः पंचिमः अश्रेषं नतः श्रेष्ठत रंगुणिः ॥ ऋषेवंज्ञातगुणायांनिश्चयमुद्रुन॥ मृःहःम्नात्रमु

सुह्रतिसंधू.

रो जिन्द स्वार विन्धा न्याश्व न्या एषु भेषु सहारेस निथी सुल मे चंद्रबले मिसानिध्ये स्नातां पुरुयामरोगि एं तत्कालोपस्थिते कन्यापितातुम्यं प्रदास्यति यदित्वंपतितोनस्यात्सर्वदोवविवर्जि तः तुभ्यंकन्यां पदास्यामिद्दिजदेवाभिसन्निधी तुभ्यंकन्यार्थि नेवाचाकन्यादानप्रयस्ति तन्निश्चयार्थमद्तं गृहाणसाक्षतं फ सम् ॥ श्राथकन्यावरणम्॥ पंचांगशाध्द्वदिनेचंद्रताराबले उषाः यू.३ श्र.ध.रे. छानु . एषुमेषु शाभवारितथो प्रत्यङ् मुरवः कुमारींव रयेत् शत्मलयेशभीः पानाशाणाश्चापीः ६।३।११ उपचय गत १।६।१०।११ जीवेशचींपूज्य बस्त्रातंकारसीभाग्या एकानि ី कन्यकायेवरोवरपुरोधावादद्यात्॥ त्राथवरवरणम्॥ क्रमदि ने उन् करो-पू-एषुभेषु कभवासरेस निथी कभलमे कन्यामा तापुरोहिनोचा वस्त्रयज्ञोपवीनादिभिर्वरणं कुर्यात् सोभाग्या छ कंचोभयत्रवासिबंधयेत् हरिद्राश्मधः पुष्पाणि २ गुडं ३ सीरं ४ तंडुला ५ धान्याकं ६ मुद्रिका ७ गुंजा न इदं सीभाग्या एकं ॥ अ-थविवाहसमयनिर्णयः॥ कन्यकानां विवाहाष दुर्घानं तरंसमव र्वेषु गुरुषाध्दे यथोनपानः पुरुषाएगां विषमवर्षेषु विषत ध्दे सित्यां-विवाहः शामः उभयोः कन्यावरयो श्र्वंद्रशाधीविवाहः व्यासः श्रष्टवर्षाभवेद्गीरानववर्षाचरोहिणा दशवर्षाभवेत्कन्याद्वादशे रुषलीमता दशवर्षच्यतिकांताकन्याशुध्दिविवर्जिता तस्याता रेंदुलगानां शुध्द्रीपाणि यहोमतः प्राप्ते चहादशेवर्षयः कन्यांनय यस्तिमासिमासिकस्तस्य दानापि विनिधितम् पितापिता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by edangotir

महोभाता पितृ योमातु उस्तया पंचेते नरकं यां ति हृ शाकन्यां र-जस्वराम् नारदः नजन्ममासेजसर्धेनजन्मदिवसेपिया ना यगर्भस्ततस्यापिदुहिनुर्वाकरग्रहः जन्मर्सेपरिएगितास्यात्क राविद्वर्तवस्था न्याधानेकर्मणोरुदासनतंपतिवस्था जन्म निमासिविवाहः शहभदोजनार्धजनाराशीनजनानिलमेदिव संकाभदोपिनजनागेशशिनिजनार्धेजनामासेचतारायामथ-जन्मनि जन्मभेजनारुपेन्भवेकन्यापनिवना जन्ममासेन्यु त्राख्याधनादयाजनाभोदये जनाभेहिभवेद्य ढाकन्याहिधुवसं तिः जन्मोदयर्समासे क्रियते मांगल्यपो ष्टिकं कर्म ऋशु भंवदं तिचार्याः श्वतिवेधे सीरयात्रासु गुरुः ज्येष्ठेनज्येष्ठयोः कार्य्य न्नार्योः करपीडनं तयोरेक तरेज्येष्ठेनज्येष्ठोदोषमाबहेत् वराहः द्दीज्येष्टीमध्यमीयोक्तावेकज्येष्ठः क्रभावहः ज्येष्ठत्रयं नकुर्वतिविवाहेसर्वसंमातम् ॥ त्र्यन्यावश्यकेसृर्ये कृतिकास्थं त्यत्का ज्येषायाः कन्याया ज्येष्ठ वरस्य ज्येष्ठे विवाह इतिके वित् भारद्वाजस्तु ज्येष्ठयोमीर्गिविनिविवेध मंगळं मार्गशिर्वतथाज्ये षेक्षीरंपरिणयंत्रतम् आद्यगर्भदुदिनोस्तुयत्वतःपरिवर्जयेत् परंचेदंदाक्षिणात्यप्रसिद्धम् ज्येष्ठायाः कन्यायाज्येष्ठपुत्रस्यि वाह एवन कर्तव्यः कृतेतयोर्निधनं पुत्रविवाहा नियोरिषे कुले क न्याविवाहः षएमासमध्येनशुभः विवाहाद्वतं मुंडनंनश्रभम् व ताचूडानेष्टावधूमवेशात्सुताविनिर्गमोनेष्टः सुवत्सरभेदेनशुभः नारदः पुत्रोहाहात्परंपुत्रीविवाहोन्त्रन्तुत्रये नतयोर्बतमुद्वाहा

मांडनादिपसुंडनं सहजयोर्मात्रोत्सहोदरकन्यकेनदेथे सहोद रभालोः षएमासमध्ये विवाहोन विवाह मंगलंसमाप्तिं याविस त्कियाना मंगलसमाप्ता ववश्यमेवकर्तव्यं उक्तंच महालयेग याश्राध्देमातापित्रोः क्षयेहिन सोद्याहोपियकुर्वीतपिंडर्ननर्वपणं सुनइति गोरीगुरुबछदेयारोद्विणीभास्करस्यच कन्यावछेवि धोर्दयार्षशितनुवीर्यतः स्मननयमाब्देकन्याविवाहस्यनिद्यते नकथंरोहिए। संज्ञकायाः फलतारतम्यम् यात्रोच्यते नवमपूर्व सपाद शास्त्रयेरिव उपुगेषुरवंगेश्ययथा बछेः शारसमेष्टम = सप्त मयोः कछोवििभिरिष्टकरश्चकरग्रहः ग्रानेनवचसाग्रहगोचर शुरहो पाटाणार्गाशाशा वर्षेषुसपादेषुकरग्रहः यतः भवति संाधिमहेश ११।३ समाधिकासपदियासननंहिकुमारिकामि तदानफलानुयथागुरोनतदनेहिसतामितिनोद्दहेत् अत्रविष मवर्षे मासत्रयानंतरं समवर्षमासत्रयांतं विवाहः॥ त्र्यथगोचरे ॥ त्र्यरिमीराकगोऽवासिनोरविशुध्दिं ॥ द्रविडमालवदक्षिरास्रा धचित्रमुणाजागुरुशुद्धिं॥ मगध सिंधुमरुजाशन्त्रजीवशुद्धिं हिमाद्रितटजाण्यसाश्चकुरुषु रवीज्ययोः शुध्द्रंसकलदेशजा श्रंद्रशुध्द्रंसमी छंती यमद्वादिविचारणा गोचरादिविचारणात्रे वर्णिकानामेवनान्येषां स्प्रत्रशुक्रेज्ययोरुद्यकालोगृहीतः त थापि त्रातिपातिषुकार्येषुराज्ञातत्कर्मकारिएगं विवाहारंतिका र्याणि मोस्येपि गुरुक्तकयोः शांत्यादिकं कृत्वाविधेयं विधेयमेव शांतयः कल्योक्ताध्येया ॥ श्राथमेलकेविशेषः॥ श्रज्ञातज-

चनां नृणांनामभेपरिकल्पयेत् तेनेवचिंतयेत्सर्वेशशिकुटादि जन्मवत् जन्मभंजन्मधिळयेननामधिळयेननामभं व्यत्ययेन यदायोज्यंदंपत्योर्निधनंभवेत् एवंस्वाभिसेवकादीनांध्येयं भा मिनीजनानसत्र हितीयेपतिजनाभं नशुभंभर्तृनाशायकथितं बम्हयामले प्रथमंसेव्यन क्षत्रं दितीयंसेवकस्यच नसेवास्त स्थिराज्ञस्य जलबुद्धदविषये ऋणाग्राहकजन्मर्स प्रथमंऋ ए।दस्यभम् दितीयंऋणसंबंधोनकर्त्रव्यःकदाचन कदाचिद्व व्यलोभेन कियतेने यतभ्यते पार्वित प्राणनाथेन मोक्तं डामा सं यह यामग्रंप्रथम्यस्यदिनीयंजयमंभवेत् नयात्यंसर्वथायामो यतः प्राणार्थनाशदः त्र्यथिकमिपिविशेषः भोजदेशेतुलार्ष गत जीवेविवाहोनसुराजदेशे धनुर्मीनगक्तकेविवाहोनफाळगुन शुक्रेमीनार्किप विदर्भकंबुकुरुकर्णाटके विवाह क्रमः समुद्र तीरेरे वामहीन द्योरं तरा लेका पिलारव्यं भू मंड छं तत्र मिथिलायां च मी ना-र्कः धनुमीनार्कयोर्विवाहः शत्मदः ऋष्रेमागधेन पीषोरिश्वका कीवाशुभदः ॥ श्रथिवाहमासाः॥ नारदः मायंफालगुनवे शारवज्येषु मासाः शत्भावहाः कार्तिकोमार्गशीर्षश्चमध्यमीनिदि ताः परे व्यासः माधफा छगु नवेशा रवे यद्यदामार्गशी र्वके ज्ये ष्ठेवाषादमा सेवाक्तभगाविन संयुता आवरोवाविषोषेवाक-न्याभाद्रपदेतथा चेत्राश्चयुक्कार्तिकेषुयातिचेधव्यतांलघु के चित् चेत्रपीषी वर्ज्या३० मासानाहः त्र्यापस्तवः सर्वर्त्तवीव वाहस्य पराशरः क्रयुत्वर्जियित्वासर्वकालं क्रयुत्वर्षा

शरच व्यपरेशेशिरोपरिहाय व्यादिममंतिमंवा अत्रमाध फालगुनाषादवर्जनवमासास्रयः कालः रात्रीतद्वादशस्य पिक्यात् बोधायनसूत्रेपि सर्वमासाविवाहस्यशाविनपस्त पस्यानिवर्जयेत् सर्वकालमेकेविवाहमिछंति इतित्वासम्प दिविषयं वात्स्योवर्षमनूनमिछित तथारेभ्योयनंचोत्तरे श्री-वासंतम्तंविहाय सुनयोमांडव्यशिष्याजगुः चेत्रंप्रोत्धपरा शरः परिणये त्योषं चदोर्भाग्यदंत्द्याषाढादिचतुष्टयंनदितदा केश्चित्रदिष्टंबुधे रित्यादिविरोधे गृत्द्यसूत्रज्योतिषां किंविधेयं माघादिविषयः श्रद्भादिषराः ज्योतिषेयतः सूत्रेउदगयन त्या पूर्यमारगपक्षेइत्यादिसूत्रारगांबाधायोगात् देशभेदेषु भाद्र कार्तिकन्याश्विना न्यपिविद्विताः॥ न्ययनक्षत्राणि विवाहस्यः रो मृ म उ फ ह स्वा त्रानु मू उषा उभा रे त्रायतिय यः मासांते पंचिद्वसास्त्याज्या रिकावमाष्ट्मी त्रामावा-१यं चयर्जियता केचित्र ष्णाष्ट्रमाविवाहेस्वी कुर्वित अथवाराः गरापशस्ताः शामखेचराणां सूर्यार्कवारी रवसुमध्यमीती त्या ज्यः सदाभूमिसुनस्य वारः कामार्क तिष्योरिपती पदोषी त्र्यथ विवाहेदशमहादोषाः लत्ता । यात युति ३ वेध ४ जा मित्रः ५ बुधपंचक ६ एकार्गल ७ उपमहः = क्रांतिसाम्य ९ दग्धाति-थि १० अथपातर हर्षण वेधृति साध्यगंड श्र्व्यती पात एषां योगाना मंतेयन्नक्षत्रं तत्यातेनपतितंस्यात्॥ त्र्यययुतिः३

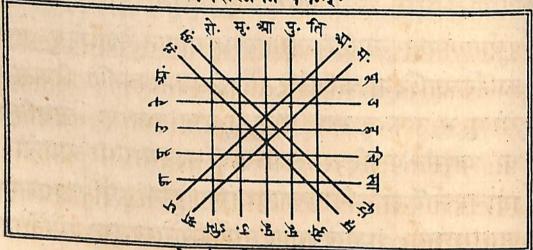
मुहूर्तसिंधू.

strikis	तत्रादीलनाज्ञानम् -१														
联.	चं∙	भीः	बे.	ब.	<i>4E</i> ⋅	श-	ग	पहा.							
.92	9	3	22	હ	38	6	5	संख्या							
धननाशं	शहभं	भृतिं	श्रम	क्रभं	गुभं	नाशं	यिनाश	फराः							

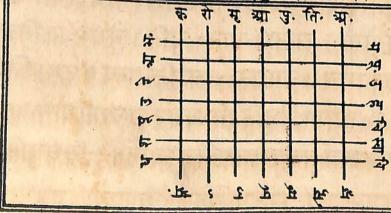
विवाहभयुति. ३

सू.	-	孙	The second secon	The State of the S		श.	रा-	के.	पहाः
दारिद्यं	શુમં	मृत्य	શુમં	शत्भं	वैधव्यं	नाषा:	नाश:	नाशः	फखानि

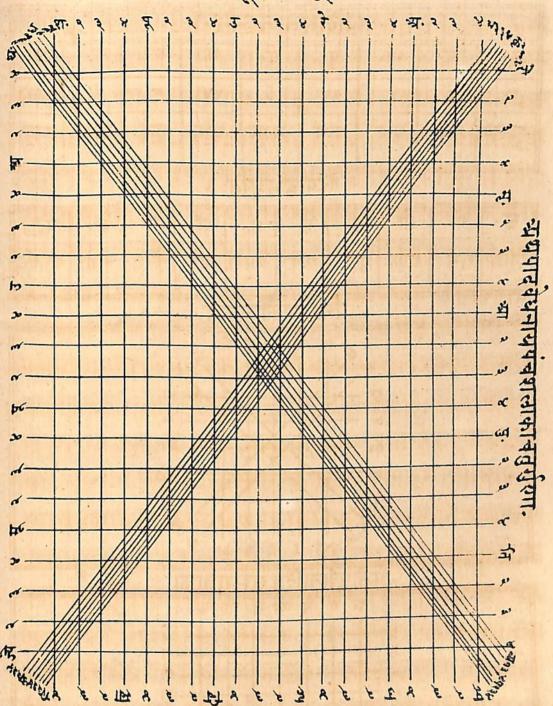
पंचशलाका चकम्.



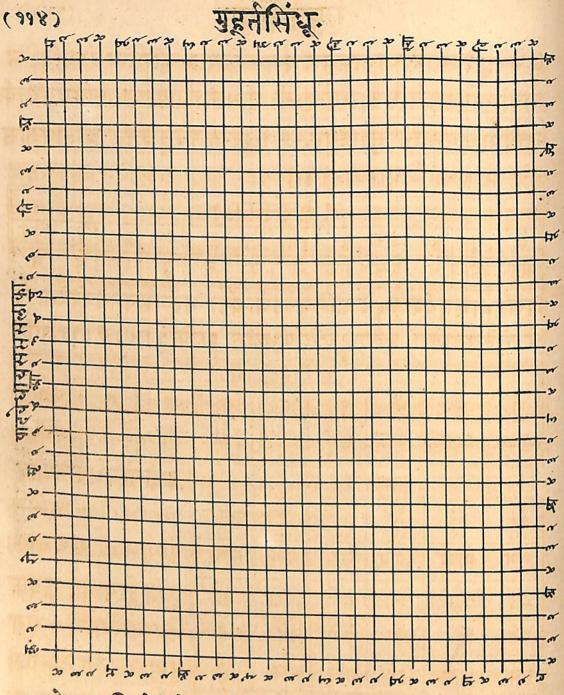
यत्तोपर्गानादिषु सप्तशलाका



मुहूर्नसिंधू:



योग्रहोयत्रतत्रतंन्यस्यिवारयेत् यस्यनामाक्षरंविध्ह्मंशचकेपहेणतु कू रेरिछंशुभेहानिद्यादेग्यूर्नसंशयः कूरोभयस्थितेमृत्युःशुभाशुभेविद्यं॥ CCO Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



शत्मो भयस्थितेवधे व्याधिषीडाचबंधनं ग्रात्रयस्मिन्यादे वेध स्मएचवर्ज्यः परंतु पापवेधे सकलंबर्ज्यं शत्मवेधे पादमात्रंवर्ज्यं माहुः विध्दवत् दग्धन्वित्वधूमितभानिवर्ज्याणि तानितृकूरि मुक्तं दग्धंकूरयुतं ज्वितिधूमितं पुरतः विस्थेज्विति तेदग्धेसधू-

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुहूर्तसिंधू.

मितेनापि नंद्रर्धयात्राप्रवेश मंगलिववाह कर्माणिनेष्यंति ल नायांतुरवेटपत्समश्चरणोवर्ज्यः शत्भायांपापायां नक्षत्रणववर्ज्यः लनापातस्रतानि सुराज्यकच्छशंखमालवेदुष्टांनि सुतिर्निद्यास वंत्र ऋष्यजामित्राख्यंदोषम् ५

	जायित्रचऋष् ५												
रो	뀾.	म∙	उन्पा	te	स्या .	ऽनु	मू	उन्धा	उ-भा	रे	विन		
ग्रानु •	ज्ये.	र्भ	र्माः	उन्भा	श्र	क	मृ ·	ब्रे.	उफा	ह	न		

विवाहभाचतुर्दश १४ भंजामित्रं लमाचंद्राच्यदनभवनगेरवेदेजामि त्रं तदेवबाएगा शरगलवगेषिभवेत् शरके १।५।६।११ जामि

	जा मित्रफलम्														
स्र∙	चं.	भी.	बु.	নূ.	₹.	श-	रा.	यहा.							
विधवा	ससपह्ना	र्वध्या	दुष्टा	मान्या	दुर्भगा	वेश्याः	गर्भस्राव	फलम्							

		वारए	चक्रम्	فر	
६ १७ २६	99 29 26	33 8	w y y	م ه ه م م	गताश
रोगः	श्राम	नृपित	चीर	मृत्य	नामा
बते	ग्रहमवेश	सेवा	यात्रा	विचाह	वर्ज्या.
रवी	भीमे	शनी	भोमे	बुधे	वारवर्ज्य
रात्री	दिवा	दिया	रात्री ,	संध्या	ममभ्य र्म.

त्रदोषोनभवितिजीवे पार्टाशप्टाशण्जामित्र दोषोन॥ त्राधबाणा रच्यो दोषः॥६ कुत्रक स्मिन्वात्याज्यं॥ रोग मृत्यूसदात्याज्ये।संध्य

योर्जान्दिकेर्जनेः तत्रापियत्रलग्नेचेह्लाख्यंत्रमिष्फलम् वा रेषुकेचिद्वेदेनत्याज्यतामाहः नवत्हतशेषकेष्येसशल्योभय-ति सचाति निद्यफलः यात्रकेचित् लग्नंविवाहस्यविवाहगत तिथिषुयोज्यंददंपूर्वोक्तमाहः परंचेतन्नम्प्रदातीरवासिनामे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्तसिंधू.

वध्ययम् एषु विरुध्देयोगेषु सूर्यन क्षत्रात्साभि जिद्दिषमे वि

	AVALET!		Harry Tari	एका	लिम्	Hillen		The second	77.28
चि	ऽगं.	क्र-	गंः	थ्या •	- य∙	व्य	प	वे	योगाः

वाहनसन्ने एकार्गछः एकार्गछः समाधिश्चेत्तन्नरुग्नं विवर्जयेत् श्र पिक्रकेज्यसंख्कं विवसंयुक्तदुग्धवत् शुभेकार्गछेतस्मिन्यादेएव दांषः पोपेकार्गछेसमांशोविषमांशोभंवर्जनीयमेवमालवादिदेशोषु ए

	उपग्रहरोषट												
4	5	90	98	9	96	94	29	22	28	२८	न		
विद्युत	श्रुत्ह:	ग्रशनिं	नियात:	भूकंपः	निर्घात:	दंड:	भूकंप:	बज्र:	मोह:	केतुः			

तेशिंदु समेनेषु कुर्यात्कर्मनशोभनं परिमदमि समाशियोशिवनंद्रयोः पूर्वीणहेदं इदोषः स्याद्यराणहेतुमोदकः उत्कास्यादर्धरात्रेतु कंपोहो रात्रदृषकं एतेषांचर्ज्योशाः ७।१२।१०।६ मासदम्धास्तिथिषु कृतं

	1	17 (4)	THE	15 135	दग्ध	स्तिथ	यः		Valer		3000
चे.	चे.	ज्ये •	न्या-	THE PARTY OF	भा	भ्य <u>ा</u>	का	माः	यो.	मा	फार
3	3	8	4	E	90	6	92	90	2	92	8
-	-6-16	Dia		1				10	1	34	•

तिथिगंदः कांतिसाम्यम्

4	90	94	तियय
9	9	9	घट्य- ऽतिमाः
9	ex.	99	तिथयः
3	9	9	⁵⁵ दिघट्या

	9	92	99	
۹ —		+	-	<u> </u>
3 —				<u>_6</u>
1 1 7				_ c
	ė	E	6	

यन्मंगलादि कं तत्सर्वेचाश मायातिपीषो कुसरितोयथा

दग्धायां तिया विषादो वज्य है।।

मुहूर्निसंधू.

निथिगंड:

गंडांतंमृखुदंप्रोक्तंयात्रोद्दाह दिकर्माक तिथ्यादीनांसंधि-दोषंनिहंतिलाभस्थानेसंस्थि तः शीतराश्मः योघरिकार्थम्

भगंद:										
ज्य	रे	भ्रं	भानि							
2	٩	ď	ऽघट्य							
म्.	ऽ श्वि.	म∙	भानि-							
2	٦	3	११ घटिः							

यमदं द्वा ग्रांतिमभेषु मूलाहि षु पूर्वेषु घोराभिधः इदमिष चंद्रेश्वभे वालाभगते श्वभ

म्॥

क्रांतिसाम्यम्
समदंडयोगोरिवचंद्रयोः कांति
साम्यसंभावना तत्र महागणि
तेकसाध्यमिदानींगंडकभयोग
योः सनिधाने भवति तस्मादि पसू
क्यः पातः हर्षणोत्यादितुं चंडायुधः
द्सः नातः हपरगात्माप्यु पडा चु पः

	लग्नगंड:										
8	-	92	छग्न-								
०३०	30	30	पछउंते								
4	9	9	साशि-								
30	30	30	अ घरीः								

मृतिमदं तितयं गंडांतयोगे जन्म नि यथा दुष्ट्रफ लं तह्या त्रायां विचित्यपरं शुभयुतलाभे दोषो त्योभवति.

	विषनाडी.											
-ग्र	भ	£.	रो.	मृ.	-ग्रा	युं.	ति •	भ्य ·	म-	र्य.	3.	
yo	28	30	80	98	29	30	20	33	30	20	90	
₹.	वि.	स्वा-	वि-	ऋ∙	ज्ये	मू.	A.	3.	श्रः	धः	श-	
29	20	28	38	90	98	पद	28	20	90	90	90	
प्र.	3.	7										

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ष्टियमाणेन यथा पंचांगात्कि सिश्चिद्दिने भभोगंबुध्वा पुनःष ष्टियमाणेन तद्यदी संगु एयभयोगेन भजेत् ताः स्यष्टा भयंति त द्येचतस्त्रोविषध्यः विषधि दक्षेक भवको न सत्र गतेष्ययोगसं गुणिताः स्वरस ६० इतः स्यष्टाः स्युस्ता घटिका श्वतु ष्टयंतथा विष्मा खुर्यंदे षंहं ति सोम्यर्सग् शिमित्र ह ष्ट्रो थ्यास्वीयवर्गगो

अधसूर्यचंद्रर्सयोः २०भुक्तेवाताद्यः												
0	9	Я	٤	90	99	94	35	98	ર ૦	श्रंका		
वान	मेघ	ग्रम	नृप	चीर	सृति	रोग	बज्ज	कि.	स्ति	योग		

लग्नपोविया तत्तर्योगेषुतद्वयंभावीति चंद्रेजीवेवासबलेनप्रभवि तुंभवंतिवातास्यः॥ ऋषापरेदोषाः कुलिकदुर्भुहूर्तादयः पूर्वाध्या योक्तावज्र्याजन्मनक्षत्रगेपायेविवाहस्यांतकोयमः ऋत्रसहकेतोः शनि

The State of							3					
	रव्यादीनांफलानिभावेषु											
स्र	चं.	भी.	tag.	화.	श्र-	श-	रा-	यह.				
मृत्य व	नाश	मृत्य,	मीति	लक्षा,	भोगू	साखंद	शानिय	9				
नैस्व ३			The second secon	कत्याएं।	धनं २	कदशन ३		٦				
धनं ३	यश ३			खाभ ३	सुरापा ३	वलभा ३	0	3				
भान्हानु	बधुराधु	भात्वेर ४	वंधुष्जा ४	यश ४	महतं ४	विशीसं ४	0	æ				
पुत्रकष्ट ५			सुनासाभू	इष्टाप्ति	मानं ५	व्याधि . ू	0	3				
	शत्रुभि ६	उद्मी खाः		मद्यं ६	निधनं ६	श्री द	0	ध				
भातदंति			उनहंति ७	विरक्ति ७	सर्चना 。	मृति ७	o	v				
		वंशनाश्	The state of the s		व्यय ू	क्तरवं ट	0	b				
A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	कन्याप्रजि		धर्मसार	200	धर्म ९	गर्भेयात ९	0	E				
					गुरम १०	द्युताशासि	0	90				
	रतामं ११	पुत्रादि ११		सीख्य ११	संपन् ११	वेमच ११	0	99				
रोग १२	दास्यं १२	न्यभी १२	स्त्रीहानि	रियुमी		सुरापान्	٥	92				

वत्फलंबोध्यम् अयांशफलम् ऊढा दृषांशेधनिनीनितंबिनी प्रमेरिनीमीननगंशकेभयेत् त्र्यवोचदेनं किलशोनकोसुनिः कर्की शकोदारकतव्त्रमूटा तुलामिश्चनकन्यांशाः क्रभांशाधनुरंशोपिशु भः वर्गोत्तमः सर्वीपिशतभः तनुपेस्तंगतेनाशोदंपत्योरंशयेतथा सकू रेशेनहानिःस्यादंशेनंद्रयुनेमृतिः त्र्यषलमशुद्धिः सुरवधंतुर्य सुदाहेद्यादशां विननाशकत् जन्मभाज्जनालमाहा मृत्युदं लममस्मं चतुर्धसगुरांदेयं हादशंचगुरगाधिकं सगुरगंचा एमंलमंत्याज्यमं शंतथाष्ट्रमं जन्मर्क्षजन्मलग्राभ्यारंधेशावष्ट्रमोचयो विलग्नसंस्थि-तानेतांतद्राश्यंशानिवत्यजेत् तत्र स्मितिद्यमाष्ट्रमीचेद्भवतस्तदानदो षः यदिजनोषारंधेषायोमेत्रीतदाप्यस्मंनदोषस्त् त्राधवाजनिस माएमाधिपनिः कंद्रेनदापिदोषोनकभगीक्षितश्चेत् त्रिपिकममते शास्त्र चं मं १ लग्नेवर्ज्याः चंशाः लग्नेशध्यक्षेवर्ज्याः सर्वे न सप्तमेवर्ज्याः जीवचंद्रीसप्तमे समी चं मं बु ह शु लमेशाः न अ ष्टमेचर्ज्याः सर्वाचार्यमतेनत्व्ययेशनिःस्वेगनिजस्तृतीयेभृगुस्त नोचंद्ररवलानशस्ताः लमेट्कविग्लोश्चरिपोमृतीग्लोर्तग्नेद्शुभा रश्वमदेचसर्व। श्रात्रविंशोयकानयनं ॥ होहो र सभ्गवोः पंचेंदी ५ रामा ३ जीवेरवी तथासार्धरामा ३॥ शरामं के साधे कै कि विंशीपकाः त्र्यायाष्ट्रषट्सुरविकेतु नमोर्क पुत्रारूयाया रिगः सिनिस्ततोहि गुणायगोच्चः सप्तव्ययाष्ट्ररहितोज्ञगुरूसिताहा सप्तिषद्व्य यग्रहान्पिरित्हत्यशस्तः ॥ अधकर्त्तरी लग्नाद्वातुहिनांशोर्ची पापारुज्वनृज्ययार्थरथोकर्तरीसंघोक्तामृत्युदारियशोकदाः

अव्ययस्यधनस्थोपोर्ठग्नांशसमाशत्वेमहाकर्त्तरी अथकर्त य्येपवादः नावेवशाघोयदिवकचारोनकर्त्तरीचेति पितामहो-किः पापयोः कर्तरिकर्त्रीः शत्रुनीचगृहस्थयोः यदिचास्तमितीया पिकर्त्तरीनेवदोषदा त्रिकोणकेंद्रगेः शहकोः स्त्रिलाभगोयदाश शीतदानदोषकर्त्तरीवदंतिबादरायणः नहिकर्त्तरिजोदोषःसोम्य योर्यदिजायते शाभग्रहयुतेलयेक्स्योर्नास्तिकर्तरी एकार्ग-लोपियहपातलताज्यामित्रकर्त्तर्युद्यास्तदोषाः नश्यतिचंद्राके बलोयपन्नेलग्नेयथार्काम्युद्येतुदोषाः ॥ श्रयगोधूलिः॥ च तुर्थमभिजिल्लममुद्यसिच्चसप्तमं गोध्रिकंतदुभयंविवाहेपुत्र पीत्रदम्॥ प्राच्यानांतुकितंगानां मुख्यंगोधू रिकंमतं ग्राभिजित्स विदेशीषुगुरव्यंदोषविनाशकृत् मध्यंदिनगतेभानीमुहूतेभिजि दा व्हयः नाषायत्यस्विलान्दोषान् पिनाकीत्रिपुरंयथा परमस्मि न्निमिजिति ऋष्मगतभीमचंद्रीवज्यी गोध्किकेचंद्रबलंसमी ध्यंर।३।११ हिगुएगायगतेचंद्रेगोध्सि:शत्मदामता चेन्तसभ्ये च्युध्दलमंतदागोध्तिकामता अध्दलग्नसमालाभेनगोध्तिः शभपदा कुलिकंकांतिसाम्यंचचद्रंलग्नाष्ट्रवेरिगं यदिगोधूलिके लग्नेनतांकुर्याच्यूलिकाम् भृगःगोपेर्यष्याहतानांखुरपुटद-लिनायानिधू सिर्दिनांने सो हाहे सुंदरी णां विविधधनस्त तारोग्य-सीभाग्यदात्री तस्मिन्कालेनऋसंनचितिथकरणंनेवलग्नंनयो गःख्यातपुंसां सरवार्थसमयितदुरितंचो स्थितं गोरजस्तु भानोः कुं कुमसंकाशायाचनारकदर्शनम् यावचगोरजोच्चोभिताचहा CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गनंबुधेः स्मृतं॥पिंडी भूते दिनकृतिहे मंतती स्यादधि स्ते तपसम् येगोधू लिसंपूर्णि स्ते जलधरमालाकाले त्रेधायो ज्या सकल शु-भेकार्थ्यादी याविह्नांते निशिषश्चिमायां पर्येचृतीयं रिविबंब भागं तस्मात्परं नाडिक युग्ममेके गोधू लिकालं मुनयो वदंति प्राच्यां प्रायो नूनवर्णी समोजः संध्याकालं प्राहु रिष्टं नचेष्टं या-वच्छांति गीरजो नो भ्युपैति तावक्ल गंचित्त शुद्धि विवाहे मंदवारे नकर्त्तव्यं बुधेलिंगं निशामुखे गुरुवारे नकर्त्तव्यमस्तादुपरि भास्ततः गोधू लिकं क्षत्रियादी नामेव सर्वत्राधिप गुरु दृष्टि-

श्रंधादिलग्नच क्रम्											
श्रंध	बधि	पंगु	इ. व	संज्ञा							
शश्र	915	56	0	दिने							
३।४।६	5190	१२	0	रात्रो							
0	0	0	60168	संध्या							
0	७१८	0	0	ऽपराण्ह							

भिर्नदोषःइमानिगोडादि देशेषुत्याज्यानि॥त्यय कुरुदेवतास्थापनम्॥ मृत्रेनिन्त्र्यनुन्साः उत्थ रोन्हन्त्र्यस्विनित्एषुभेन षुशुभवासरे भद्रांविना

स्थिरलग्ने ॥ त्र्राथसामान्य विवाह कृत्यं ॥ विवाह कृत्यं सकलं विवाह भे विलोकये ने व बलं हिम द्युतेः॥ नविश्वष्ठे निह विवाह पूर्वतो न वर्णको मंडलतेल मंगलं॥ त्र्यत्र प्रथमं कन्यातेलं पश्चात्तेलं वरस्य इदंचरात्रो प्रथमयामे के विद्यो च्छिष्टतेलेनकन्यका भिषिंचन माहुः ततः कंकणः वंधनं तद पिकन्यापूर्वं मोचनं कंकणस्यवर पूर्व ॥ त्र्यथ कां जिकादिकरणम् ॥ मूलंद्र सद त्र्यवणार्कपृष्य विश्वे

मुह्र्निसंधुः

		स्थाप				- 40		र संस्थान
ई.	बा.	ने.	न्याः	दिश	प्न	काजि	किकु।ड	कायावारे
5	50	१०।११	२।३	सृ	रवे भू	मिसुत	ास्य शब	र्ता दलनं

कंडनं चैव व्यंजनं मोदकानिच यवार मंडपोवेदीकुंकुमं वर्णकं तथा स्थिरभे स्थिरराशोच जयानंदातिथो शुभे वा-रेलग्ने नवांशेचलौं एका साधनं मतं॥

	मेषादि राशीनां तेलसंख्या-													
मः	में हु मि क सिं क. तू हू. ध म कुं मी रा॰													
0	60	٠٤	19	E	3	5	4	3.	3	9	3	संख्या		

श्रयवेदीलक्षणं॥नारदः हस्तोच्छि तांचतुर्हस्तेश्रवतुर-स्त्रांसमंततः स्तंभेश्वतुर्भिः सुश्लक्ष्णेर्वामभागे स्वसद्यनः मंडपोद्वासनं कार्यं समेतु दिवसे बुधेः॥षष्ठं तु विषमं नेष्टं मु क्त्वासप्तमपंचमो ॥ त्र्राय राज्ञां रवद्गविवाहः॥ चंद्रप-चांगसंशुद्धो सोम्यायन विवाह भे राज्ञा गोधू लिकेलग्ने ख-द्रोद्वाहः प्रशस्यते॥ त्र्राथ हीनजातिविवाहे विशेषः॥

इदंजनम्	गद्भविभा	खड्गचकं
3	यवे	अभे
3	मुष्टी	गुभी
3	मुधे	शुभं
3	पाड़ी-	. उ भुभ
3	स्कंदे	अभं
3	त्त्रये	उ शुमं
3	त्र्यस्कंदे	अभ
3.	पाश	১ শু ম
3	पसंकदे	अभ

अनुक्तमासिक्ष्यक्षे संकीर्णानां शुभप्र-दः विवाहो धनपुत्रायुः प्रीतिसोख्यकरो भवेत्॥ अथ घर्घररो मुना विवाह तारा श्रुनिवासवाद्यभेः सजेवचित्राभ-गभेर विधमाः निज्ञीहवाराः पतिनां द्वि भृविद्यां वापदृष्ट्यापन पंगते हिनाः

विवाहभानि श्रन्थ अश्वि ति वि पूफा एषु भेषु बु श रहित्वा रेषु सिनथी गोधू लिकलग्ने रात्री वाशुभः ॥ त्र्यय घर्षर हो कि वि हिशेषमाहुः ॥ इषा द्यप्त स्य न भो न भस्ययो रीज्यो शनो स्वास्य झाणि स्वि भास्वताः युतो भिरूपेरपहाय वासरा उदीरितं घर्षर एं कि चित्कले परं चात्र शुकास्तादि विचारोन न शुकास्तादिकं कि चिच्छु हि वेधादिकं तथा पुन र्भुवां सं वर एोन मासतिथिशोधनं ॥ त्र्यथ लग्न विचारः ॥ जान

1, 1, 1,	1 11 11 11 11
पट्टच	है विभात्
3	न्प्रशुभं
3	शुभम्
3	त्र् <u>य</u> शुभं
3	[%] त्रशुभम्
3	शुभं
3	५ शुभं
3	ડશુમં
3	शुभं
3	સુમં

मिने बाः स्यात्पति लेग्नमंगं वित्तं चंद्रः स्याद्रवि भीतृतातः ववश्र शुकः स्वामि सहिषयोगात्तेषां सीख्यं तह्नले व्यत्य येन्यत् लग्नां शेशोलग्नमं द्युनां शा

	गंधर्वादि विवाहे पट्टचक्रं वि भात्													
y	४ २ ३ ९ ९ ४ ६ ३ ९ ३ भानि													
ऽग्रुभ	श्रुभ	ऽशुः	कुं.	১প্ত-	क्षुं.	शु	sধ্র	शुः	ऽनुः					
3	3	3	.3	3	3	3	3	2	0	भानि				
ध्यं.	क्ष्या स्थान विश्व वर्षा करानि													

धीशोधूनं सप्तमांशं प्रपश्येत् लग्नांशेशोधून मंशं युनांशा धीशोशस्तोषुं स्त्रियोवीिक्षितारी तत्रलग्नं षड्वर्गशुद्धं हाद-शभावशुद्धं चापेक्षितं तत्र प्रथमं सप्तवर्गशुद्धः कथ्यते

						ग्टहेदा	Π:					
मे	ਦੁ∙	मिः	कः	सि	कं	नु	₹.	ध.	म्	कुं	भी.	स.
मं	चु∙	बुं.	चं.	भू	Basar	रा.	भी. ite. Digiti	g.	वी.	दा	इ.	+वाः

विषमेर्केंद्रोः होरा

समेअचंद्रयोः

3	२	3	8	4	٤	9	U	9	१०	9 9	१२	
84	१५	१५	84	85	९५	१५	१५	१५	33	१५	१५	इं द्या
सूः	र्च∙	सं	चं	सू	मं	स्त्	चं.	सू	चं -	सूं	मं	स्वाः
30	30	30	30	30	30	30	30	30	व्	३०	30	उं शा
चं-	सू.	चं∙	सू.	र्चः	सूः	चं	सू	र्च •	सू	मं	सू	स्वाः

द्रेष्काणः प्रथम १० पंच २० नवा ३० धिपानां

मे	夏.	मिः	र्क	सिं	कः	तू.	ਚ.	धः	मः	.सु.	मी-	राः
१० मं	९० रा	क कि	१० चं	१० सः	१० बि	१० शु	१० म	हु: इ	९० शः	१० का	० वि	5 शा
₹.	व कि	२० मु	२० मं	२० इ.	३० हाः	२० वाः	२० इ.	२० मं:	२ क्	२० मिं	२० चं	ुं शाः स्या
३०	३०	३०	<u>इ</u> .	३० मं.	३° ह्य	व्यं विं	वं म	ल मंद	ल छि	३° इफ्र	क् म	

सप्तांशाः समे सप्तमाद्विषमे स्वस्मात्

मे	वृ.	मि	क	सिं.	कंग	नू.	हु.	धः	म.	कुं.	मीः	मानम्
3	5	3	90	R	22	O	٦	9	R	११	E	४।१७।८
2	9.	8	38	ंध्	8	U	3	१०	4	१२	9	= 13818६
3	80	4.	१२	9	3	9	8	११	Eq	8	V	१२।५९।२४
8.	११	६	8	6	3	९०	4	१२	9	2	9	१७१८। ३४
4	93	19	2	9	8	88	६	8	U	3	१०	२१। २५ । ४२
E	3	C	3	30	4	९२	6	3	9	8	११	२५। ४२। ५१
9	2	9	8	33	٤	*	U	3	१०	4	१२	30 00

, मुहूर्त सिंधुः

चरेस्वात् स्थिरे नवमात् द्विस्वभावे पंचमात्

मे	बृ∙	मि	दिं	सिं	कं	न्दं	हु.	ध	म	कुं.	मी-	मानं.
3	२०	9	8	. 8	२०	9	8	8	१०	9	&C	३।२०
2	११	U	عي	્વ	११	-	م	2	83	U	3	६।४०
3	१२	9	ध्	. 3	१२	9	ध्	ar	१३	9	فر	१०।०
8	8	१०	v	8	9	१०	9	8	3	१०	9	१३।२०
4	2	११	C	٩	- 2	११	C	4	2	99	9	१६।४०
६	3	१२	९	٤	3	१२	9	٤	3	१२	9	2010
v	8	2	,20	v	8	9	१०	9	8	3	९०	२३।२०
U	ч	2	28	c	4	2	23	5	4	2	११	२६।४०
9	ध्	3	१२	9	६	3	82	3	६	3	92	2010

कुजरविज गुरुज्ञ शुक्र भागा पवन समीरणजूककोपे-लेयाः त्रयुजियुजिभे

							Y. Carlotte					
मे	ब.	मि	र्कः	सिंः	कं	तूः	च.	धं	म	कुं.	मीः	
4	4	ч	u	y	4	4	y	x	x	7	4	डं शा
मं	श्रु	मं.	श्र.	मंः	श्रु	र्मः	शुः	मं	र्युः	मं	शु.	स्वाः
4	y,	ч	3	u	K	4	x	4	4	4	4	ं शा
इा.	बं	राः	Tes	इाः	बु	इा.	बु	इा.	बु	इाः	विं	स्वा
0	9	9	9	9	9	19	0	6	9	9	9	इं शा
ह.	₹.	वृ.	ह.	वृ.	तृ.	वृः	चृ.	폍.	귤.	बृ.	हा.	स्वाः
6	6	5	-	6	6	4	9	6	6	6	5	इं शा
बु.	वा-	खं.	इा.	बुं.	इा:	बिंग	इा.	बु.	इाः	बु.	इा-	स्वा
u	4	y	ų	4	Y.	4	4	4	4	4	4	ं शा
शु	मं •	र्गुः	मं॰	गु∙	मं∙	गु.	र्म •	गुः	मं-	र्गु.	मं	स्याः

द्वादशांशाः स्वभान्

मे	ह.	मि	पंक	सिं	कं	तूः	चृः	धः	मः	÷.	मी.	मानम्
3	2	3	æ	8	w	ė	5	9	90	38	99	2 130
2	3	8	3	es	9	U	9	30	33	१२	2	410
3	8	4	E	9	b	3	30	38	१३	8	a	9130
8	4	E	9	b	0	20	53	१२	9	3	3	2010
4	ध्	9	5	9	80	53	83	8	3	ex	30	१२ । ३ ०
ध्य	•	5	9	80	88	65	3	a	a	æ	7	१५१०
19	5	6	80	53	83	3	3	3	8	3	E	20130
5	6	50	35	१२	8	3	3	R	4	مح	9	2010
6	80	83	83	8	3	3	8	4	ex	و	U	22130
50	88	83	3	2	3	8	u	ध्य	19	U	3	२५।०
53	55	.8	2	3	8	3	E	w	5	9	30	20130
63	8	3	3	8	سي.	ध्	6	5	9	80	33	3010

रव्यादीनामुचनीच त्रिकोएााः

सू	चं	भीः	बु.	न्य	इफ∙	शः	यहाः
20	19	१ २८	4 84	9 3	68 50	ध् २०	उचाः
90		२ २८	३३ १५	es s	५ २७	०२०	नीचाः
4	2	9	ध	or	ei ei	99	चिकोएााः

विवाहल-मेयःसम्बर्गः ग्रिभानां चेत्तदान्निव-गित्ठाभोना-तिदूरे परं

भावशु द्विश्चेत्॥ ऋष्य रु ससाधनं ॥ तत्रेष्टकारः घटिकाः पर्हानि चाग्रिमसारिएयां नदंशनन्मासीय सूर्ये योज्य पुन स्ताहशांकस-मुदायो यत्रतत्र यथाक्रमा छ ग्नंकहा दिभिः सममायाति

सायनालग्नसारिणी ७।३०पलभायाः													
0	मे	द्य.	भि	र्कः	मिं:	कं	नूः	इं	धः	मः	कु	मी	0
0	440	W 6 8	0000	द्ध	200	8000	ax x 0	a 3 a a	88	440	30	५२ २०	0
3	22	wood	0000	कर व स	2000	م مي در	30 E	४० १८	3 4 4 64	200	4446	550	9
2	سر مرا، مر	Wy	3000	2000	الرصري	20 30	38	2000	28 92	a or or	प अ	पुर प्र	2
3	مرعر مي	م سرمزى	2000	80 W W	20,000	الرفع لا	य व व	3000	3000	प्रम्	५५ १४	५९ १२ ३	3
8	3 3	2 x x x	200 28	2000	० तर प	2000	2000	,000 d	3000	5000	५९ ९२	पुर १९ २४	8
3	300	2000	र्दे त	0900	23,90	20	38	3000	340	480	44 90	4,40	9
w	रेय प्र	0000	र्थ अंध	9 000	23	३९	م صرع دين	18.00	20 5 00	ary or	440	र ल उ	६
9	30,00	المحلى و	र वर द	2000	रव वर्	48 282	343	अंदर प	38× 8	3000	प्रथ	५९ ४२	O
6	36	8 200 5	3000	88	र व व	२९	20 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 0	3000	3000	500	पद २१	5 3 2 1	U
9	वर्ष कर अ	38	१२०	४० म अ	33 44	30	38	2000	9000	५२८ ४	प्रथ	14 5 x	9
१०	33	2920	अ १२०	2000	2.8	30	व्य प्र	य ५०	800	430	प्र	000	१०
38	300	39	0 0000	१९	2000	3000	O CO CO V	अल अ	88	4446	ज्य अ	oxx	११
२२	पुंच पुरुष	88	222	y and	200	303	may u	3000	अर य	५३ ५६	५६५० व		१२
23	व व प	पुत्र पुर ४९	33	88 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	30 232 V	2020	50000	रिय के कि	2000	पुष	449	०००	23
38	पुत्र पुत्र पुत्र	५० ४४	भ कर जे	० ५ ५ ५	28	2000	न्य ४० र	30	8000	पुष	8 0 0 0 0 M	000000000000000000000000000000000000000	38
१५	12000	८१ ४०	23	30	२५	3000	उद्ध ५०	2000	४८ २९	513	30	33	34
0	मे	वृ.	मि	५० कि	सिं-	कं	नू.	यु:	ध.	मः	कं	मी:	0

लग्नसारिएी ७।३०पलभायाः													
0	मे	चृ.	मि	र्क	सिं.	कं	तूः	ह.	धः	मः	कुं	मीः	0
38	00	ر ع در	र द वर	१९८	29 y	3000	30 80	४० वद	अ भि भ	448	3 9 W	०४० व्ह	१६
30	388	प्य अ	0, 20 00	० ० ० छ	x x x x	w	व व व व	४ व व	४४ थ	x 00 00 00 00 00 00	3000	28 4	१७
30	188	४१ २८	वर पर प्र	8 8 90	280	३४ ०८	363	828	3500	५ ४ ४ ४	2 0 V	0 % 0	१८
39	38	6 2 28	or 30 30	er 5 ce	243	अ ४ ४ ४	900	अस व	४९	488	992	908	39
20	00	000	98 60	2950	4 30 0	a 2 30	900	300	2000	x x x	888	8000	२०
38	11 30	० १ १६	१ १ ५	2000	م مر مر	2000	0 0 W	20 5 00	क र र र	y 5 00	5 2 2 2	व व व व	२१
23	३६	8 28 83	38	0 00 00	2 4 2 2	यदेश वर	त वर वर	3000	38	पुष्ठ वर्ष	7960	9 4 9	२२
53	1 38	030	2000	9 30 00	2000	2 4 4 x	4400	3820	886	2000	5 8 X	विष् ५	२३
28	133	88	१५ २४	र ५ वर	2000	2 8 8	2000	388	४९ ४०	3 3 8 30	7 9 28	१ १ ४ ४	28
20	30	98	१५ १४	2990	9 000	ल प्र	व ५ व	४४	400	30	3000	8 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00	२५
२६	11 36	०० ०६	र र द	२० १५	2 2 3 3	34 0	38 25	8895	५० १८ ५६	य ५ ५ ५ ५ ५ ५	95	9	२६
2/5	३५ २६	3000	844	व व व	200	200	393	84 82	40 22	48 48	4 4 4 4	See on y or	२७
२८	४६	000000000000000000000000000000000000000	0 20 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	र अ	200	200	३९ २४		3000	400	५६	4 9	२८
29	482	४ १ ४	48	243	200	2 2 4 4 4 4 5 4 4 4 5 · 10	39	300 J R 3	48	पंप ९०	5 2 2 3 - Jes	४ व ८ व	२९
0	२२ मे	च.	मि	र्कः	सिं	कं	तूः	इ.	धः	म	कुं	मीः	0

मुहूर्तसिंधुः

त्रोध्विधः क्रमास्रग्नं स्फुटं यत्सूर्य राक्ष्यं समानकोष्ठे घट्या दिकं स्वेष्टचरी युनंतत् तत्तुल्य घरचादि भवे दियत्र तत्तिर्यगू-ध्यांकमितं हिलग्नं स्वेष्ट्रघट्यादियुक्तंतत्स्पष्ट्र घट्यादिकोनितं षष्टिम्नं विभजेत्याह कला यंतरतः स्फुटं । त्र्यथद्वामोपयो-गिनतं॥ पूर्वनतंस्या द्विनरात्रिखंडं दिवानिशोरिष्टघरी विहीनं दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिरवंडंत्वपरं नतंस्यात् दिन राज्यर्धं दिनरात्रीष्टेनहीनं पूर्वनतं दिनरात्रीष्टं दिनरात्र्यर्धी-नमपरनतं भवति तत्रलग्नइवरविराइयंदाकोष्टानामंकेषु न-त घटिका संयोज्यक्रमात्यूर्वीक्तादेवलग्नं दशमं भवति तच्चकदा-चित् चतुर्थगायाति॥ स्प्रथेतर भाषानां साधनं॥ लग्नोन-तुर्यतः षष्टां रायुक्त नस्तनोः संधिस्ततः धनभावस्ततो धन-भावसंधिस्ततस्तृतीय भावस्ततस्तृतीय भावसंधिः पुनः षष्टांशं एकोनितं चतुर्थेयोज्य सुरवसंधिस्ततः पंचमभाव स्ततः पंचमसंधिस्ततः षष्ठ भावस्ततः षष्ठभावसंधिः पुन-रेकेकं भावसंध्योयीज्य सर्वे १२ सिद्धा भिष्यंति

मुहूर्नसिंधुः

7														
	॥दशमसारिए।।													
	0	मे	वृ.	मि	क	सिं	कि	तू.	चृ.	धः।	मः	कुं	मीः	0
100	0	az &	2000	مرمر م مرمر	० ५ ५ ०	व्यव ०	200	अर्ड ०	350	४० २०	४ १ ४ °	580	५००	0
To King	3	0 0 0 h	90000	E	रे स	250	२८ ३६	00/5 0 00/20 W	396	अर्थ र अर्थ स	अकल	उर व	प्रदेश कर	3
	٦	10000 C	10 20 00 0 V	व कर	WW WW WGA	28	र अल्ला प	र्भ के व्यक्त	200	अक्ष प्र	अर्थ व	प्रेष्ठ	383	2
	3	Caralle	2000	33	36	38	2500	ر مرمه و	0000 x	3300	368	प्रकर्	504	3
	8	83	व व	र्वर्भे के के व	O'UX	222	2	9000	100000	000000 0000000000000000000000000000000	88	240	36	8
	प	8 x 8 8	2000	2000	0000	विश्व	28 200	रेक्ट्र ४	0,000	S S S S	1 30 00 0 00 0 00 00 00 00 00 00 00 00 00	5000	रेंड	4
	Eq	अक अ अ	150	80000	20	34434000000000000000000000000000000000	33	38	2009	अंध	38	० ४ ४	5 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5 6 5	E
	6	300	09 0	58.5	36	28	3000	अ ० ५ ० ० ० ० ०	W 5 W 05 9 S	300000000000000000000000000000000000000	360	336350	3 5000	ف
	U	300	80	38.21	2000	रेंदर :	38	38	300	30000	40	Sans	र उक्ष प्र	6
	8	300000000	09 4 69 400 9 4 0.9	8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	MONDOCO OF OF OF SON OF TO OF OF OF	2000	28400	30000	2000 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00	300000000	3000 8000 00 boar	2200	2500	9
	१०	20 000	30	200	200	व्य	3000	38	2000	300	५० ५०	व उत्त	00	१०
	११	88	संदर	20	र व र	200	300	2880	व्युष्ट्र	OBOUS	0000	0	000	११
	९२	200	039 Va	2000	विध प्र	2000	00000000	प्रमुख	3000	य प्रम	33	१ ५ ५० त	SOU CON	32
	१३	५४	2000	838	222	200	1091	3000	A0 01	434	प्य प्रम	र प्रम	20	33
	38	20 2	व्य म	2 4 10 2 cm	10 7 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60	२५ ४	09000000000000000000000000000000000000	879 EX 8 9 8	MY MY DO U DO D	Son Son a Do Son So	3 3 3 3 3 A A	340	00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00	38
It	१५	200	0000	व्यव	3330	र्ध २०	3000	र व्यव प	80000	8490	प्रव प्रव	30 W 30 x w w 0	० ५००	१५
-	0	मे	वृः	中	क्	सिं.	कं	त्रं	व्-	धः	म.	र् कु	मी.	0

मुहूर्तसिंधुः

	दशमसारिणीः												
0	मे॰	वृ.	मि	क∙	सिं.	कः	तृ:	र्छ	भं	मं	कुं	मीः	0
१६	30	२० ३६	व्य अध	२९ ४८	व्य व	क्र अंद्ध	300	10 00 W	अक ल	8 7 3 X	39 W	० ५ छ ४	१६
१७	र्ड ४	र र र र र	व व व	र वर्ष	२ ५ ५ ५	00000000 V	र् ४७ छ	० द द	w y a	acus s	5 x x	o 30 3	१७
१८	253	amb	अ. अ.अ.	र ४ म	व कर	0000	348	Soun	320	× 3 3	5000	ميع	१८
88	299	व्यक्ष भव्यक्ष भ	ww. 3	250	233	مرمر مر	कुछ ४	Socia	3000	338	4 8 8	238	१९
२०	ध्यु ४०	8 20 0	0 6 F	220	4330	4 4 3	2000	280	0 6 m	3 4 30	५५%	0000	२०
29	500	० अ अ अ	क्ष ५ स	व व व क	रक प्र	युष्ट पुर	0 0 V	४ १ १ १	30 y cs	4 00 W	Sara	४९ ५६	२१
२२	S MAN	रें वें	200	यत अ	विविव	अ ५ %	W 47 W	28	3000	B 7 7 7 5	43	43	२२
23	80	र अ र र र प	१७०५	र वर अ	र्व २८	यु व	ल्य अ	अध्यक्षर	3000	200	3 00	0 b	73
38	स ५ १	83	30	222	29 28	32	व्य ५७	४२ ४४	४० ५४	५ ४ १ १	9 00 X	38	28
२५	990	१२००	880	240	380	अ अ य व व व	क्रिक	अक्ष रि ७०	330	3300	300	200	24
२६	10	2000	20	२ २ १	2000	2 20	30	४२	848	प्रव	3 9 W	9 4	२६
२७	9 9 4	१४०	व्यक्त त	23	20	रे प्रकल	10000000000000000000000000000000000000	880		23023	प्रथ अ	2000	२७
२८	30	र्थ ४४४	१ व ४	1	268	388	393	X 9 X X X X X X X X X X	अव्यक्ष्य क	र प्रम प्रम प	39508	कल्य अधिक अधि	२८
36	89	2000000	१ व ८ ८ ५ ४	3000	208000	4 3 6 4 3 B	3000	38	य व व	प्य प्र	800	य भू अ	39
0	मे	₹.	मि	क .	1सिं:	क	त्र.	-	ध	मः	कुं.	मी-	0

त्या चानया परिपाट्या भावान्निर्मायलग्नं सप्तवर्ग रुप्दं चेन्महो-त्तमंलग्नं भावसमेषु यहेषु फलं पूर्णसंधिसमेषु फलाभावः व्या-सःसमवर्गंच पड्वर्गं पंचवर्गं शुभावहं चतुर्वर्गंच संयाद्यं त्रिव-र्गहानिकृद्भवेत् वसिष्ठः इष्टेश्वचेष्टादिबलोपपन्नेश्वताभिर-प्यं बरगेर्विलग्नं ऋनिए षड्वर्गमपीएमाहः स्वेदोक्षिते गीत-म गालवाचाः श्रथात्रोक्ता श्रपिस्मृत्यर्थमेकविंशतिदोषाः कुपंचांगभवः १ संकातिः २ समहोविधुः ३ कर्तरी ४ षणमृति लग्नचंद्रः ५ त्रेविध्यंगंडांतं ६ कुषड्वर्गः ७ भृगूरिपुगः भी-मः ९ लग्नास्तदोषः १० कुमुहूर्तः ११ पुंस्त्रीजनूराशिग्रहाष्ट्रम लग्नं १२ विषानाड्यः १३ ऋनुक्त भांशाः १४ एकार्गलं १५ वार दोष:१६ स्रोत्पातभं१७ ग्रह एार्सं१८ कूरविद्धं१९ कूरग-म्यं २० पात २१ ऋन्येपिवर्ज्याः ऋकालवर्षा १ करकापातः १ श्रातिगर्जनः ३ हिमपातः ४ प्रचंडानिलः ५ परिवेषाः ६ प्रत्य-र्कचंद्रः इंद्रधनुः तिथ्यृक्षवार भवाःकुयोगाः ९ एते पूर्वी-काश्व सितसंभवेवज्यीः ऋथ प्रतिकूलिवचारः वरवध्वोः कुले विवाह निश्चये जाते सति मरएो त्रिपीरुषे मासो-त्तरं विवाहः गुरुमरऐ। तुवत्सरादूर्धं विवाहः निश्चयस्तुवा-ग्दानेकृतेनांदी श्राहेजातेवा देशा चाराज्झेयं सूतक निर्गमे शान्त्यावा कर्णीयं गुरुभिन्ने इत्यु हाहः ६॥ त्र्यथवधूप्र-वेशः॥ चूतनपरिएशितायावध्वाःप्रथमो भर्तृ गृहे प्रवेशोव-धूपवेशः सचिवाह दिवसात् २। धार्दा ८। १०।१२। १६। ५। ७।९

मुहूर्नसिंधुः

दिवसेषु शुभः उर्धं विषम मासवर्षयोः पंचवर्षात्परतः कामचारः नारदः सममासे समवर्षे यदिललना भर्तृ गृहमुपयाति भर्तृहरतेद्वायुः स्वयमपिरिष्टं समाम्रोति फलोदये वधू प्रवेशोवतबंधमोक्षां पुंसां पुनर्दार परियहंच नाब्दे द्वितीये विद्धीति विद्वान् प्राहुर्वसिष्ठा त्रिपराशराद्याः उ.३ रो हः ऽश्वि ति श्राभिः
मृत्रे चि श्रानु श्रान्धः मृत्मा स्वाः एषु भेषु सून्भोः बुनविनास्थिरलग्ने द्विस्वभावेवा पूर्णा ज्ञयाः नंदा तिथिषु विवाह मासेच
के चिद्धधमंगीकुर्वति वारेषु विवाह भातिरिक्त भानि निषेधयंति तथा रात्रावेव वधू प्रवेशा इतिचकथयंति रात्रो विवाह भेशासाः सन्मुहूर्ने स्थिरोदयः वधू प्रवेशो नैवात्र प्रतिशुकाद्भयं विदुरिति

	ज्येष्ठे मलमाः त्र्याषा पोषे क्ष्यमाः भर्तृग्रहे										
ज्येष्ठे	मलमाः	ऋाषा-	पीष	क्षयमा	भर्तृग्रहे	चैत्रे					
ज्येष्ठं	पतिं	श्वश्रू	श्वशुरं	स्वयंमृता	फ़लं	स्विपतरं					

वधूप्रवेशः स्त्रथभर्तृ गृहात् पितृ गृहागमन मुहूर्नं दारुणः उत्रः भिन्नेषु भेषु शः सूर्भोः भिन्नवारे सित्रथो लग्नेच कुयोग राहित्ये॥ स्त्रथ दीपमालिकायां दीप हद्धापनं चंद्रताराबले सायं मेषलग्ने नारीकृत नीराजनं स्त्रतएव कृतो पयामो पिपु-मान्गृहीत्वं हद्धापन्ना दीपदिने समेति स्त्रतो दीपोत्सब दिने चंद्रतारा शुद्धावेव व धूप्रवेश हिरागमो कार्यो परमागा मि

CC-0 Kashmir Research Institute, Digitized by eGangotri

दीपावल्यामव्यवहितायांनतत्र गुरु शुक्रयोरस्तादिविचारः सिं-हगतादिविचारश्च॥ त्र्यथिहरागमः॥ सचकृतविवाहाया दि-तीयवारं भर्तृगमो द्विरागमः विवाहती विषमाब्दमासयोः मेष यश्चिककुंभगतरवी शुक्रपक्षे शुभवारे वरस्य रियमुरुशुद्दी ह.ऽश्वि.ति.ऽभि.उ.३रो.स्वा.पु.श्र.ध.श.म.रे.चि.श्रन्.मू.ए-षु भेषु २।३।६।१२ लग्नेषु सन्मुषदक्षिएायोः शुक्रंवर्जियत्वांबा-लकगर्भवती नवोढा यात्रिकश्च संमुखदक्षिण शुक्रेन गच्छेयुः गच्छंतिचेत् बालोम्रियने गर्भवती स्त्रवद्गर्भी भवति नवोढावं-ध्या भवति यात्रिको हतार्थीभवति ॥ अथास्य प्रति प्रसवः॥ देशाद्यपद्रवे राजोपद्रवे दुर्भिक्षोपद्रवे विवाहयात्रायां तीर्थ-यात्रायां राजभये वधूपवेदीच द्युकदोषीन एक ग्रामेपि पि-त्रे ग्रहे कुच पुष्पसं भवेषि शुक्रदोषोन रवीज्यादि शुद्धिरिष कृताकृताकुचपुष्पसंभवे कुचपुष्पीयदा पित्र्येन शुद्धिरिवजीव-योः वरस्यवध्वाकाव्यश्च सन्मुखो दक्षिणोथवा श्रुभेलग्ने चंद्रबले सिनथो धवसद्मिन यायान्तारी तदानस्या द्दोषोत्यो धर्मसंकरात् भृगुः श्रंगीर वत्स वसिष्ठ कदयप अत्रीएगं कु-लेपि नदोषः रेवत्यादिकृतिकां नंद्रेशुक्रों धोभवति तदापिन दोषः॥ श्रयनूतन वध्वाःपाककर्म ॥ मृगोत्तरातिष्यकृशानुशा-के श्रुतित्रये ब्रह्मिद्देव पोंध्ने शुभे तिथी व्यार चो प्रकुचित् नवावधूनूतन पाककर्म स्थिरेलग्ने सुखे शुद्धे सप्तमे चबला-न्विते रंध्रे खेट विहीनेच नवोढा पाकमाचरेत्॥ द्विरागमः॥

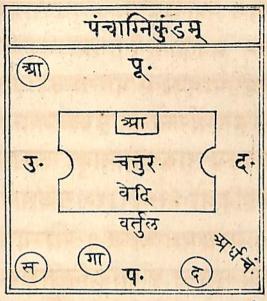
॥ स्रथाग्न्याधानम्॥ ९॥ स्रग्न्याधानं दारकाले दाया चकाले वाउत्तरायएगे रवीं तथा स्वज्ञारवाधिपोदये कचिद्दक्षिणा-यनेपि तथा जनके यजेवो पासिताग्नी तथा गुरु शुकोदये क्ष-या धिक मासराहित्ये जनका भजयो राज्ञयाच चंद्रबले रिका रहित तिथो द्यानिवर्जितवारे ज्ये कु ति मृ रे उ ३ रो वि एषु भेषु के चित् ह चि पु कथयंति ऋधिकानि १९।४।१२।१० एत द्रिन्नलग्ने एषां नवांशेषिनचंद्रोषिलग्नेन शुभः रिध-वारे चेदग्न्याधानं रिवर्नवमः चंद्रवारे चंद्रः पंचमः भोमे भी मस्तृतीयः जीवेजीवोलाभे बुधेबुधः २।११।१०।५।३ एतद्भाव-गतः शुभफलो भवत्यविरताग्निः धनुर्लग्नेजीवयुते स्प्रथवा मे-षगभीमे ७१० गते ३।६।११ गतेषु र-चं श राहुषु शुभोयो-गः स्त्रष्टमगे चंद्रे स्त्रीनइयति पापेष्टमगेस्वयंनइयति शुभे ष्टमे उभयो रोगः लग्नस्वामिनिनीचे युद्ध जितेच खल यहेंदु-ष्टांगतिं याति जीवचंद्रमंगलेः नीचेरक्तगेविजितेः शतुग्रहगे रष्टमंगेर्वा अप्रग्न्याधानं न कुर्यात् तथा चेत्रे मेषरवावपिन चतु-र्थ प्रहरेदक्षिए। यने रात्रीचनारंभः त्रप्रथ पाकयज्ञानां कारं नामानिच तत्तहेदोदित भवारकालेषु पाकयज्ञाः ७ तेच अ-उन्याधेयः १ त्र्यग्निहोत्रं २ दर्शपूर्णमास्यो ३ चातुर्मास्यानि ४ वेश्वदेव पर्व वरुए। प्रधास पर्वशाक वेध पर्व शुनासी रीयपर्व ४ पशुबंध ५ सोत्रामणी ६ पाकयज्ञः ७ एते सप्तह विर्यज्ञसंस्थाः त्र्राथसोमसंस्थाः त्राग्निष्टोमः १ त्र्रात्यग्निष्टोम २ उक्य ३

मुहूर्तसिंधुः

षोडशी ४ त्र्यतिरात्र ५ वाजपेय ६ त्र्यासोर्यामः ७ एते सोमसं-स्थाः श्रथ पाकयज्ञसंस्थाः अवएगाकर्म १ त्र्याख्युजी कर्म २ त्र्यायहायए। कर्म ३ त्र्यपूपाष्ट्रका ४ मांसाष्ट्रका ५ शा-काष्ट्रकाः ६ वर्षाष्ट्रका ७ एते शुक्र गुर्वीरस्ते यह ऐ स्वयमलमा-सो संकांति श्वेतान्दोषान्परित्यज्य पाकयज्ञानाहुः सोमसं-स्थानमधी निदाघे शिशिरे वेद विभी २।७।९।१२ राशिगते ग्न्याधानोक्ततिथिवारभेषु॥ त्र्यथमहाहोमः॥ सोम्याय-ने दूषएामुक्तवासरे राभितथी सुलग्ने पूर्जनं तिथिषु र चं बु शु जी वासरे त्रा श रो पू भा ह एषु भेष्वपित्रा-ग्न्याधानोक्त भेष्वपि महारुद्रादिहोमान् जगुः अथपूर्णाहु-तिः पूर्णातिथो पूर्वोक्ताहुति भे ग्रुभवासरगु भलग्ने॥ स्रया-व भृथस्नानम् ॥ नंदाजयासुपूर्णियां शुभलग्ने शुभवारे शु-भयोगेच त्र्रथात्रचकत्रयंदर्शयति

उत्तरे हयाधिपः	पूर्वे गजाधिपः
利 利 利 利 利 利 利 利 利 利 利 利 利 利	व म
दक्षिणे नराधिप	<u> निदर्शनम्</u>
मू य रे य रि	पुः गजाधिप त्रश्च नर् पतिः पतिः

मुहूर्चिसंधुः



एषु यथा क्रमात्पापवेधे भंगं बोध्यं त्र्याधारे पराधीनः त्र्यान् सने नीतियुक्तो प्रधानपुरुषीये द्वीप्रजाद्यां तिकरः पहर्से पूर्व तुल्यः सिंहेसिंहइवसंग्रामप्रियः मंत्रिणामप्यसाध्यः सिंहासने नेजस्वीभीषणाकृतिश्वलिनो महाकोधी प्रजा पीडाकरः

श्रास्मिन्यापवेधोपि निंद्यः चंद्रे ह्युभावस्थागते पुंलग्ने च त्र्य-भिषिक्तो नरपति ब्राह्मणश्च शिव भाक् भवति त्र्यथेषु त्र्यावश्य-किवारो वाज पेयादिकर्तु ब्रीह्मणस्य इतरेषां तुरंगमेशस्य तुरं-गमे गजेशस्य गजेनरेशस्य रथेशु दिबेध्या त्र्यथेषुकमात्

फलं	इानिफ	तंच प	दर्यने		मज चकं ग	जभान्	
	तुरंगचत्रं	, तुरंग भ	ान्	2	मुखं	क्रभ	0
2	मुखं	गुभ	0	٦	गुंडा	शुभ	•
7	नेत्रे	गुभ	0	2	नेत्रे	शुभ	0
12	कऐ	८ इ फ भ	शनी	2	कर्श	८शुभ	रानी
2	चीर	ऽग्रुभ	शनी	२	मील	गुभ	0 .
2	युद्धं	ऽश्रभ	शनी	c	पादी	उशुभ	शनी
6	ऋंघी	५ श्रम	शनी	2,	तांगू०	८ इ हभ	शनी
प	उदर	शुभ	٥	8	व्रष्ट	<u>ऽ शुभ</u>	इानी
· cy	प्रके	८ शुभ	शनी	8	उदरं	श्रुभ	. 0

मुहूर्तसिंधः

र्थ	चक्रेरवि:	भुक भान	1050
3	योक्त्रे	शुभ	0
3	नीडे	शुभ	0
3	दंडे	ऽश्र म	श्नी
3	ध्वजे	ऽश्र भ	शनी
3	मध्ये	सुभ	0
3	पार्थी	शुभ	0
3	युगे	ऽ ज्ञाभ	नानी
3	श्र्यभः	गुभ	0
3	उर्ध	ऽ शुभ	इानी

दुष्टां शके जो यदि हेल्प पत्यं तदास्य पूज्यं पट बंधनं युतं मरगाभिषे को हय हन्तृप घं बलक्षयं तंत्र हरक्र मात्स्या-त् गजे कुदेशे यदि हंस संतति निग-जपेया दिमरवांत मज्जनात् पट्टा-भिषेकादनुवे नि संगरात्समाडि लेशश्चयशोजयशियम् रिथनो

यदिनामभं शुभांगे हरिजस्तत्स्थलजो मखा भिषेकःन समाहि-तबन्हिनाच राज्ञाकियते पट्टरथाधिरोहएां इति सत्रविरामम-ज्जनं सु दितं यिहा खितं मये तदत्र त्रिविधावनिपा भिषेककाले त्रिविधेतह्र त्रयेक्षणोपयोगः॥ स्रयवान प्रस्थ मुहूर्तः॥ प्रतिपो-त्रमुखं बिलोक्य महामखन्नतान्निर्वत्यदेवशयनिमन्ने त्र्य-स्तवर्जिते चंद्रवले लघुः धीरः श्रा. मृ.रे.श्र.ध.पु.ह. एषु भे-षु शुभवारे ५।६।३।०।८।११।१२ लग्नेषु शुभेषु केंद्रगेषु ९।५। बुःशुःजीव युते पूर्णाजयानंदा तिथिषु॥त्र्राय सन्न्यास मुः॥श्रः ध ह न्या रो मृ ति उ ३ एषु भेषु रिक्ता रहित तिथी चं ब बु स् वारेषु २। ५। दलनेषु केंद्रे शुभयुते॥ स्रथ दीक्षामाह पूर्वी-क्त भेष्वदितियुतेषु त्र्याद्रीरिहतेषु पुंलग्ने सशुभे शुभवासरे लग्ने आतुरश्चेत्सर्वकालं ॥ श्रथ स्त्री श्रद्भयो विशेषः पू. ३ शःत्र्यक्विः मैत्रभे पु ध ह .एषु भेषु श सू बु शु वारेषु विप-र्वरिकेतिथी॥ श्रथ पुष्पादिस्नान शुद्धिमाह॥ शुद्धकाले रःचं

शु-वः वासरे उग्रदारु एवर्जितभे शुभलग्ने कुयोगविष्ट्यादि रहिते त्र्याषाढ कृष्णपक्षं भाद्रपदाश्विन मासीवर्जि यत्वाकृष्म दशम्यंतं तथा गुरुशुक्रयोरुदये पुष्पस्नानं एकवासरनानं च विधेयम् इत्यग्न्याधानं १॥ श्रय राजाभिषेकः १०॥उ-त्तरायएगि रवी तथा वश्चिकार्क तुलार्क कन्यार्केच सार्वभीमा-नां मंडलाधीशानां स्त्राषाढश्रावए। भाद्रपदव्यतिरिक्तमा-से तथा मलमासक्षयमासरिहते गुरुशुकोदये चंद्रबलेच भोमरविजन्मेशद्शमेशाना मुदये जन्मदशा साबल्येच दुर्गाधिपं मंडलाधीशवत् ग्रामाधीशं सदारिक्तातिथिव-जिते भद्रादिक्योगराहित्ये जीः चं र बु शु वारेषु सब-लेषु उदितेषु भोमवारेपि क्षत्रियराज्ञोभिषेकः केश्वनचैन त्रोनिषिद्धः उ.३ रोःमृ ज्ये हः ऽश्विःति ऽभि श्र ऽनु रे चि एषु भेषु ५।६।७।८।३।११।१२ शीषीदयेलग्ने स्वजन्मल-ग्नराशिभ्यामुपचये ३।६।१०।११ पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।७।१०।९।५।२ गतेः शिषीदयां शे सुरुर्लग्नकोएं १। ५।९भीमः ६ ह्युकः १० एदद्योगे भिषिक्तो राजलक्ष्म्यामी-दते पापग्रहे २।१२ गीते निःस्वः १ लग्नोपगेरोगी ७।४ सप्त चतुर्थगेः पदच्युतः ५ पुत्रगेः सर्वसुखहीनः १० कर्मगैर्भ-ष्टोत्सवोट मृत्युगेरनायुः १२। ट। ६ चंद्रः प्राणहापापे ३।६। १९ जीवे १० र्बुधे ४ राजलक्मी सिद्धिः श्रुभे ५।९।१।४।७।१० 1312189 गति: पापे 318199 गति हा इ19192 एनद्भविभ-

न्न चंद्रेशाभिषेकः द्युभः २। १९ सृ- द्या १०। ४ जीवः स्थिर-राज्यः॥ त्रयातपत्रचक्रमाह॥

l (Mari	सूर्यभा	त्		1	
٦	नरे	बलार्थ हिनं		For	पुनर्वसु
8	स्कंदयुगे	श्रेष्टम्		कंग	कृत्तिका
8	पद्मान्	मरएाम्	年	to	उन्भाद्रपदा
8	पूर्व	कीर्तिवर्द्धनम्	छत्र धृतिः		•
2	भद्रासने	भीतिम्	यो	رفا	श्रवएा
8	चामरयोः	हिनम्		मं	मूलं
8	पत्रकरणे	मरएाम्	गहनक्षत्र	भं-	स्वातिः
3	मोठो	सार्वभीमताम्		节	पू.फाल्सुनी

उभयचकराद्वराद्वी श्रभिषेके महाराजः स्यात् श्रथ तत्का-लाभिषेक माह तपोधनाराधित राज्यलब्धी तत्काल मार्या स्त्वभिषेक मृत्युः स्ववंशराज्येन्यविभाइतेवा राज्यावसाने नर-देवतायाः सूर्यव्यतिरिक्तेः पंचिमरुचेनीच कुलजोपिराजा तस्याप्यभिषेकादिर्नजन्मतोभिषिक्तत्वात् हारितः छत्रमंड-लेभगु शिंस्वीकरोति सत्याचार्यादयस्तु सिंहासने भगु द्विं कथयंति वत्सः पताका द्युद्धो स्वीकरोति त्र्यपरे चामरे भद्युद्धिं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

स्वीकुर्वति एतदग्न्याधाने गजपत्यादि पर्यायेदिशिनं विशिष्ट रेभ्यात्रिपरादारादिभिरातपत्रचकभशुद्रोस्वीकृतं॥ त्र्ययस-भारचनामाह ॥ शुभवासर तिथि भोदयेषु गोचर शुद्धी धनुरान कारान्यस्तरपासनोदरां विद्ध्यात्॥ अथसभाप्रवेशमाह॥ सध्वजं गजेंद्रमग्ने कृत्वा तुरंगान्सा दिनो रथान्हारपारानमंत्रिए-श्चपुरोहितोक्त समये राजयोगयुतेल ने प्रविशेत् गए।शादिपू-जनपूर्वकं भद्रासनादिरोहणं कुर्यात् शिल्पवर्गं पुरोधसंचगो-भूहिरएयादिभिः संतोषयेत्॥ श्रयदामबंधन मुहूर्तः॥ चृपाभि-षेकोक्तदिने गृहनगर ग्रामादिषु॥ त्र्राथपर मंडपमुः॥ उ.३ रो. मृ रे चि ऽनु श्र ध एषु भेषु चं ब जी श्र वासरे रिकार-हिततिथो। त्र्यथितानादिबंधन मुहूर्तः॥ शु-जी-वं र बा-सरे उर्धास्यभेः ग्रुभयुक्तस्थिरलग्ने कंटके ग्रुभयोगे रिका रहिततियो कुयोगराहित्ये॥ त्र्ययसेनारचनमुः॥ स्वा भन्ऽऽ श्ले ध रे ह उनु पु उ ३ रो एषु भेषु जया ३। =। १३ तिथिषु र भी वारयोः स्थिरलग्ने षष्ठेपापयुते ऋष्ट्रमशुद्धलग्ने॥ ऋष युवराजाभिषेकस्तु ॥ राजाभिषेकवत् ॥ त्र्यथराज्ञां चामरछ-त्रदोलासिहासनादिधारएमु ॥ रो उ ३ त्रानु चि मृ रे ५ भि ति-ऽश्वि-ह- ज्ये-श्र-एषु भेषु ज्यानंदातिथ्योः शुभवासरल-ग्नेदरामाष्ट्रमहाद्वे इतिराज्याभिषेकः॥१०॥ त्र्राथयात्रामु ११ स्य-देशादितरत्रगमनं ग्रामांतरगमनं गेहाद्गेहांतरगमनं वा यात्रा त्र्यस्यांचराज्ञः प्रतिराकादिको दोषः यतोव सिष्ठः प्रतिराक

प्रतिबुधं प्रत्यंगारकमेवच अपिशकसमोराजाहतसेन्योनिवर्त्त-ते नृएांतुसाधारएगे दोषः यनु प्रतिशुकादिदोषोयं प्रथमेग-मने नृएग राङ्गा विजययात्रायां प्रतिशुकं च दुष्यतीतिवचसा राङ्गादोषाभावः तन्न्छम् विजययात्रेत्यस्य विजयदशम्यामार ध्य यात्रायामित्यर्थः नदारब्धायां प्रतिशुकादिदोषो भवत्येव पू-वीकिगोत्राएगं तथा रेवत्यादि मृगांत भेषुचंद्रेचदोषोन यात्रा मुहू-र्तंतुज्ञातजन्मनामेवनृएगं अज्ञातजन्मनांतुप्रश्वराकुनादिभिः गर्गः सदशायां शुभायात्रा स्त्रष्टवर्गे शुभेसमा न्यूनातत्काल लग्नादी तिथ्यादावधमामता॥जननराशितनूयदिलग्नगीतद धिपोयिदिवाततएववा। त्रिरिपुरवायगृहंयदिचोदयो विजयएव भवेद्दसुधापतेः रिपुजन्मलग्न भमथाधिषो तयोस्ततएव वी पचयस ३।६।१०।११ द्यचेद्भवेत् हिवुके खुने थशुभवर्गक स्तनीयदिमस्तकोदयग्रहंतदाजयः स्वजन्मभात् १।३।५।७ तारकानेष्टा ॥ त्र्राथयात्रा भेदाः॥ लघु १ मध्य २ दीर्घ ३ हादश योजनांतं लघु १ पंचिवंशितयोजनांतं मध्या २ ऋतः परंदी-र्घा तथायुद्धयात्रा १ तीर्थयात्रा २ लाभयात्रा ३ श्रययात्रास-मयः सर्वासुयात्रासु शुक्रास्ते नगंतव्य म् तथा जन्मेदो जन्मद-बोबोस्तंगते पिनगंतव्यं तीर्थयात्रासु गुरुशुक्रयोरस्तकाली वर्ज्यः सिंहगो गुरुश्च नीचगोपिवर्ज्यः नतीर्थकामः सितपा-णिजायुधे नुजो शिद्यो हुद्ध घने चनी चगे नरोमराच्ये गमनं प्र-कारयेहिनेवकं अस्थल गोतमा गयाः तिथोचतुर्ध्यामथ पंच-CC-0-Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्नसिंधुः

	यात्राम	गसाः		ऋतुफलम्					
मे	सिं	ध	रवी	श्रेष्ठा	वर्षा	दारन्	विाशिर्	वसंतः	
मि क	इ. तुः	कुं मी	रवी	मध्या	निंद्या	गुभा	शुभा	गुभा'	
कर्क	द श्चिक	मीन	रवी	ऽ धः	हिमा	निषि	यीष्म	निषि	

यात्रा भान्याह

ऋिष	पु.	ऽनुः	मृ.	ति	रेः	ह.	श्र	धः	गुभा
रोः	3-3	पू.३	ज्ये.	मू.	दा∙	0	0	. 0	मध्या
भ	कृ.	श्रा•	sश्ले	मः	चि	स्वा	विः	. 0	निंद्या
श्रः	हः	मृ	पुष्य	0	0	0	0	सर्वदा	गुभा
पू. ३	कृ	मः	भ∙	स्वाः	वि∙	ज्येः	८श्ले.	चि	त्र्याबस्यके
१६	28	55	e	88	28	38	88	80	त्याज्यघि

तिथयः

1	र्क	a	3	ч	w.	२०	88	23	उभयप
	वितं भगोदं भितपत्म्रयातु	य सुंधरात्त्राभवती	श्रयगिमं गमनतोपि	अनेक विधसोरम्यफलं	अभीष्टफलभूमिफलं	न्यभिष्रेतमभिष्रकुर्यात्	विविध सोख्यसमीहि- ताय-	केशफसनु र दि:	फलानि

दर्यां षष्ट्यां नवस्या मुपया तिया तां दात्री विश्वां या ति दात्ने सं सिक्त मही तलो पि यो द्वाद द्वीं प्राप्य चतुर्द द्वीं वा मितं प्रयाणे कुरुते ष्टमीं वासना दामायात् य चिरे ए। राजा राजानुमा मात्य विलो मचेष्टः बहस्पतिः सर्वाः स्यु स्तिथयः श्रेष्टाः द्युक्ते त्वाद्य द्वयं विना कृष्टमे प्यंत्यत्रयं चेव पष्टीं रिक्तां परित्यजेत्

नारदः षष्ट्यष्टमी द्वादशीषु रिकामापूर्णिमासुच यात्राशु-कूप्रतिपदि निधनायाधनायच ॥ त्र्यथमासेषु विशेषः॥ चंद्र सूर्ययोः समायनत्वे सर्वदिक्षु गमः शुभो दिवा रात्रीच

	वारफलम्										
1	सू	चं	मं∙	बु	ह-	गु∙	इा:	वारा:			
	हानि	बल्स्य	रोगं	सीख्यं	श्रियम्	भोग	सेन्यना	फलानि			

दिक्दा लंसमुदायेन

र्फ		पूर्व		न्या-
	बु-रा-	प्रातः चं दाः ज्ये	चं जी	
3.	त्र्प्रद्वरात्रे मं.बु. उ.भाः		मध्यान्हे जी॰ पूभा•	द-
	बु सू	संध्यायां सूर शुर रोर	जी सु.	
वायः		पश्चिम		मेक्र.

त्रत्रोत्तरस्यां पूर्वस्यात्रांतर्भावः दक्षिण्स्यां पश्चिमाया त्रत्रंतर्भावः भिन्नायनत्वे दिवारिव दिद्यां रात्रो चंद्रदिद्यां चातुर्मास्ये फाल्गुन गुक्लपक्षे च बह द्यात्रा निषिद्धा तथा सूर्यभोमदानिभि विषमेस्तथोपरागदृषितायनेच समुद्र यात्राबह द्यात्राचन तथा दिस्वभाव राशिगसूर्ये बह द्या-त्रान तथा २।५।८ गते सूर्ये नोयात्रान तथा भाद्रपदे ब हन्मध्ययात्रेन त्र्यास्थिने तीर्थयात्रान

CC-0 Kashmir Research Institute Digitized by eGangotr

मुहूर्तसिंधुः

							983			10	
	श्रथ	वारक	ात्र				वारप	ादाः			
chus.	B	वा	न्या	શુ	<u>\$</u> ,	बु	ष्टू-	भौ	ऋाः	चं.	
उ. सूः	वार	रका :	जीः	द	र जी	ř-	बारष	गरा	सू- द		
वा चं	प	• मं•	ने इं	3 -	वा इ	J.	प-	श्च-	नैर्ऋत	थ	
चं				तिथि	पाइ	T					
0	पू-युध						क्षाह्याः		श्रा		
कृष्ट्र उ. ४।८।१२ मृत्य		द्रवासः	सि शहाश श्वेत	से द	. ह्। ९।		तिथि	पाश	२३।२	₹.	
0	्रपीत् .					वा· १२। २८।			नेऋ		
7	योगि				तिथिकालादि						
ई चामुं	पू.	-त्र्य	Γ- <u>μ</u> ιτα		1		षू.				
c 30	ब्राम्ह		मारी । ११	० ७। ८। १५। १६					0		
उ. इव श २।१०	योगि नी-		गही 3 ३ ट	. श्री १ । १८ २ ५	१७ ।२६	निर्धि र्	धेकाला दच-	18	राह्य । १३ ४ । २१ । २९ । ३	1	
चंडिका बा-७	चंडिका इंदाणी वेष्णवी					318	११ १२ ११ २५		•		
, ,		न्य	थैकस्मि	न्दिन्	पे यो	गिनी	भोगः				
र्श्व.	वा	द.	र्पक्ष	प॰		याः	.2.	ने.	दिः	शः	
34	30	. ४५	१ ५	१ ५ ५	THE RESERVE OF THE PARTY OF THE	30	वस	مر ه	घट	यः	
The second secon				CONTRACTOR OF THE PARTY.				E 0			

श्रथ पात्राकाल घातादीनांग शितमुच्यते ॥ गतचंद्रदिनेचतुः

स्थिते खयमाञ्यंग ११ १ ६ युने हते गर्जेः ८ स्वदिशित्य-जपाश घातके भिमुखेकाल निपातके गमिन् अवगतचांद्रदि-नेचतुः स्थापिते कमात् । १।६ युने ऋष्टरोषिने रोषांकस-मदिशिकमात्पाशाधातकारुनिपातनानिभवंति व्यथयोगि-नी विचारः तिथयः संमुखवामगानदास्ताः तथादक्षेष्ट्रियो-गिनी राहु युक्ता यस्येको पिशत्रुलक्षां निहंति कार्य सिद्धोच योगिनीसंमुखाद्यते गमेयुद्देच मृत्युदा त्र्यशुभादक्षिएोभा-गेवामे पृष्ठेशुभप्रभा त्र्यत्रैकस्याएवयोगिन्याः कार्यविशे-षेएा विरोध परिहारः नाहदावाक्यसमुदायेन समरसारीय वाक्यं यामल मूलं नरपति मूलं वानत्रच जयलक्ष्म्यां युद्धया-त्रायांवामेऽ शुभाद क्षेशुभा फलार्थियात्रायांवामे शुभाद क्षे ऽशुभा शकुनइव त्र्यतएव ज्योतिर्निबंधेपि रिपोर्जियार्थि नां यानेयोगिनी दक्षिएो द्युभा व्यवहारा थिनां याने वामेश स्ता समीरिता नीक्साधारासिहस्ताच युद्धेद क्षिएागाद्य-भा प्रंचेदंनमनोरमं एवंच यात्राद्वेविध्यप्रसंगः चंद्रा-दीनामिप युद्धयात्रायां वेलक्षएयं वक्तु मुचितं नहिचताह-शोपलं भः ऋतोन्यथा समाधिः यामिले राहु युक्तायदाद-क्षिएगाशुभा राहुयुतानचेत्तदान निर्वलत्वात् यतउक्तं योगिनी राह्युकाचे द्देशस्याच्छुभदायिका वियुताराहु-ए। सातु वामेपि शुभदायिका परंमन्मते विकल्पएवस-मंजसोनचिषय विभागोनिर्मूलत्वात्कल्पना मूलक

भुहूर्तसिंधुः

त्वेतु दोषांतरापत्रेरसक्यपरिहार्य्यत्वात् स्रथदिवारात्रिविभागोयात्रायाः गुए।पिति तथाविष्टिधि हमे गमनंदिवा प्रशंसति गुए।पितिधि हमे रात्रो तिथोच गुए।विति
मुनयः स्नात्वागछे दिधोविर स्रस्नात्वाबुध गुरुक्योः
स्त्रभुक्त्वा गुरुभानुभ्यां भुक्ता भीमशनेश्वरे स्रथचंद्रफलम् सम्मुखे स्रथलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः प्रष्ठतो मरएं चेव वामे चंद्रे धनक्षयः सर्वे दोषालयं यांति
पूर्णे चंद्रे हिसंमुखे

	घ	टिका	्मक-	वंद्रवास	ग च क्र	र		
पूर	दः	पः	उ	पूः	दः	पः	3.	दिशि
810	१५	२१	१६	30	\$8	20	88	घट्य:
दिव	।। रात्रे	-चराह	चकं		लाला	टेका		केचिद्रष्ट
day	पू	त्र	II-	S.	₹.	गु	and the second second second second	दिक्षेवेद
१६	,	8	28	£.		/	₹.	माहुः चतु
₹. २८	यामा राहु	र्ध १२	दः	बु	प्रागासा	3		दिक्षुवह
बा • ८	२०		(ने	चं री	्रा∙	राः	रा	सम्मत मिद्मू

श्रय लालाटिका॥ लालाटिकाः पूर्व दिशोऽशुभाः स्यु-र्लग्ने रवीरिष्फ भवे भृगुश्य खेस्यक् नवाष्टा गुरगार्कि

रंगधीदुः सुरवेङ्गस्त्रिधने सुरेज्यः उषप्रशस्तते गर्गः शकुनंच वृहस्पतिः श्रंगिरामनउत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः उषः का-लो विनापूर्वो गोधू लिः पश्चिमां विनोत्तरा निशीथः सन् या-नेयाम्यां विनाभिजित् अथ सर्वत्र घटिकात्मकचारे चंद्रयो-गिनीराह्यात्मके स्पष्टानाड्यो बोध्याः अत्रयात्रालमं शीर्षी-दयेयातुरभीष्टिसिद्धि ५। ६। ७। ८। ३ कुंभो मीनो शीर्षीदय गायपिनिंद्यो यातव्यकाष्टा मुखिमष्ट लयं जन्मोदये सिद्धि करं प्रयाएं नजन्मराशेरुदये उभाभ्यां मुपचये जन्मलभ-स्थरविराशि दितीयराशी वेशिसं झकेच शुभम् दिवादिन-वलेपाद्याणाट १११ ११२ रात्री रात्रिवले २ ११ । ९। ४।३।१० गंतव्यंचरेशुभम् व्यंगेमध्यम्स्थिरेधमं येचभावालप्रेशुः भसंयुतास्ते याह्या ४।८।२ लमानिश्रेष्ठानि न स्वराशिवस्य लमेयात्रा त्राथा त्रेवरक्षक वर्धक ताननायक कारक उ-पनायक सङ्गाग्रहाणाम् जन्मसूर्याहितीयगः शुभखेटयु तो राशियात्रायां लभगश्चे द्रक्षकोभवति जन्मलमाद्दामगः शुभयुतोवर्धकोभवति जन्मचंद्रादुपचयगोराधिः शुभयुत स्तान् संज्ञः जन्मन्युपचय संस्थानायक संज्ञा ग्रहाभावाश्व संज्ञिनोबोध्याः जन्मलयस्थः सुखस्थः दशमस्थ एक दश स्थथ परस्परं कारक संज्ञकः उंगसह न्खगृहां हो कारः भ्र-स्माद्दशमगः कारक संझकः स्वोचित्रिको ए। संस्थानायकसं ज्ञाभाग्यगता उपनायकसंज्ञा रक्षकावर्धका स्ययेच जन्मनि

नायकाः तेषां लमेषुनिः शंकं यात्रालमेनियोजयेत् स्रश्रास्तोषि भवेच्छस्तः शस्तोषि विफलायते ग्रहोराशिश्वलगस्थोरक्षका-दिप्रभेदतः दिगिश्वरो ललाटस्थोयदिवादिग्वलान्वितः वधवं ध प्रदोयातुः केन्द्रगस्कजयार्थदः दिगीशाः सूर्यश्रुकारराह्वा किं दुजसूरयः दिगीश्वरे ललाटस्थेयातुर्न पुनरागमः लला-टिप्रिभयंकरोतिदिनक्रत्कोद्राक्षयं लोहितः शत्रू एगिवजयः द्राग्नां कतनयः सेनाविमर्दगुरुः मृत्कं भास्करनंदनो नरपते व्याधिं तथा विप्रराद एतान्येवसमस्त रवेचरफला-येकः सि तोयलातिरिपोवरि विलग्नगः सोम्योपिनश्रभदः मित्रवारे पापिश्रभदः साम्नोजीवसिः

तीनाथीदंडस्यकुजभास्करी चंद्रोदानस्यभेदस्य राहुकेनु बुधार्कजाः यांतिसामादयः सिद्धिं केन्द्रोपचयसंस्थितेः स्वनाथेर्वायसंग्रुक्तीस्त द्वारेर्वातदंशकेः विंद्रोपकाः शस्ताः क्रूराः २।११।६।१० सोम्याः २ ११।१० चंद्रः ६।१।१२ त्यक्ता ७ शुक्रोनेष्टः १० शनिर्नेष्टः यात्रांगेशो ६।६।७।१२ द्वष्टीन श्रथप्रत्येकभावफलं

				रब्या	दीना	म्			
		₹.	- मृं	मं:	ब-	बृ.	श्र.	क्य∙	रा-के-
	9	संतापं	कलहं	सर्पभीः	क्तरवं	संपत्तिः	विलासं	बंधवधे	ए
	ર	श्र्यर्थना श	धनं	सेन्यभेदं	धनदः	धनं	धनं	धनहानि	ए
-	3 .	भूमिदः	धनं	धनादि	लाभः	श्रमं	स्करवं	रियुनाश	ए
	8	बंधुद्देषः	बंधुलाभं	<u> यंधु हानि</u>	सुखं	राज्यसन्मा	श्रियं	विनाशय	ए
	٩	दुर्मितं	ऋर्थप्रदः	शञ्जुपीडा	पुत्रादि	ईिमतं	मानं	धननाश	ए
	હ	वांछितं	शबुदः		<u> बा</u> त्रुभीतिः	ग्रञ्जवस्य	शत्रुवश्य	शत्रुनाश	बीघ्रफ ली
	9	स्बीविरोः	धन भूमि लाभदः	अर्थक्षयं	वरांगना	कीर्ति	राज्यं हातिः	उत्साह भंगः	ए
1	e .	नानारोगं	शोकदः	मृत्युदः	श्रीभामं	प्राणदा	ईप्सितं	शस्त्रभी-	ए
	9	धर्महा धनदः	श्री:	धर्महत्	धर्म	धर्म	कामं	धर्मनाशं	ए
	90	सन्मानं	धनहा	शस्तः	ईिपतं	कीर्ति	मभूत धर्ने	कर्मनाशं	शुभदी
	99	लाभं	ऐश्वर्य	त्राभः	साभः	भियं	धनं	लाभं	एः
	92	ध्ययं	भयं	व्रणकृत्		सुखदुः-	अभीष्टं	श्रमर्थदः	ए
			कृ राश्चेत्व ए दः		खुमोधन हा				

मुहूर्तसिंधुः

श्रथात्रविदोषः अपूर्णः शोकदश्चंद्रोलमे क्षीणस्तथारिपी कर्कि गोज ४।२।१ स्थितः षष्टो निजदुष्टफलापहः सूर्य्यो राजभयंक रोति शशिना युक्तोर्थ हानि भृगुः स्थान अंशकरो गुरुः शशिसु तः सतापदोषमहत् मृत्यु सूर्यसुतो ददातिनियतं शस्त्रात्तथाभू सुत तस्माच्यद्रयुतिविहायमतिमान्यात्रां प्रकुयोत्सदा त्रिकमी योपगोराहु प्रयाणे सत्फलप्रदः केतुयातव्यकाष्टायां सन्ततामे शुचप्रदः ऋथ प्रत्येकफलम् दिन कृदिवसे तथां वाके यात्रालम गतेथवारवी सतापयतिस्मरातुरं वेश्येवार्य विवार्जितनरम् उ-दये शारीनोंशके न्हिंचाभवति गतोन चिरण दुर्मनाः प्रमदामिव यातयोचना रत्यर्थ समग्राप्य कर्कशाम् भीमेदयें शेह निवासया-त्रा करोतिवधं वधमर्थनाशं संसेविनः पापपराङ् मुखेन मनोभ-वानैनपरागनेव- बुधस्यलभांशक वासरेषु यात्रानरं प्रीणयति प्रकाम भावानुरक्ता प्रवरागनेव विदग्धचेष्टामदनाभितप्ता-गु-रोबिलमा शदिनेषुयात्रा हितानुबंधेप्सित कामदाच जायेवभ-का मनसोनुकूला कलाभिवृध्येरितदाहिताच यात्राभुगोरंदादि नोदयेषु प्री एगितकर्मे विविधे यियासुं विलासिनी कामवसेनयान भोगेरनेकेमेदनातुरेव - द्युलग्रभागेषु शनेश्वयात्रा प्राएछिदा दीन्त्रकरोतिदोषान् ग्रन्यप्रसक्ता वनितेवमोहानिषेवितामन्मथ मोहितेन - अथजीवमृतपक्षी राहुयुतंभं कर्तरी संज्ञं तद्यिम१३ त्रयोदशभानि जीवपक्षः सूर्यमृतजीवपक्षे चंद्रेजीवपक्षभेयात्रा शुभा सूर्यचंद्रोयाः कीलम्भने लेकिस्मिश्चारं सूर्योकीवपस चन्द्रे

मृतपक्षे यात्रानशुभा सूर्व्यचन्द्रोद्वाविषमृतपक्षगोतदायात्राउति क्षयदा यः स्थितः सस्थाईतस्य सूर्य्योधीदाः यः स्थानादन्यत्रया-ति सयायीतत्स्यामीचन्द्रः जीवपक्षे तस्यतस्यजयः यथाराहु रधु नानुराधायां तद्भंकर्तरीज्येष्टातः भरएयंतं जीवपक्षः विद्याषातो भानिभ्य त्रयोदशमृतपक्षः कृतिकाभ्य भंग्रस्तं त्र्यत्रोभोजीवपक्षे संधिकरी मृते अभयो हानिदा विति नरपती विस्तरः

3	दाह	ते	श्रकुलचक्रम्	कुलचक्रम्
म् विं स्वां	শ্ব-	की में में के	स्वा-भ-उश्ले धं-	पू ३ अभि ति म मृ
13 50 H.		3- 3भि श्र-	रे- ह-उनु-पू- उ-३	श्र. कु.वि. ज्ये.चि.
3. 3.		भ । ज्ञाः पूर	रो १। ३। ५। ७। ९। ११ १३ ।१५ ति र चे इ रा एषु युद्धे	नक्षः मं शुः या सः ४५० १२ १४ तिथः
श्री: मृः रो:	£.	रे. •श्र- भ-	यायीजयी भवतिः	एषु युद्धारं भे स्थायीजयी स्यात्

कुलाकुलम् मूः इाः स्था रो बुधे २। ६। १० तिथयः एषु युद्धारंभेसंधिः स्थातृ कुलाकुलादिकं जीवपक्षमृतपक्षीत्र्यवदययोः धयोर्धिचार्थ्यं तथाचकूरयात्रायामवश्यं वोध्यंशुभायांनात्यावश्यकतायतः कुलाकुलं वीक्ष्यं योद्धे कर्माणि सर्वदा राहुभक्तादिकं चापि वीक्ष्यंतत्री-व सर्वथा शुभायां नाति योज्यंहि योज्यंचोभय पक्षयोः कूरायात्रारा-हुवलेषडं गे कालचक्रके चंद्रकाला नलोवापी सूर्य्यकाला नलेतथा

मुहूर्तसिंधुः

मृगया यामपितथा बोध्यं बुद्धिमतासदा कुलाकुलादिषु राहु योगिन्योश्वंद्रस्यचबलं चापिविचार्यं निहकुलाकुलमेबाव लंब्येतरसामग्रीचोपेक्ष्येतिः

•	उत्तर-	अर्थाम	मिश्र	ध-ला	हिं स्ट्र	桩	द्र-प्रा	्टं इं	लाम	IĖ	धः ला	Ho.	वंधक
\$175.s	पश्चिम	प्रीतिः त्र	10	tar	मः	धन	바	लाभ	Tree se	ţ <u>i</u>	मं ज	F lix	神
	दक्षिण	क्रिक्	de	कें कें	सीरव	Tr.	लाभ	केलक	सीरव	अम	知時	ख्रम	मीरब्ब
	व वं	सीख्य	भूत्र	म त	साभ	लाभ	श्रीति	लाम	केख	सीरव	क्र	मृत्के	Ho
	苗	92	6	ď	ar	30	5	ø	9	V	or	06	66
e y	मि	44	92	0	4	ex	>0	5	3	9	v	•	• 6
थयः	対	90	66	92	6	d	⁶ C	30	5	w	9	v	0
दिति	븄	o	99	66	92	6	4	a	20	5	3	9	V
मासा	菜	U	or	90	11	द	6	d	er	30	5	مح	9
प्रीवर	刘	9	V	o	%	65	92	6	ď	er .	20	5	(d)
	核	a	9	b	o.	90	99	92	6	ď	er	00	5
	do	5	or .	,	v	o	06	66	92	0	4	6	30
	神	30	5	3	9	V	o	06	66	92	6	ď	en'
	宦	ex	30	5	3	9	٧	o	06	66	92	6	ď
7114	苗	d	ex	30	5	w	9	v	0.	05	66	13	6
	卡	6	ď	co.	20	5	ω _χ	9	U	or	06	66	92

	धम	र्धिय	नमा	दि च	120	₹·		
-य-	नि-	डक्तं.	धः	इा-	वि-	ऽजुं.	धर्मो	
भ-	प्रभा	ज्ये-	श्चर	पूर	म∙	स्वा-	न्त्रथे	1
\$	श्रा-	उभा-	चि-	मू.	ड़िम-	प्रभा•	कामे	
रो-	घू पा-	뒫.	हे-	उषा-	उभा-	F.	मोक्षे	

धर्मगेमास्करे वित्तमोक्षे शद्यी वित्तगे धर्ममोक्षार्थ गः द्रास्यते कामगे धर्ममो-कार्थगः द्रोभने मोक्षगे-केवलं धर्मगः प्रोच्यते श्र न्यंदाः वारेद्रामें द्यां विनि

वेक्यपक्षेत्पदक्षि एास्थानगता क्रमेएा- यामा र्घभोगः ज्ञानिर स्तियस्यांतदानयायात्ककुभंतदाताम् अथसर्वाकयोगे ति थि भः वार नामाक्षरयोगे त्रिस्थेकमात् २-३-४ हि जिच-तुर्भिगुंशितेकमात् ६-७- द रससप्ताष्टभाजिते कमात् · - · - ॰ त्यादिश्वन्ये हानि मध्यश्वन्ये भयम् ऋंत्यश्वन्ये मृत्युः स्थानत्रयेश्वन्ययोगे निश्चितं मृत्युः स्थानत्रयेंक युजिजयः न्य त्रतिथयः शुक्रमतिपत्तः त्र्यपरे तिथिवारभयोगेक्यं त्रिषुस्थाने-षु क्रमात् ७- द - ३ सप्ताष्टगुण्डोषितं स्थानत्रयेंकयोगे स-र्योकः श्रथमहाडलाभ्रमो - सूर्य्यभादिनभिनितः असतन ष्टा २- ७ शेषे महाडलः ३- ५ शेषेऽभ्रमः उभाविपनिंद्यो - श्र-भ्रमस्कयात्रायामेवनिषिद्धः महाडलस्कयात्रायंत्र हलप्रवाह समरे चीर्य्यच संधीतथा कूपारामतडागबंधनविधी त्याज्यं सदै वाडलम् यत्नानात्रशभेषु मंगलिधो दोषोन तस्य कचित् अ थहिवरं दिनभंरिबभाद्गएयं शुक्कादितिथ्यावारेण्चयुनं नवातं रोषंचेद्विरं गमने श्रेष्ठम् ऋथघबाडकः रिवभाद्निभंगए। यि-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ला भगुणंति थियुतंच ७ दोषितं ३ दोषे घवाडकं यात्रायां भू भदम् श्राह्मे शनी तुगमनं बहु विघ्नदंस्यात्-

श्रथ विष्ट	नकाल-	वकम्
र्द. बु.	यू-	श्रार इ-
3-		a .
वा मं राः	प-	कं शुः नैः

योबारस्तस्यां विदिक्त मुखंत-रय वर्ज्ययेत्यात्रायां श्रास्य मुखं पृष्टे कला यात्रायां ज-

केचिद्रात्रिशेष
४ घटीभ्यदिना- र्धयामां तं पूर्वाज्व
लिताः तत्र त्रिष
पि यात्रा न शुभ-
दा

_				71				==		-
		दग्ध	दि	दिइ	T:		3	दय	ात्.	,
		30	१५	220	30	व्यं व	84	40	40	नाड्या
3	इष्टहर	मू.	_{श्र्या} .	दः	र्न	पं	वा∙	3.	401	ज्वलीः
-	भ्रमम्	श्र्या-	दं	4.	प	बा	3.	Así.	ब्र .	धूमित
Cornell Or	<i>न्स्र</i> भंग	400	पूर	श्र् मा	कं	ने.	पः	बा-	3.	दग्ध-

परिघदडः

न्यन्यच्छ्र-हाविपमतिमतापारि-घोडलंघनीयः त्र्यावस्यके शुला त भावे ननुबलेच परिघः सुलंघ्योभवति योगिनी राह्वीरिप शुद्धिश्चेत्तदाः

पूर्व पश्चिम यो : परिधः दक्षिणोत्तर योश्व-18 . F. E. F. F. S. State 25.

1

8.1			*	मथ	राइ	ीन	घा	तच	क्रम				
•	मे	बृ.	मि	कः	सिं.	4.	तु-	ર્ચે.	धः	म	₹.	मी-	•
₹-	8	U	92	ч	8	٩	Eq	90	9	99	2	3	एं.
चं∙	9	4	. 9	2	વ	90	3	9	8	6	99	92	-यं-
भी	4	8	9	e	90	2	9	99	C	92	4	8	भी-
वे.	2	હ્ય	90	3	O	99	8	U	4	9	92	9	बु
₫.	eq	3	2	v	99	9	. 3	92	9	9	8	S	ā.
राः	.3	9	99	8	6	92	x	8	હ્ય	90	9	2	राः
श-	9	99	3	6	92	R	8	9	90	2	प	CX	श-
राः	6	92	8	9	9	8	90	3	90	3	ex	v	रा-
事.	.6	99	3	90	a	ख	. 99	3	99	8	4	દ્ય	कं
मा	का	मार्गः	योः	मा	फा-	भें	बें.	ज्ये.	33	भा	भा	-श्रा•	मा
ति		र्ब.	भ	जः	यू.	ਮ-	रि-	नं-	भे	रि	जि	पू.	ती.
नं		₹.	स्याः	उनुः	म .	अ	द्रा	₹.	भ-	रो-	·श्रा·	ह	न
यो	ह-	वि-	रवा	सा	फ -	सा	9.	शु.	सा	व	ध्र	ध्या.	योः
वाः	शः	र्ब.	यं	<u>a</u> .	श-	चं∙	Į.	श-	शु.	भो-	₹₩.	शु-	वा-

श्रथास्यविचारः

युद्धेविवाहेच कुमारियूजने यानेऋ ऐरिश्ञानिषेवनेच विचिंतयेहा-तफलंमनस्वी विवाहचूडादिशुभेनचिंतयेत् त्र्यथपरिघदोषिनर्मु क्तभानि मेत्रार्क पुष्पाश्चिनिभैर्निरुक्ता यात्राशुमा सर्वदिश्चासुपं-हितैः एवं विलयेघिप गंतव्यकाष्टो-मुखेजयः दक्षिणस्थेमध्यम्-वामस्थे हानिः पृष्ठस्थमहाभीतिः वक्रीकेन्द्रगतः त्र्यस्यवर्गचिन षिद्मम् जन्मराशि तनुभ्यामष्टमे वास्वारिभाद्रि गुभे तद्धिपालम् गाश्चेत्तदारिष्ट दायात्रा बोध्या

मुहूर्तसिंधुः

श्रथस्पष्टविदिश्विपत्रद-सिणगतासु यथामेयीं प्रा गुक्तवार भलमेयथायाम्ये निर्ऋतिदिशमेवं मन्यास्क च गच्छेत् शुभम्

	दिग्लग	गानि-		
पू-	द.	9.	3.	दि.
9	च् ६५१०	3	८१२	शुभ
थ्व०	299	8 692	49	मध्यः
שחת	ص کی	300	99	भयं.
3 99	يه اعز	950	3	महाभय

	श्रथयात्रालप्ने यो गाः											
₹.	चं∙	孙.	વું	वृं	श्रुः	द्या∙	श.	ग्रहाः				
a	do	ध	R	٩	. 9	Q	વ્ય	वशीकरः				
99	0	હ્ય	٥	٩	पृष्ठगता	a	3	जय योगः				
હ્ય	6	0	0	9	•	•	٥	जयकरः				
2199	2199	2199	2199	2199	2199	2199	2 199	जयकरः				
٩	و،	0	a	ď	વ	•	0	जयकरः				
2	. 0		2	0	9	•	0	नयकरः				
9	9	•	0	0	•	ي م	ઘ	वशीकरः				
90	•	9	99	۰	99	٩	•	वद्यीकरः				
0	•	82,99	वली .	वली	वली	बली	3 64 99	भिजयदः				
٩	v	ع	R	٩	ß	3	٥	वजीकरः				
99	હ	a	90	9	90	3	ध्	वि नयं				
99	8	99	v	9	٧	99	ey	राजाधिरात				

मुहूर्नसिधुः

	Paralizas 1			•ल	मयोग	गाः		e E Year	
1203	₹-	चं-	भी.	a .	हु.	श्रु-	इा-	रा-	ग्रहाः
	0	ح	0	0	9	E4:	•	2	विजयः
	٥.	9	0	8	0	8	. 0	0	विजयः
	6	8	0	314	0	3	. 0	•	विजय:
	ex	0,	3	v	9	c .			विजयः
	99	9	3	90	9	90	3	eq	विजयः
	9	b	٠	9	9	v	0		विजय:
L	•	و	٥	Y	0	8	6	•	विजय:
	•	31 84	c	वली	कें द्रे		•	0	धनलाभः
1	99	U	3	90	٩	90	3	લ્ય	धनलाभः
1	e.	. •	ध्य	•	a	8	3	۰	धनलाभः
	मे पेप	•	मकरे१	•	कर्के १	0	वुले १	6	धनलाभः
	99	વ	99	२	9	2	99	99	धनलाभः
1	•	श्रापी	•	2	केंद्रे.	90	•	•	कार्यसिद्धिः
1	3	0;	ex	8	9	8	ex	•	धनलाभः
1	3	99	હ	0	٩	उनुकू.	•	0	सर्वार्थासे.
1	ex	•	3	•	4	-	•	0	सर्वसमृध्ये.
	0	90	0	0	कें.		0	•	जयमा
1	•	0	0		9	वर्गीनम	•	0	जयः
	0	6	0	8	गुरुह्थे	8	0	۰	विजयः
-	0	8		9		٠	•		जयः
1	•	و	9	v	•	v	0	. 0	विजयः
	9	٠.	•	2	0	0	0	a	विजयः
	3	8	E.	के.	कें.	कें.	₹.	₹.	महाजयः
03	e fice	. 0	3 64	•	0	0.	3 04	3 4	बल दः
	3	3,	0	0	0	9		0	जयदः

होर। प्रोक्ते राज्ञांयोगेर्ग तुः सिद्धिर्भूयोभूयात् योगैः सिद्धिर्भूपतीनां

सुधिण्ये वित्रा एगंस्याक्काकुने स्तस्करादे सन्मोहर्नेः प्राक्कतानामहोक्ता सर्वणां वेचित्तरु प्रश्नेश्रद्धा स्त्रथयोगादेयः केद्रित्रकोणस्थितितङ्गानियोगोधियोगः कथितेक्य ऐक्यात् क्षेमंच ज्ञश्रद्ध धजन्यहर्षः क्षेमारिबंधावित्राभएषु एकेनयोगः फलं क्षेमं
द्दाभ्यामधियोगः क्षेमोरिपूणां वधः त्रिभियोगाधियोगः क्षेमिर
प्रवधावित्राभानि स्त्रथविजयाद ज्ञाभी स्त्राश्वितादिद ज्ञामी विजयायाभूमिपाल गमने विज्ञयाय विष्कृधिष्ण्यसिहताय दिसास्या
द्रां छितार्थसिहता सुतरां स्यात् स्त्रप्रविज्ञयाख्यमुहूर्ने यात्रासचेकाद शो मुहूर्तः स्त्रथवाई षत्सं ध्या मितकां तः किंचि दुद्धिन्त नारकः
विज्ञयोनामकालोयं सर्वकार्यार्थं साधकः स्त्रथतिध्यादिषुनिषिदं
पुलभवले सित दोहदबलेन गच्छेत्

	तिथि दोहदं																		
-	9 2 3 8 4 64 0 5 9 90 99 92 93 98 94										94								
	11.45	यार्क पत्र.	नंडुलः	ध्यः	स्युक.	1 1 1 s	इबिब्य:	स्वर्णसर्वाः	श्रम्प.	श्रेनार	e) In columb		गोस्यः	यवान्त-	पायसः	युड.	V. P. C.	मधिर.	मुद्रांक-
									ाक्ष	नद	ोह	इं.							
3.	य	भ-	\$	रो	मृ	ग्र्या -	चु-	ति-	उथ्हे	म	म्र	3.	夏.	चि	स्वाः	विः	ऽनुः	ोरं	मृः
6	कल	र्निस:	भरवनः	गोद्धिः	मरवनः	ह्यतः	क्षेत्र.	मृगमा.	रू शर	पायसः	पषी हाः	संग	सहिचा-	धुर्गी:	ऋ युपमाः	तित्र सा	ग्रामुफ.	38 4	सारिका
	पू- उ. अ. ध. श. पू. उ. रे.																		
48.	वाब्	मां	सिं	हमां-	स्ब	ाराञ	भर	F .	अव	पिष्ट	मर्स	थान	ঝি	त्रान	दध्ये	ोदन		0	

	वारदोहदं-											
₹.	चं∙	भी	a -	बृ∙	यु .	श-,	म-					
घृत खंड	पायस	कांजी	नमदुग्धः	दिधिः	दुःधकः	तिलान	भक्ष.					
कुं कुं.	चंदन	मृदं-	यवान्	दधि	घृनं	तैलं	चंदनं					
तक्रं	चंदन	मृद्-	पुष्पं	दिधि	घृतं	स्बिह	दानं धा-					
<u> वृतं</u>	पय	युड़ं	तिलान्	दिध	ववान्	मारबान्	भक्ष्यं					
प्रियंवद	शय्यास्पृ	इारमधुः	हारधृक्	भरमधृ-	यष्टि भृः	कलही	कृत्यं-					
पाटली	श्वेती	रक्ती	हरिती	पीनी	चित्री	नीली	धार्व्यः					

		दिग्दं	ाहदं				था हनानि					
पू.	श्रा-	द.	并.	प-	वा-	उ∙	र्फ	दि.	र्ष.	द-	प.	उ-
ध्य	नडुल	भेग	संकुक	मत्स्य	गोधुम	तिस	पायस	मध्य	गजेन	रथेन	ऋथेन	नरेण
Is a Hilly	-0	10					7					

স	स्थितिर्ग	दे .	दिक्ष प्रस्थानदिनानि							
राजा	सामं	इतर	षू.	द :	प	3.	दिश	विदि		
90	6	५ ३	٠	y	3	ર	दिना	क्ष्वपि माद क्षिर		

स्थानिधिः सुमुहूर्ते गंधासतादि पूजित मुपबीत मायुधं क्षोद्रमामः लकं हृद्यं बाद्यारहिते देवायतनादिस्थले धनुः ५०० स्त्रथवा२००धः नुर्मितं १० धनुर्मितं गेहाद्वेहांतरे प्रस्थानं संप्रस्थितोयद्हमंदिरतः प्रयानो गंतव्यदिक्षुतदापप्रयतेनकार्यम् दुग्धं ६ दिनं क्षोरं ५ दिनं

मेथुनं ७ दिनत्याज्यं अत्यावस्यकेऽ राक्तीवा क्षीर कोधा रोदन मा स तेल गुड मेथुनानि यात्रादिवसे त्यजेत् रुत्वाच मेथुनंरात्री प्रभातेयोधिगच्छति नासोफलमवामीति छच्छे एगापि निवर्तते यावहुजतिचाधानं यावत्कार्ये निसध्यति यावहापि निक्तत ताबहर्जिहि मेथुनम् ऋतुकाले नदोषः श्रोत्विधेः प्राबल्यात् ऋ कालवृष्टाविपयात्रा निषेधः साच पोषादिमासचतुष्क भवा वृष्टिः नारदः अकाल जेषु नृपित विद्युद्गर्जित वृष्टिषु त्रिप्रकारे तथोत्पाने सप्तरात्रं तुनत्रजेत् गमने शांतिं कता सूर्येन्होर्दानंच अथगमनीय-धिः श्रथ श्रय वेणु वीणा दुंदुभिनिद्योपवर्धितोत्साहः ध्यज वा-मरातपन्नः सितांगरागांवरोष्णीषः संतर्ष्यविन्हं हिषषाद्विजाँ थ्य गो भू हिरण्यादिभिरावृतः सन् ज्येष्टान्नमस्कृत्य कलत्रमित्रं पु-त्रांश्च संतोष्य नृपः प्रयायात् नले घदेवं स्वदिगिश्वरंच थडासमे-तः सितमाल्य वरन्नः स्वरानुरूपंविनिधायपादं वादक्षिणचायत एवयायात्- उद्भृत्यप्रथमत एवदिक्षिणां ब्रिहात्रिं शत्पदमिनगत्य दिउययान आरोहेतिल घृत हेम ताम्यपात्रं दलादी गए। कव्याय च प्रशिच्छेत् देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वास्वगृहान्मुख्य कलत्रगृहा-द्वाप्राइय हिवधं विप्रानुमतः पत्रयन् शृष्यन्मंगलमेयात् मंगलानिच पू-ए कि भे ध्वजं छत्रं दी पं शंखंचचामरम् हिरएयं शरत्रमादित्य पान हुमैगलमष्टकम्- ऋथवारपरतेनस्वरमु-जी- इा-र-भी-दक्षः शुभः चंद्रशु रा वामः निर्गमेवामः शुभः प्रवेशेदक्षः शुभः या-थावरयके अभिनिदादी पूर्वा क्षेनोत्तरेमध्यान्हे पूर्वतः अपपरा-

हो याम्याम्=

	श्रथशकुनानि												
मोर	चाष	न्कुल	रज्जुबद्ध पर्म	मांस	सहचः	पुष्य	गुन्ना	कुंभ	छन्न	मृत्तिका	कन्या	रत	
उद्शिष	चेतोक्सा	Committee of the last of the l	The second second	दीमामि		THOUSAN MINES	धीतवा स	मत्स्य	धृत	सिंहा- सन	रीदनही नज्ञ व	पताका	
विप्राः २।३	ऋध	गज	फल	अन	दुग्ध	दधि	गीः	सर्षप	कमल	स्य <u>न्छ</u> बः	वेदया	वाद्य	
•	0	•	मधु	मेष	ऋष	गारोच	भारहा ज	विवि- का	वेदश ख.	मंगल श-	गीत	श्रंकुश	
		orth		-अप	थाप	राषु	ना	ने				The state of	
•	वंध्या रब्धी-	चर्म	तुष	श्रास्थि	सर्ध	लवण	श्रंगार		नपुंसक	विष्ठा	तेल	उन्मत्त	
चर्ची	•प्रीप-	शञ्च	जिटल	संन्या	वृश	कृष्टी	कुमार हीना	तेला भ्यंग	वि- कोश	0	पतित	श्रंगही न	
क्ष	श्चिर	स्त्री युष	किरत	स्यगेह	स्रोतुयु	क्षुन	काषायी		तक	गुड	यस्त्रा दिपत	पंक	
विध् गस्त्र	7	गृहक	महिष यु-		कपाह	रुई	٥	वमन	दक्षेग	कोध	गर्भव ती	मुंडित	
श्रार्द्र बास		श्रंध	The second second	रजस्ब	श्रम गोः	मूषक	श्का	c	0	٠	मधप	•	

मध्यरात्रे पश्चिमां नतस्यां गारको विष्टिर्न श्रानेश्वरजंभयं व्यती पातोन दुष्येत यस्या की दिक्षि ऐ। स्थितः पृष्ठतो वारविक्त वागच्छे हिक्ष ए। तो या न्य हो। पादा बुधे स्थान्त वधर ए। सुते समजी वे प्रदानि हो या न्येकाद शार्क शिशानि भृगुजे सार्ध चत्वारिपादाः तिस्मिन्काले मुहूर्तः सकल गुए। युतः सर्वकार्यार्थ सिही ना स्मिन्यं चांगशह ने चरवचर वलं भाषितं गर्ग मुख्येः कृत ४ तृः प्रभ मृति ७ तिथि १५ पक्ष १ हादश १२ हांगुलां नितृ प्रोक्ताः सिहा श्रायाः क्रम शोरव्यादिषु सर्विसिहिक री न्यपरेरिव २० चं १६ मं १५ बुः १४ जी १३ शः १२ शः १२ एतन्मितां गुला व्या १६ मं १५ बुः १४ जी १३ शः १२ शः १२ एतन्मितां गुला

निशंकुमूले छायागमने घरिके काभिजित् तत्र सर्वकार्यसिद्धिः जातः सन्रा जाव्यापारेचोत्तमासि हिः विवाहादिषुन भ्योप-ध्यादीनांचसिद्धिः श्रथशकुनापशकुनविचारः श्राद्येपशकु-ने स्थिता प्राणानेकादश वजेत् दितीयेषोडशपाएँ सतृती येनकचिहुजेत् अत्रपूर्वोक्तोदग्ध न्यलित धूमितादि विचारो पि इाकुने मुख्यः दम्धेषु दम्धं ज्वलिनं ज्वल सुफलं ज्वलिष्यत्यथ धूमितेषु शेषेषु शांतेषु सदानराएगांसिद्धां निकायीिए। सुखेनस-म्यक् कोकिला, पछी, पोतकी, सूकरी, तितिरी, हंसी, खंखंदरी, रवरशब्दवामेशुभाः नयुत्तारे अये पलायने गृहादिमवेशे सं-ग्रामे राजदर्शने विषरीतां शकुना शुभाः श्रम गोह सपे जाड् चूहा सूकर एषां यात्रासमये कीर्तनंस्वमुखे नान्यमुखेन वाकीर्त-न शुभम् नवा दर्शनश्रवणे वानरऋक्षाणां नामकीतन नशुभन म् दर्शनश्रवणीशुभी भवेदिडायां परिपूरितायां सर्वोपिवामः राकुनः प्रशस्तः स्यातिंगलायां परिपूरितायां सर्वोप्यसव्यः राकुनः प्रशस्तः अथाद्य राकुनम् भूषा शस्त्रयुताः समान म-नुजा गोःपयनाथेंगनायुक्तापूर्णघटेन शीतिकरणेश्वात्रहा चारी मृगः सोम्ये इास्त्रयुतानराः क्षितिसुते देवार्चिते ब्राह्मणा शुक्रे सुदिरिवालिका हयमृगा मदेचराः कीरवाः स्थाने वीर्घ्य यु-तार्कसीत किरणादीनां वदेदादिमं पश्चाद्झः सकु तात्प्रया-ए।समये भूपादिकानां नृएाम् अथा छ काफलम् क्षुतानि षिद्ध सर्वत्रगो क्षतं निधनपदम् वामे पृष्टे शुभम्तत्र दक्षिणा प्रेचनो

मुहूर्तसिंधुः

शुभंप्रतियामंच पूर्वा दो क्रमात्सु त्फलंबिदुः विद्यंशोकः क्षति-

		दिवार	ात्र <u>ीच</u> च	नुर्घि	कारम	कम्		4.5
· ₹-	ચં·	मी-	बु-	बृ·	इह-	ं द्वा-	दिने	घटयः
3.	न्ध्र-	रोः	ला.	4	च	का	दिने	3ાા
च	का-	3.	ऋ∙	रो-	ला-	4	दिने	110
ला-	शु.	ਹ ਿ	<u>কা</u>	उ-	श्र-	रो-	दिनें	991
न्ध्र-	रोः	ल-	শু-	্য-	का	उ-	दिने	94
का-	3-	ऋ-	रो-	छा∙	-यु-	च-	दिनेः	95111
3.	-च-	का-	<u>क</u>	ऋ्र-	री	ला-	दिने.	, २२॥
रो-	ला-	- अ-	च-	का	3.	न्त्रः	दिने	रदा
3-	न्य-	रो-	ला	3	ৰ	का	दिने	30
रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	रात्री	राश्री	- -17-581
शुः	च	का	उं	ऋ	रो	बा	राओ	3111
न्त्र	रो	ला	उ	क	का	उ	राश्री	ااف
च	का	उ	ऋ	रो	ला	3	राओ	111
रो	खा	শ্ব	च	का	ত	त्र्य	राश्री	14
का	3	ऋ	रो	ला	3	च	रात्री	9511
भा	श्र	च	का	3	श्र	रो	राश्री	2211
3	त्रम	रो	खा	श	च	का	राश्री	२६।
7	्य	का	3	न्य	रो	खा	रात्री	30

	PILL		छि	काविच	गर	THEF	PINE	100
य	न्या	द	नेई.	Ч	वा	3	-fax	दिश:
विघः	विलंबः	उत्तमः	मृतिः	शुभं .	ऋागमं	खाभः	गुभं	रवी
लाभ	विलंब	मृति	छाभ	श्रम	उत्तम	ऋल्प	लाभं	चंद्रे
7मित्रा	लाभ	विलंब	मृति-	लाभ	विदेश:	सुरव	7मेत्रा	भोमे
सित्धि	द्रारीरक	अरिष्ट	विलंब	मृति	भनना	चौरमी	मित्रा	बुधे
चिंत ना	बार्ता	विलंब	उत्तम	चौर	मृतिः	कष्ट	शत्रुना-	जीवे
धनसि	कलह	भित्राग	ऋर्थ	उत्तम	बिछं	मरण	धननाः	शके
ऋर्थना	कष्टनाः	पार्ता	मित्र	उत्तम	सुभ	विलंब	मृति	शनीः

र्लाभोभोज्यं वार्ताकििः सुखं इंदिरामरणं सिहिःपीडाभोगः स्र-रवासुखं निष्फलं चोपिवष्टस्यपूर्वतः क्षुतजंफलम् प्रागन्यपुंसः परतस्तत्रेवच पुनः पुनः हटात्कफाछिशोर्वृद्ध्याक्ष्मतं जात वृथाजः गुः स्वमस्याद्यंतयोः शस्तं क्षुतंनोभोजनाप्रतः भोजनांतेयदिभ-वेद्गोज्यलाभः परेहिन स्रांत्र्यिति कुमारीच किन्तरीमद्यकारिका वरटीचर्मकारीचिनंद्यमासांक्षुतंसदा प्रयोजनेयलकृतेपिजातंक्षुतंक्ष-णात्तिहिनहं त्यवश्यं कार्योत्सुकनापिमनागपिदं तस्मादपेक्ष्यंन विचक्षणेन स्रोषधे वाहनाराहे विवादे शयनाशने विद्यारंभेबी-जवापे क्षुतं समसुशोभनम् स्रथाक्षेतिम् सुहुर्मुहुर्मूभमलं करोति संताङ्य मानोप्यनुलोमगामी स्रकार्यभीतोश्रुविकाचनश्य शिवंनभर्त्तुरगोविधत्ते स्रारोहित क्षितिपती विनयोपपन्नोयात्रा

नुगोन्यतुरगंप्रतिन्हेषितश्च वक्कणवास्पृशतिदक्षिणमात्मपार्थ योश्यः सभर्तुराचेरात्पतनोतिलक्षीम् अथहस्तींगितम् भूमोत्य स्तकरस्तब्धः कर्णी मुकुलिते क्षराः भीतश्चसन्गजोयाने भंग छ-रस्यितस्तथा स्मनुलोमगतिर्द्धा वक्कमुन्नम्ययातिच बत्मीक स्थान गुल्मादि मथनः सिद्धिदोगजः श्रथ सारमेयोगतम् नृतुरग करिकुभपयोग्रसक्षीरवृक्षोधिका संचय छन्नदाय्यासनी भूरवला नि ध्वजं चामरं शाहुलं पुष्पितं वाप्रदेशं यदाश्वावमूक्या प्रतोया-तियातुस्तदा कार्यासिहिभवेदाईके गोमयेभिष्टभोज्यागमःशुष्क समूत्रए शुष्कमन गुडोमोदकावापिरेवाथवा ऋथ विपतरकंट कीकाष्ठपाषाण्मशुष्कद्रमाास्थिदमद्यानानिमूत्रावहत्याथवायायिनो प्रेसरोनिष्टमार्व्याति शय्या कुलाता दिभांडा न्यभक्तान्यभिन्नानि वा मूत्रय-कन्यकादोष छ द्रुज्यमानानिचे हुष्टता तहु हिएयास्तथास्या दुपानत्फलं गोस्क संमूत्र एो वर्णनः संकरः गमनमुख मुपान इसंप रह्योपनिष्ठे चदास्यात्तदासिद्धरोमां सपूर्णाननथा मिराद्रेषाचा स्थाश्रमं साम्यलातेन शुष्केएाचास्थ्रायहीतेन मृत्युः प्रशांतीत्मु के नाभिधाती थ पुंसः शिरोहस्तपादादिवक्के अवोह्यागमीवस्त्रचा रादिभिव्योपदः केचिदाहुः सवस्त्रेशुभम् प्रविद्यातिनुगृहं सभा-कास्थियक्रेप्रधानस्य तास्मिन् वधः श्रेखलाशी एविही वस्त्रोदिवाः बंधनंचोपएह्योपतिष्ठेत् यदास्यात्तदाबंधनं ले हिपादीविधुन्यन्सक र्णा उपर्याकमम्श्वापिविद्याययातु विरोधे विरोधस्तथा स्वांगकंडू यने स्यात्स्वयं चोर्ध्वपादः सदादोष एकत् वामं जिध्रे जानुवित्ताग-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मायस्त्रिभिः साकं वित्रहोद क्षिएंचेत उरुं वामंचेंद्रियार्थीपभोगः सव्यं जिब्नेदिष्टमित्रे विरोधः पादी जिब्नेद्यायिनश्चेदयात्रां प्राहा-थाि तिवाि छतां निश्चलस्य स्थानस्थस्य स्वोपान होचे दि जिन्नेत् क्षिप्रयात्रां सारमेयः करोति उभयोरि जिघ्र ऐहि बाव्होविझे-योरिपुचीरसंप्रयोगः यानेभवंतोभयदाश्चपश्चात् अथकाकें-गितं गमने कर्ण समश्चेत्क्षेमायनसिद्धये भवति स्त्रभिमुख सुपे-ति विरुवन्विनिवर्त्तयेद्यात्राम् वामेर्वाशित्वादोदिक्ष ए।पार्श्वेनुवा शतयातुः अप्रथापहारकारीतिद्वपरी तोर्थिसिद्धिकरः यदिवामए-विरुयात् मुहुर्मुहुर्यायिनो नु लोमगतिः स्पर्थस्य भवति सिद्धे मा-च्यानां दक्षिए।श्रीवम् वामः ऋतिलोमगतिर्वाद्यान्गमनस्यविष्ठ कद्भवति तत्रस्थ स्येवफलंकथयतिय हां छितंगमने दक्षिए। वि रुतं कृत्वा वामेविरुया चथेपिता वातिः प्रतिवा स्यपुरोयायात् दूतमग्रेथांगमोतिमहान् प्रतिवादयपृष्टतो दक्षि ऐन यायाददुतं क्षतजकर्ता एकचरणोर्क मीक्षान्विरुवंश्वपुरोरुधिरहेतुः

	अथस्वरशास्त्रमवलंब्यकतिचित्रकाणि												
4	4	a	a	a	e.	ex	-	-	U	8			
अप.	श्रा	Pox	Hop	3	æ	ए	दे	श्रो	श्री	श्र्यं			
35	ख	ग	घ	च	छ	ज	55	₹.	ठ	ड			
ट	दा	न	ध	द	ध	ৰ	प	फ	बं	ਮ			
म	य	₹	63	ब	श	ष	स	he					

न्यत्रययोर्भरयोर्जयपराजयिकोकनं तयोर्नामाक्षराणां ह लामचांचयोगं कत्वा २ द्याप्तं १ रोषेतस्यजयः शून्यशेषेतस्यप-राजयः अथवायोगे ८ तष्टे-४।६।५।५।३।१।२ शेषेत्रप्रणा प्रयोजेताभयेत् अथप्रकारांतरेण-

	न्य्रथप्रकारांतरेएा.												
ञ	a	a	×	. c	વ	9	9	3	0	9			
अप	न्ध्रा	hor	chor	3	35	ए	हे	श्री	न्ध्री	_{श्र्यं} .			
क	रब	म	घ.	च	ध	र्ज	25	ર	ढ	159			
ढ	एा	त	थ	द	ध	र्भ	9	फ	व	भ			
म	य	₹	उ	र्थ	श	ब	स	震	•	•			

श्रवापिभटयोर्नामहलचांयोगं १२ ददाहीनं ८ श्रष्टतष्टं य-स्याधिकः रोषः सएवजेता सेनाधिपः कर्तच्यः यथारामराष-एयोः क्रमेण र.२ श्रा. ६ मं६ श्रा. ६ एषां योगः १० राक एस्य र.२ श्रा. ६ व ८ श्रा. ६ ए१६ श्रा. ६ एषांयोगः ए षायोगः २८ उभयन १२ हीने होषो ६ । ६ श्रष्टतष्टेराम एवजे-ता उभयोः समदोषले संधिर्बोध्या चक्रनयेपिनामाझ्झलांसर्व ते ह होकानां भेदोवेलकाएय कारकः

	<u> श्रथापरम्मात्राचकम्</u>												
5.77	પુ	ex	8	9	9	3	2						
ऋग्या ई.	क	-ध-	ट	न-	प-	य•.	्रा·						
ई उ ऊ	रब-	જ-	ठ	थ-	फ∙	₹-	ष.						
अंदर हो र	ग-	र्ज	म	द-	च	ख	स-						
ओ ओ	घ	22	3	भ	भ	य	ह-						
श्रं श्रः	Š	প	एा-	न	म								

श्रश्राप्युभयोः संरब्धेक्ये ० तष्टे श्राधिकभाक् जयीभवति पं-वा एोडः स्वरास्ते कछ ढधवमुखेब्बद्ध अव्यंजनेषु स्युर्नदा दे-स्तिथेस्ते तिथिकपि ११ लवती व्यंतराभोगभाजः नाम्नोवालः कु मारो युवसजरमृता स्वादिवर्णा स्वरास्ते सिद्धु कर्षीयुवांतो पचयद्वतरयोर्युध्यतां युण्यमृताचि भोमनयोर्ज्ञवाशिनोश्चगुरो शृगोस्ते क्षेत्रे वाने स्वयंवायन वां वाके जात् भारे २४ करे २१ तुपरतो तिमभानिसप्त ० स्वादित्यत स्विद् सुरवा श्राप पंच केषु रूपा १२ हेष्वापहायन त्रृपुचते तत्काय ११ भागांतरा भुत्त्या वाच्यपरेयने त्वद्विभो छष्णान्ययोः राधेभाद्रपदे सहस्यद्दिषा वादेन भस्युर्मधो पोषे थेरिपशुक्व अर्ज उद्यी माद्यांत्ययोरो स्तथा

श्रथेषा मवांतरभोग बक्ता ए।-

	द्वादशायार्थिकांतः						वार्षिकांतरभोगः					
श्र-	this	3.	4	ऋो	स्व	ग्र	5	3	ए	श्री	स्ब	
9	9	٩	9	9	व	9	9	9	9	9	मा-	
9	9	9	9	9	भा-	y	ч	ч	Y,	y	दिः	
2	2	a	2	2	दिः	४२	82	83	85	82	घ-	
83	83	85	83	83	घ-	6	6	c	6	4	ч.	
34	३८	3€	30	20	प-	पुष	५५	44	44	44	धि-	

अत्रयस्योद्वं तस्यत्रिवारंभोगः आदीमध्यतेच

45	वएरि	स्वरच	कम्	
श्र	म्ब	3	ऐ	श्री
क.	स्ब	ग.	ष-	च∙
U	ज-	झ	€.	2
₹.	₹.	त.	भ	द
ध.	न∙	प.	फ.	ब
भ-	म.	य-	₹- *	छ.
वं-	दा-	a -	स	₹.
नदा	भद्रा	जया	रिक्ता	प्रशा
मं-र	ञु∙ चं∙	कुं .	A.	श.
28	29	29	29	29
रे.७	व्र. ५.	उ-ुका-	अनूप	अ. ५
मभ्व	मभा १२	रवर१२	शोभ१२	
वाल	<u>क</u> माः	यु-वा	यु-ई	मृत
वैभामा	श्राभा	चैं. वी	ज्ये का	मा-फा-

	श्रयनचऋमयांतरचऋ•											
श्यः	Non-	- 33	the	^२ प्र	48							
रं	3.	क्	শ্ব	-क <u>्</u>	ત્ર.							
964	94	964	964	964	दिनाः							
29	29	29	29	29	घरघः							
80	85	86	R=	80	पछा:							

	Ą				
श्र	May.	35	ए	ओ	स्बः
७२	७२	७२	७२	७२	दिन
थ	eq	ધ	ex	બ	दि
32	व्य	37	32	32	घ
४३	83	83	83	43	प

मुहूर्नसिंधु

मासांव	मासांतरभोग पक्षांतरभोगदी गघ-रापहर											
श्र	;tor	ऊ	ए	श्रो	स्यः							
٩	٦	٦	ع	3	दि·							
४३	83	83	83	83	घ-							
30	30	30	30	3°c	प							

श्रथाष्टीखराः नामाचः पूर्वीयः समात्राखरः यथारामस्यः ऋः नाम्नोहलचामेक्यं पंचभक्तं शे-षोजीवस्वरः यथारामस्यउोः मात्रास्वरवर्शस्वरेक्यं ५ भक्तं

पिंडस्वरः यथारामस्य डोः मात्रास्वरवर्णस्वर प्रहस्वरिंडस्व-र जीवस्वर भस्वरराशि स्वर एषां मेक्यं पंचभक्तं योगिकस्य-रः यथारामस्य त्र्यकारः मात्री च त्र्यः वर्णाच एः प्रहाचै पिंडाच डोः भार्चे उः राज्येच एः एषामेक्यं २६ पंचतष्टं शे-षमेकं प्रथमोकारोयागिकोरामस्ययोगाद्वादशबर्षस्युरवस्था

न्ध्र	न्त्रथश्रीरामःस्याष्टी स्वराः कार्याणि										
ए.	_अ	ए-	ओः	श्रीः	3.	ए-	श्र-				
वर्षा	मात्रा	यह	पिंड	जीव	भस्य	राशि	योगि				
सः का संप्राम	मंत्र्रास हो।	श्रभ	सेनार चने	शुभे	अभे	श्रभे	योगभ जनम्				

विडके ब्दके भस्वरादय-ने जो याराशिसगहतुस्वरे जीवान्मासस्वरेवस्था ग्रहासक्षस्वरेत्रथावर्णा दीनस्वरे ज्ञेयामात्राचः

स्याद्घटीस्वरे योगाचायोगभजनंवर्शाचा सर्वमावहेत् विषे षतस्तु संग्रामे सहिसर्वस्वरोग्रणीः विचारश्चायं नाम्नएव बोध्यः

अत्रापिनामो हलचांमि तिः पंचहता श्रिधकाज 3 2 8 यं ही ना मृतिंसाम्येसंधि अप-3. जो. ए. 事. ग. कथयति त्र्यथभूवल-रव. घ. **53**. ज-3. ₹. 3. स्य सुरवंजयेद्युनिजय-₹. थ. ₹. त ₹. ध 寸. फ. प. ब. श्वघातात्स्यादाद्ययोःग्र **म**· यः ₹-4 तिमयोर्नजयः स्वशत्रव-ब-राः ष. स 3

भू.	
डो-	इ.द.
3.	

ला बलाभ्यां भुवमाददीत इदंचधूतेच तुरंगे वइयं विचार्य्यस्वी-य युवस्वर्वत्यां दिक्षुजयः धाल कुमारवत्यां घातात्-

रा	शेचक	म्-	रविहत			चंद्र हत दिक्		
रे शु	शन् भी	श्रा इा-११११		ध्र ७		3 3 199	श्रा-५।१	
3.3.3.	•	र-द- ५	3-814	यामार्धम्	१। = दः			
धा३ वा	प- ४	गु∙ नै - <_		प· २।३		वान्धात्र	९ मे.	

1	श्रु राहु	
ई. ७	ā. 8	आ-१
₹. 3		ध द
था. प	प. c	3.3

पृष्टेकीयदिद्धिए। पिपुरतः श्छायाथवा मेजयः किं लर्के बहती ह्यायिनिविधो वा-हस्थितस्थायिनी छायापृष्टगद्धिए॥नि-शिदाशीवामेय्रतो वाजयो यातुश्चंद्रबहे प

रस्पत्रवे वीमः शशीष्टं क्षयी चंद्रवलम् प्राची मुदीचीं वाचं द्रे गतेस्थायीजयी भवेत् प्रतीचीं दक्षिणां प्राप्ते यायी विजय माञ्चयात् वायुवलम् वायुः पृष्टे दक्षिणेच वहन्स्चयतेषः

लम् संमुखीनश्वयामश्वभटानांभंगसूचकः

VKC SZ	गिहूर्त्तिकराहु		यो।	गिन्यर्ध प्रह	एम्	
ई.१।८।१७।२५	४।१२ पु-	०११५ न्य्रा-	र्पक्षं ८	प्रु- १	३ आः	
J. 221 eq 9813°	मीहू	२११० द-	3. 2.		द- ५	
३१११ था-		प्रा१३ में- २१।२८	ब. ७	प- ५	नै- ४	

मीहर्तिकोराहुरिषयामार्धराहुरिषदक्षे पृष्ठेशुभः अर्धयाम-योगिन्यपिदक्षे पृष्ठेशुभा दक्षेपृष्टे योगिनीराहु युक्ताय स्येको-पि रात्रुलक्षं निहंताश्रेष्ठं सर्वेभ्योवलेभ्यस्तदेतल्सक्षेपोयं सर्व सारोभ्य धायी अथयामार्धकाली ताविपजयार्थीत्यागं कुर्य्या-त् युद्धे यूतेचापिसूर्य्यादिवारेषुक्रमाती वोध्योः

		199	श्रर्ध	याम	T-						का	ल		
₹-	चं.	मं.	बु	र्बे.	A .	श-	₹-	चं·	मं∙	बु.	훤-	43.	श-	यामाधी
R	७.	a	4	c	3	Ex	U	a	વ્ય	9	8	ی	2	यामार्धा

श्रथ पाप होरा स्वराशिशञ्ज यहीयाहोरापि वर्जनीयाः

			3	न्यंव	T:		
₹.	चं.	मं-	han	ã.	शु.	श-	यः
UB .	Ex	4	8	3	ď	٩	यामार्धाः
₹.	बा-	ष	7	द-	भ्याः	म्र-	दिश

यामार्धभोगाच्छनिरस्ति रस्यां तदानयायात्ककुभं तदाताम् अथिकद्धया-मार्धादिषुयुद्देपहारस्थलाः

याम	गूढज	राहोः	रवेः	चंद्रः	श-यह	इा-भ्र-होर
वामांदो	प्राभागे	कुचादिषु	श्चत्यादि	त्र्यास्यादि	हृदि	मुख

जन्मगोचराभ्यां विरुद्धेषुः

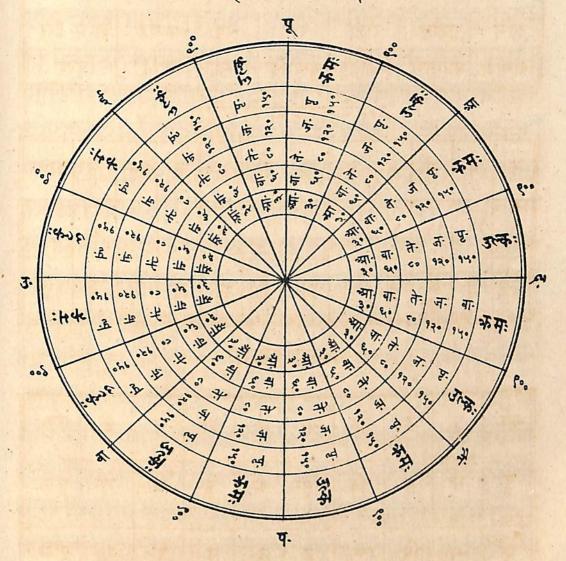
रः	मं	मं	किं	háv	भु	इा-	राः	के.	वास्तु	सूनु	कालः
٩	92	99	90	e,	U	R	y	·	٦	ą	9
मुक्	वश्र	स्पहत्के	स्तरे	अंत	यदे	मं थी	भुजे	गंडे	कर्व	कंवे	हस्ते

त्रिनाडिकम् ।

न्प्राः	व्रू:	3.	ऋ	ज्ये:	धं	श	भ	कुः	एक
युः	म	ié	वि	मूः	अं	पू	ऋ	रो	एक
पूरं	श्र-	चि	रचाः	प्र	3-	'ড-	\$-	मृ-	एक

यदेक नाड्यां नामार्कचंद्रभानि प्रधनेत्याज्यानि ऋथ तात्का-लिक नक्षत्रमाह भभक्त नाड्यः ९ नव गुणाः २० विद्यातिभक्ता गतभानि भवं ति रच्यादि गतिनुतिलवार्ध यह घटिकाभवं तितः चद्र यहाणां इदंच सूक्ष्मिवचारे बोध्यमितिः

हंसचारफलम्



एकेकस्मिन्यत्रे एकेकस्यस्वरस्य कमादसवः पुनरुकमात् एवम-ष्टपत्रे ७२०० त्र्यसवः तेषां घट्यः २० एवमहर्निशंत्रिवृत्ति त्र्यथ कस्मिन्यत्रे प्राएगः पूर्वपाएगवायो रएगयिन त्राप्रेये भोक्तं द-क्षिएो रुषे-नेऋ- विषयाय पश्चि-मुदे वाय-गमाय उत्त-दयाये ईशे- नृपास्यदाय पत्रह्यांतरचरे परस्य मुदे धरांवृनी शुभे महं

विमिश्रितं मरुन्नभसीदः खदे हेहेपत्रेकमादिनेदुवहतः शुक्रप तिपदादित्रिधल्नं हिमगुः ततोरिवः ततश्चंद्रः एवमेवकमाकमप्रः वृती मत्यूषतः श्रेयः चेदेकनाड्यां ५ दिनमित्तलं वहतिमृतिर्भ वेत् अर्कस्वरेभितत्ववहने एकोबहुन् जयति स्वश्नन्ये विपक्षं कृत्वा-पिजयति दक्षवहे दक्षनगरेण वामगवहे वामनगरेण पृष्टेजयः व्य-त्यासेन श्रथ दक्षवहे विषमाक्षराणि तदिपजयेः पुरः स्थितोवा-मगोवोध्यः पृष्ठगोदिक्षणोबोध्यः श्वासांतर्गमे वामेदक्षेवाजवः श्वासानिगमि वामेदक्षेपराजयः नृपिकोकन गेहवेदापद्याभि षेक मुखकमाणिचंद्रेशुभानिचकर्माणिमज्जन वधुरित भुक्ति युद्धमुख्यं त्राशुभकर्मचसूर्यं कर्तव्यं त्रांगनायाश्चद्रस्वरेयहति यारितत्व वहने पुरुषस्यरिक्वरे वन्हितत्व वहेचेंद्रति शीघंद्रवति अथसुत्ताया चंद्रनाडीं मनुजः सूर्व्यए चंद्रं पिबेत्कां तामामृत्यो वे शयति कांताचेत्कांतरविरंबचंद्रेशिपवित कांतमामृत्यार्वशयति अथयूतेविशेषमाह स्वरच्छायानिलार्के-दुयोगिनी राहुभुवलेः अन्येश्वयूतमावधनजयत्येव धनंबहु अथजयदीवध्यः पुषा के धृताताल जटा केत कदल खार्जूरक तगर सधृत भुक्तानिर-शनैः शिरसिधृताबाशस्त्रनिवारका तंडुलायुना पाठाजरापी ह-शी अंकोला लक्ष्मणा पुरवा सर्पाक्षी शिखी मूली विष्फकांता काकजंबा नीली सहदेवी-पाटला भुजास्य मूर्थगा भुक्ता तजा टेकापिवारयेत् रहो दारुण शस्त्रोघं अथपीत कपर्दिकायां वृ-हतीरसधृष्टः पारदः सवृहतीजटः सिक्थमुद्रितः मुखेधृतो विः

वादेजयदः चकमर्गोजिव्हाशिक्विन्दाः पुष्यार्क वृता भु-जास्यमूर्धगावाद जयदा अत्रकोटसर्वतोभद्रकाल न लान्य-पि विचार्याणिः अथसंग्रामेशुभंचिन्हम् जिव्हाशोषः प्रकष्ध तांबुले रागहीनतावर्णः सगद्गदोयस्यतस्यमृत्यूरणेभवेत् अथशुभलक्षणम् प्रफुछितभुजोचेव रोमांचीस्थिररुभटः धेर्योपेतः समुत्साही विजयी सरणेभवेत् अथावश्यकेशिवा लिखितं प्रोच्यते तत्रादोतेषांकर्मा

4		M	10 P		9P		री	द्राद	यः '	154			J. P.	M		
1 ×	2	भ्वेत	描	चार्व	जयदे	彩	व्र-	श्रीभे	राव	बाल	विभि	नंद	यम	书	भग	साथ
Sunday	भेटकम्	गजबंधनं	दानादि कं	स्तंभग्रतिष्ठे	सर्वार्थदं	पट्टिभिषेक	रास्त्रसाध-	यामयवेदा	वैरसाधनं	युद्धकार्य	श्वमकर्म	यंत्रचालनं	मारणं	सभोपवेश	स्त्रीसंग	विद्याभ्यास

नितिथिर्नचनक्षत्रं नयोगकरणानिया नश्चरं योगिनीकालो न होरा नतमः सितः व्यतिपातेचसंक्रांती भद्रायामशुभेद्रष्टव्यंचितः वालेख्यं सर्वविद्योपशांतयेश्चर्यथ्वं भवेत्कार्यविद्यमावर्तके भवेत् काल वेलाध्रुवं मृत्यः सर्विसिद्धिस्तथामृते स्ममृतस्योधिरेखेकाका लेरेखात्रयंतथाविद्यस्यावर्तकं द्वंद्विदुः श्वन्यस्यलक्षणं मा का वै चैशा भा

र	वीन	भ}ः	रुश	चवि	घर	ाजी	गोर्।	वेंद	नाम	1न व	r s	गर	गा	मी	
0	1	1	1	6	0	6	0	ı	ι	1	•	8	0	6	0
ही-	स्व	मे	चा	স	वै-	₫.	श्रम	राः	वा-	वि	नं	य	स्रो	भ-	सा
त.	तः	सः	स	₹.	₹.	त	त.	स	स-	₹-	₹-	त-	त-	स	स-
₹-	₹.	शु.	श्रु.	बु.	ig.	यं-	च	श्र-	श-	जी-	जी-	ओं	भो-	₹-	₹.
3-	3.	अ	अप-	रो-	रो	ला	का	शु.	જી.	च-	च-	अप.	-भ्य-	3.	3.

	रा	त्रीनृ	सिं	हो ३	गुर	र्ग २	नः रव	ल	श्मीः	शलं	वोद	ररा	मसं	ज्ञः	
0	1	٢	6	0	0	•	1	1	1	6	6	6	0	1	1
2	3	8	37	व्य	9	V	3	90	99	92	93	98	94	94	9
₹.	₹-	तं	नं	स	स	₹-	₹-	तः	तः	स-	स	₹.	₹.	तः	त-
હ્ય	છ	8	8	2	2	9	و	y	3	3	3	9	9	ex	ox
श्र-	श्र	रोः	शे-	ला	त्ञ-	श्रु-	J .	च	चं	अ	अ	3.	3-	Ŋ·	邓·

सोमे हरिर्विघपतिः सुरेशः शून्यंचेगोरी स्कत विष्युनामाः

1	1	6	0	6	0	1	1	1	•	6	0	6	0	1	1
a	x	4	æ	9	b	9	90	99	92	93	98	94	982	9	a ²
9	9	ď	2	3	3	9	9	વ	2	3	3	9	9	a	a
ર	a	9	9	4	y	3	3	9	9	a	ex	8	8	a	ď
ला-	ला	शु	श्रु	च -	च	ऋ .	ऋ	3.	3.	अ -	*** 3	रो	रो	ला-	ला

पदंनिशायां खरविष्फृश्रून्यंयुग्मंचनारायण्विघनाथी

w	0	0	1	1	0	6	0	1	1	1	1	6	0	6	0
8	3	œ	6	6	9	90	99	92	93	98	94	984	9	2	3
3	a	9	1	2	a	3	3	9	9	2	2	a	a	9	9
6	9	x	S	3	a	٩	1	દ્ય	લ્	8	8	2	ą	9	v
अ.	शुं	षं	वं	**X*	अ	3.	3-	अ	-ग्र -	रो-	रो-	ला-	ला	वंग	部

भीमेयमोमारमणीययुग्मयुगंहरिश्चेव गजाननश्च-

W	W	1	1	ı	1	6	0	6	0	í	1	•	6	0	6
y	ex	v	6	9	90	99	92	13	98	94	984	٩	2	3	R
2	2	3	3	9	9	2	2	3	9	٩	9	2	3	a	or
3	3	٩	٦	ex	ख	8	8	2	2	9	9	30	3	3	9
· 以	*4	3.	ड-	· 以 ·	अप.	शे-	रो.	ला	ला	3.	3.	यः	च ·	अ अ	श्र-

	H	नत्तं	,च	वेमं	द्विप	दंमुः	कुंद [्] प	दन	यं श्र	ीनि	धप	न्नि	मेडि	:	
6	0	W	W	1.	1	1	w	w	W	ı	I.	1	w	1	T
ex	9	U	9	90	99	92	93	98	94	984	9	2	3	8	4
9	8	2	2	a	3	9	٩	2	2	ळ	a	9	9	2	2
9	9	ex	ex	8	8	2	2	e	6	8	8	a	3	9	9
3-	3.	अ	ऋं	री	री-	ला	खाः	3.	A.	चं	यं	अ	ऋ	3.	3.

बुधेधनुः कृष्रायमीच शोरिः शोरिधनुः शोरियमी-

6	6	1	1	w	W	w	w	w	W.	w	w	W	W	w	w
0	6	9	90	99	92	93	98	94	964	٩	3	w	8	33	ध्
3	3	٩	9	2	2	3	3	9	9	2	2	3	a	9	9
ex	ex	8	R	2	2	७	v	ч	ч	2	3	9	9	જ.	હ
रो-	रो-	लां	त्ज्ञ	शुः	शु.	चः	च	श्र-	अ	3.	3-	श्र	-आ	रो-	रो-

रात्रीसुवर्णाध्वजएवपंचयुगंस्वदामोदर कुंजरास्याः

1		-t .	ı	1	5	0	-	1	1	1	1		0	•	•
V	9	90	99	92	13	98	94	96	9	2	a	8	3	હ્ય	9
2	2	a	3	9	9	2	2	3	30	9	9	2	n	a	٩.
8	8	2	2	4	y	19	6	3	3	9	1	ex	ex	8	8
8	8	r.	4	ex	ध्	6	وا	9	٩	2	2	3	3	8	×

गुरी गोपनाथस्ततोविधनाथो नभःकेशवः कुंजरास्यः

1	1		1	1	6	0	9	al a	1	ı	1	6	9	6	0
9	90	99	92	93	98	94	984	9	2	3	R	4	w	9	6
9	9	2	2	3	3	9	9	2	2	3	3	9	9	2	२ मुणाः
3	3	٩	9	ex	ex	8	8	2	2	v	v	ч	ч	3	३ ग्रहा
6	19	٩	٩	2	2	3	a	8	8	4	y	ex	थ	9	व ला

278,23		निश	ायां	पदंग	नंदज	नः स्	र्ध्यर	न् नु	र्नभो	माध	विश्	ग्राप	नेकंह	रिः	
w	1	1	1	w	w	w	w	0		1	1	6	0	1	1
90	99	92	93	98	94	964	9	2	3	8	بع	હ	v	-	9
3	3	9	9	٩	2	3	9	9	9	2	2	3	9	9	9
9	9	छ्	Ex	8	8	2	2	3	3	u,	4	3	9	9	9
19	19	9	9	2	2	3	3	8	8	4	y	ex	छ	- 13	. 9

Title of		शुन	ं हरू	शाः	गल भ	भून्य	मिस	गरिं	गिरी	पुत्रो	गा	निः	श्रन्य	म्	1
1	1	W	W	٥	Jan 1	1	1	6	0	6	•	1	1		۰
99	92	93	98	94	984	9	2	3	8	u,	ex	6	=	9	90
2	2	a	3	9	9	2	2	3	3	9	9	2	2	93	3
ध्य	ex	8	8	2	2	6	v	4	4	3	3	9	9	ध्य	ध्य
3	2	3	3	8	8	4	y	ex	ee	v	0	9	9	a	2

नक्तं कालः कं सहाश्चयोगपादे हुँ द्वामनः खंचपादी

w	w	1	1		•	6	0	W	ω	1	1.	-1	•	w	w
12	93	98	94	984	9	٩	9	8	y	ex	v	-	9	90	99
9	9	2	2	9	3	9	9	2	2	3	3	9	9	2	2
8	8	2	2	9	0	y,	y	3	2	٩	9	ex	ધ્ય	8	8
3	3	8	R	4	y	Ex	હ્ય	9	v	9.	9	2	2	3	3

इानोपदंश्रीश्चनभश्चनाकोनारायणोनोहरिरवं हरिरवं

W	1	٥	0	.0	1	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0
93	98	94	98	9	2	9	8	4	w	9	U	9	90	99	92
3	3	9	9	2	2	a	3	9	٩	2	2	3	3	9	9
2	2	19	19	3	y,	3	9	9	9	ex	Ex	8	8	2	2
Ex	Cer	v	6	9	9	2	2	9	3	8	8	y	4	Ex	Cox

		रात्रे	चश्	्न्यं	पदम	गाध	12व	रवंि	घर	जो	र्हा	रेथ्-	चापं		
0	w	W	1	1	1	9	6	0	6	9	ı	1	١	6	9
98	94	984	9	2	a	8	a	ચ	9	4	9	90	99	92	13
2	વ	a	a	9	9	2	2	3	3	٩	9	2	2	3	a
v	9	8	S.	a	a	9	٩	બ	ex	8	8	2	2	9	9
-3	3	8	8	5	y	ex	થ	. 9	9	97	9	2	2	a	3

त्राधिभः गुरु सोमदिने सत्वरज्ञांगारके भृगोरिवमंद बुधे घेव तमोना डिचतुष्ठयं उद्देगात्यमृतारोगात्राभाशुभाचला स्थि-राक्रमात् वारात्षष्ठोभवेत् वारोनिशास्ववं विधिस्मृतः इत्या दि विस्तरः

	70	र्थेन	ृसिं _ग	होहि	पद	चचा	पं ह	रिर्न	मीं	तः	पदम	ाच्यु	र्ता	हे:	
١	1	1	w	w	6	0	6	0	0	0	0	i,	1	1	u
9	2	9	8	3	व्य	9	4	9	90	99	12	93	86	94	964
a	a	9	9	2	ď	a	3	9	9	2	2	3	2	9	9
	र	ात्री	पदंच	गप	रव्	च्यु	तश्च	युग्मे	यमं	गिवि	ष्फ	खिर	दि	गदं	*
w.	6	۰	0	1	1	1	0	0	w	w	1	1	•	1	w
2	3	8	y	Ex	6	U	9	90	99	92	13	18	94	984	9
2	2	3	3	9	٩	2	2	3	a	9	9	2	2	a	2

सोमें भ्रिचापंनभसी मुकुंदोनभश्चयुग्मं हरिखं हरिश्वं

w	6	0	0	0	ì	ì	i	0	6	0	ı	1/	0	1	i,
3	8	5	æ	9	4	9	90	99	92	93	98	94	964	9	2
9	9	a	٩	a	a	9	9	2	٦	3	3	9	9	a	2

पदंनिशायां युगरवं मुरारि विनायको विष्णुनभश्च विष्फः

u .	6	•	•	i	1	ì	6	0	6	0	ı	1	0 .	1	1
8	3,	હ	9	۲	S	90	99	92	93	98	14	964	1	a	3
3	3	9	9	2	2	a.	3	٩	٩	2	2	a	3	٩	9

भीमेमहेभास्य नभश्चिवक्र खंस्या द्युगंगोपतिखं च युगं

6	0	6	0	0	1	١	0	6	•	i	1	ı	D	6	0
५	E	9	b	9	१०	११	१२	१३	38	१५	१६	8	4	લ	8
2	2	a	a	٩	4		The state of the s	1 THE THE			1				ar

नक्तं करिंद्रास्यरवमच्युतश्च योगश्चश्च्यं नृहरियोगो

6	D	6	0	.0	ì	9	ı	6	•	0	1	1	10	6	•
ox .	9	6	9	90	99	92	13	98	94	964	9	٩	ox.	8	3
9	٩	2	a	a	2	9	9	2	2	3	3	9	9	2	2

बुधेधनुः श्रीकरपादयुग्मं गदाधरोथोगणनाथसिद्धिः

6	0	١	1	1	w	w	1	1	1	l	6	0	6	9	1
9	b	6	90	99	92	93	28	94	960	11	3	*	8	نع	3
3	M	9	9	a	2	3	9	9	٩	a	2	· da	2	9	9

रात्रीचकालेहिरिश्चन्यकाले।गोविंदगोरीसुतश्चन्यसिद्धिः

w	u	1	l _j	•	w	w	1	ı	1	6	0	6	•	•	i
6	8	90	99	92	93	98	94	964	. 9	3	æ	8	4	લ્ય	9
2	2	3	3	٩	9	٦	3	3	ax	٩	1	a	2	3	3

गुरोहरिः श्र्न्ययुगं सुरेज्यः श्रीविद्यराजो गगनेश्रीः

ı	j	0	6	0	1	V.	1.	1	6	•	6	0	•	0	1
9	90	99	92	93	98	94	964	9	'n	or	w	3	ex	٠	5
9	م	વ ં	٩	3	a	9	9	2	a	a.	a	9	9	. 7	٦

निक्यं ब्रिदेत्यारिखकार्मुकंचपदेमुरारिखयुगंश्रीः

w	1	1-	1	0	6	0	w	w	1	ı	1	.0	6	0	1
90	99	92	93	98	24	964	9	٦.	a	×	y	w	9	6	3
3	a	9	9	2	a	a	वर्ष	9	9	n	3	9	.04	9	9

शुक्रेरमाचापमरीदवश्चलंबोदरःकेशवश्चन्यपादः

	1	6	•	1	ı	1	T.	6	0	6	•	1	1	1	0	W.
-	99	92	93	98	94	964	٩	2	a	R	4	es.	9	b	9	90
-	2	2	8	3	9	9	2	2	a	ax	9	9	2	2	a	3

नक्तंयुगंश्रीपतिरवंचयुग्मंयुग्मंमुरारिर्गगनंचयुगं

6	0	r	1	1	•	6	0	6	0	1	ì	•	•	6	0
92	93	98	94	964	٩	2	a	y	3	Q	9	4	8	90	99
9	9	2	2	3	ex	9	9	a	2	COR	8	9	9	2	2

रानोपदंश्रीर्नभश्य नैवनारायणोनोहरिखं हरिनोन्

w	ł	•	0	0.*	14 :	1	0	1	E	1 111	1 *	1	0	9	•
93	98	74	964	ص	a	3	8	y	w	6	b	9	90	99	92
3	3	9	9	2	ع	3	3	9	٩	2	2	a	3	9	9

रात्रीपदं रवंपदमाधवः रवंगजाननोगोपित शून्यपादं

3	0	w	1	1		•	•	0	0	•	1	1	1	0	Ü
98	94	984	9	2	a	8	8	w	و	4	9	90	99	92	93
2	2	3	3	9	9	a	٦.	3	3	9.	9	2	2	3	3 "

मीष्मतीं ज्येष्टाषादयोः सूर्व्यादिवारेषु मुहूर्तरचनाबोध्याः त्र्यत्रिमकोष्टेः त्र्यर्केश्वन्यभिति

1,149		×,	वर्कश	न्यंच	कुष	शोर्	गपर	दस्बह	इरिवि	िष्शु	चापं	चश्र	येः	nt.	- Lie
0	0	1	1	0	0	w	0	1	1	1	1	0	0	1	1
9	2	3	8	8	ex	6	5	9	90	99	92	93	98	94	96.
3	3	9	9	2	٦	3	3	9	9	2	2	3	3	9	9

रात्रीविधेशयुगमंयुगलहरियुगं युम्म क्रष्णंचश्रत्यम्

ı	1	ı	0	0	0	٥	١	ı	0	•	0	0	ì	1	0
2	3	ષ્ટ	6.6	es	9	6	5	90	97	92	93	98	14	964	9
٦	2	0	a	9	9	2	2	a	a	٩	9	2	2	a	3

सोमेचाप हयं नो नृहरिख्युगलं पीतवा साच श्रन्यम्

0	9	0	0	0	١	1	1	•	0	0	ı	1		1	. 0
3	8	3	ex	6	5	9	90	99	92	93	98	94	984	9	2
9	9	٩	2	or	a	9	9	2	2	3	3	9	9	2	2

(854)

चापहं हं निशायामजस्वपदमजश्वापपद्मेशपादम् ॥

6	8	6	6	ı	1	0	æ	ı	1	6	8	1	1,	1	ш ш
8	3	3	9	4	3	90	99	92	93	18	94	964	9	2	a
3	ed	9	9	2	2	ex	a	9	9	a	٦	a	જ	9	9

भौमेशून्येच्छण्गायुगगगनमजस्त्रीिशचापानिसिद्धिः

0	•	1	1	6	8	9	ı	ì	6	9	6	Ó	6	8	1
4	a	9	b	0	90	99	92	93	-98	94	964	9	n	à.	æ
٩	2	a	a	9	9	. 2	2	3	3	9	9	a.	a	OCK.	W

नकं युग्मंचश्र्न्यंयुगयुगलपदंश्रीखचापेच चक्री।।

6	0	0	6	0	6	0	w	1	•	6	6	6	0	ι	1
ex	v	ь	9	90	99	92	93	98	94	१ध	9	2	જ	8	ع
9	9	2	2	3	a	9	9	2	a	81	a	9	٩	2	٦

सीम्येश्रीविंघनाथोथहरि गए।पतिःपद्मनाभश्रपादं

1	6	8	6	6	1	ĺ	.6	8	6	6	1.	ι	1	l,	w
٥	b	9	90	99	92	93	98	94	964	9	2	જ	8	3	अ
3.	3	9	٩	2	a	वर	a	9	9	4	بع	a	a	9	و

तद्रात्रोसिद्धियमं हरिखगजमुखः रुष्णशून्ये रुष्णः

1	6	9	i i	ì	0	6	9	6	8	ı	ı	10	0	ı	1
6	9	,90	27	92	93	98	94	964	9	a	a	8	3	अ	9
2	2	a	3	9	9	2	2	a	ou.	9	9	2	2	at	an

गृहवेला च ऋ प्रभाविताम किंद्या किंद्रा किंद्रा के gitized by eGangotri

मुहूर्नीसंधुः

जीवे विष्णुः	खनापे गगन	मिजित्रगं श्रं	घियुग्मं नृसिंहः

1	1	•	6	6	0	11-	1	l	•	3	5	P	1	1 -	1
0	90	99	99	93	98	94	964	9	2	a	8	s,	ख	. 9	V
٩	9-	3	٦	3	3	7	٩,	3	2	8	3	9	9	2	a

रात्रीनोरवं मुकुंदो नहिच मुर रिपुः शंभुसूनुश्र्यविष्णुः

0	0	ı	1	~	0	1	ı	1	-	6	0	6	6	-	1
90	99	92	93	18	94	9 84	9	. ~	a	8	K	w	9	b	9
3	8	9	9	2	2	3	فغر	9	9	3	2	. 01	·a	9	9

शुकेयुग्मं मुरारिर्गगन युगम जो विधराजीथ गोपः

6	6	ı	(1)	1	0	0	P	1	1	6	6	5	8	1	1
99	92	93	98	94	984	9	2	a	8	y	હ્ય	v	c	9	90
2	2	3	3	٩	9	۹.	2	3	3	9	9	٦	. 2	a	3

रात्रीयुग्मगोपीपतियुगगगनः श्रीपतिः खंपदेशीः

5	8	1	1	1	١	6	8	•	1	ı	1	0	w	w	1
92	13	98	94	964	,	2	a	R	3	4	9	v	9	90	99
9	9	2	2	a	ar	9	1	3	٩	a	a	9	9	a	2

मंदेश्री युग्मलक्ष्मीः हरिनभ मृतिखेपदेखर्माखे

1	6	8	1	0	ı	1	•	3	3	0	.3	R	0	1	0
93	98	94	964	٩	a	व्य	8	y	a	9	U	9	90	99	92
a	a	9	9	2	a	a	3	9	9	٦	2	3	a	9	9

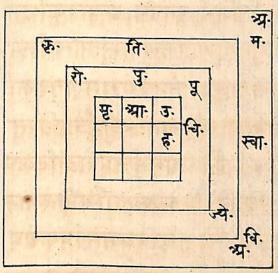
तन्नक्तं श्रीर्युगचोनभरवयुगहरी नेवगोविंदशून्यम्

l	6	0	i	1	•	0	6	3	ı	ı	ð	ts	1	l	0
98	94	984	9	٩	3	8	ध	ચ	9 .	v.	9	90	99	92	93
2	٦	a	ex	٩	9	٦	4	a	a	9	9	3.	2	a	व

दिविनिलिखितंयस्मान्छिवालिखितमुच्यते स्प्रतिनमानंषोड वाभक्तंरोद्रादिमानंभवति- स्पष्टंतुहोराइवनानेयम् रव्युदयस्या विधलादिति अयथनक्षत्रफलम् अनु मृ ह ध रे नि स्थितिः ज्ये - स्था-चि - स्वा-रो - पुनर्यात्रा - मू - पु - वि - इत्यादि - प्रावेशिकं ध्येयमिति बोध्यम् इतियात्रा ११ त्र्यथवास्तुनिर्माण म्१२ ना-रदः निर्माएोपत्तनयाम गृहादीनां समासतः क्षेत्रमादोपरीक्षेत गंधवर्णरसादिभिः श्वेताशस्तादिजेद्राणां रक्ताभूमिर्महीभुजां विद्यापीताचश्रद्वाएगं कृष्णान्येषांचिमिश्रिता मधुपुष्माम्कपि-शित गंधान्विमानुपूर्वकं मधुरंकटुकं तिक्तं कषायश्चरसाः अ-मात् अत्यंत वृद्धिदं नृशामीशानपा गुदक्षुवं - मनस्थक्षुपोय-त्र संतोषोजायते भुवि- तस्यांकार्यं गृहं संवे रितिगर्गादिसंमतं छत्रयंत्रपताकावा हास्यंस्त्री एगं चहवयते की डितं यंत्रवाहानां विद्धितन्न महाधनम् न्य्रथसाधारणगंधाः काश्मीरीचंदनामोद कर्परायुरुगंधिनी कमलोत्यलगंधाचजातीचंपकगंधिनी सरला मिल्लिका गंधा नागकेशर गंधिनी दिधिसीराज्य गंधाच गुभगंधयुताचया सर्वेषामेववर्णानां भूमिः साधार-

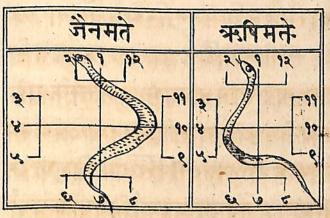
एगमता ॥ त्र्राथ भूमिजातयः ॥ ब्राह्मएभिवृतगंथा स्याद्रसगंधाचक्षत्रिया क्षारगंधाभवे हे उया ग्रुद्रावि द्वंधिनी क्षितिः ब्राह्मएीभूः कुरोपिता रारयुक्तानक्षत्रिया कुराकारायुतावेरया यूद्रासर्वनृएगयुता-श्वेतापीतातथारुष्णारक्तवणांसमिवता-स्थिरोदकाहढासिन्धा भूमिः सर्वसुखावहा जीतस्पर्जी समकालेतु वन्हिस्पर्शाहिमागमे वर्षासुचोभयस्पर्शासाशुभापरिकीर्तिता वित स्तिमात्रं विस्तारं निर्मायविवरं भुवि निक्षिपेत्ता मृदस्तस्मिस्तासुदि ष्टासुशोभनं हीनेहानिः समेसमं तथानिशादो कलातु पानीयेनप पूरयेत् पातर्दष्टे जलेवृद्धिः समःपंके व्रणेक्षयः अथात्रादीदुर्गारं भए। मु- उत्तराय ऐवामार्गकार्तिक श्राधिनेषु मृन्मयदुर्गस्तुसदा-३-६-९-१२ एतद्राशिकेखो तथाच गुरुशुक्रचंद्रमसामस्ते दु-गरिभोन-तथाभीमददोश सोमेर्दृष्टेरिपदुगरिभोन-तथा २।७ १२ रिक्ता ४।९।१४।३० एतास्तिथयो- बुधभोमवारोविड लाउ डलो विद्युक्तभानि राहुसंमुखदिका शुभाय राहुमुखम् मार्ग-पोष-मा- पूर्व- फा- चै- वे- दक्षिणेज्ये- त्या-श्रा-पश्चिमे भा-त्र्या- का उत्तरे त्र्या-श्र- ह- मृदु धुव ति-स्वा श- ध- एषुभे षु ३।७। ६ धनुः पूर्वार्धादिल मेष ष्टेपाप यहे ज्ञोभनयुक्ते द्रे-अथदुर्गचकमाह अथितरेखेवलयेचतुर्भुजे कार्जानवाहीश-दिशोभपंजरं को एग इविशं दिशिनिर्गमयथा-यसे तथा दुर्गविधा-नसिद्धये शालोदितं शालनिवेशनेवरं भमुक्तमाधेरहिता वहिः रवलाः आरंभऐ। मंगलमंदमध्य युग्दुर्गस्यभंगायविचित्यमत्रनु-

त्र्यारंभरवातेयदिमंगलोयमोत्र्यनिशय॥एवमेवनगरारंभेपिन गरनामभतोध्येयम्।।



प्रवेशनेभेमानवकी एर् स्तंभित भेदुर्गमं विनिर्गमभेश्वन्यनिवृत्त वृत्तंनिविष्टभेभवेत्त्र्यथराहुभ्रम माह वृषार्कतो वाम गत्याराहुभ्रम मः राहुश्वन्यविदिशिरवात्तःशं कुनिवेशःशुभःईशान्ये मुखेवाय व्येउदरं द्वनं नेर्कत्येतदामिदिक् पृदाकुश्वाजेनास्तुइशान्ये मु

रवं आमेच्या मुदरं वायव्यं पृदा कुशून्या दिक्



दुर्गपुरेची कसिमंडलेह-रे: ५ प्रपामरागारकयोः शिक्ति १२ मे: वेधादि सर्वत्रफटेति गो २ त्रयं जगाद वादायतुजैनदर्श नं यदेककाले निख्लाव

दिकियास्या हं द श्रुक अमरोक तातदा अजंगश्च्यं घटते वटं सदा प्रमारातो त्रेतिनतन्मतं धृतं भोगानुगंमं दिर रवातमा हतं कुता किंकः कश्चिदुवाचवेत्यपिनिर्प्रथपक्षाहतदंभ वानसो वदत्यवेश्ये तिकुलादिकं हरेः श्रष्टपदचक्रमाह

	अ ष्टपदम्													
5	मा आ का दे हि													
में से कि	\$.	मं	मं	r j	S.F.	र्श र	र्भ	र्रि.	श्रा					
(H)	2	मिं.	मंग	tion	AJ.	ग्र	₹.	वं	#					
/	मं	tim	افن	क्र	मं	₹.	.मं.	मं.	व					
11	मंगु	láv	क्रंग	राः	Į.	चं.	मं	बु.						
अता- श्रीः	å.	1h.	शः	4.	चं.	मं	र्गु	de de	मुर					
K	₹ <u>Б</u>	शः	₹.	गं	मं.	र्बु.	र्वे.	₹ħ,	4.					
核	1	₹.	चं.	मं	बु.	बृ.	₹ b ·	17	抻					
	₹.	चं-	मं	3 .	j.	375	37/	₹.	o ड ़ा					
वा-	事并	:11=	1	प	/	/	华	-1तर	ने.					

समीरमार्गाशपदांशपे-टकेचरत्यहिर्वासनया रमंदगः इत्याहकश्चित् किलवास्तुशास्त्रियन तेन दृष्टं अमणंतुदृक् श्वतेः चतुर्भुजांधिस्तु चतुर्भुजेषुरोद्रादिकेष त्र फटास्थितिःस्यात् दृतिप्रमाणंप्रकटंप्र वीणेरुदीरितंबासन यापुराणेः मासति-

थ्यादिकं यह संस्थाच गेहारंभ इव ग्रामनगरारंभेषु बोध्या अन् थयामस्यशुभाषाम्हानं स्वनामराशितः यस्यग्रामस्यराशि २।९।५।११ गः सशुभः स्रथ्यग्रामभात्सम् ७ मस्तके पृष्ठे ७ पदे ७ हिदि ७ मस्तके धनी पृष्ठ हीनः हिदिसुरवं पादेपर्यटनं ग्रामाछाभादि स्ववर्गमकचटादिकं यत्संरच्याकं हिगुणं क त्वा परवर्गाकसंरच्य यायुतं ६ तष्टंपुनः परवर्ग हिगुएं स्ववर्गाः कसंख्यायुतमष्टतष्टं काकिएयोभवंति यस्याधिकाग्रामस्यस् शुभः त्र्यथदात्यज्ञानम् जलांतं प्रस्तरांतं वा पुरुषांतमथापि-वा क्षेत्रं संशोध्यचो दृत्य दाल्यं सदनमार्भेत् यस्मिन्भागे सी-म्यागृहस्यतद्व्यमादिद्योत्तत्र पापायस्मिन्भागे तस्मिन्शल्यं

मुहूर्नासंधुः

विनिद्देश्यं स्मृतेष्टदेवतां प्रष्टुवचनस्याद्यमक्षरं गृही लातुततः शन् त्याश्रत्यं सम्यग्विचारयेत् अकचटतपशहयावर्णापूर्विदिम ध्यांताः शल्पकरा इहनान्ये

7. 7.	चक्रम्													
**	क-	च	टः	तः	4.	इाः	ह .	यः	वर्गाः					
युर्वः	श्रामे	रक्षिः	नैर्करव	पश्चि	थाय	उत्तरे	र्डशे	मध्ये	दिशः					
नरवाल्यं शा ह-	रपरशल्यं	नरदात्वं	नैर्ऋत्य वनः बाल्यं	विद्या-	दुषागार	धिपशाल्यं	गोरात्यं	नुकपाल	बाल्नेः					
शाहः	२ हर	2 84.	शाहर	शा हर	४ कर	bis or	शाहः	कचमश्म	हस्त					
मृत्युदं	मर्यं.	यहे वा मृत्युः	वालमृति	गृहिथोगः	दुःस्थ भ	निर्धन	गोना यः	कचमश्म २ हः कुलनाः	फलं					

रवन्यमानेयदारवातेपाषा
एांप्राप्यतेयदा तदापमृत्य
वेचास्थिकेशांगारेर्धनक्ष
यः स्पुटितासश्रात्याच
वात्मकारोहिएगितथादुरतःपरिवर्ज्याभूः कीर्ति
रायुर्धनक्षयः हस्तत्रया
दधस्ताश्रेच्छल्यंवेनात्र
दोषकृत् शुभं गोश्रंगः

पीतमंडूकः शंरवकच्छपमोक्तिकाः क्रिक्तिश्वमिश पाषाणाः अन्त्रास्तारत्नजातयः त्र्रांगारं येतुषं केशमस्थि शल्यां विचारयेत् स्य थिद्कसाधनं किपशीर्षप्रमाणेश्वप्रावाणोः पूरये हृदं रवातं ततु समं कला ततः प्राचीप्रसाधयेत् प्रासादेसदने लिदेकुं डे हारे विशेष्तः पतः दिङ् मूदेकुलना शः स्यानस्मात्सं साधये हिशः ध्रुवलं वक्ष रेखाया रेखांतः सो म्ययाम्यहरितो स्तः तन्मच्छ पुच्छ मुखतः पश्चिमपूर्वाभिधे विद्यात् त्र्र्यण्ड हितो स्तः तन्मच्छ पुच्छ मुखतः पश्चिमपूर्वाभिधे विद्यात् त्र्र्यण्ड हित्तारदे धर्म एको नितेष्ठ सहता हि १५०२ तिथ्यः स्त्रपानितेष्ठा यहते दुनागेः द १ युक्ता घने १० श्वापियुता विभक्त भूपाम्बित्ताः शोषितो हिष्डः त्र्यस्यार्थः स्त्र्यात्र नालां स्तर्या प्रतिष्ठ प्रतिष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ प्रतिष्ठ विष्ठ विष्र विष्ठ विष

सहमेलापकः सम्भवति तथाचेष्टभंरोहिणीतत्संख्या ४ एकोनि ता ३ अनेनिहितिथ्यो १५२ गुणिता ४५६ इष्टायो वृषः एतत्सरया ५ निरेका ४ अनेनेन्दुनागाः ८१ गुिंताः ३२४ अपनयोयोगः ७८० धने १७ र्युक्ताः ७९७ ऋस्यभूपाधिभा २१६ गः शेषं १४९ अस्य पिंडसंज्ञा- स्वेष्टायर्क्षभव्ः पिंडो दैर्घ्यह दिस्तृतिभवेत् विस्तृत्याल भ्यतेदेध्यं यथालाभं यथाक्रमम् परंचेतद्गृहांतरवर्तिगृहमानमेव व्यन्यथेदंपर्शशाला मुहूर्तमेवभवेत् दैर्घ्यं २४। विस्तृतिः ५ पिंडेष्टभक्तेशेष ५ त्र्यायो वृषाख्य- यतउक्तं उत्तममष्टाभ्यधिकह स्तरातं नृपगृहं पृथुत्वेन ऋष्टाष्ट्रो नाप्येवं पंचसपादानि देध्येए। या-स्तुनियोविस्तारः सएव चोछ्रायनिश्चयः शुभदः शालेकेषु गृहेघपि विस्ताराद्विग्रणितं देर्घ्यं चातुर्वर्षयासो हात्रिंशत्स्या चतुश्चतु ही नाः श्राषोडशादिति परंन्यून तरमती वहीनानाम् हस्तशतादिध क मुच्छित नेच्छंति व्यासात् पोडशभागः सर्वेषांभित्तिः इत्यादि वहुविधेदं सिद्धं अभी एविस्तृतिर्दे ध्यो परस्परं संगुएया एत ऐ शेन षमायः यथा १५ विस्तृतिः दैर्घ्य ३५ न्य्रनयोराहतिः ५२५ त्र्य-ष्टतष्टे शेष ५ वृषायः क्षेत्रफलं ५२५ अष्टगुशितं ४२०० सप्ति रातित हे रोषं १५ स्वाति भं निजभात् गृहभं वेद ४ हतं रीलतः ष्टं धन यहभानिजभं वेद ४ हतं शेलतष्टं व्ययः यथापूर्विक्त ना-मभात् श्रवुराधायाः सकाशाद्वहभंस्वाति २६ मितंवेदहर्न १४ सप्ततष्टं ६ दोषंधनं यहभानिजभं ३ वेदहतं १२ सप्ततष्टं ५ दोः पंच्ययः इदमेल सुने व्यापार प्राप्त स्यासम्मतम् विस्तारयणितं दे-

र्ध्य गृहक्षेत्रफलं भवेत् तत्युय ग्यसुभिर्भक्तं शेषमायोध्यजादिकं वा-स्तुफलम् खेटकर्पटकोटेषु इपः सिंहोगजःशुभः वापीकूपतडागादी गजोदेयोविचक्षएैः स्थासनेयोजयेत्सिंहं शयनेचेवकुंजरं वृषंभो-जनपात्रेचदद्याच्छत्रादिषुध्यजं सहानसेमिशालायां गृहेचाम्यु-पजीविनां धूम्पंदद्यात्तथाश्वानं यवनांत्यजयोर्गृहे खरोवे उया गृहे योज्यो ध्वांक्षंपक्षिपतिगृहे वृषसिंहगजंदद्यात्प्रसादेपुरमंदिरे वस्त्रजेधर्मशालायां कुंभेरतंभेध्वजेध्वजः गोगजे भू यहेचेव सा-धारएा यहे शुभे यंत्रे इारन्नेरथे सिंहे भां डागारे शुभोगनः धान्यां बु-स्नानगाश्वेभ शालायां वृषभः शुभः ध्वजेपराद्यंविप्राणां गजेसिं-हेप्युद्द्युरवं गजेश्रद्रस्ययाम्यास्यं वृषेपूर्वमुखंविशः ध्वजेचतु-र्दिस्तु हारं हरी पूर्वयमोत्तरे वृषेपूर्व गजेपूर्व दक्षिणे इतरे धूम्यध्वां क्षकानिरवदाः श्राह्मणानां ध्वजः क्षत्रियाणां ध्वजगजदपसिंहाः ध्व जिसहं गजा वैश्यस्य ध्वजिसही श्रूद्रस्य कर्क वृधिकमीनानां ध्वजायः मेषसिंहधनुषां वृषभायः तुलामिथुनकन्यानां गजा-यः वृषकन्यामृगाएगांसिंहायः शुभदः सूर्य्यदुर्वते नीचेदुःस्थेना यहे अस्य नादाः एता हदोचंद्रे तत्स्त्रीनादाः गुराबी हि शिसुखना वाः शुक्रेधननादाः कर्त्तुः चंद्रनक्षत्रेचपुरस्थिते गृहकर्त्तुर्गृहोस्थ-तिर्नचंद्रनक्षत्रे वास्तुभेचपृष्टगेखिनः चौरकतसंधिः पुरःपृष्टादि झानंच रुत्तिकादिसप्तभानि पूर्वे इत्यादिध्येयं- अथदारकत्य-म् यदुक्तं ब्रह्मशं भुना- यहायल ध्वन्न क्षेच यन न क्षेचचंद्रमाः रालाकासप्तके देयं कत्तिकारिकमे एाच वामद क्षिए। भागेतत्यश

स्तं शांतिकारकं त्राग्रेपृष्टेनदानव्यं यदीच्छेच्छ्रेयमात्मनः ऋक्षचंद्र श्र्यास्तोश्वत्रप्रेपृष्टेनशस्यते त्र्ययभ्रवादिज्ञानम् ध्रुवांकाः पूर्वे १ दक्षिणे २ पश्चिमे ४ उत्तरे ६ दिक्षुत्र्यं काङ्गेयाः यो द्वारोयस्मिन्दिशि कर्तुरिष्टस्तदंकायोज्याः यथापूर्वप्रत्यंगंको ५ सेक ६ ध्रुवादि गए नयाकांतनामाशाला- दिक्षुपूर्वादित इत्यादिनायद्भुवादिवेद्रय स-मागतं शालाश्रुवांकसंयोगः सेकोवेद्रमेत्युक्तदिशः संख्यांकलयेत् साचेत्संख्या १२ ११५ । ६ ११६ १९ ११ । ११ । १४ तदाव्यक्षरं नाम यदा २ १४ । ५ । ६ ११० । ३ ११३ तदाह्यक्षरं यदा ७ त-दाचत्रक्षरं

	ऋथधुवादीनांचकम्														
9	٦	a	8	ц	લ્	و	5								
भुव	धान्यः	जय-	नंदः	रवर.	कांतः	मनोरम	सु सुरवः	नामः							
इ. मु	प्तुः हाः	दः	प्र. दः	प-	प. पू.	द-पः	ष्ट्र. दः	द्वाराः							
9	90	99	12	93	98	94	984	0 20							
दुर्मुख	उम्रः	रिपुदः	वित्तद-	नादाः	श्रानंद.	विपुतः	विजयः	नामः							
उत्तः	£-3-	इ. उ.	पूर्वदेउ.	पः उः	यू-प-उ-	द-प-उः	सर्वदिः	हाः							

श्रिथितं नयभिर्युणितं त्र्यष्टभिर्भाजितं त्र्यायः ५ श्रास्मिन्तेव ७ तष्टेयारः ४ षद्भिर्युणितेनयभिर्भाजितं नयां राकोभवति त्र्यष्टभि गणितं १२ हा दश्मिर्भाजितं द्रव्यं ४ त्रिभिर्युणितं उप्रक्षिर्भाजितं अरुएं ७ त्र्यष्टभिर्युणितं भेस्तष्टे १५ भंत्र्यप्टभिर्युणितं त्र्यष्टाविंदा- तिनष्ट १८ योगः ग्रष्टिभिर्गणिते १२० रवसूर्थे भे के न्यायुः ११२ न्यायु प्यं पंचत्रे दोषं २ जलभयं इति सर्वबोध्यंवसिष्टः एकादशयवादू र्घ यावन् हात्रिशहस्तकं तावदायादिकं चित्यं तदू र्ध्व नेवचितयेत्

ई-श-ष-सह- धा-मेदाशऽशु-			क ५११२ ऽशुःया श्वाः बिडारुः
यरः छ.वः स्वाः उ-मृगमे १ ऽशुः	12 100 100	५३	चाप था दः सिंप कं ५८९
पक् ब भ म मूपक तुं ज वा	1 2	.प. स्वाः सर्पध९प-ऽशु	इ.५ स्वा. मे. श्वा.क.४५%

श्रथगहारंभेमासफलम् गृहसंस्थापनं सूर्य्ये मेष-स्थेश्वभदंभवेत् वृषस्थेध-नहिद्धःस्याविम्थुनेमरणं ध्रुव कर्कटशुभदंत्रोक्तंसं

हे भूत्य विवर्धनं कार्मुके तुमहा हानिः मकरस्थेधनागमः कन्यारोग तुलासीरव्यं वृधिकेधनवर्धनं कुंभेतुरत्नलाभस्यात् मीनेसद्मभया वहं पाषाए। ह्यादिगेहानिनिद्यसासेनकारयेत् तृण दारुगृहारंभे नालिकालियो। धनम् अत्रापिचातुर्मास्यो वर्जनीयएव अथगे-हारभः उ ३ रो.मृ. रे चि त्र्यनु श स्या ध ह ति एपु भे षु स्- मं विना १।४।९।८।१४।३० श्राभ्योविनाचरिन-ने लमेश्वमयुक्तेच २।६।११ पापेः १।४।७।१०।९।५ शुभेः ६ ।१२ पापामृत्युदाभवंति गृहारंभेतिथिफलम् हितीया पंचमी पूर्णा नृतीया पष्टिकातथा सप्तमी हादशीचेय दशम्येकाद वीतथा त्रयोदशी पंचदशी तिथयः स्युः शुभावहाः दारि द्वे प्र-तिपत्क्यो चतुर्थी धनहारिएी। ऋष्टम्युच्चाटनंचेव नवमी शस्त्र चातिनी दर्शराजभयं क्षेयं भूतेदारविनाशनम् श्रथवारफलम्।। सूर्यागारकवारांशा वेश्वानरभयप्रदाः इतर ग्रहवारांशा सर्वकामार्थ सिदिदाः श्रय वृषभचकं

त्र्यथवार्क धिष्णादश्वेः ५ रुद्रेः ११ दिभिः १० रुक्तं स्वसत्सत् गृहे का प्रविचारः नूतनेनूतनंजी

शीर्ष	श्र <u>म</u> पाद	प्ट-पादे	पृष्टे	द-कु सो	पुच्छे	या कु	खुरवे	स्थान
3	8	8	3	8	a	A	3	भानि
दाहः	श्नयं	स्थिर	श्रीः	लाभः	स्वामि ना शः	ने-	भी-डा	फलं

ऐजि जी ऐन्तिनंच शुभदम् स्यन्य वेश्मिस्थितं दारु नेवान्यस्मि न्य योजयेत् नतत्रवसतेकर्त्तावसन्निपनजीवति इधिकालोष्टपाः षाएां मृत्तिका जीर्एा मायसं तृ एां पत्रं बुधैर्न व्यामेष यहे मार्गा यन्य तरस्थानास्थित चृक्षसपूज्य प्रार्थयेत्यानीहभूतानिवसंतितानिव लिंगृहीत्वाविधिवत्पयुक्तं त्र्यन्यत्रवासंपरिकल्पयंतु क्षमंतुतान्यद्य नमोक्तुतेभ्यः दारूएगं निचानिंचा दिकंचदेशानुसारात् अप्रविश-लास्थापनं त्राधोमुरेवेर्भेविदधातखातं शिला स्तथेवोर्ध्वसुखेश्वप हं तिर्घ्य ड्यु खेर्दारकपाटयानं गृहप्रवेशो मृदु भिर्धु वैश्व स्त्रधोमु-रवेश्वनक्षत्रेः कर्तव्यं श्मिशोधनं मृदुधुवेः शुभं कुडमित्युक्तंविश्व कर्मणा सूत्रशंकु शिलान्यासादिकान् कुर्य्यात् स्त्रथरवननविधिः प्रजापूर्वकं श्रत्रास्थिता भूमिसुरादिनागा भूतानिचान्यत्रसमा श्र यंतुगृहं करोम्यत्र भवत्यसादात्सु खंसमेधेह मितीर्घ्यरवन्यात्ग एोशादीन्संपूज्य कलशस्थापनांतं लोहदंडंचसंपूज्यं भेरवंतिह क्मालंच पृथिवीं वास्तुंच ओं दिवोनामासीति मंत्रेए। लोहदंडं प्रपू जियता शिवंध्यायन् बलेनलोहदंडेनिन्यनेत् यावदंगुलंबिशति तावरपुरुषं स्थितिः तंचदं डंलोहितवरश्र छन्नं ब्राह्मणायददेत् स्वन

नफलं द्वीरः खनेर्विनादाः स्यात्मातृपित्रोश्चपृष्टके स्त्री पुत्रनादाःपुच्छे तु गात्रेपुत्रविनाशनं कुक्षोसर्वसमृद्धिस्या इनधान्यसुनागमः इदम-पिवामकुक्षी उर्ध्वभागत्रयं कलाह्यधोभागद्वयंतथामध्येनाभिविजा नीयादितिमाहपरादारः यदावामपार्श्वेनपूर्विशिरः शेतेतदापश्चि मेपुच्छं दक्षिएोकोडं उत्तरेपृष्टंबोध्यं २४।२३।१६।१२ विप्रादी-ना शकुमान स्वरादियुतं पूजितंचप्रशस्त इक्षोद्भवंकुर्यात्सूत्रनि-पातं मध्यांगुल्याथवाप्रदेशिन्या विप्रः शीर्षक्षत्रोवक्षः वेरयश्चीरुं श्रद्रशादी स्पृष्ट्वा प्रदक्षिणां रेखां कुर्य्यात् सूत्र छेदेमृतिः कीलेवाङ-मुख्याधिपीडनं गृहे दारथपतीनांचस्मृतिलोपेधनक्षयः कुंभेक रच्युतेमृत्यु रुपसर्गोपवर्जिते स्कंधभ्रष्टे शिरोरोगी भम्नेदुवेचने वधः श्रथशिलान्यासः नंदाभद्राजयारिक्ता पूर्णाः सङ्गकाः शि लाः पूजापूर्वक स्थापनीयाः ताश्च एकविंदीश्चतृहिनिर्धार्धाहि स्तरोचक विमादीनादेवाबुगेहे परितोजिनां गुष्टाः पमुन्नताः वि-स्तारेकीयुलाः केचिछिंगेबुनिविरिक्तकाः सर्वेषिध्यासप्तमृदा स्नापयिलाचे येच्यताः त्र्यथवास्तुस्थानं - वास्तुची शानतोविष्रे क्षत्रादाविभितोन्यसेत्। सूत्रभिति शिलान्यासं रत्तं भस्यारोप-णच पूर्वदिक्षिए। योर्मध्ये कुर्यादित्याह काश्यपः केचिदामे खेलां भस्थापनमाहुः वराहस्तु दक्षिएापूर्वे कोरोक्तवापूजान्यसत्पथ मां शेषाः पदाक्षिएोन केचित् श्राभिर्वसतिकाष्टेषु तिहाशिष्यमं सदान्यसेत्काष्ट्रमयंस्तंभं काष्ट्रकृत्येष्ययंविधिः छत्रस्रगांधयुत रुतधूपिलेपन समुन्थाप्य स्तंभस्तथैव कार्योद्दारो खुायः प्रय

त्नेन-स्तंभोपरियदिउठ्ककाक युधादि पक्षिएः व्यालादयश्चिति-ष्टंति तदाकर्तुर्नशोभनं तस्मात्स्तंभोपरि छत्रं शाखां फलवतीतुवा धारयेदथवा वरन्नं ब्रधे रत्नादिनिक्षिपेत् - अिंदिनिर्न्यूहविनिर्गमा चाश्वतु देशये यह भूष ए। य स्यायादिक तेषु नियंतनीयं यनोनते वास्तुपरिग्रहाः स्युः अथांगुलमानं षडशतेराजिमहांगुलभवेत्स माक्षतिवेष्गवमेशमंगुलं यवोदरेरष्ट्रभिरत्रतत्कंरोजिनांगुलेस्ते-श्वधनुश्वनुष्करम् प्रासादकुं डादिक पीठवेदिका दिजालयेषु स्मृ तमाजमंगुलं जलाशयारामियधो नृपालयें निधोहितं वैष्णवमन्य दन्यगम् अथरवमपरीक्षएां यत्रगृहंनगरं वाविधातुमिष्यते त-त्रकलशंस्थाप्य स्नातः शुचिर्निराहारः पूजयेत्कनके महीं शय-नं तत्रकुर्वीत शुभ स्वमेशुभं बदेत् पांत्राबोरेएक तांनीता निरीक्षेदं तरिक्षगाः अधोमध्योर्ध्यगानृशांगति तुल्यफलपदाः अथवे धमाह नीचस्थाश्चातरेपूर्व तुंगस्थापरदक्षिणे तिर्चक्थाः सर्वदि ग्भागे पीड्यंते पुरवासिनः उच्चस्थंहिचनीचस्थं सदायाम्य एह त्य जेत् विषाभिवज्ञव होध्यंद क्षिए। स्यानवं गृहं कोए॥ येचान्यगे-हस्य को एनि शुभद्भवेत् तथा यहार्धसंलम् को एनि शुभद्भवेत् को-एवंशस्यको ऐरेच को एरात्को एरंतरं पुनः तत्को एरवे धर्ग रोह च्या-धिदारिद्यकारकं समोचकोएाभूमिस्याः कोएावेधगतायहाः पीन ड्यंतेसर्विदिग्भागे विस्तृते हिंगु एगानिह पूर्वीत्तरेनी चगता उच्चस्था दक्षिए।।परे तिर्यग्गताः सर्वदिशं भागेपीडावहा यहाः दक्षिए।यो-जनं तुंगं पश्चिमेचार्थयोजनं तदर्धमुत्तरेनीचंतदर्धपूर्वदिास्थितं

एन देधं नृपाएगंच यहाणांकथितं दिजाः विदेशेषणहिजातीनां प्रमा एां कथयाम्यतः गजोधां क्षोध्वजोधूम्य उच्चस्थं पात्यंतिहिश्वावृषो रा रा भोनीच सिंहः सर्वत्रगं हरेन् प्राच्यांनीचे विप्रगेहं रातंवेदंडा न्बिद्धेदुत्तरस्यांसपादं पश्चात्तुंगेद्देशतेसार्थएवं याम्येक्षत्रस्य दिनि घांविशोध्वे प्राग्वेधोदशदंडः स्याच्छ तयाम्ये तुपश्चिमे दंडविंशति कः सीम्ये रवदस्त्राः शहू सद्मनां दक्षि एतो हि विषये भवनवरेर्थक्ष योगनादोषः सुतमरएांप्रेष्यत्वं भवतिसदात्रवासितुः पुंसः अयोप वेधः प्राच्यां पिप्पलराजवृक्षविवरा याम्ये मठामं दिरं पूक्षः कंठ कि निवक्पगहना विध्यंतिवारांतरे वारुएयामिषपुष्करं मटवटी घो-रास्यकं चोत्तरे खातोदंवरकोलुकाः फलदुमाने शायमशानादिकाः न्यासनः किलकंव को ग्रिभयदः क्षीर्यर्थना श्राप्रदः पुत्र्यार्त्येफिलिनः शिवादिसदनं गेहाधिपार्तिप्रदं वाएावेधात्यं नवेधः मार्गेत्तरे न-दीपारे पिनवेधः शुभवृक्षाः नारिंग प्रगफनसामलदाडिमीभिर्जा तीसराग रातपत्रिक मिल्लका यन्नालिकेरमधुरेष्ठफलद्रुमास्ते मार्गेपिहर्षजनकाः कि मुतो गृहेषु विल्वादा डिमके दारेर्मध्यगेरिप हर्षजनकाः किमुतो यहेषु बिल्वदाडिमके बारेर्म ध्या रिपनवेधः या-थ कस्यहरतेना यादि स्माभिहरत्तप्रमा ऐन ज्ये घपत्नी करे एाचा ज्येष्ट पुत्रकरेणापि कर्मकारकरेएावा ग्रानामिकांतंहरतंस्यादूर्धवाहोः रारां राकः अयभूमिसुप्तज्ञानं प्रद्योतनात्यंचनगांक सूर्यनवेंडष ड्विंशमितानिभानि ५।७।९।१२।१९।२६ महीप्रसुप्तातुतदां श्रुन्नं तडागक्षपादिगृहंनक्षयति त्राश्रुशहोर्म् रवपुच्छादिज्ञानं-

मनांनरेए। देवालये गेहिवधी जलाइाये राहोर्मु खंडां भुदिशोविलो-मनः मीनार्क सिंहार्क मुगार्क तारिभेने रवाते विदिवपृष्ट गता शुभाः ई द्याननः सर्पतिकाल सर्पो विहाय सृष्टिं गण ये द्विदिक्षु दोषास्यवा-स्तोर्मु रवमध्य पुच्छं त्रयंपरित्य ज्य रवने द्युवं फलानि पूर्वोक्तानिः

457	पादाण प्र- राश्र	श्रा
	मु: मु:	
3-	. गृहः	₹.
	मु.	मु.
था-	=16100 से अग्रेशी	नैः

	हा	रविचार	Ţ	
g .	द -	प-	3-	दिः
92	्य व्य	399	9 200	राइयः

अथदास्यानंनवभागंगृहं कला पंचभागंतु दक्षिणेत्रिभागंवामतस्त्यत्कादोषंद्वारमक-

ल्पयेत् गृहस्यदेध्येनवधाविभक्ते पूर्वादितो रामषड्थवाऐ १।६। १।५ ह्यरंतु सच्छुभदंविभागे सर्वत्रतुर्ये मुनयो वदंति पूर्वित्रभागो परिदक्षिऐषद् पश्चिमोत्तरे पंचैव ॥

र्ड.	151115 A. 6130133	श्या-
3-	यु- पु- देवालयः यु- पु-	ē.
थाः	श्राप क लाजाह	ने-
457	Jo133135 A. AICIE	श्र्याः
उ-	मु- जस्त्रादाय:	ı.
था-	शशह प ४।५।६	斗.

		भाग	गिदि	रु हा	रफ	लम्		
it the	17:महा	Startiff.	स्प्रह्मा.	:45	治太	お京	孙舟	300
丹好	में धन.	भीति	antife.	44.	华州市	ALC.	A. Har.	
पुत्रहाति.	मुझ.	安安	समः	the state of	the fite of	(C)	部等	AL AL
が見ば	िस्सित्.	ह्यानः	司马	法地址	**	भेष:	44	水粉

मुहूर्तसिंधुः

	द्वारचक्रं	4
B	उपरि	राज्यम्
r	कोएो	उद्देगः
E .	शाखा	लक्मीः
R	श्र्यभः	श्रियम्
.3	म	मृत्युः

हारस्योपश्यि हारं दारस्यान्यस्य स-म्मुखे व्ययदंतत्तदान्य च न कर्तव्यं शु मेक्षिभिः

	दे	हसीच	कम		
बिरः	कोणे	<u> चाखा</u>	देव	मध्य	¢ ;
स्भी	उद्दास	र सोख्य	मृः	साः	भानि

	गृह	भागच	कम्								
ई देवताः	सर्वयसु	्पू- स्नान	मंथनः	पाक औ			ex.	क्षारं			
औषधी				घृत ।			ed	मिष्टं			
उ-भांडागार				शयन द-			d	शिला		45	计
मेथुन		ओक्ट		पुरीष-		pr	ed	क्तारे	,,	10	رنوا
वा धान्य	रोदन	भोजन प-	वि द्याः	शस्त्र-भू.		क्रोजनम्		स्वादु	7	si .	10
गृहमध्ये	रक्प वि	चारः	गृहस्थि	ति:१००		प्र	.ea/	जल	ब्राह्मि	范	نه روا
18- AT	3-	ऋ	· >	7	1	186	ex	ना शः	WT as		
्रेबिह	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	₹1:\	r-X			ex	स्वादु		惊	का नि
उ- सुरव	श्रयंताम	स्त्री व	(A·)				8	रषंड जल			
शश्रुपीडा या-		यहपति	₹.4	I.X			8	स्वादु			
	।ता२००		युः१००	1	7	015	711	चा ग	il de	marie .	चिता
IK /			~	रथाः	घ	शुके	लमग	ना उ	रापन	(2)	11771
15.	A	·ff.	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	र् शने	T	म्बाचे	लाभ	गेवार	28-F	याय-	किचि-
3. 7	X	X	·16.12				7.0	देको		100	
4 -				र्य	6	घूना	वर्थ	दक्गा	4 48	1314	थाग्न

हो गृहं अब्दांतः परहस्तस्थं कुर्याचेद्दणिपोवली पु ष्यध्रवेदुहरिसार्पजलेसजी वेस्तदासरेणच छतं सु तराज्यदंस्यात् तहीवाश्वितक्ष वसुपादिगादीवेः सशुकेष

तस्यचकतं धनधान्यदंस्यात् सारेःकरेज्यांत्यमघां बुमूलैः को जेन्हिवेस्माभिसुनार्तिदंस्यान् सङ्गेः कदास्नार्य मतक्ष हस्ते इसि व वारेसुंखपुत्रदंस्यात् अजेकपादहिर्बुध्यदाकमित्रानिलांतकेः समंदेमंदवारेस्याद्रक्षोभूतयुतंगृहं अथदुष्यनिर्माणं- अवन्रये श्विनीपुष्ये उनुराधारोहिए। मृगे हस्तत्रये पुनर्भत्ये न्युत्तरेपदृवेश्म सत् अथगेहोपकरणं पूर भार आर रोर पुष्प उन्तर अधिरएषु भेर षुस्थिरलमे शुभवासरेसत्तिथोसत् गृहस्य इष्टिकापातनं चयनं सुधालेपंच लघु- धुव-ज्ये- रे- मृ- श्र- एषु भेषु दा-र- वारयोः स्थि रलमे अभलमसतिथी अथिवन कर्म ह-चि-स्वा-अनु-रे-मृ ऋथि अ ध श पुरो ती प्रषा एषु भेषु १।९।११ तिथिषु शुभवासरे पुलमे तत्रापि वराह शार्दूल शिवा पृदाक वायधा भि धोत्क्क कपोत वायसाः शरोणगोधादिबकादिपत्रिएो। विचित्रि तानो रारणेशुभावहाः यहेनरामायणभारतावहं चित्रं रूपाएा वह मिद्र जालवत् शिलोचया रएयमयंयदासुरं भीष्मं कृता कं-दनकलनंबरं- एतदपि मठपासादादिषु ग्टहमंदिरे चशुभ-द - अथयहां गए। शुभवृक्षाः पुन्नागश्चंपको शोकः पि प्यलीदाडि-मी रामी बकुलिसलको द्राक्षापिचुमंदो मरोजपा नारिकरंतथा जाती पाटला गेहमिक्किका मिक्का पूगबंधूकाः पनसः सरसीरु-ह एते यहां गणे वृक्षाः त्यारोप्या मंगलपदाः अथयहां गए। इश भ बृक्षाः मातुलुंगंरमुहीरंभा हरिद्राच मुनिद्रुमः एते दुःखपदा गेहे संजाता रोपिता च्यपि न्यथ गेहात्यतिदिशं वृक्षारोपः न्यत्रोधंरो-

पयेत्राच्यामवाच्यांचाप्युदुंबरं उद्दिशिच कर्क ध्रं प्रतीच्यां कु जराश नं वेधस्तु पूर्वस्थिते पिष्पले बोध्यः श्रथ देवालयमगद्यारंभः गृ-हारंभोक्तनक्षत्रेमंटं कुर्यानु साधिभेः सर्वदेवालयं तेस्तेःपुनर्भेः श्रवणानितेः अथजेनालये प्रसाद्री णामारंभः पूर्वाद्रीभरणी पुष्ये रोहिएयांचास्थरोदये शुभाहे जैनगेहस्य प्रासादर्यः कृताः शुभाः श्रथ पुरमामदुर्गादीनांनिर्माएाम् प्राकारपत्तन ग्रामनिर्मि तो सूत्र साधनं प्रवास्त्रस्याच्छुभेकाले गेहारंभोक्त भादिषु त्रयथात्र विदोषः पर्वतोपरिसिंहायः श्रेष्टः श्रंबुवृते गजायः श्रवनिगद्धरे वृपायः ध्वजः सर्वत्रशुभः व्ययोना अपरेपिशुभाः प्राकार पूर्गेह भ कर्तृतारयोः सभाजनं दो यहविह छोकयेत् अथप्रतोष्ठिकार चनम् स्वाः ज्ये पुः मृदुः क्षिप्रचर एषु भेषु स्थिरलमेशुभयुकें-द्रे र चं जी शु वारेषु सतिथी बत्से पुरोगे पृष्ठगतेचप्रतोठी रचनश्रेष्ठं नराहीचंद्रेच संमुखं प्रतोकी कृतिचेकित दायिनी ।।

न्यदुर्ग पुर्ध्यो राहुचंद्रवत्सान् विचारणी या तथा भमिषन विचार्य त्र्य पुरवासिन्म् ३।२।१०।११।१ एतद्राशिगुरबो पोषादिषद्गे मार्ग-त्र्याधनयोवी वृश्चिकसं-कांतो वा सिंह भिन्न गुरो त्र्यस्तवक नीच रहिते मलक्षय मासहीने तथा शुक्रचंद्र योः सबलयोः तथा दुष्ट्योगभद्राकरणं रिका शन्मं बुधाः वाराः उग्रमिश्वः -

रविभान	प्रतो ली	चकम्-									
र भे. अमध्य रश्चः											
श्रभ:	२७ श्रमः	१३ शुभः									
३ <u>१</u>	१६ शुभः	<u>ऽश्र</u> भः									
70	त्सचक	म									
डाजाट	पू यत्स	6100100									
वत्स		वत्स									
श्राप्ता	बत्स	921912									

स्वाः दारुण एतानिवर्जियतास्थिरलये शुभेके न्द्रेपापैः ३।६।१० ११। जीवे ४ चंद्रे १०।२ ग्राम पुरकरणं शुभमाहुः वत्सचकशुद्धीच तथा ग्राम पुरकर्तुर्द्शेमे सबले स्ति यदात्र प्रतोली विधीयते पूर्वी-

क्तभीविधेया हारादिप्रपंचस्तु विनेवशुद्धिं वि पुरमामेवर्

गृहव	त्त चक्रम्	न्यथेषां विवेकः शालपुरे
3	सुरवम्	चाष्ट्रिभागभेदो दिग्भाग
2	पापं कष्टं	भेदोमठमंदिरादो भेदापं
8	धन	
3	श्रायः	डत्रामुरधामिधीरेस्न्य
3	रुक्	अवाहादशवत्सचके-गृ
3	सुरवम्	हभेदाः मृन्मयं। हर्म्यः
2	धैर्य	
8	दारिद्यम्	पर्ण कुटं ३ त्रया एगा मे क
2	भयं	धा एव करणं तथापिभेद
2	मरागम्	हर्म्य सहचंद्री संमुखी व

विभात्-	34	भाभ पर	तयकम्
कः शालपुरे	3	मस्त	सुखम्
भेदो दिग्भाग	8	श्च-पदो	उद्दासः
देरादी भेदापं	8	पृ -पदो	स्थेर्यम्
ग्निधीरे रन्य	a	पृष्टे	लक्ष्मीः
वित्सचके-गृ	8	वा-कुक्षी	भयंम्
मयं। हर्म्य	8	द-कुक्षी	धनम्-
अया एामेक	a	पुच्छे	भयम्
णं तथापिभेदः	2	नसि	मृत्युः
द्रीसंमुखीय	10000	र्एाकुटे	

विलोकनीयः मृन्ययेपिय-द्रोनिविलोकनीयः राहुस्तुविलोकनीयः इय मेव प्रपात्र्याश्रम हृष्टमंदुरादिषु सर्वविलोक्यं केचिहारविचारं दे वालयेनेच्छंति द्वतिवास्तुरचनं १२ अथगृहप्रवेशनं सचिहिविधः श्रपूर्वस्सपूर्वश्चनवे श्रपूर्वः यात्रादिनिवृत्तो सपूर्वः नारदः श्रथ सोम्यायने कार्य नववेशमप्रवेशनं विधायपूर्व दिवसे वास्तुपूर्तां बन्तिकियाम् वास्तुपूर्ताम कलायः प्रविशेत्रवमंदिरे रोगानाना विधान्केशानश्रते सर्वसंकटान् श्रमपाटमन्छन्नमदत्त्विल

भोजनं गृहं नप्रविदेशिमान्विपदामापदं हितत् माघ- फा- वे-ज्ये श्याषाद पूर्वव्यं शे मुः रे चि श्य नु उ ३ रो एषु भेषु जन्मलय जन्मराशिभ्यामुपचयल,३।६।१०।११ स्थिरेरिका४।९।१४ ३० विनासूर्यभो-वन्हिवाणं चरलमंचविहाय चतुथ्यष्टिमशुद्धे न्यावश्यके चतुर्थ शुद्धे जन्मराशिजन्मलमाभ्याम एमराशीन पू-र्णातिथो पूर्वहारे नंदायांदक्षिएाहारे भद्रायांपश्चिमे जयाया मुत्तर हारे प्रवेशः शुभः श्रथप्रवेशविधिः कृताविप्रान्सजलकलशं चात्रतो वामतोर्कः स्नातः स्त्रग्वीविमल वसनो मुंगलेर्जन्यघोषः ध्या मेर्यत्नात्कथित राकुने द्वारमार्गणराजाहर्म्य पुष्पप्रकररुचि-रं तोरणाढ्यं विशेच भूरिपुष्पानिकरंसुतोरणं तोयपूर्णकलशो पशोभितं गंधपुष्प बलिपूजितामरं श्राह्मणध्वनियुतंविशेद्रुहम् पश्चात्कांचन रहप्यवरत्र कुसुमेः संपूजयेत् सादरं देवज्ञं सहिशी-ल्पिभिः सहगुरू-बंधूंस्तथान्यानि गत्वावेदमपुराण धर्मकथया सार्धेवसेत्सज्जनेः रात्रोधर्मविधाविशुद्धहृदयोनिद्रांनिषेवेदसो न्यन्यच वधूप्रवेशोनदिवाप्रशस्ताराजप्रवेशोननिशिप्रशस्तः दिवाचरात्रीच गृह प्रवेदाः सत्कीर्तिदः स्यात् त्रिविधप्रवेदाः श्रथ जीर्णगृहमवेदाः मार्ग- का श्रान्द्रमि ति स्वा धदानूतनोक्त मुहूर्तिपिप्रवेशः शुभः त्र्यावश्यके त्रास्तादिविचारोन त्र्यथप्रवेशेत्या-ज्याः चैत्रोमासः कुजाकींचरिक्तादग्धारत्वमामृतिः दुष्टचंद्रइमे त्याज्या नवगेह प्रवेशने- अथाभ्युद्यिककर्माणि- कन्यापुत्रवि वाहेच प्रवेशेनववेशमिन नामकर्माणिबालानां चूडाकर्मादिकेतथा

सीमंतो नयने चेव प्रवादि मुखदर्शने नांदी मुखंपितृगणं पूजये- व्ययतो गृही अथगृह प्रतिष्ठा मु- मृ-रे-चि-अनु-उ-३

-31	धर	विभ	गत्	मवेः	रोकुं	भच	क्र
7	8	8	8	8	8	a	a
अभिरा	उह स	लाभ:	1/4	किल	नाशः	स्थेर्य	型

रो-ह- अभि अभि स्वा-पू-श्रधाः मू- एषुभेषु पास्त्वर्चनं भूतवितंचकारये-त् लमात् १।४।७।१०।९।५ सुभैः ६।३।११ पापेः अथदेवारामजलाश

यमतिष्ठा मृत्रे चित्र अनु हत् अधि ति अभि स्वाः पूर श्र भ इाउ ३ रो एषु मेषु रिक्तां ४।९।१४ विनाभीमं विनाउत्तराय-णे जीव चंद्र शुक्रे हंइयेलमेशुक्कपक्षे यस्यदेवस्य प्रतिष्ठा कर्तव्या तत्त्वामिक निथी भगरेषु मुहूर्तिगास्थिर लग्ने सिहेसूर्यप्रतिष्टा कुं-भे अस्ताकन्यायां विष्फ : मिथुने शिवः हिस्यभावेदेच्याः चरेयोगिनी मभूतयः स्थिरलमे सर्वेषां प्रतिष्टा कार्या पुष्पे ग्रहाणां गणेशयदा सर्प भूतादयः रेवत्यां जैन धर्मस्यश्रवणे प्रतिष्टा कार्या अथपु-र श्रामप्रवेशः मु नि अनु स्वाउ ६ रो चि रे ध दा एषुभेषु सूर भीर विना रिक्तां विना त्र्यथ जितस्य शत्रो पुर प्रवेशः विशा रवा रुतिका पूभो तराषाढाभिषेतथा वानीवार्क जितस्यारे विज-यी नगरं विद्रोत् याचानिवृत्तो यहमवेदाः षष्ट्यष्टमी विष्फृदिना निरिक्तांविहाय ६।६।१२।४।९।१४ चित्रोत्तररोहि लींचमृगां त्य में ने दानि बित्सितेज्य निवृत्यगेहं प्रविद्येत्प्रयाणात् अथ गुणगु णार्जनं वसु पुनर्वसु पूर्व मुजंगमः करनिशाकरशंकर देवतेः सह-रि शक्पतिभिः सहवित्तयागुणार्जनमेभिरभिप्सितम् अयथा

अविदोषः यदिइ-मुखं यह द्वारं तदारक्षे गहं विदोत् दिवामवेदाः श्वभदः सुपुत्रपीत्राभिद्यध्येनिशिभारकरें होः बलेनमस्य ध्वजवास रस्य रात्रिंविना सूर्यतिथीचरात्रिं प्रवेदोदानी चीरभूतभयंतृएगग-रंतुसर्वदाविशेत् सर्वयहेर्विमुक्तं प्रवेशभं शस्य तेप्रयत्नेनकेश्चि त्सोम्यसमेतं शुभदं परिक्रीर्तितं मुनिभिः अयथ लग्नफलम् मेषे यानं धटेच्याधिर्धान्यहानिर्मृगेगृहे विद्यातां कर्कटेनादाः दोषल-मेषु शोभनं निंदिता अपिशुभां शमेता स्तोतिमेषमकराः सकु-लीराः कर्तुरोपचयगाश्चिवलमेराज्ञायः शुभफलाश्चभवातिच्या-धिहाधनहारीय वित्तदो बंधुना शास्त्र पुत्रहा शत्रुहा स्वीघः प्राण हा पिटकपदः सिद्धिदो धनदश्चीव व्ययदोजन्मराशितः प्रवेशल मस्यफलं जन्मराद्येः प्रकीर्तितं केचिद्वारेषु रिवमप्यादुः मासे-षु आवण मार्गशीर्षे शुभे त्याहु श्रेत्रं निंद्यमाहुः नक्षत्रेषिशिनी चशुभामाहुः केचिच्चंद्रं साधारणं कथयंति परमत्र नगरप्रवेशे प्रवेशे एवमेव यह प्रवेशेनु रविर्नि द्य एवचं द्रसाधारणः शनि र्निद्यफलं उभयन बोध्यः

		भावप	व्लं मृह	ग्रंभ प्र	वेशयोः		
₹.	चं-	भी	बें.	जी॰	शु-	श-	
विद्युद्धीः	जलभीः	श्रमिभीः	श्रारोग्यं	श्रायुः	निधिं	गृहभंगः	ġ
धनभीः	धनं	- नेत्ररुक्	धन	धनं	श्रीः	हानिः	ર
सुखं	सोभाग्यं	लामं	सुरवं	सुखं	वित्तं	धनं	. 9
मित्रवैरं	सुखं	राञ्जभीः	भोगः	स्थेर्य	स्थेर्य	वैरं	8
पुत्रपीडां	बुद्धि	विषभी	विद्या	पुत्रवृद्धि	पुत्रवृद्धि	पुत्रात्भीः	प
सुरवं	रात्रुभी	यशोवृद्धि	राञ्चनादाः	यदाः	मध्यः	राञ्चनाद्यः	ex
कांतावेरं	भोगं	भार्यानाश	सोभाग्य	निंद्य	स्त्रीलाभं	दारदोष:	9
मृतिं	मृत्युः	कुलक्षयः	श्रायास	कष्टं	कष्टं	भयं	h.
धर्मक्षयं	सीरव्यं	विद्यं	यदाः	तिद्धिः	अनं	श्रधर्म	9
मध्यः	लाभं	कर्मनाश	सन्मानं	राज्यं	राज्यं	ग्रून्यं	90
सुखं	लाभं	लाभं	द्रव्यं	धनं	भीः	श्रीः	99
क्षतिं	दारिद्यं	राजदंडं	<i>ज्ययः</i>	सिद्धिः	सद्धयः	व्यसनं	92

अहेर्बासों गकेराही केतोभूतादिभिर्यहे शेषं भावफलं होयं राहुके लो रिनारिवत् अथरवेर्बामादिधिचारः लमात् प्रागादितो दिक्षुद्वोद्दीरा-शीनियोजितो एकमेकंन्यसेत्कोणं सूर्यवामे बिचितयेत् रधातुना इनाद्दाया ६।५।६। ११ त्यंचस्वर्कास्थितकमात् पूर्वाशादि मुखं गेहं बिशेद्धामोभवेद्यतः अथनूतन नगर ग्राम प्रवेशः मान्फाः चैन् ज्ये-आः आः कार्ति-मार्ग-मासेषु शन्स्वा-ति-ध-उ-५ रो-श्र-हन्

मृ-रे-चि- अनु- एषु भेषु शुभयोगित थ्योभोमरहितवा सरे स्थिरलमे मीनवर्जितिहितनुषुचकेंद्रधीशुमेशुभयुते १।४।७।१०। ५।९ वृषेपापयुते ११ खलेद शेशबलेच चंद्रजीवबलाभ्यांच अथनाना विधं हस्ते धिन्यां वृषतुरं गमशाला निर्माण्यवेशी ज्येष्टायां गज स्यत्रभिनिच्छवए।योभीडागार पूर्वाषाढाया प्रपा पूर्वाफाल्युनीरो-हिएयोहटकरणवेशो न्यथगृहोपस्करं ति न्या न्याचि ह श्र-उ ३ रो एषुभेषु अतिजरालीवितानंच कोष्टादिकंतत्पास्थिति म-हानसस्थानं चुिक्छ जलस्थानं मधा-मुः हः तिः पूषाः उ-३ रो-पुः त्यनु.ध्रा.एषुभेषु शु-जी-सो. वासरे भद्रारिक्ताभिन्नतिथी जलो-दये जलस्थापनं गृहे शुभंभवति ऋथदेवालयमठयोर्निमाणामवेशे पुः अधिः हः शुः शुभाः त्याद्योविहायमंत्रेक्षुद्रदेवताश्रयस्तुः पूः ३ न्य्रा शुभः विशेषंचात्र उत्तरायणे गुरुशुकोदये शुक्कपक्षेचंद्रवरु उ-षा- म-जीवे एतद्रहिते मकरसिंहजीवेन तथारिका ४।९।१४ भ द्राकरणभितपदंदर्श ३० त्यन्काहः श्रीधःति स्त्रभि उ ३ रो पु रे न्यानु अध्यः एषु मेषु जी वु वारयोः पुंलमे रूष्णमूर्तिस्थापयेत् त्रथाशिवस्थापनं श्राभि श्रः त्या स्त्रश्ले ति एषु भेषु शः रःजी वा-सरे पूर्वीक कुयोगरहिते मिथुनल में भीमवारेच श्रथब्रह्मस्थापनं तिः श्रमि-रो-श्र-एषुमेषु र-जी-बु-वारे सुयोगे ११ कुंभल मे त्र्यथदेवी ग-एरथापनं मुन्याः मुन्थः हन एषुभेषु रजीः शन्वारे दिस्वभावल मे ३।६।९।१२ अथ रामक्रष्गादिगण हः स्वभिन्धः एषुभेषुशुभवाः रे पुला रामक प्राणान् अथरविस्थापनं पूषा रे अनु उ.फा.ए-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

षु भेषु रिववारे सिंहेलमे अय स्कंदगणेश शिवगए।स्थापनमा ह रे न्या पुःभा उभा एषुमेषु र शुः शा भी वारे मिथुन बृधिकलमे न्त्रथहनुमत्स्थापनमाह स्वाः श्रः त्र्या हः एषुमेषु रःचं भी जी वारे स्थिरलमे अनेव मरुद्र एास्यापि अथन्दिषगए। समिषिस्यिति भेषु श्राति एषु भेषु जीववासरे बंद्रवासरेच ९।१२ लग्ने शुभयुकेंद्रे न्य-थलोकपाल धनिषुधे कन्यालग्नेच स्प्रथयक्ष स्त्राः मू- एतयोर्नक्षत्र योः शु. श.रः वारेचरलग्रेच न्य्रथानुक्तदेवस्थापः मृन्थःति हः ए-षुभेषु चंद्रजीव वारयोः सिंहलमेजीव दृष्टे दोष रहित दिवसे अथि-तृगण भ-रो मु अ एषुभेषु र चं जी वारे रिकारहित ति थी वृश्चि-क रहितास्थिरलमे अथ जैन विंवः स्वान्यः श्रः धः श्राचि अश्वि एषु भेषु वुःश्वःचं रः वारे जया पूर्णा तिथ्योः चरल ये न्यथोपसंहारः त्र्यथ यस्यदेवस्य प्रतिष्ठाविधेया तस्यवारे तस्यभे तिन्थोलग्नेचशुभ योगयुती मासादिशुन्धा होमादिकंतु तत्तत्संप्रदायानुसारेएविधाय कर्तव्यम् देवनिवेशनं गृहनगरदुर्गग्रामनिवेशनंच उल्कापाते भू कंपे दुदिनेनियथेयं तथायोगिन्यां शूलेकाले पादो चंद्रेच पृष्ठगते प्र तोमहदनिष्टस्यात् तथायाचोदित शंकुना विलोमगा गृहप्रवेशादि षु शुभाः इतिवेदाप्रतिष्ठादि १३ मिश्रकहोल अथग्रहाणां जन्मतिथि वारक्षोनि सप्तमीभरणीसूर्ये चन्द्रेचित्रात्रयोदशी उषाभोमेचदशमी धनिष्ठानवमीबुधे जीवोत्तरफारुद्राज्येष्ठानवमी भागवे पोष्णाष्टमीश-निर्जातो पूर्णिमाराहुसंभवः श्रमावास्यां केतुजानोतिथिमं गृहजान-कं ग्रहजन्मे विवाहंच विद्याभ्यासं रूषिः किया प्रवेशंच प्रवासंच प्र-

मुहूर्तिसंधुः

तिष्टा व्रतिक्षणं वाणि ज्यंचिवादंचसेवादीनां क्रमेणच वर्जये त्सर्वकार्येषु जन्मर्सितिथिवर्जयेत् विवाहेपिचवैधव्यं प्रवासेमरणं ध्रुवं गृह प्रवेशेदाहः स्यात्सेवाभवितिनिष्कला चैत्यध्वंसप्रतिष्ठायां व्रतंधंसथदीक्षति विद्यारंभेच मूर्यबं कृषिश्चनिष्कलाभवेत् भ-स्म खंवरत्रकार्येषु मुनिभिः परिकीर्तितम् अस्यदेशाचारा द्वावस्था बोध्या अथगोचरोक्तमपिग्रहांगविभागभेदं वितन्यते

75	रविचक्रम्													
3	ex	9	9	9	9	9	9	y.	٩	9	9	9	9	
मस्तक	मु-स्व	इ.स्क	श-स्क	द्-बा	वा-वा	र्भ	गाह	हदय	南	उस	दः भा	ब-जा	दः वा	वा-पा
राज्यः	मिष्टभोज	गजगमी	गजगामीः	स्थानन्यु	स्थानन्युः	तस्कर	तस्कर	ऐश्वर्व	ज्यतो	परदार	गमन	गमन	इत्नायु	निर्धन

चंद्रचकम्												
ex	લ	ધ	a	a	·a	भा-						
उ रवे	पृष्ठे	हस्ती	गुर्व	पदी:	क्ष	अं						
हारि:	धर्म,	राजभी-	राजामा	स्थानभ	सर्वसु	फ.						

भोमचक्रम्												
3 3 3 2 2 2 4 2 2 4 11-												
मुखे	नेके	मसके	श-वा	द-वा-	कुं	हिरि	यु से	द्या	वा-पा	श्रं		
रोगः	धनं	यंशः	रोगः	गण क	हिका	धन-	रतिः	देशांतर	पर्यहन	फ		

	बुधचकम्						Park to the last t		जीव	चि	म्		. The state of the			
y	ч	y	ч	ч	a	9	भा	V	y	٩	9	લ	8	3	a	भाः
.ev	क्र	क्ष	सिंद	पादयोः	अं.	य स	ऋं.	मस्तके	इक ध	કા .	(कक्ष)	पाद	हस	弘	स्व	_{ऋं}
섹기	राज्य	ख्यं.	当.	नामः	쌀각.	넴紅	年.	-	क्सी	कें	船	पीडा	शमः	र स	सुरव	फ-

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

		भ्र	गुच	क्र	Ţ	7		शनिपाद-चक्रम्						
ч	3	R	9	3	2	8	भा-	३।७।१०	च-द्रेसित	ताम्रशदः	मध्यमः			
मस	मुखे	हिंदि	गही	उसे	जाउ	पाद	श्रं	918(199	च-द्रेसति	स्वर्णपादः	मध्यमः			
स्य न	바~	स्य.	स्ख	मृत्य	भीडा	पीडा	फ-	राषाष	चंद्रेसित	रीव्यवादः	शुभः			
श्रह	श्रथशभाशभयोगाः सर्यात्समम							४ ।८।१२	चद्रेसति	लोहपादः	ऽशुभः			

के ऋक्षे भरमयोगं विनिर्दिशेत् यत्कं चित्कियतेकर्मतत्सर्वनाशतां व्रजेत् भरमयोगः द्वीपहरी घटिकायामी द्वीयामी घटिकाधिकीवि जयोनामयोगोयं सर्वकार्याणि साधयेत् ईषत्संध्यामितकम्यिकं चिदुन्मित्र तारकः विजयोनामयोगोयं सर्वकार्याणिसाधयेत् विजययोगः मूलेर्क सिद्धिः श्रवएोचचंद्रे भोमोत्तरा भाद्रबुधेग्रिभा-नि देत्ये गुरो याम्य भृगोर्कि वा यु येगि ष्टिस देच भवंति सिहिः इ-ष्ट सिद्धियोगः मैने दितीयात्रितयोत्तराणि पंचम्य पित्र्यं करमूलस म षष्टीच ब्राह्मं नल विश्वकर्मा त्रयोदशीस्या द्यम कर्चृयोगः य-मकर्च्योगः सप्तमी गुरुपुष्येच एकादशीभृगुरेवती ऋष्टमीश्र-व एगो भानु र्नवमी चंद्र रोहि एगी मोमे प्रतिपदाचित्रा दितीयाचीत्त-राबुधे रानीचतुर्दशीस्वाति हंसयोगः शुभावहः हंसयोगः सार्धा ष्ट्रपादो शनिश्वकचन्द्रे एकादशेर्क युरुसप्तसोम्ये दशश्चभीमेन वदेहछायां भवेत्तदास्याः द्रवत्यर्थसिद्धिः त्र्यर्थसिद्धियोगः सून र्ये मघा विशारवाच चंद्रे मूलंच वासवे भरणी कृतिकाभोमे बुधे-चोत्तरफाश्विनी जीवचरेवतीचांद्रं भृगुजे स्वातिरोहिणी शनोश-

तिभषाहरतो यमदं ष्ट्रं विवर्जयेत् यमदं ष्ट्रयोगः हितीयापुष्यसं-योगे वृतीयाचोत्तरात्रये चतुर्थीहरूतसंयुक्ता ऋष्टमीचैवरोहिणी नवमीचमघाचित्रा दशमीरेवचा थिनी त्यार्द्रायुक्त चतुर्द्रयां यम दंडं विवर्जयेत् यात्रामलानं बहुकुष्टरोगं राज्याभिषेके नृपतिर्वि-नाशं यामे गृहे वास्तु कतंचयेन षएमासमध्ये मर ए। भवति -यमदंडयोगः भित्रारवो विश्ववाद्यीयुक्तं कुजेधनिष्टांतकजाय-ते बुधे जीवे श्रपापत्य पुरंदरः सीती सीरी सुकर्माच कुदुष्टयोगः मृत्युर्विवाहे गमनेचकष्ट क्षीरेचरोगं व्रतबंधहानि शोकंतुयाना गृहमर्थनात्रां भव्येषु रुत्येषु विवर्जनीयः कुदु ष्टयोगः रवी स्र-पापत्य निशा कराश्विनी कुजेमृगं सार्पिषुधोनियोजयेत् हस्ते गु-रुमैत्रिसितेच संयुते उषाशनी राक्षसयोग वर्जयेत् राक्षसयोगः श्रर्थमासो दशाहानि त्रिपक्षी दिवसा दशमा सषट् मंगलादीनाम तीचारः मकीर्तितः अतीचारगतेजीवे वकीभूते शनैश्वरे हाहा भूतं जगत्सवे राजानो युन्हकर्मकाः यन्नप्र ज्वितो वन्हि दहितने वकारयेत् यास्मिन्राशीगताः खेटाः फलंतन्नेवकारयेत् अतीचाः रगताः सीम्याः कूरावकव्यवास्थिताः दुर्गभंगं राष्ट्रभंगं प्रजामारी प्रवर्तते प्रतीचारग्रहाः भवेद्दिमूलं प्रतिपत्तिथीचेत्तथांतकं स्या च्छरसं ज्ञकायां कशानुभंस्यादसुसंज्ञकायां रोहिएयपिस्याद्व ह सङ्गकायां तथादशम्यां भुजगः प्रकीर्त्तितो ज्वाला मुर्गिमंचभवं तितारकाः एतिइयोगोद्भवकोनजीवेदसेत्तदोत्र्याटनतांप्रयाति ज्वालासुरवींनेव विदंतियेवे वृथाहिपंचांग धरानरास्ते अप्रथकि-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मिपवर्षीपयोगिक थ्यते तन्नजन्मवत्सरं स्त्रभीष्टवत्सरे शोध्यशे-षं गताब्दोभवित तन्नित्रधास्थापितं ५ १२ १६ पंचिद्वषड्भिर्गुणितं ५ चतुर्भक्तं तिस्मिञ्जन्मवारघटिपलादिकं योजयित्वावारेषु सप्त तष्टं तास्मिन्वारेघट्यादिकं वर्षप्रवेशस्तत्रलमं विवाहोक्तरीत्यानिः मायग्रहान्संस्थाप्य फलं श्रूयात् तत्रसोगम्यायगताब्दानामिष्ट सारणीनिदर्श्यते क्रमतः

	वर्षेष्टसारिए।																	
गः	9	2	3	8	ч	ex	9	c	9	90	99	92	93	98	94	964	90	ग
वाः	9	3	3	نع	a	v	9	3	S	y	4	9	2	3	R	Ex	9	था-
घ	14	30	80	3	90	33	80	R	36	34	40	Co	29	30	५२	2	23	घ
4	39	3	38	હ્ય	30	9	80	92	83	94	88	90	88	29	30	38	44	प-
वि	30	•	30	9	30	0	30	0	30	٥	30	0	30	0	30	0	30	वि
ग-	90	99	20	29	२२	23	28	२५	250	२७	२८	२९	30	39	32	33	38	
वा-	1	2	8	y	•	9	2	3	8	ч	9	9	2	R	y,	स्य	9	वा
घ-	30	48	90	28	89	برب	92	२८	82	45	98	30	84	9	984	32	vy	च ं
प-	20	S.E	30	9	33	8	384	v	39	90	83	93	४५	98	85	90	49	प
वि-	•	30	9	30	9	30	0	20	0	30	0	30	0	30	0	30	0	विन
ग-	34	38	30	35	39	80	89	४२	४३	88	४५	४६	80	४८	४९	५०	49	ग-
वा-	2	3	8	y	9	٩	2	3	y	छ्य	و	9	a	8.	y	Ex	9	याः
ध	a	90	38	89	y	29	384	५३	v	23	30	५४	9	24	80	48	29	घ
पा-	22	88	24	40	20	٥	39	2	38	Ex	30	9	80	92	83	94	38	4-
वि-	30	0.	30	0	30	0	30	0	30	0	30	9	30	0	30	0	30	वि

यत्संख्याको गता वृस्तत्को ष्टांकान्यथाकमं विकिख्य जन्मवारा दिकं योजयेत् ताजिके राइय धीशा होराद्रेष्काणा दीनां आधि पाः प्रवीक्ता एव हका ऐशिशाह देशा स्विराइयधिपारिशंशां शाधिपाथ्यभिनाः

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मुहूर्नसिंधुः

	हक्काएचकम्									त्रिराशिपाः								100							
मे	वृं	मि	좌	सिं	क.	गु-	한	धं	म-	. Fg.	मी-	रा-	मे	a .	मि	49	(सं	<u>Ş.</u>	₫.	į	द्	H-	.	मी	रा
90	90	90	90	90	90	90	90	90	90	90	90	124		١			•		3	•			,		
4	बु	ą.	शुः	र्ग-	रा	-पं-	मं	बुः	된-	A.	इा-	थाः	5-	श	K	र्थ	· fé	म्यं	الغن	H.	ज्ञ	मं	Har.	-E.	भा
20	20	20	20	20	20	20	20	20	1	20	,	श्रं		ই	તા	र्थ	שלי	7	E				2		711-
₹-	च	मं	ब्रे.	ą.	शु	श्	₹-	च	Ħ·	3.	<u>ā</u> .	-11.						178							-77
30	३०	30	३०	30	30	30	30	30	30	30	30	भं	ã.	चं	3	4	₹-	A	#	शु	1	म	a.	-बं	शाः
3	रा-	₹-	चं-	मं-	₹.	र्ब.	3	श-	₹-	चं	मं	भ			+									78	

	हद्दाचकम्												विषम त्रिंशांश सम					
मे	ર્યુ	मिः	क:	सि	क	<u>a</u> .	ર્યુ	धः	Ħ [*]	₹.	मी-	रा-	छ	क- मे-मिसिंग्तु-ध-		वृ- क-क वृ- म-मी-		
उ कं	् अः	3 tim	9 'मं	જ હિં	ورفط و	र्थ मं	ें मं	१२ म्	७ मंक	9 19	१२ ५५	न्त्रं म	ध्य		બ	शुक्रः		
ध्य शु	अ नि	अ म	उ कं	र शु	90	ं मुं	क्र	प श	ज्यं ए	थ शु	क में	% मं	q.	श्रीनैः	લ	बुधः		
७ कि उ	C Ji	ر اغوا	अ कुं	श	ر م	aj.	à.		ट इफ	9 र्व		자	ઘ	बृह-	ख	जीवः		
मं.	थ शु	वा	के वि	अ	फ मं-	3	प्र विकास	५ म	श	भ मं		अ	थ	ुबुधः	3	श्रानिः		
य	अ म	६१	४	थ	२ म	२ हा	ध्य	ट म	भ	भ	र श-	श्र- ना	દ્ય	शुकः	æ	कुज:		

तत्रलयेत्रहान्स्थाप्य पंचाधिकारीन्यासान्कुर्यात् जन्मलयपतिः श्र्यब्लयः पतिः भ्रुंथहाधिपः अत्रिराशिपतिः श्रदिवारिधभयः रात्रीचंन्द्रभयः ५एषु लन्यालोकीबलवाँश्यवर्षराट् तत्रमुंथानयनं गताब्देषुजन्मलयसंख्यां योज्य १२ तष्टे शेषराशो मुंथाताजिकदृष्टिस्तुः दृष्टिचकम्

9	u	3	99	8	90	9	v	स्थान
84	84	80	90	9,4	94	EU0	६५०	कला
मित्र	मिन	श्रर्धमित्र	श्रर्धमित्र	अंगिर	न्यरि	क्षेत	कत	फल.
मेलापक	मेलापक	श्रभा	श्रभा	ऋर	ऋर	कष्ट	कष्ट	नाम

ततोदशानयनं गताब्देषु स्वीयजन्मर्क्त संख्यां ह्युनांयोज्य ९ तष्टक मात्दशेशाः त्र्या-चं भी रा जी श कु के शु यो दि १६ ३० २१ ५४ ४८ ५७ ५१ २१ ६० गः ३६० योगिनीदशातुगता देखीयजन्मभ-संख्यां संयोज्य अष्ट व त वियुक्ते शेषं योगिन्यः मुंधिः धः भाः भु इ सि सूं न्यथपताकिचकम् प्रवेशाब्दं नवतष्टं शेषराशीजनम राशितश्चंद्रः षड्तष्टे शेषराशीविलोमं राहुः सरलंभीमः श्रन्येयहा श्वतुर्भिस्तष्टा यहा बोध्याः तत्ररिविदेशोकः भोमविद्धेकष्टं बुध विदेशमं जीवविदेशमं शुक्रविदेशमं शनिविद्वेभयं राहुकेतुभ्यां विद्धे महाभयं पताकिरचनाचरेखात्रयं पुर्वपरायतंस्या तन्मध्यत श्योत्तर याम्यभेदात् द्वाभ्यामुभाभ्यामिलितेथतिर्यक् शृंगेभवेद्वा-दशधापताकी मासफलम् दिनफलंच ताजिकेभ्योध्येयं अत्रा-पिपंचवर्गीत्य शालादिकंचियस्तरतो नालेखि॰ ऋथप्रक्षाविचा-रः तत्रादी सामान्यविचारः योभावः स्वामिसोम्याभ्यां दृष्टोयुक्तो यमेधते पापदृष्टयुतोनाशं मिश्रेरे वंभिनिर्दिशेत् किंच ग्रहसाव-ल्ये दृष्टराधिक्येच फलाधिक्यं तेषां निर्वलले दृष्टेर भावे फलाल्यल म् अयसिद्धासिद्धिविचारः प्रष्णलमेशुभग्रहे शुभवर्गशीषीद-ये शुभद्द कार्य्य सिध्यति पापग्रहे पापवर्गे पृष्टोदेवपापद्दे निसः ध्यति मिश्रेकष्टसिद्धिः मिश्रेवलाधिकेन सिद्धासिद्धि लग्नस्वा-मीलम् पर्यतिकार्येषः कार्यपरयतिलग्रेशः कार्यकार्यशोलम् लभेशः कार्यशं कार्यशोलभेशं प्रत्येकं चंद्र हष्टोषट्सुयोगेषु संयु ए्सिद्धिः लग्नेशोलयंनपरयतिकश्चिच्छुभग्रहःपरयतितदापंच

विशोपकासिद्धिः लभेशोलभंपश्यतिशुभोनपश्यतितदादशविशोपकासिः द्धिः शुभःस्वामिश्चपदयतस्तदापंचददाविश्वेसिद्धिः त्रयः शुभाः पद्यं तितदासप्तदराविंशोपकं चलारः शुभालमपश्च पश्चतितदापू एर्ग कार्यं क्रेरेक्ष ए। हीनंचेत् स्रथ पुत्र पुत्री प्रकाः लमेशपंचमेशीय दि पुंराको पुंचर्गस्त स्तदापुत्रः समवर्गे तदाकन्या विषमराशिगोजीव स्येषित्रदोसमराशिगाश्चंद्रकुजभृगवस्तदाकन्याभृगुचद्रोपंचमी कन्यातावेवयत्रकुत्रापिस्थित्वापंचमालोकवंतीपुत्रः तावेवानीचा स्तमि तो लाभेपुत्रः लमसुनलाभेषुसोम्ययुतेषुद्रामगुरीपुत्रः द-क्षस्वरे पुत्रः वामेकन्या लगादिषमभावगदानी पुत्रः समभागदा नोकन्या लमंबिनाचरेराशो विषमे पुत्र कच्छूनिः समेस्त्रीराह रप्येवं जातनाशकरोहिसः नारीपितृगृहे पृच्छतितदापितृ गृहना-माक्षराणि भर्च गृहे भर्चनामाक्षराणि तेषु शुक्कादितिथि संख्यांयो-ज्य त्रिभिभगिन एक रोषे पुत्रः हिरोषे कन्या शून्ये शून्यं गर्भमास पृच्छालभभुक्तनवां शेर्भकामासाः भोग्यनवां शेर्भाग्या लमाचतम स्थानेशुकस्तावतोमासाः शेषः दशमादिषुशुके पंचमाद्रशनात्र थवा प्रश्नकालीनचंद्रहादशां शकराशि गतेचंद्रे प्रश्नकालीनलम नवां वातुल्य वेलायां प्रसवोदाच्यः इदंच सर्व मनुपातेन यथोक्तक-रणेन पलादिकं चेष्टं निरंतरमायातिगर्भ किंभविष्यति विषमवर्गे स्वामिशुभयुग्दृष्टे पुंत्रहदृष्टे पुत्रः अन्यथाकन्याः ममसंतिर्भिव-ष्यति लये याः पंचमे पंचमे यो लये तत्र वर्षे सुतो द्रवः ता वुभाव एम गीयावदृह युनी तावतांनदाः पुत्रेशीराहुकुजाभ्यां युनः पुत्रहात

स्मिन्राहुकुजमध्यगेपापाकांतेस्तेनिर्वले पिशिनरुचो भ्युदि तोबुधशुकचंद्रयुतेक्षितोदिव्यपुत्रदः बलीशुभः पंचमगः पुत्रः दः क्ररजितत्सएवतना शदः पंचमरिवयोगे हष्टी वैकः पुत्रः भी-मेनत्रयः गुरुणापंच सोमेनकत्याह्यं चु धेन कन्या चतुष्कं भूगो कन्याषद्भं रानीकन्यासप्तकं शुभदृष्टी जीवन मन्यथा न वृषसिं हकन्या वृश्चिक राशयो लम्बंद्राभ्यां पंचमगा श्राल्प संतति दाः यदिस्वर्क्ष गीसूर्यदानीचंद्रवधोवारंध्रगो स्तस्तदा रत्री वंध्या-यरुभ्यरंध गोमृतप्रजा कुजेरंधगेरमय द्वभी हिला धनु ही ग-गतेः शशांकमाहेयचंद्रात्मजदेत्यपुत्रेः अये स्थिशूलं प्रसव-श्वपश्चादम्रेणपश्चाऋधनुर्धरस्थेः सूर्य्य भृगूरं भ्रगीपापा वित्तस्त तव्ययगायाप्रथमसंतिर्धियतेऽन्याजीवति बुधगुरु भृगुभिः स्वराशिभिर्रमसुतजायाधर्मलाभगेः पापहीनेधेनीपुत्रः दक्षिः एकि किंगे गर्भ पित्रायः पुत्रः वामगेकन्या मध्यो दरे षंढः कु िक्षः इयगेयमलं एवमेव गोमहिष्यादिषु श्रथ यमल योगः पंच-मस्थितं यहसुग्मंसर्वयहे र्रइयतेचेनिम्थुनं प्रभलभे चलारिय-ह्युग्मानिचेत्संतितदायुग्मप्रसवः मित्रे ए। सह प्रीति भीविष्य-निवालमेश लाभेश योरित्यशाले मिथः रने ह द ष्टी वाल मेशेला-भगे लाभे बोल्यमे वामेत्रीस्यादी बाराफेन ।। अथैतदुप योगि-नी मुथग्रीलमूसरिष्यो।। शीघ्रेल्पांशके मंदे बद्दशके पूर्वीक्त नाजिक हुष्टीचदी सांबां तरे पिमंदे इत्यशा ले। भवति विलोमे मुत्रारिष्यः बिधावस्थीयंभवति पूर्णवर्तमान भविष्य भेदात्-

क लादि हीने पूर्णः दीमांशांतरे वर्तमानः शीघ्रं-यलवे मंदेन्यरा-बोभिविष्यः उभ योः शुभस्वर्क्षतुंगगयोर्यथोक्त फलदः दी तां इगास्त क्रमाद्रव्यादीनां रू १५ चं १२ भी दबु ९ शु ७ श७ रो-गी जीविष्यति वा शुमे सु१।४।७।१९।५।९ जीवनं निर्वल लस्यता वष्टमपती बलिनिमरणंचंद्रे ६ । द मृतिः लभेशः शुभो क्षितो लमेश उदि तोमृत्यु पोदुर्बल स्तदाजीवनं लमलाभेशलाभे-षु बलवत्सजीवनं रोगनाशश्च मृत्युपतो केंद्रगेवालमेशे ६। ८ न ष्टे वा चंद्रे चिनर्बलेमरणं पापकर्तिरिभेचंद्रे केंद्रगेवासृतिः पृष्ठो दये लमे तुर्थ्यकूरिब्धेमृतिः चरराशीलमगेषष्टगेवाकं द्रेच सीम्य युते जीवनं शुमेषुलम्सतगेषुवाचंद्रे उपचयगेपि ३। ६। १०। ११ शुभेषुकंद्राष्ठिवत्तगेषुजीवनं।। अथलाभः॥ चंद्र लमेश लाभेशालम्बित्रिकोणगाः दृष्टिमतोमिथःप-ष्टु नितरां लाभदायकाः सोम्याः केंद्रत्रिको एगगलाभदाः पापास्तत्र गाविध दाः सीम्याउच्चगालम्बित्तद्शमगानवमगृहंशुभदृष्ट्ये-ल्लामः शुभेनवमे गुरीलमेरवीदशमेलाभः शुभेसप्तमायगतेपिपूर्ण चंद्रोलाभगतः सोम्यस्तुंगोधनेपिदा श्रभावालाभगस्तुंगेलाभदस्त क्षणं नृणां लमेशेलभेलाभे लाभेशेसप्तमेशेजदितेलाभः चंद्रशु-क बुधानामे कोपिलाभेदोक्षितोलाभेचे लाभोभूयात् उच्चेशुके न्य-स्मिन्बा यहे लम् तुर्यलाभगेलाभः चरेल येशुभैर्युतेलाभः नवमेशुभ दृष्टेप्येवं लाभेलाभेशचद्रेणत्रिकाणस्थ यहैर्वावीक्षितेलाभः सो-म्याः कीरोपापाउपचयेताभः सीम्याउपचयेपापाकोरोहानिः गुरु

लमेथुगुःसप्तमेचंद्रस्तुर्थेसप्तमेवासद्योलाभः लमतृतीयद्रामा यगाः शुभालाभः लग्नेदालाभेदायोः सर्वप्रहाणां वालाभेदृष्टिलीभदा लमेश धर्मशी शुभदृष्टियुती लमेशोवाचं द्रक्षिगः कोणेलाभदः चं द्रोलभपतिर्वापि धनपत्या अतोयदि तदान धनलाभस्यादिपरीतो-हिलाभदः धनशोलमे लमेशोवाधने शुकेंदु गुरुधनेशोवाधने भूरि लाभः लाभेलाभेशसंदृष्टे लाभेशुके गुरीविधी लाभोभवतिभाग्ये वा धनेवाचंद्रयोगतः ॥ ऋथनष्टलाभः ॥ एकादशंविचायं पुः ष्टचद्रेलाभभवनेवाशुभयुतेक्षितेनष्टलभ्यते लम्बिपंचतुर्याय गतेषुश्रभेषुलाभः कूरेषुतत्रत्येषुन लाभः लगेरोश्रभेक्षितयुते लाभः कूरयुतेनलभेशसममशयोगेक शाहाभः सममेशेलभेश सहिते लमगेलाभः लमेदोससमगेनलाभः सशुभे पूर्णचंद्रेदिती-यतुर्यगेलाभः सार्कचंद्रेसममगेनलाभः सममेश्वरेवकेपिनलाभः चंद्रकूरसुतेपिन मेषालिकन्याकर्कराद्यायः शुभवीक्षिताददाम-गालाभः जीवाद एमगः सोम्योन एप्रभेन्यधिष्यगेशी घ्रंन एस्य लाभस्याद्दी मेरवेटे विशेषतः पतितधनलाभप्रभः धनेशलमे-राचंद्राणामित्य शाले तेषां सप्तमस्येवाल भगधने शस्य धनगत्य शालेवालभ्यते लग्निद्वपंचतुर्यसूर्यनंद्रयोवितुर्या द धःस्थत्वेवा सूर्य दृष्टेवानलाभः जीवेनभृगुणावा दृष्टे पूर्णचंद्रे लग्नेवाबलवित शुभग्रहेलाभमुपयातेवाद्वतंनष्टलाभः शुभरष्टेशीषीदयेलयेवा लाभः ॥ चीरहतिप्रशः॥ सीम्याकेंद्रोपचयित्तगालाभाय पाः पास्तत्रस्थिता हान्ये पूर्णेदु ज्ञजीवभृ यूणा मेकोपिल मगोलाभः

चंद्रोयत्रतिष्ठतितद्भवनं स्वामिनादृष्टंचेछाभः छमेदोसप्तमगेसप्तमे-दोलमगेलाभः उभीसमम्मुथद्यालिनोलाभः तोलम् मुथद्यालि-नो चीरः स्वयमागत्यार्थं प्रयच्छित सूर्ये लग्नगेचंद्रेस-समगेन रुभ्यम् कर्मेशलयेशयोरित्थशालेचीरःपलायते सप्त मेरोकेंद्रे चौरोन्यत्रगतोनिह गतास्त्रिधर्मस्वामिभ्यामित्थद्यालिनिस मपेलमे शासममपयोर्मिथोल मेच दृष्ट्यभावे निर्वले वाल मपेचीरारा जोर्थ मर्पयेन दरामेशलमेशयोरित्यशाले राजतोधनंनलभ्यं लमे-शदशमेशयोरित्य शालेखल्पोलाभः लग्नचंद्रयोः शुभयोगेक्षणा-साभः धने शर्धे शेरथशालेलाभः तयोरित्यशालेल मेशदशमेशयो-र्हिं चीरधनं राजागृहीला चीरंचब्धाति रेधेवाकर्मवीत्यवाले नृपश्ची रसाहाय्यकत् धनेशे सूर्यप्रविष्टेचीरत्र्याप्तः उदितेधनेशेकिचिद्धा त् प्रभकारेचंद्रेकूरक्षेत्रगेचीरहतंवाच्यं त्र्यथचंद्रेसीम्ययुतेऽयुते गानचीरहतं चंद्रेस्तपेवास्तंगतेचीरोधनंचनलभ्यते॥लमाचीरक्षा-न ॥ मेषे दिजः वृषेक्षित्रयः मिथुनेवेउयः कर्कशूद्रः सिंहेत्यजः क न्यायांस्त्री तुलेपुत्रभात्रादि वृश्चिकसेवकः धनुषिभातृपतीवा म-करे वेख्या कुंभे मूषकः मीने भूतलं ॥ दिग्ज्ञानं ॥ लमेचंद्रेमाचि तुयें उदीची सप्तमेप्रतिची दशमेवाच्यां स्थिरवर्गवर्गीतमेगतंन त-त्रेवस्थितं स्वकीयश्वीरः तत्रप्रथम दक्का ऐहिरे हितीये गृहमध्ये वृतीयेगृहपश्चिमे बलाद्यात्केंद्रगादिग्याच्या प्रागादि नाथाः आन शुमः रा शा चं बु बु केंद्रेयहाभावे लयराशि तोदिक १।५।९ माक् राधा दिक्षण ३।७।११ प्रत्यक्

विवादमश्रे॥ लग्नपेमंदगतीबलबतिकंद्रगतेवादीजयति स-तमपेता हदो सितयति वादी मंदेश स्य चंद्र लये शाभ्यां मित्र हदोत्य शाले शीघ्रं वादशांतिः लगेशसप्तमेशयोर्योवकः ससभायां दुर्कः कः अनयोर्योदशमेशदृष्टोयोवासूर्यश्वशालीयो वास्वोच्चगः केंद्र पेनेत्थशालि नृपतिस्तत् पक्षपूरकः स्थात् शनीदशमेशोबलिनिकं द्रगे कुजह हे भी मेद शमस्थे न्यायो न पूर्य्यत प्रख्तद ड माद चा द्राजा गुरीभृगीवातथासतिधर्म्यान्यायः बुधेदशमगेमिपितन्यायः सूर्यद-रामस्थे सदंडः चंद्रेसशुभे दरामस्थेशुभोन्यायः लग्नपचंद्रयोर्दरा मेरोनेराराफेदीधीझकटकः श्रानीचास्तेकूरलयेवादीनोजयितसप्त मगे प्रतिवादिनोजयः उभयत्रकूरेन कलह निवृत्तिः प्रतियोः कूरयो योबलवा-भाविसइतरंनेष्यति लगसममन्यतिरिक्तभवनस्थयोः कूर-यो मिथो दृष्टीपूर्णायां सत्यांवादिमतिवादिनी छिरिकाभ्यां प्रहरवंदी मोक्षेष्ट्ययोगेमोक्षः शुभयोगेन स्त्रष्टमेंशेकंठकस्थेयावहर्षनमोक्ष्मणं वित्तयेतुर्यगेदीर्घवंधः बळीचंद्रो गुरुर्वा उमे रासहितोबंधदः कर्कं विना चंद्रोमोक्षदःस्थिरेचंद्रेलभेचबंधः चंद्रेव्ययगेमोक्षः श्रस्तंगतेलभेशेच चतुर्थगेमरणदः लभपस्यकेंद्रपेनेत्यशाले लभेशकेंद्रपतिषुकेंद्रगेषुन मोक्षः शुभानांकं बुठे शुभेरित्यशाले वालमेशचंद्रयोः शुभसद्वित लेवा-चिरात्लमेशेत्र्यापोक्तिमस्थे द्वादशेशेपापदृष्टेनमोक्षः लमपरंधेशयोरि त्थशालेचतुर्थभवनेजातेम रणं चंद्रस्थपापेर छमेशेनेत्थशालेयाचतुर्थ भवनेमृतिः लघचंद्रीचरस्थी शीघ्रंमोक्षः चंद्रकर्केचिरान्मोक्षः मकरगेषि चंद्रेचिरान्मोक्षः स्थिरेचंद्रेचिरान्मोक्षः द्विःस्वभावेद्वतं परंयदिबंधनः

कालेनचंद्रमादिस्वभावगः लग्नस्यचंद्रस्यवातृतीयभवनधर्मस्थयहेण तृतीयधर्मपतिनावासह तृतीयभवनमध्ये इत्थशाले व्ययेशलग्रेशाभ्यां दशमभवने इत्थशाले वानवमल स पतिभ्यां तृतीयभवने वेत्थशालेवा क खेनमोक्षः चंद्रेशनिभोमयुतेक्षितेकेंद्रगेवंधनताडनदुःखानिसप्तम शुभः शुभं हृष्ट्वा लमपंपरयेतदायेनबद्धः सएवमाचयेत् लमेशेत्रिनवमगे त्रिनवम पाभ्यामित्थशातिनिवास्वयंमोक्षः केंद्रवर्जगुरुभस्थेचंद्रेसोम्य स्वराशिगेनच दृष्टे सुरवंमोक्षः सप्तमेशेशुभितेनवमस्थेसुखं उमेशः सप्त मपंसुदृष्णापवयद्राजान्यायंकुर्यात् ऋरिदृष्ट्या ऋन्यायं।। अथवृष्टिप्रश्ने ॥ चरेशोषः स्थिरेश्रदिनोत्तरंवृष्टिः कर्कमीनकन्यानामन्यतमराशोदश-मे पूर्णचंद्रे गुरुभृगुब्धयुते भूरिजलं जलराशीलमे दित्रिगेवावृष्टिः लमे-शोहित्रिगः सशुभः २७ दिनोत्तरंपूर्वतो वृष्टिः २।४।७।८।१०।११।१२ जल चरराशयः शेषाःशुष्काः शुक्रविधूजलयहोभोमशनिसूर्याः शुष्काःबुध युक्तिश्रीशुभेक्षितयुतेजलराशीलमगेचंद्रेभृगीवाके द्रकोणगेवासीम्याः जलराशिगेषुद्विकेंद्रस्थेषुशुक्रेचपक्षेसुवृष्टिःसोम्यास्तुर्यगावृष्टेये पा-पादुर्भिक्षदाः सुरवेचंद्रभीमभृगुलभगेषुवृष्टिः चंद्रभीमश्रानिष्पिचन्द्रभीमसु-र्येषु दुर्भिक्षं त्र्यार्द्रस्पर्शेजलर्थमुद्यमः जलेसमीपोपवेशनंपानीर्यशदोचा रो दृष्टिशकुनानि चंद्रार्काभ्यां ० शुक्रशनी दृष्ट्येलमात्र। १।२।३ शुक्रश-नी चृष्टिदी ॥ दूरस्थोजीचितमृतोचा ॥ रुमेशेचंन्द्रवा ४। ६। ६नीचगेवास्तेवा छिद्रपेनेत्थशाले वामृतः शुभैरदृष्ठेचंद्रेवकगेनेत्थशालेभीमेदशमगेमृतः निर्वलाः सीम्याः षडछव्ययगाः सूर्यचद्रीशुभेक्षितो सपापोमृतिः सपापेपष्टोद-येल मे पापाः केन्द्रकोणाष्ट्रव्ययगाः सोम्या दृष्टामृतिप्रदाः सूर्यनवमगेज्य रा र्तः तुर्योपरिस्थेनयमेनचंद्रमायादीत्थशालंकुरुतेशुभेक्षितः सोम्येर्युतोवापः

रदेशसंस्थितः सुरवीचजीवत्यथसीरव्यमेतिसपापेशुभैरयुतदृष्टे वानवमगरो गीतस्मिन्नप्टमगमरणम्॥ ऋथसुष्टिपश्चः॥प्रश्नकालेयदिकोपियहः स्वां श-स्थायदिलम्भिकाणेष्वन्यतरंस्वांशंपश्यतितदाधातुर्वाच्यान्त्रथयदिस्वयं पराशस्थतभैवश। ५। ९वर्तमानंस्वादांपदयनिनदाजीवः परांदास्थः स्वयंतन्नापि वर्तमानंपरांपर्यतिचेत्तदामूलंत्र्योजराशीलमगेधात्वादयोनवांशकगणनया समराशोलमगेजीवमुलधातवोनबांशकवशात्तत्रापिपापांशेधाम्योधानुः सोम्यां शोधाम्यः मिथुनतुलांगना कुंभचापपूर्वार्धेषुजीवाहिपदास्तेषां देवन रपक्षिणो मेदाः मेषवृषसिंहचापांत्यभागेषुचतुष्पदाः कर्काछिवृषमीनाः स-रिस्तृपाः तत्रापिमीनोद्दिपात् शेषाबहुपदाः कर्कमकरमीनेषुमूठंजलजेषुज-लजं इतरेषुस्थलजंवितनीकंद्री पगती रियभीमा धातुकारकोप्रश्चेषुधचंद्री मूलकरी शनिगुरु शुकास्तथाजी वं व्यपरंच ऊर्ध्वप रचित्री वं मध्यपरचित धातु अधः परयति मूलं कर्धां गंस्पृरान् जीवमध्यां गंधातुं अन धोगं मूलं जीव बुधो जीवम् रिवशुको मूलं इतरेषु धातुं यद्राशीन-वां शे बुध स्तद्रा शे यो विश्व से विश्व ने ल भे शे बल वित स्वातम विंता एवं तसद्भावे दोषविष्ठेषु तसद्भावानां चितनं ॥ अथक्यासुरतं॥ शुक्रभीमरिवषु सप्तमेषु अन्यांगनयाजी वे स्वयाशशि इयोर्व-उयया रानो संकर जया न्या कित वयो वर्णादिकं चंद्र इवन्य्रथवा लयांशाधिपतिलभेशांशपत्योमिथोमित्रदृष्टी देहसपं एवं यदा-द्भावेशेनसहमेत्रीचंद्रदृष्टिचतत्तद्भावेस्यवृद्धिः अथवालमांश कमेवल मं प्रकल्प्य ग्रहानिप त्र्यंशक गतानेव स्थापिखाधातु मूलादिकं कथयेत अथवाप्रशाक्षरंषड्यणितमष्टिभिय्तंसप्त-

मुहूर्तसिंधुः

त ष्टं रोषे धातु मूलादिकं बोध्यं अथवा एक विंशाक्षरं जीवं धातुव-णा स्त्रयोदश एकादशाक्षरं भूलं अधिके चिंतनं मतं तत्रचक्रम्

	जीवाक्षरादिः	
जीवाक्ष्तराः	धात्वक्षराः	मूलाक्षराः
श्रन्त्रा- इः ए-ग्रो-	उ- ऊ-श्रं	ई ऐ स्री
श्रःक-रव-गःघ-च-छ-ज-ऽ	त.थ. द.धः	इ. अ. ए। न. म. र.
ट.ठ.ड. त.य.इा.ह.२१	प- फ- ब-भ-व-स-१३	छ प ११

सभागतप्रभकर्तुमुखाकलनामाक्षरेषुदोषामधिक्यंताचितां जानीयात्-

उत्तरोत्तरादि									
उत्तरोत्तरं अधराधाः उत्तराधरं अधरोत्तरं									
उत्तरस्वर मक्षरंच	उत्तरस्वर श्रधरस्वर श्रन्थतमेः श्रन्थतमेः								
अ भं	ना दाः	शुभमध्यः	त्र्यधम शुभः						
क.ग.च.ज.ट.ड.त.द.प.ब.य.स.झ.इ.उ.ए.श्रं उत्तराः ख.घ.छ.क.ठ.ट.थ.ध.फ.भ.र.व.ष.इ.श्राई.ऊ.ऐ.श्रः अधराः									

उत्तराधरादिकः

9	۹ .	9	8	4
श्राः एः कः	श्याः एः खः	इ. स्रोः ग	ई स्रो घ फ	उ.उ.ड. जःशः
च टः तः प श	छ. ट. थः फ स्व	जः इः दः वः स	व-धामः वाहा	ना मा व्यं श्राः
शुंभाः	मध्याः	शुभमध्याः	मध्यशुभाः	ऋशुभाः
उत्तर	श्रधर	उत्तराधर-	श्रधरोत्तरः	दग्धः

मुहूर्त्तसिंधुः

	न् <u>र्य</u> ष्टी पक्षाः									
संयुक्त	श्र संयुक्तः	अनिम्	ऋभिहित	त्र्याभिधा	अप्राक्तिं	श्रमि धू-	दग्धः			
आरि तृती यो-	तुर्यपंचमाषुप रिज्यधःप्रथः म	श्रादिहिती यो	श्राद्यम्धो <u>ह</u> तीयाकर्ष्व	आद्यसूर्ध्वम घोद्दितीयं	हस्यसरे	रीर्घ स्वरे	उ.उ. श्रेञ्चड अण- नःमः			
शुमं	दोषदं	शुभं	शत्रुवर्धकं	अ भंः	शुभं·	मध्यं	ऋशुभ:			

हिचतुर्थी मित्रे तृतीयपंचमी शत् संयुक्ते न शुभंसर्व त्र्यसंयुक्ते न मध्य-मं-श्राभिहिते स्वल्पलाभः स्यान्मरणं चाभि धूमिते ध्यन भिहतेचि श्रेया श्राद्यंते दुःरवसंपदः श्रालिंगिते शुभं सर्व रू छ सोख्यंच धू-मितंदर्धे विनश्यते सर्वपक्षा ष्टानां विनिर्णयः

-शुभाशुभं-									
न्य- ए-	श्रा-एः	इ. ग्री	ई श्री	उ-ऊ-श्रंश्रः	खराः				
प्रथमाक्षराः	द्वितीय	तृतीय ।	चतुर्थ	पंचमाः	वर्णा				
वर्तुलाः	दीर्घा	चतुष्काण	त्रिकोण	गोलाः	अप्राकारः				
शुक्रा	रुष्गा	रक्ताःसछिद्र	नीला	बहुवर्णा	वर्ण				
दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	दिनरात्रि				
पूर्व	दक्षिणा	पश्चिम	उत्तरा	पूर्व	दिश				
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	षंडु:	पुत्रादि				
स्ब्याम	परग्राम	स्वयाम	चपलभिश्र	स्यग्राः	ग्रामा-				
शुभ	दुष्ट	शुभ	भयदा	शुभ	शुभा				
लाभ	श्रवाभ	बाभ	वामनभ्राला॰	लाभ	लाभा-				
गृहजाः	वन्या	महजाः	दूरगाः	गृहजा	ग्राम्याः				

मुहूर्नासिं धुः

	गर्ग मनोरमाक्तं										
^अ प-२	ुप्रा∙	₹.8	\$.4	3. €	J-10	ऋ.०	ऋ.९	€-40	€.99	ए. १२	ऐ- 93
श्री१४	ऋो १५	ऋं १६५	श्रे:१७	क.व	व- ४	ग- प	घ-६	इ. ७	च ४	छ.५	जि. ध
क्र	अंद	ट ५	उ ह्	30	द =	वा ह	न ध्र	थ७	£ =	ध ९	790.
प७	फ़ट	ब-९	भ १०	म ११	य द	र ९	स १०	व ११	श ९	ष १०	स ११ ह १२

		The Park House
	श्रीराम	स्थानलाभः
	सींना	धनं
	लक्षण	कार्यासिदि
	बिमीषण	सर्वलाभ
	कुंभकर्ण	मरणम्
	रावण	त्रक्षय
4	श्रंगद	राज्यम्
40	सुग्रीव	ब्ंधुलाभ
मीक	केकई	कार्यनादा
श्रीसा	भरत	ऋभिषेक
	श्रर्जुन	कल्याणं
40 M	सुलक्ष्मण	कार्यनाः
	हनुमान	कार्यसिद्धि
	जाम्बवान्	दीर्घायुः
	नारदः	कल हः
	गुह:	प्रियदर्गन
many u	देवा	फलानिः

वर्गव्एित्रमारोन सस्वरं ताडितं मिथः पिं इसंज्ञाभवेत्तस्य यथाभागेरत्कल्पना सि-ध्यसिद्धीऋषात् द्वाभ्यां लाभालामी जयाज-यो धातुर्मूलं तथाजीवं जीवं मूलंच धातु-कं कालाकमायुशा खोयं युरुपा झसेव येति संकीर्णकहोल-१६॥ वर्षशुभाश-भज्ञानं ॥ मेष संक्रांतिलभेशो मेषसं कांत्यनं तरामापूर्णिमान्यतर प्रवेशल-मेशोविलस्गी कंद्रगी शुभद्दशे शुभेत्य शालिनी सकलवत्सरसुखदो पापार्दिनेभ-यं पापे रित्थशाले केंद्रभवनेषुजाते पाप दिष्योगे महर्घेगदश्च अयथ जन्मल भात् प्रतिवर्षेशुभाशुभं जन्मोदयाद्भास्यदज प्रवेशेलमंहियद्रावगतंशुभान्वितंतद्रा-व वृद्धिं प्रकरोतितस्मिन्वर्षे नृशांपापयुः नं तदन्यथा १ १ देहस्म स्व२ धनला भ ३ कुदुंबवृद्धि ४ मित्रसुख ५ पुत्रापि ६ श

अपराजय ॰ स्त्रीसुरवं ८ मृत्युभयं ९ धर्मलाभं १० स्थानलाभ ११ ला-भाधिक्य १२ दुः खदरिद्रपापयुनी नत्तद्भावहाः कूपादिवाहनं ऋक्षेषूत्त रपोष्रावेष्राव मघा मुलानुराधाश्विनी प्राजापत्यक रहिदेवत गुरोशी तांश्रदेवेषुच निदोषे र्घभइयेश्यसमनो मिलाभिरामालिते द्वाक्षेत्र पतेर्विछं हल धरः क्षेत्रंततः कर्षयेत् ॥ चंद्रस्यशृंगोन्नितफलं ॥ मी-नमेष गतश्चंद्रोभवेद्याम्योन्नतः सदा समश्रुगोवृषेकुंभे दोषभेषून-रोनतः याम्योन्नतेचद्भिक्षं समं स्याचसमेविधो सुभिक्षं सोम्यदि ग्भागेचोन्नते मृगलां इने मूलाकारे विधीभीतिः प्रोदिते महति रुजः ॥ चंद्रस्योदयफलं ॥ बृहदभ्युदितेचंद्रेभवेत्धान्यसमर्धता धन्ये तन्महर्थलं समेतत्समतामता यदिशुक्क द्वितीयायां वामेचंद्रोदया रवेः शुभंतदाखिलेमासिनोशुभंदक्षिणोदये॥ ऋथप्रतिमासेदर्शफलं॥ शुमवारान्वितेदर्शेस्यात्सुभिक्षंप्रजासुरवं पाप वारान्वितेदुः रवं तथा धान्यमहर्धता अथैकमासेपंचवासरफलम् शुक्कादिमासेचेलच पापरवेटस्यवासराः प्रजापीडाभवेत्तत्र धान्यस्यापिमहर्घतामासे पंच शुभावारा यद्येक स्मिन्य्रजायते सुभिक्षं सर्वशस्यानां तदा सर्वेसु-रवीजनाः पंचके रविवाराणां छत्रभंगोमहाभयं सोमेधान्यसमृद्धिश्च सुरवं भवति सर्वदा भीमेरक्तभयं धारं छत्रभंगस्तुवा अवेत् बुधेसुभि-क्षंसीरव्यंच जीवे शुक्रेपि तत्समं पंचकेसूर्यपुत्रस्य पाताले कंपतेफणी ईशानदेशमंगश्च वन्हिदाहो महर्घता न्यथाषादपूरिमायां वायुपरी क्षां ॥ त्र्याषादे पूर्णिमायांच प्रदोषेवादिवानिशं पाच्यां वायोस्तुष्ट-क्रिस्या धान्यनिषात्तिरुत्तमा त्र्यल्पवृष्टिः स्तथा मेथ्या मधेभी तिर्महर्घ-

ता न्य्रनाषृष्टिर्भवे द्याम्यां प्रजापीडामहर्षता दुर्भिक्षंरीरवं घोरं मनावृ ष्टिश्च नेऋतो वारुएयांच महावृष्टि धान्योत्पत्तिश्चमध्यमा वायोचा यः प्रचंडश्च वृष्टिर्धान्यंचमध्यमं बहुधान्यंसुवृष्टिश्च उत्तरस्यां सुरवीजनाः ईशान्याशस्य संपत्तिर्धनाद्याः सुिवनोजनाः ॥ संवत्सरात्सुभिक्षादि॥ विघेसंवत्सरेयुक्ते शरेर्भक्तेथसप्तभिः चतुर्हाभ्यांमितेशेष सुभिक्षंविपु-लंभवेत् त्रिपंचके चदुर्भिक्षंषद्भूसंख्येचमध्यमं शून्येतुरीरवं झेयं फ लंबर्षेबुधेस्मृतम् अथवा दिघःसंवत्सरोरामे हीनो भक्तोनगेस्ततः रोषेवाएामितेयुग्मे सुभिक्षं हायनेभवेत् वेदचंद्रमिते ज्ञेयं दुर्भिक्षं खे-तुरोरव ।। अथभूकंपफलम् ।। भूकंपो यामतोवर्णाकमाद्रएयादिवा निशं वायुमंडलजोभूप शस्यां बुमगधंतथा यामान्न मुदकं वन्हिमंडल स्थोनिहंतिहि इंद्रमंडलजोभूमिं तथायुर्जरदेशकं भूपालां भीनदेशा श्र प्रचेतो मंडलो द्भयः ॥ इंद्रमंडल ॥ ज्येषानुराधारोहिएयो धनिष्टा अवणंतथा अभिजिदुत्तराषाढा शुमंमाहं द्रमडलं यद्यत्रचलते किं-चिद्दिकारं वायदाभवेत् माहे द्वं तद्दिजानीयात्तस्यवस्या मिलक्षणम् प्रजा प्रहशः सर्वाः स्युः सर्वरोगविवर्जिताः संधिंकुर्वेतिराजानः सु भिक्षंभवतिध्रुवं उपभंक्तेनृपःसोख्यं हृष्टाभूमिर्नचेतयः निर्भयाग दितालोका उत्पाते भूमिमंडले॥ वारुणमंडलं॥ आद्रिश्लेषाशत भिषक् पूर्वाषादाचरेवती मूलमुत्तरभद्राच वारुणं मंडलं स्मृतं बहुदुग्ध युतागावो बहुपुष्पफलद्रुमाः आरोग्यं जायतेक्षोण्या मुलातेजलत लजेउत्तिष्टंतिमहामेघाविद्युनाडितकुंडलाः॥ श्रिमिमंडलं॥ भरः एी कित्तिकापुष्योविशाखापूर्वफाल्युनी पूर्वाभाद्रमधाचेतित्र्यामे-

यमशुभंमतं धनक्षयोभयं घोरंपीडारोगोत्पनीरता ऋष्यारूयमं-डलोत्पाते फलपुष्पादितुन्छता यद्यत्रचलतभूमिःपरिवेषेदुसूर्य-योः भूमिकं पोथनिर्धात उत्कावापतितायदि यद्रणंचंद्रसूर्याणां केतोरुत्यातदर्शनं रक्तवृष्टिः पांकवृष्टिः पाषाणपतनंतथा आमे-यं ति इजानीयात्तस्यवध्यामिलक्षणं अल्पक्षीरास्तथागायोत्रप्रस्प त्युष्पफलद्रुमाः रास्यानांनाद्यानंचेव अनावृष्टिंविनिर्दिदोत्कपाल हस्ता दृश्यंते क्षुधयापी डितानराः ॥ वायव्यमंडलम् ॥ वित्रास्वाति मृगाश्विन्यः पुनर्वसुकरोतथा उत्तराफाल्गुनीचेव वायव्यमशुभावहं ययत्रचलतेवायुरन्यद्वातंमहाभयं वायव्यंतदिजानीयात्तस्य वस्या मिलक्षाएं महावातंतथाभीतिर्महाभयमुपस्थितं उत्पन्नाहितथामेधा नमुचंतिजलांजितं ॥ ऋथकाकनीडफलं ॥काकनीडंयस्यांशारगयां वृक्षस्य तस्यफलं ।। काकमेथुनं ।। दिवाबाय दिवारात्री यःपश्येका कमेथुनं सनरोष्ट्युमामोति ह्यथावास्थान नादानं

	नीडचक्रम्-														
पू	-आ-	दः	नैः	पः.	बाः	उः	र्ड	मध्ये	वल्मीक भूमि	अुष्कवृक्षे					
सुभिशं सेममारोग्यं सुब्रिट भेरेतः	हाहाकारं महारोद्रं विश्रहंच समादिशेः	हाहाकार महारोद्र विध	सामान्याफलं हीमातीवर्षतेमेघदु- भिक्ष	न् वृष्यभावोभवेत्.	नायव्ये चासुभयं करोति	पुराणंबिक येथान्यं सुभिक्षं	स्यन्पोदकास्तरामेघाक्तविश्वशुष्य ती	श्रनागृष्टि	महाकेरभयं ऋषृष्टि	चीरभयंराजभयं विभहंच					

श्रम्यदोषस्योपशांतये शांतिः एवंकपोनेपिक दल्यांहितालायामपिचः

मुहूर्त्तासंधुः

	काकड़ाव्ह विचार													
र्ब.	श्राः	दः	मैः	पः	या-	3.	र्द्ध	दिश						
物物	· A	· Agg	E Tri	\$3	EMai.	8.9. V	ANIEN	पहरे!						
E. The		REP.	No.	R. I.				भ हर						
粉	Brai.	55 E. J. J.	NASI.	STOTE .	SHETH		कुर्च.	3 महर						
SEGNATI.		THE RESERVE TO SECURITY SECURITY	Mary Mary		李孙	STATE	San And	भहर						

दिन मिछाया रवचंद्र सहिता दिनमध्यरुच्या ही नात्या शरहता दिनमानघट्यः भक्तास्तदा भवंति वासरयात गम्य नाडी प्रमाण म नुनाथ विलयमस्मात् छायापादे रसो पेते रेक विंशास्त्र तं भजेत ल श्यांके घटिका होयाः शेषांके चपला स्मृताः त्र्यंगुलं नृणमा दाय छाया राम समन्विता चतु षष्टिं भजेतेन ल श्यानाड्यः

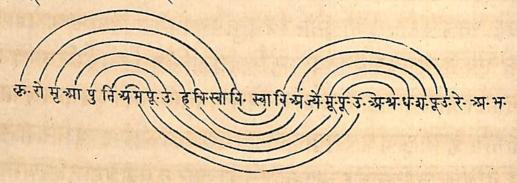
							छा	या	पार	शेप	रीः	9 व	ग्	5 :									
ज्य म	9	2	3	8	ч	હ્ય	ن	U	9	90	99	92	93	98	94	98	90	9=	99	20	29	22	23
क रादि	90	980	38	<i>و</i> و	P	99	20	5	6	c	2	6	23	ξ	٤	ç	٤	ç	5	ç	5	4	8
3 24	39	२४	५४	30	P	93	63	50	40	وتو	0	E	6	50	25	34	26	نو	4	36	2	0	80
इ द	9	2	3	+	5	3	6	2	9	20	20	200	60	2	24	98	26	20	200	20	90	99	23
इ ह का ल	98	ويو	93	93	29	90	500	50	0		0	6	ودو	-	ξ	Ę	4	5	5	L	6	6	8
अ ह	५३	•	94	30	s	45	26	0	وي	200	9	٥	E	8.8	196	9	40	4	0	20	230	96	0

	सप्तनाडी													
शानि	रवि	भी	जी	4.	बुं	चंद्र	स्वामि							
क.	रो-	मृ.	ऋाः	पु.	तिः	ऋ	भानि							
बिः	स्याः	चि-	इ .	3.	पू	मः	भानि							
श्रनुः	ज्येः	मूः	पूर	3-	इभिः	भ	भानि							
म-	अ न	रेः	उ.	इ.	त्राः	धन	भानि							
उर्ध्वा	उध्वर्ष	उर्ध्वा	मध्य	0	0	D	0							
चंडा	वाता	दहता	सोम्य	नीर	जल	ऽमृत	नाम							
याम्या	याम्या	याम्या	मध्य	उत्तर	उत्तर	उत्तर	नाम							

स्मृताबुधेः श्रथस्तां गुलशंकु अवकाः चैत्रे माधवत्र्यश्विने १४४ क तमनुमार्गयमोस्त्र भू १७२ ऊर्जेफाल्गुनकेवि यद्गजविधुः १८० पोषेच नेत्रीधृति १८२ ज्येष्टेशा-वए। भाद्रयोः कतिथि १५४ स्त्वाषाढकेत्रिर्म-नुः १४३ माघेवाए। धृति

श्र १६५ सर्वगणके शंकुः सुस सांगुलं स सांगुल नृणछायायु-ताः स स भिरंगुलेः तत्तन्मास ध्रुवोभाज्यो लब्धं घट्यादिकं सु-एक विशेष्यं गुल नृणछाया सर्व नृणे भवेत् ता वत् घट्यादिकं म-ध्यमार्गे स्थितासो म्या नाडित स्याग्र पृष्ट्याः सो म्याप्य गतं क्षेयं नाडिकानां त्रिकंत्रिकं क्र्याम्य गतानाड्यः सो म्यासो म्यदिगाश्रि ताः मध्यनाडी च मध्यस्था ग्रहरू पफल प्रदाः एक नाडी गताच्या-प्या ग्रहाः कूरा शुभायदि ततो ना नाफलं वाच्यं शुभं वायदि वाशुभं ग्रहाः कुयुर्महायातं महावाता ख्यनाडिकां गतानाडी गतावायुं वहत्यां दाह गायदि सो म्यनाडि गतामध्या नीरस्था मे च्या हकाः जलायां वृष्टिदाश्यंडा नाडिकास्तेति वृष्टिदा एकोप्ये तत्कलं धने विनाडी सं-स्थितो ग्रहः भूसुतः सर्वनाडी पुधने नाडिफलं ध्रुवं प्रावृद्कां ले समा-

याते रोद्राधर्सगतेरवी नाडीवेधसमायोगे जलयोगान्यदाम्यहं यत्र नाडी स्थितश्चंद्रः तत्रस्थः खेचरोयदि क्रूर सोम्यबि मिअश्चति हेने वृष्टि रुत्तमा एव मृक्षारा सयोगो जायते यदिखेचरैः तत्रकाले महावृष्टि-र्यावत्तस्यां राके राशी केवले: सीम्य पांपेर्बा यहेर्ब हे यदा राशी तदा ति तुच्छ पानीयं दुर्दिनं भवति घुवं यस्य ग्रहस्यना दिस्थश्चंद्रमात द्रहेणच दृष्टोयुक्तः करोत्यंबु यदिक्षीणोनजायते पीयूषनाडिग श्रंद्र स्तत्रखेटाः शुभाशुभाः त्रिचतुः पंचपानीयं दिनान्येकितसप्त-कं एवंजलाख्य नाडिस्थे चन्द्रेमिश्रग्रहानिते दिनार्धे दिवसंपंच दिनानि जायतेजलं ऋमृतादित्रयेयत्र भवंति सर्व खेचराः तत्रवृष्टिः कमान् ज्ञेयाधृत्यर्करसवासराः १ ।१२।६ सोम्यनाडीमतास-र्वे वृष्टिदास्तुदिनत्रयं शेष नाडिमहावातं दुष्वृष्टिप्रदात्रहाः नि-र्जलाजल दानाडी भवेद्योगेशुभाधिक कूराधिक समायोगे जलदा संबुदायकाः सीम्यनाडीगताकूरा त्र्यनावृष्टिमसूचकाः शुभयुक्ता जलांशस्था ऋतिवृष्टिप्रदायहाः एकराशिगतावेती चंद्रमाधरणी सुती यदितत्रगतोजीवः करोत्येकार्णवां महीं चलत्यं गारके वृष्टि स्त्रिधावृष्टिः शनेश्वरे त्र्यंबुपूर्णी महीं कला पश्चात्संचलते गुरुः शु-केचास्तमयेवृष्टि रुदयेचबृहस्पती सूर्यस्यपुरतोगच्छे द्यदाशुको बृहस्पतिः वर्षाकालेनसंदेह स्तदावृधिर्निरंतरा उभी तुगच्छत-स्तदापूर्णयोगः पूर्वात्रयेतथाथिन्यां हस्ते लाष्ट्रेथवायवे वारुणे मैत्ररेवत्यो मीमास्तिष्ठतिवर्षति वजतियदिकुजःपतंगपृष्टेघट मिवभिन्जलं तदाददाति त्र्यथ भवतिदिवाकराग्रगश्चेत्प्रलयघ- नानिषशोषयत्यवद्यं चित्रास्वातिषिशाखासु यस्मिन्मासेनवर्ष-ति तस्मिन्मास्यज्ञलामेधाइतिगर्गामुनिर्जगो उदयास्तमयेमार्ग व-ऋषुक्तेचसंक्रमे जलनाडिगताःखेटामहादृष्टिप्रदायकाः विरस मुद्कंगोनेत्राभंवियदिमलादिशो विमलिक्तिःकाकांडाभंयदाच भवेन्नभः पवन निगमतोभूयं तेज षाःस्थलगामिनो रसनमस्क -मंडूकानां जलागमहत्तवः



अथपहीपातफरं।। पादयोर्जघनेजान्नोर्श्देगुद्धेचमृत्कदात्र-न्यत्रशुभदा प्रोक्ता सचैलं स्नानमाचरेत् पल्याप्रयततेचैव शरटस्या धिरोहिणे यत्रोक्तंहिमनुष्यस्य शुभाशुभनिदर्शकं स्त्रीणांनुतहे-ब्रत्यासा त्वोध्यंबुहिमतास दा तिलमाषादिदा नंच स्नात्वादेयंहि-जन्मने अशुभध्वस्ये मृत्कंजयजपस्वर्ण गोदानं।। श्रथात्रविशेष् षः॥ पल्याः पतनशरटारोहणेफलंबक्ष्यमाणं

	पहीपात फलम्														
额	21129	孙孝	PIE	教	TELL	\$. 8gh	.Joh.ile	*外	3/2/2	STATE OF THE PERSON NAMED IN COLUMN TO PERSO					
helle	S. S	EIREIR	\$ THE	: Y's	· STER	·jege	3)3	F.E.F.	Marting.	HER					
168	·HE	कुरू <u>त</u>	33	Walt	.6.F.	PA PA	F. F.	为效	16.5	£.48					
EHEIF	别教	labe.	375 Tr.	light	歌	HIRMAR	WA.	FIFE	\$ \$ ST.	· IEEE					
外村及	न्ति	场	Store.	8377	intage.	STATE.	松光池	SPA	पल्य	रोहणे					
Fig	6 37374	热播粉	\$ 5 p	Jakk	Brest.		PSP TIME	Jak	दार	उपतने					

व्यत्ययेनपल्यारोहणंरात्री शररस्य प्रपातनं नाति दुष्टफलविद्या धिमुयं विपर्जये पतनानंतरं रोहणे समफलं मृत्युयोगेजन्म क्षे विख्यांपातेच वे घृतो चंद्रेष्टमेचसकूरे समेक घदा दक्षिणांग मारुख्यामेनोत्तरीता हानिदा व्यत्ययेशुभाचरणान् मस्तकंया-तिराज्यं दत्तेश्वेताशीघ्रं भोजनेभाजनेऽधिकलाभ पादांगुलीषु हानिदासिता शुभामकीटका यहा गोधा दक्षां गे त्र्यारोहितराज्य क्तरवं वामेरत्रीणांराज्यसुखदा युग्मंचेत्यतिशुभं॥सरटफलं ।। ना श शोर्षे मुखेहानि पृष्टेलाभोभयं हिद दक्षेरोगः शुभंवामेश रटस्यप्रपाननात् हंसाधाउत्तमाः कोपिथष्टाः शुभदाः सरवाधा विमदाः पछी शरटाचा यदिविष्टां मूत्रं वा कुर्वति तदापि विम्नं बोध्यं वामदक्षविभागेन यत्फलं कथितंनुणां विपर्ययेणतत्त्त्रीणां ज्ञेय मूर्धं हयोस्समम् ॥ यही शब्दफलम् ॥ चित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धि रतुला शाके इताशेभयं याम्ये मित्रवध क्षयश्वनिर्ऋतो लाभःस

मुहूर्तसिंधुः

मुद्रालये वायव्यां वरमन्न वरत्रमतुलं सोम्येर्थलाभोधुवं ईशान्यां

	पह्यीफलम्													
對	खु हो <u>क</u>	15 July	NA NA	.IEE	欧型	.grlbate	特的	·Jr.Vi	कंवे					
Posi	Fleskires	नेक्ट्रः	Tanky	*>	MRM	W/sp.	19th	No.	hila					
香	हें के किया किया के किया के किया किया किया किया किया किया किया किया	.33.il	FRIN	JANE	PROJECT .	20.	FRANK	Shirk.3	Paris Contraction					
S. S.	File	D.	.ble	23.	ME	5734	Je.le	top.	.jb/te					
. Jr. 7.		H.IF	野.好.众	L. k.ik	The second second second	F13.5	P. 37X	Lize:It	ST STATE					
STATIST .	JEHEPE.	ES AN	·JEEP.	STATE OF THE PERSON OF THE PER	HER	WATER .	·lilk	STAN STAN	15/4					
B.F.T.	學家飲	33.5	E. S. C.S.	JEST. IE	数	.JEPIE	No.		5.000					
NO THE	RIEKE	७ मेड्ने.	BIRSE	STRATES.	belle !	STITE	123h	N.	Alle.					
٠	STATE OF	Elfe-3	STATUTE	FFF.3	ALS PORTE	.jkk.jk	र-जंब	Fedgiz.	STIPPING.					
۵	·82.2	OPS:	Filager	Bro.		83.	F. E.	8×:	LE BILLEY					
o	er stage	. Ste. St. ile	(1) ESY.	Lettele	DEN:	100000000000000000000000000000000000000	今	loth.						
	EXAMPLE	STE OF THE OF	THE	大大大·	THE RESERVE THE PARTY OF THE PA	(y)	STATE OF THE PARTY	8%X	0					

गृहगोधिकार्थ जनिन्नासंत्वधः शब्दिता शांतिस्तु प्रति रुपदेयंः ॥ अध्यस्वप्रविचारः॥ अध्ययामेनिशिस्वपो वर्षणफछदोभवेत् हिः तीयमासषद्भेन तृतीयित्रिभिर्मासकैः प्रातः सद्यः फलस्वप्रस्ततः स्वथान्यचेन्तरः रोगचितोद्भवाष्यर्थाश्चिरपाकाहिचीक्ष्यतां॥ अध्य शुभस्वपाः॥ सद्भाजा ब्राह्मणोदेवाः सिद्ध गंधर्व किन्तराः गुरुश्वे-तांवरानारी तेषामाशीश्चदर्शनं प्रासाद राजशेलानां श्वेतोक्षास

नवाजिनांदर्शनं रोहणं लामः सिंहस्यारोहणंतथा छत्रध्वज सुव-र्णा ज्ञरतरोप्यदधीनिच यवगोधूमसिन्हार्थाः फलंदीपश्च कन्य-का श्रीरवंडाक्षतदूर्वे क्षुदर्पणं पुष्पितद्रुमाः लाभेवादर्शने चेषां ला-भसीख्यंभवेद्यताः भोजनं रोदनंवी ए। वादनं रोदनंतथा ऋगम्या गमनंविष्टा लेपनं शस्तमीरितं आऋ दो योहिजागर्ति पुष्पितं फ-कितंद्रमं दष्टःश्वेताहिनादक्षेकरेस्यात्समहाधनः रुधिरस्नानपा-नंच सर्पदंशो मृतिर्निजा शय्याहर्म्यासनानांच ज्वलनस्य शिरि छिदः रक्त श्रायो जलस्तानं मरणं मांस भक्षणं सुरायः पयसः पानं प्रश-रतं पायसादानं कदलीकल्प वृक्षश्चतीर्थं गंगादिकं सरित् तोरणं भूषणंराज्यं तथामंदिरसनिभं वेदवाद्यादिनिर्घोषो गर्तोनिःसरणं तथा दंशोषृश्चिककीटानां तडागो द्यानदर्शनं १० पीतंरक्तफलं पुष्पंस्य भेपामोतियस्यच लभते सोचिरात्स्वर्णपद्मरागमिश्तिथा जयोद्य-ते रणेचा दे पुरु हूतध्वजेक्षणं श्रात्मनो बंधनंशीर्षं बाह्रोर्भूषण सु-त्तमं अभिषेक करोविषो देवोवाछत्रधारणं कुरुते महिषीव्याधी गोसिंह स्तन्यपानकं कदिश तृण बृक्षाश्च पुष्पाणामुद्भवस्तथा भवोभूमिधरस्यापिकमणोत्से पणे शुभे माणिसीवर्णरीप्याणांपा-त्रेवा भोजने तले यो इनाति पायसं स्वमे सराज्यमधिगछति गो-र्छिगी ब्राह्मणोराजा पितामित्रेचदेवता यहदेत्सदसत्स्वमेतत्त्रथेव मजायते पूजितं शिविकगंच देवतावायथाविधिः स्वमेद्दशाप्रय-छति नराणां विपुलंधनं त्यत्का तकाणिकार्पासं श्वेतवर्णं शुभंमतं सर्वं रुष्ण मसिद्वागोदेवांध्य गजिद्वजान् १८ त्र्रथाःशुभस्वभाः

वरनाणि जंघयोर्वधवंधनं गमनंवामपादेतृदक्षिणेरथानलाभ कत् दक्षिणांगंशुमं पुंसां वामांगं योषितांतथा नेत्रस्याधःस्फुरणमदाकृ त्संगरेभंगहेतुर्नेत्रस्योर्धहरितसकलं मानसंदुःख्जालं नेत्रस्याते कथयति सुरवं ना सिकांतेचमृत्युधेतत्सर्वं फलमविफलं वैपरीत्यंच वामे ॥ त्र्यथोसाताःतेचविवधादिव्यभोमांतरिक्षभेदात् प्रकृते रन्य-त्र उत्पातः दिव्यं यहर्क्षवेकत उल्कानियात्पवनपरिवेषाः गंधर्वपु-र पुरंदरचापादियदंतिरक्षंस्यात् भोमंचराश्चिरभवंतत्रप्रतिमावेक तं त्र्यमिवेकतं वृक्षवेकतं शस्यवेकतं वृष्टिवेकतं नदीवेकतं पस-ववैकतं चतुष्पदवेकतं वायव्यवेकतं मृगपक्ष्यादिवेकतं राकधा-जेंद्र कीलादिवेकतं केतु दर्शनं प्रतिसूर्य परिवेष रजः धूमेरात्री धनु र्दिवा उल्काताराचेविदने तथारात्रीच धूम्मके तुश्चभूकं पश्चतथाविहः एतानिदुष्टचिन्हानि देशसयकारीणिच शांतयो भेदाऋतुपरलेनानु-त्पाताश्यबोध्याः ॥ युगानामुलित ॥ किर्मादपदेमासे माघेवेदा पुरस्मृतः नेताप्रवृतिर्वेशाखे कृतादिः कार्तिकेतथा।। गजछाया।। रुष्गपक्षेत्रयोदस्यां मधाविदीकरेरवी यदातदागजछायाश्राहेषु-ण्येरवाप्यते। ॥ त्र्यर्धीदयः॥ त्रमार्कपातश्रवणाः युक्ताश्चेतीषमा घयोः ऋधीदयः सविज्ञेयोकोटिसूर्यग्रहाधिकः ऋथ नक्षत्रपाद पर ले कष्टाविक: अधिन्यांचभवेद्रोगो ह्यामवात स्तथाज्वरः वातन्त्रे-ष्मतथाशोषं पीडामयतिदारुणा नंदारुद्रादिशोविंश ९।११।१०।२० दिनसंस्थामिमां शृषु ऋधिनोदेवताचास्य मृत्युं जयजपादिकं जपः यंचसहश्राणि ऋहोरात्रंचहोमयेत् ब्राह्मणान्भोजयेचेयदानंदवासु-

रवीभवेत् देवते ऋधिनौ तन्नि धुजो शुक्कवर्णको सुधाकल शसंयुती कमंडलुधरी शुभी भरण्यांच यदारागश्छिदिरागश्च जायते ज्यरं तद्राम हारोगं नरोरोगेः प्रपीड्यते श्र्न्याशिचलारिंशचरु द्राणि । ८०।४० ११ दिनसरव्ययाभरणीयमदेवत्य यमायत्वेति मन्नतः नमन्नेनीषधं तस्य-चदानं जपादिकं जपंकुवीतगायत्र्या ऋयुतंसंख्यया तथा छायादानं प्रकुर्वीत शर्कराज्यंच पूरकं त्र्यजाच महिषीदानं गोदानं तुरगं तथा ब्राह्मणा-भोजयेत्तत्र क्षेत्रपालंच पूजयेत् यमस्तु देवता तत्र रुष्णवर्णो दिवा हुकः लुलायवाह नः श्रीमान्या शदंडधरः प्र-भुः र रुत्तिकायाभवेद्रोगो रक्तनेत्रं प्रदृश्यते चक्षुःपीडाभवेत्तस्यज्व-रशूलं तथेवच स्मितदाहं महाकष्टं ज्यरंती प्रच दारुणं महशांतिं प-कुर्वीत दानं श्राह्मणभोजनं दिनसंख्याभवेतस्य नवेकादराषोडश ९।११।१६।२८ श्रष्टाविंशतिकंचैव दानंदला सुखीभवेत् कित-का अभिदेवत्यं तिलाज्यं जुहुयात्तथा त्राभिमूर्धेतिमंत्रेण जाप्यमे-क सहस्त्रकं श्रिमिस्तुदेवना तत्र रक्तवणी जवाहनः चतुर्भुजो घृताम-त्रखुव खुक् वरदाभयः ३ रोहिण्यां मस्तकेश्लं ज्वरंपीडाचदारुणा प्रलापंविक तीश्चेव कुिक्षश्लंच दृश्यते दिनानिसप्तनविभरष्टादश-चित्रंशकं ७।९।१८।३० प्राजापत्यंहिदेवत्यं ब्रह्मयद्गेत्रिमंत्रतः स-हस्त्रंतत्छतजाप्यं होमयेद्धिपायसं दिधतं डुलदानंच सवत्सांगां तथेवच ऋषोविमास्तथाभोज्याः कुलदेव्याश्चपूजनं रक्तवर्णश्च-तुर्वाह् हंसारूढ श्रतुर्मुखः पद्माक्षसूत्रवरदाभयहस्तोनिरामयः ४ ऋाद्रीयांच्याधिरुत्पन्तो ग्रहपीडाच दारुणा शिरपीडास्वदेह-

स्य नमंत्रंनचभेषजं वर्जयेत्सत्तरात्राणि श्रियतेनात्रसंदायः शून्य महादराचेषशून्यंचेवतुशून्यकं ०१९०।० रुद्रोपिदेवतातस्य नमस्ते रुद्रमंत्रत् अयुनंच जपंकुर्यान्मध्वाज्यानिच होमयेत् रुषिर्भूमिः मदा-तव्या रुष्णवस्तूनि दापयेत् रुद्रोहिदेवतातत्र वृषा स्दर्भतुर्भुजः त्रिरहत खड्डाबरदाभयहरतः प्रकीर्तितः ६ पुनर्वसीभवेलीडाक-रीपीडाच जायते समश्चतुर्दशश्चेवयुगंचेकविंशति ७१९।२।२१ श्रदितिर्देवतात्र श्रदिती इतिमंत्रकं रातमेकं कृतं जाप्यं घृततं दुल होमयेत् सुवर्ण कमलंदानं को मारीपंचभोजयेत् चतुर्भुजापीतवर्णा साक्षसूत्रकमंडलुः वरदाभयहस्तासा साक्षसूत्र कमंडलुः पुष्येच व्याधिजेचैव ज्वरपीडाचदारुणा श्लपीडाचातिकालं व्याधिघोरंतथै-वच समसप्ततथाविंश देकविंशस्तथैवच ७।७।२०।२१ वृहस्पतिर्दे-वतास्य कथितो मुनिसत्तमेः बृहस्पतेतिमंत्रेण शतानांपंचकं जपं घृतपायस होमेश्च होमयेत्तद्शांशतः चतुर्भुजः पीतवणीं देवतास्य बृहस्पतिः दंडाक्षस्त्रपाणिस्तु साभयः सकमंड छः श्राश्लेषायांगः दोत्पना गीषधंतन्न दृश्यते कुलमातुश्च्योगिन्यो बलिदानचदापये-त् छायापात्रचदातव्यं मुच्यतेनात्रसंशयः शुन्यंशून्यंचैकवेदास्तद-ग्रेश्र्न्यमेवहि । । ४१। । सर्पोधिदेवतातत्र नमोस्तुसर्पेतिमत्रकं अ-युतंजपंच कु वीत कासार धृतहोमयेत् दातव्यं तत्रदानंच सवत्सांगांच नीलिकां सर्वस्तुदेवनातत्र महामंडलरूपधूक् सुविस्तृता शर्थंडोम-धुपिंगल लोचनः ९ मघायांचेद्भवेपीडा गात्रार्धे शीतलंतथा तिथिः समसमद्रा विंशतिश्चैवमानतः १५।७।१७।२० पितरोदेवताचास्य

पितृभ्यइतिमंत्रकं रातमेकं कृतंजाप्यं तिलतं दुल होमयेत् निलमाष सवरत्राणिदानंदलासुरवीभवेत् पितरोदेवतास्तन रुष्णवणिश्वतुर्भः जाः रुद्राक्षसूत्रभयदाः कमंडसुधराशुभाः १० पूर्वाफाल्युनिकेपीडा भवेदधिशिरोज्यया पीड्यते सर्वगात्राणि तनुपीडामहाभयं संख्याश्-न्यंतिथिश्वेवश्वन्यंत्रिंशिद्दिनानिच । १५ १०। ३० भगोहिदेवताचास्य भगप्राणितिमंत्रकं श्रयुतं जपकुर्वीत प्रियंगुजुहुयानिलाः पित्तलंचे-वगोदानं माषानंचसवर्णकं पूर्वाफाल्युनिकायांचभागोऽदेवःप्रकी-र्तितः रक्तवणीं बुजा सीनो हिभुजोभ यपद्मकः ११ उत्तराकाल्युनोच्या धिभवित्यीडायदानदा शरीरं व्यथते तस्य शिरोरोगं तथैवच सप्तश्च तुर्दश्येव सप्तपष्टिः तथैवच ७।१४।७।६० त्र्यर्यमादेवताचास्य दे-वध्वे इतिमंत्रकं दिः सहस्त्रकृतं जाप्यं तिलाज्यं होमयेन्ततः हिरण्यंच कृतं दानं मन्तदानं तथैवच अर्थमादेवतापदा मध्यस्थः पदावर्णकः पद्माभयकरः श्रीमान् स्वर्णमूर्तिर्महा युतिः हस्तेपीडाचसवंगिउ-दरेशूलदारुणं ज्युटयं ते सर्वगात्राणि प्रस्वेदं बहु जायते पंचदश सप्तदश तिथिश्रन्यं तथेवच १५।१७।१५।० सवितादेवताचास्य उ-दित्यमितिमंत्रकं सहस्त्रमेकं संजाप्यं दिधसर्पिश्च होमयेत् र-क्तवस्त्रस्यदानंच धेनुंदद्यात्तपस्विनीं सविता देवता स्त्रस्यसमा-स्वरथवाहनः हिभुजोरक्तवर्णस्यात्पद्मासनसमाश्रयः १३ चि-त्रायां जायते व्याधि विचित्रं कष्टदारुणं रुद्राग्रहाः स्वगाश्येव षोडवेविकमादमी १९।९।९।१६ लष्टानुदेवताचास्यलष्ट्रीये-तिमंत्रकं जाप्यं पंचसहस्रंतु तिलतं इलहोमयेत् विचित्र वृषभं

दया दुइं तेलं तथेषच त्यष्टापद्मास्थितश्चित्रवर्णस्यात्सचतुर्भुजः प-व्यसूत्राक्षवलयः पद्माभयकरप्रभुः स्वात्या मुत्पद्यते पीडा बहुरोगंच द्द्रयते ग्रहहोमंच कर्तव्यं तथान क्षत्रमंत्रकं षष्टिः समद्दात्रिं शदंवरं-च तथानृणां ७०।१७।३०।० जपंपंचसहस्रांतृतिलाज्यंयवहोमयेत् वासुश्वदेवतात्र्यस्य वायोरिमितिमंत्रकं त्र्यारकागीश्वदातव्याकव-र्णचयथाविधिः वायुश्चदेवतातत्र मृगास्त्दश्चमेचकः गदाचर्मधरः श्रीमान् हिभुजः परिकीर्तितः १५ विशाखायां कुक्षिशूलं सर्वगात्रस्य पीडनं तिथिखंवेदवन्हींदुर्नामतश्चिदनावधिः इंद्राभिदेवताझेया इं-द्राभी इतिमंत्रकं हिसहस्रं रुतं जाप्यं दध्योदन होमनं रक्तपीतं सु-वस्त्रंतु वृषमं रूष्णदानकं इंद्रामी देवनेतत्र गजा जावाहनोमती चतुर्बाहुरक्तवणीं निजशस्त्री धरीतथा १६ त्रत्रत्राधा भवीरोगो ज्व-रं ती वं महाभयं षष्टि हरि दाषट् त्रिंशत्त्रथात्रिंशत्मकीर्तिता ७०।१२ ३६।३० मित्रोपिदेवताचास्य नमो मित्रेति मंत्रकं जाप्यं सहस्त्रमे-कंतु यवाज्यं होमयेत्ततः अन्तं हिरण्ययुक्तंच छायादानं तथैवच चापांकुशाभयेर्युक्ता तथासमविराजिता पद्मासनोरक्तवणीिम-अस्तस्यांतुदेवता पद्माभयकःश्रीमान्द्विभुजःपरिकीर्तितः१७ ज्ये-ष्टायांचभवेद्रोगः पित्तंचबहुपीडनं ऋंदतेव्याधितः सोपित्रप्राकुलं व्याकुलंतथा नवपंचित्नान्येवग्रहाश्चांगास्तथाब्धयः ५९।९।४६ इंद्रोपिदेवताचास्य त्रातामंत्रेतिमंत्रकं तेलं वस्त्रंचदातच्यं तत्क्षणा-रक्केशनाशनं राक ऐरावतास्त्र दोदिव्यसिंहासनेविभुः श्वेतवर्णावज धरोभयपाणिर्महाभुजः १८ मूलायांचभवेद्रोगोज्वरः श्लंप्रपीडयेत्-

सिमानंमहाव्याधिं जीवितस्यापिसंशयः शून्यंनदंति थिश्चेवषड्दि नानिइतिक्रमात् । १ । १५। ६ निर्करतिर्देवताचास्यमातापुत्रेतिमं त्रकं जपंपचसहस्त्राणिकंदमूलानिहोमयेत् रुष्णगोदानकंचेवस-मधान्यं सुवर्णकं छायादानंचालदानंस्वर्णदानं विशेषतः निर्ऋति-र्देवतातत्रश्वेतारूढश्चमेचकः खडुखेटकधारीच हिभुजःपरिकी-र्तितः १९ पूर्वाषांदेभवोच्याधिनानांच्याधिप्रपीडनं शिरोरोगं महा रोगं कंपितकं दितोनरः शून्यं पंचदशश्चेवचतुर्विश्वतिमंदश्।१५/२४ १०। त्रापोपिदेवताचास्य त्रापोधर्मति मंत्रकं दिसहस्र कृतं जाप्यंस तिलं यवहोमयेत् जलकुं भसहश्राणि स्वर्णदानंचदीयते स्वापस्तुदेव-तास्तस्य शुक्रवर्णः शुभाकृतिः वरुणस्तुजलस्वामी स्वामीपूज्यस्तु नामतः मकरे वाहनेविष्टोभवेत्यकरोध्रवं २० उत्तराषाढकरोगेक-टी पीडाचदारुणा प्रलापः कंदनंचे व उदरेश्रूलमेवच त्रिंशचीवचतु-र्वित्रात्पड्वित्रात्पोड्र शस्त्रथा ३०।२४।२६।१६विश्वेचदेवताचास्यवि-श्वेदमितिमंत्रकं जपमेक सहस्रंतु तिलाज्यं यवहोमयेत् ब्राह्मणा-न्भोजयेत्तत्र हिरण्यंदीयतेततः विश्वेदेवादेवताश्च श्वेतवर्णाश्चतुर्भु-जाः वरदाभयहरताश्च साक्षसूत्रांबुजासनाः श्रवणेचयदारोगं वात पित्तकफोद्भवं विव्हलंचातिसारंच सर्वगात्रंप्रपीडयेत् षष्टिश्चेवच-चतुर्विशत्पद्धंनवतथेवच ७०।२४।६।९ गोविंदो देवताचास्य वि-ष्गोरराष्ट्रितिमन्नकं ऋयुतंजपकुर्वीत तिलाज्यं यव होमयेत् गोदा-नं स्वर्णदानंच ब्राह्मणा-भोजयेत्ततः विष्णुस्तुकृष्णवर्णः स्यायन्नगाश-न वाहनः शंखचक गदापाणिः पीतवासाचतुर्भुजः २२ धनिष्टायां

भवेत्कष्टं मूत्रकछ्णपीडयेत् ज्यरंरक्तमतीसारं कंदतेच मुहुर्मुहुः ति थियु खिंदाति स्वेक विंदाति स्तुतथेवच १५।२।२०।२१ वसवोदेवताचा-स्य वसोः पवित्रेति मंत्रकं ऋयुतं जपकुर्वीत छत्रोपान हदीयते योगिन्यः पूजयेत्त्रबिं ताभ्योपिदापयेत् वसवोदेवतास्त्रशुक्कवर्णाश्चतुर्भुजा वरदाभयहस्ताश्च साक्षसूत्रां बुजासनाः २३ रातभिषायां भवेद्रोगं प-वनाख्यायुते ध्वं शरीरं क्षेत्रामामोति शीतमं गेषु दारुण श्रन्यच्याण वेदाश्चरामाद्वाविंदाकंतथा । ४५। २। २२ वरुणोदेवताचास्य वरु-णस्तंभमंत्रकं ऋयुतंजपकुर्वति दध्योदन्हुने नतः सहिरण्यं घृतं द-द्यानीलंचे ष्टंचदीयते अप्रजादानंचगोदानं दद्यादेवं सुरवीनरः वरुणोदे वता तत्र मकरोपरिसंस्थितः यष्टिपादाधरः श्रीमान्। दापदाधरस्तथा २४ पूर्वाभाद्रपदेरोगं सर्वगात्रंप्रपीडयेत् सछर्दि कतरोगंचित्तरो-गंभवेध्रुवं शून्यं हादशश्चेकविंशश्चेकोनविंशति । १२।२१।१९ त्र्यजैक-पाद्देवतास्यादिहर्बुभे तिमंत्रकं जपंपंचसहस्रंतु क्षीराज्यं शर्करान्वि-तं श्वेतवस्त्रंहिरण्यंच रुक्महीरंच दीयते अजेकचरणारुद्रोदेवता-स्य प्रकार्तितः खडुन्बर्मधरोवाग्मी भुजद्वयसमावृतः २५ उत्तराभाद्रप-देरोगं कमलारोगसंभवं ज्वरातीसारतीव्रंच पीडनंभयसंयुतंदिग्यु-ग्मं नवतिथयो दिनानि मुंचितिज्वरः ।।।२।९।१५ ऋहिर्बुध्योदेवता-स्य ऋहिर्बुघेतिमंत्रतः ऋयुतंच कृतंजाप्यं तिलाज्यंयवहोमयेत् रीप्यंचितलदानंच रूष्ण्यस्त्रंहिरण्यकं त्राहिबुध्याभिधोरुद्रोदे-वतास्यप्रकीर्तितः श्वेतश्चतुष्करंपद्मबाहुभमश्चपादाभृत् २६ रेवत्या रोगमुत्पनं वातिपत्तंतथेवच स्रष्टादशदशानंदेन्दुसंख्याविंशहि-

नानिच १८।१०।१९।२० पूषातुदेवताचास्य पूषेनवव्रतमंत्रकं श्रयुतंच कृतं जाप्यं तिलतं बुलहोमयेम् फलद्रव्याणिदेयानिरकंच वृषभंददे-त् पूषातुदेवतातत्र पद्मवर्णोबुजासनः दिभुजः पद्मपाणिःस्यात्पद्मग-र्भावियोविभुः २७ मृगेसमुत्थितो व्याधिः कफपूर्वरतुसं भवेत् नवपंचत-थासप्तदशोक्ताज्वरवासराः ९।५।७।१० चंद्रोहिदेवतातस्य इमं देवेतिमंत्रकं सहरतं जुहुयात्क्षीर गुडूची मिश्रि तै स्तितेः छायापात्रं-चदातव्यं मूर्णावासस्तुवापुनः सोमोहिदेवतातस्य श्वेतवएिशुभाकः-तिः दशाश्वरथमार्द्धदःश्वेताश्वोपिनिगयते इतिभाहीकष्टावलीः ।। अथबीधायनोक्तातिथिवारयोः कष्टावली।। प्रतिपदिकष्टंसंदेहः दिनानि १८ त्र्यमिर्देवता त्र्यमिमीकेतिमंत्रजपः हेमीप्रतिमा घृतधूपो दीपश्च यथासंभवं नेवेद्यं घृतं होमद्रव्यं हितीयायांदिनानिश्ध अह्नादे-वता अहमयज्ञानिमितिपूजामंत्रः अगुरु र्भूपः घृतदीपः शर्करानेवेष तिलयवाज्यानिहोमद्रव्यं प्रतिमाहेमी तृतीयायां दिनानि ९ गोरिदेवता गोरामिमायेतिमंत्रः प्रतिमाहेमी कुंकुमधूपः घृतदीपः द्राक्षाक्षीराज्य नैवेद्यं पायसंत्रिमध्वक्तं होमद्रव्यं चतुथ्यां दिनानि १६ गणपतिर्देवता गणानां खेतिमंत्रः प्रतिमाहेमी कुंकुमंगंधः करवीरादिपुष्पंत्र्यगरुधू-पः इक्षुषंडानेवेद्यंहोम्यंच- पंचम्यांदिनानि २१ तारादेवतानमोरत्त सर्पेभ्यइतिमंत्रः है मी प्रतिमाचंदनंगं धः सुरिभपुष्पाणि घृत धूपः पयो नेवेद्यं तिल यवाज्यं होम्यं षष्ट्यांदिना. १२ स्कं दोदेवता इप्सर्वसंकदे-तिमंत्रः पीतंचंदनं रक्तानिपुष्पाणि जरामां सिधूपः फलानिनेवेद्यानि तिलयवाज्यं होम्यं हैमीप्रतिमासप्तम्यां दिनांनि दिननाथो देवता त्या-

कृष्गेनेतिमंत्रः हैमीतासीवाप्रतिमा कुंकुमंगंधः करवीरादिषुष्पाणि यु-गुलु धूपः शर्कराष्ट्रतयुतपायसंनेवेद्यं अर्कसिधः पायसं होमद्रव्यं अ-ष्टम्यां दिनानित्रयोदेशै ईथरोदेवता तमीशानमितिमंत्रः हैमीप्रतिमा कर्परंगंधः बिल्वदलानि अर्कपुष्पाणि जरामांसिधूपः पायसंनैवेद्यंत्रि मध्यक्ततिलाहीम्यं नवम्यादि १८ दुर्गादेवता जातवेदसइतिमंत्रः र-कचंदनं कुंकुमादिकं दशम्यांदिनानि २% यमोदेवता हेमी लोहपति-मा यमायत्वेतिमंत्रः मृगमदोगंघः तैलदीपः बिल्वदलानि रूष्गतिलाश्च होम्यं एकाद्वयादिनानि विश्वदेवादेवता विश्वदेवासइतिमंत्रहेमी प्रतिमा श्वेतचंदन कृष्णागरुर्धूपः घृतदीपः तुलसीपत्राणिपूजायां यवमोदकं नैवेद्यं तिलयवमध्याज्यं होमद्रव्यं हादक्यांदिनानि १० रुद्रो देवता यातेरुद्र इतिमंत्रः हेमीप्रतिमा श्रीखंडंचंदनं ऋगरुर्धूपोघृतदी-पः पायसंनेवेद्यं चंपकं पुष्यं तिल यवाज्यमधूनि होम्यं त्रयोदस्यादिना न्यष्टी दशकी देवता रोक्मीर जतीया मूर्तिः त्याप्यायस्वेतिमंत्र श्वेतंचंद-नं चंदनधूपं घृतदीपः घृत शर्करानेवेद्यं तिलयवास्त्रिमध्यक्ता हो म्यं चतुर्दश्यां दिनानि २२ शंभुर्देवता नमः शंभवायेतिमंत्रः रोक्मीवारा-जती मूर्तिः श्वेतचंदनं अर्क पुष्पं बिल्वदलानि अगरु धूप पायसंनैके यं निमध्याकासिला होम्यं स्मायांदिनानि १८ राची देवता होतायक्ष दितिमंत्रः हैमीप्रतिमा कुंकुमादिगंधः नानासुगंधपुष्पाणि रूष्णागुरुर्धः पः फेणिकाने वे सं शर्कराधृतपायसं होम्यं पूर्णिमायां दिनानि १० चंद्रो देवता मदनकं पूजार्थमन्यन्ययोदशीसमं इति तिथिक ए। विश्वा-दित्यस्यरुद्रोदेवता दिनानिसम सोम्यस्यदिनानिश्सिवतादेवतागीरी

गोरी मिमायेतिमंत्रः भोमस्याद दिनानिस्कंदोदेवता प छीवत् बुधेदिना निज्विष्युर्देवताविष्योरराद्वितिमंत्रः युरौ दिनानि १५ ब्रह्मादेवता शु-के दिनानि ११ इंद्रोदेवता शनो दिनानि २ यमो देवता अन्यतिथिस मं इतिवारकष्टावली ।। अथेषां ज्ञांतिः ॥ यस्मिन्दिवसे ज्वरादिपी डाभवति तत्तिथिवारभदेवतानां प्रतिमानिर्माय शुचिप्रदेशेगोमयोप ि मेनंडुलेश्वतुरस्रमंडलंनिर्मायगणपतिंपूज्यसंकल्यंकुर्यात् ऋमुक नक्षत्रतिथिवार जयाधिनिरासार्थं शांतिकरिष्ये तन्मध्ये तत्तद्देवता यतिमांवक्ष्यमाणांधादिना समाभ्यर्च कलशं वस्त्रह्यवेष्टितं तीर्थपूरि-तं न्यस्यसर्वेषिधीः पंचरत्नपंचगव्यसप्तमृत्तिकापंचपस्ववानिचततो होमं यथाविधि कला यजमानाभिषेकंच कला तात्राह्मणायदेयाःसा-धारणविधिः ॥ उक्तंचबोधायनेन ॥ यस्मिन्नृक्षेभवेत्पीडा तनक्षत्र-स्यदेवतां सुवर्ण निर्मितां रुखा यूजयेत्रयतः श्रविः गोमयेनानुसंि प्य मंडलंच मुलक्षणं चतुरस्रंच संकीणं तंडुलेश्वकताकतेः कलातु स्थंडिलं तत्र यत्नतः रुष्णयामृदातत्पार्श्वे चसुधीः कुर्या नंडुलानां चयंमहत् तत्रप्रमाणं खारीवा द्रोणावा द्वादशस्मृताः त्र्यभावेपंच-वाद्रोणा द्रोणवातदभावतः ईशानकोणदेशेतु कलशंस्थापयेत्सु-धीः निधायद्रविणातत्र कलशेशत्त्यपेक्षयापीठंतुपूर्वतःस्थाप्यंनव्य वस्त्रेणसंयुतं स्वस्तिकं तंडुलानांचशुभानांचसमालिखेत् तन्मध्येदेन वतास्तिस्बोदेवतात्रितयस्यवे यस्मिन्हक्षेभवेद्रोगःतस्यपूर्वापरेसुधीः उडू निपूजयेदाला दिघप्रत्यधिदेवने देवतायस्यऋक्षस्यमंत्रस्त-हिंगं एवच द्रव्यंचतस्ययत्रोक्तं प्रभावं प्रकृतिस्तथा तत्संविदुषा

शे यंहोमंतनप्रकल्पयेत् पंचोपचारसं युक्तां पूजांतनप्रकल्पयेत् स्व युद्योक्त विधानेन कुर्यादिमिमुखं सुधीः कलशंजलपूर्णच वरम्ययुग्मेनवे-ष्टयेत् निधायचोषधीस्त्रपंचपछवसंयुताः समस्थानमृदः कुंभेआल वालं प्रपुरयेत् इमंमेवरुण इ त्येवं जलमंत्रेणवापुनः सर्वेससुद्राःस-रितर्द्रतिमंत्रेणमंत्रयेत्यचि दितेयक्षीय येत्यादिसूक्तंजपेतुनः श्रावाहयेद घटेदवं वरुणंप यसांषितं एवंनक्षत्रशांत्यर्थे विद्ध्यायू-र्व पीठिकां सामान्योयंविधिःप्रोक्तोनक्षत्राणांप्रपूजने सर्वोषधीना-मप्राप्ती भवेदेका रातावरी सर्वेषामिपगंधाना मभावेचंदनंमतंश-तपत्रं सुमनसां धूपाभावेचगु गुद्धः नेवेद्यानामभावेतु पायसंसद्धतं स्मृतं मंत्राणामप्यभावेतुगायत्री मंत्रउत्तमः होमद्रव्यस्यदुःत्राती तिलाघोक्तामनीषिभिः ऋष्टोत्तरसहस्त्रंच तथा शतमुदाहतं॥ मदन रतेऽभिन्तु ॥ श्राविलभेषुगायत्र्यायमोदशेहोमोष्टोत्तरशतसंख्याकः वालिश्वतत्रनक्षत्रदेवताये सोपिहो मावशिष्टद्रव्येशेवक चिद्नयेन श्रथजन्मसंबंधिषु नक्षत्रराशिलमेषु यमघंटे नैधनेप्रत्यरी त्र्यष्टमचंद्रे रोगोलतो मृत्युः रिवमधाद्वादशी गुरुशत्भिषक्षश्रीशुकाश्विन्यष्ट मीशनी पूर्वाषाढा नवमीनां यो गेव्या धी मृत्युः भरण्यतुराधे रवी त्याद्री तराषाढे सोमे मधा शतिभषावाभो मे त्र्यश्विनी विद्याखाबुधे ज्येष्ठामृ-गे गुरी अवणा श्लेषा भूगी पूर्वा भाइपदाहरते वा शनी अत्रापिरोगे महाकष्टं अत्रशांतिः पुष्कलाविधेया अथजननसम्कानि ॥ स्या-मवर्णी भवे-मेषे सिंदूरारुणनेत्रयोः बाल्धीरोदीर्घकांतिःप्रकत्या श्ले ष्मकीनरः पूर्वशिरो भवेत्र्यातु जीयापंचचतुरश्रयः रक्तांबरधरो वासो

पूर्वमधुरभोजनं ।। त्र्यथरृषस्य रृषलमे मबेद्वाली गीरवर्ण सुकांतिकः रक्तिपत्तिकारेणविन तातिस्त्रः पंचवा पश्चिमेचसुरवे मातुर्भीजनंशा-कर्जकतं शुक्रांबरधरोवासो जननीरोप्यभूषण मिथुनस्यनेत्ररोगी नरो युग्मे पित्तवर्णोहिजायते वनितापंचत्रयंचैव प्रस्ता बोतरेशि-रः अल्पद्भ्धवतीमाना पित्तपीडादिकारकः उक्षणंदक्षिणस्यागे भोजनं लयणंपुरा जीर्णवस्त्रंभवेन्मातुर्जानीहिलक्षणंपुरा ॥ ऋथक-र्कटस्यं भोजनं वातलं कर्के चतुस्थाने चमध्यमः पूर्वाभिमुखाचजन-नी जायातत्रचतुरत्रयः वातश्लेषमविकारेणमातापितृरुगार्तिदा पु-र्वाल्यभोजनं कर्के वासांसिफिलतानिच गोरवर्णीभवेदालोदी घीषाणः सुकोमलः सोवणभूषणंहरतेकर्कलमप्रभावतः। अथिसंहस्य ॥ ब हुकेशोभवेत्सिहेदीघेषाणः सुलोचनः मातुस्तनीरक्तवस्त्रं भृषाक-तकह स्तयोः दक्षिणाभिमुखंमातु स्त्रियः पंचाथवारसाः तांवूलभक्ष-णमातुः चिन्हं पृष्टस्यबालके अधकन्याया कन्यालमे नरोजातीगी रवर्णोतिसुंदरः वनितासुस्थितापंच जंघयोश्चिन्हमेवहि जनन्याश्चा-त्तरेशीर्षं कंठेचिन्हंतुचालके गृहस्थितोनहिषिता प्रवालाभरणंतनी जननीरक्तवस्त्राच कन्यायां जायते पुमान्।। त्रप्रथतुलायाः ७ गीरव-र्णः तुलाउभेनेत्ररोगीप्रजायते रक्तिवस्फोटकोदेहे पाच्यांशीषे प्र-जायते चतस्त्रोवनितास्तत्रकुमारी चसमीपतः मातातत्रतनोपीडा संजातस्तत्रलक्षणः ऋल्यावरणं इस्ते जीर्णवस्त्रसमन्वितः जननी शीतलं वारि पीताजानीहिलक्षणं ॥ ऋथवृश्चिकस्य वृश्चिकेजायते बालो दीर्घकेशा सुलोमशः स्वमंगेभूषणेमातु श्चियस्तिस्चतस्वा

शे यंहोमंतत्रप्रकल्पयेत् पंचोपचारसं युक्तां पूजांतत्रप्रकल्पयेत् स्व यह्योक विधानेन कुर्यादिममुखंसुधीः कलशंजलपूर्णच वरम्युग्मेनवे-ष्टयेत् निधायचोषधीस्त्रपंचपछवसंयुनाः समस्थानमृदः कुंभेश्राल वालं प्रप्रयेत् इममेवरुण इ त्येवं जलमंत्रेणवापुनः सर्वेससुद्राःस-रितइतिमंत्रेणमंत्रयेत्यचि दितेयशोय येत्यादिसूकंजपेयुनः श्रावाहयेद घटेदेवं वरुणंप यसांपति एवंनक्षत्र शांत्यर्थे विद्ध्यायु-र्व पीठिकां सामान्योयंविधिःप्रोक्तोनक्षत्राणां प्रपूजने सर्वोषधीना-मयामी भवेदेका रातावरी सर्वेषामिषगंधाना मभावेचंदनंमतंश-तपत्रसुमनसां धूपामावेचगुगुद्धः नेवेद्यानामभावेतुपायसंसद्यतं स्पृतं मंत्राणामप्यभावेतुगायत्री मंत्रउत्तमः होमद्रव्यस्यदुः प्राप्ती तिलाघोक्तामनीषिभिः ऋष्टोत्तरसहस्त्रंच तथा शतमुदाहतं॥ मदन रलेऽभिन्तु ॥ त्र्यखिलभेषुगायव्यायमोदशेहोमोष्टोत्तरशतसंख्याकः बालिश्वतत्रनक्षत्रदेवताये सोपि हो मावशिष्टद्रव्ये ऐविक चिदन्येन अथजनमसंबंधिषु नक्षत्रराशिलमेषु यमघंटे नैधनेप्रत्यरी ऋष्टमचंद्रे रोगोत्यतो मृत्युः रियमधाद्वादशी गुरुशत्भिषक्षश्रीश्रकाश्विन्यष्ट मीशनी पूर्वाषाढा नवमीनां यो गेव्या धी मृत्युः भरण्यतुराधे रवी त्याद्री तराषाढे सोमे मधा वातिभषावाभी मे त्र्यश्विनी विद्याखाबुधे ज्येष्ठामृ-गे गुरो अवणा श्लेषा भूगो पूर्वा भाइपदाहरते वा शनो अत्रापिरोगे महाकष्टं त्रप्रवशांतिः पुष्कलाविधेया त्रयाननलयफलानि ॥ स्या-मवर्णी भवेन्मेषे सिंदूरारुणनेत्रयोः बाल्धीरोदीर्घकांतिःप्रकत्या श्ले ष्म कीनरः पूर्विक्रिक्षेत्रे मन्त्रक्षिक्षात्रिक्षात्रकारकां वरधरो वासो

पूर्वमधुरभोजनं ॥ त्र्यथरुषस्य रूपलये भवेद्वाली गीरवर्ण सुकांतिकः रक्तिपत्तिकारेणवनितातिस्तः पंचवा पश्चिमेचसुरवे मातुर्भीजनंशा-कर्जरुतं शुक्लांबरधरोवासो जननीरोप्यभूषण मिथुनस्यनेत्ररोगी नरो युग्मे पित्तवर्णोहिजायते वनितापंचत्रयंचैव प्रस्ता बोतरेशि-रः अल्पदुग्धवतीमाता पित्तपीडादिकारकः लक्षणंदक्षिणस्यागे भोजनं लवणंपुरा जीर्णवरत्रंभवेन्मातुर्जानीहिलक्षणंपुरा।। ऋथक-र्कटस्यं भोजनं वातलं कर्के चतुस्थानेचमध्यमः पूर्वाभिमुखाचजन-नी जायातत्रचतुरत्रयः वातश्लेष्मविकारेणमातापितृरुगार्तिदा पू-र्वात्यभोजनं कर्के वासांसिफिलतानिच गोरवर्णीभवेदालोदीर्घप्राणः सुकोमलः सोवणभूषणंहरतेकर्कतमत्रभावतः। अथितंहस्य ॥ ब हुकेशोभवेत्सिहदीर्घपाणः सुलोचनः मातुस्तनीरक्तवस्त्रं भृषाक-तकह स्तयोः दक्षिणाभिमुखमातु स्त्रियः पंचाथवारसाः तांवूलभक्ष-णमातुः चिन्हं पृष्टस्यवालके अधकन्याया कन्यालमे नरोजातीगी रवर्णोतिसुंदरः यनितासुस्थितापंच जंघयोधिन्हमेवहि जन्नयाश्चो-त्तरे शीर्ष कं ठेचिन्हं तु चालके गृहास्थितोनहि पिता प्रवालाभरणंतनी जननीरक्तवस्त्राच कन्यायां जायतेषुमान्।।त्र्प्रथतुसायाः ७ गीरव-र्णः तुलाउभेनेत्ररोगीप्रजायते रक्तिषस्फोटकोदेहे पाच्यां शीर्ष प्र-जायते चतस्त्रीयनितास्तत्रकुमारी चसमीपतः मातातत्रतनोपीडा संजातस्तत्रलक्षणः अप्रत्यावरणं हस्ते जीर्णवस्त्रसमन्वितः जननी शीतलं वारि पीताजानीहिलक्षणं ॥ ऋथवृश्चिकस्य वृश्चिकेजायते बालो दीर्घकेशा सुलोमशः स्वमंगेभूषणेमा तुस्त्रियस्तिस्चतस्वा CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जननीपूर्विशिरस्तस्यचिन्हं पृष्टेतुवामनः मातृपितृतनौपीडा कंठमध्येतु बालकः दीपरतेलेनसंपूर्णोदग्धं जीर्णतथावरं श्रथधनुषः ९ धनेत्रवा-लहस्तोचसीगध्यंजननीतदा उत्तरेचिशरतस्य योषातत्रशरोनिताह-दयेचिन्हितं -यैव इतनं यहमेवच रक्तवस्त्रान्वितामाता स्वर्णभूषणसंयु-ता पकानभोजनं पूर्व धनलमेकतंतथा ९ यथमकरस्य नकलमेल्या-मवर्णः स्थूलघाणंचमस्तकं दक्षिणस्यां शिरस्तस्यमातुःकन्यागमस्त-था अल्पकेशोभवेद्वालो यहं जीर्ण तदाभवेत पुरातनेन वस्त्रेणकषा-यं भोजनंतथा शीतलंबारिसंपीतं दीये तेलंतिलोद्भवं तकेचैतत्समु-द्धिं मतिमद्भिस्तु होरिकेः १० अप्रथभुंभस्य ११ वातलं भोजनं कुंभे ततु-हस्वाभवेन्नरः तिस्तः षडथवायोषा मध्यलोमासकेशकः चक्ष-रोगी भवे हालो गेहेन जनकस्तथा शाकान्न भक्षणं मातु र्घटल मेचल-क्षणं श्रथमीनस्य १२ रक्तवस्त्रोभवेन्मीनो माता तस्यन संदायः वातश्ले-ष्म प्रकोपेन पीडिताचोत्तरेशिरः स्वच्छ वस्त्रेणयानारी सुरूपासहबा-लका त्रिपंचवनितातत्र जवलमेचलक्षणं १२ त्राथात्रसामान्यफल ज्ञानायजनमफलं सोम्याः सर्वत्रशस्ता रूयरिभवग ३। ६।११ खला-मूर्तिषष्टाष्ट्रमांसे १।६।६।१२ क्षीणश्चंद्रस्तुरंध्रव्ययतनुग्द।१२।१ खलारिष्टदाज-भभेंदोः तुर्याभारतेषु ४।१०।७ पापाः स्विपतुरक्तरव दा द्वाब्ध्य गांतेषु २।४।७१२ मातुर्भातुस्त्रि स्थाः सुतस्थाः ५ सु-तमतिइतिदाः सप्तमेन्त्रीइराः स्युः,यस्मिन्भावेमृत्युषष्टांतिमेशा द धाार् यत्पारतेषु स्यानदातिः प्रयत्नात् केंद्रेकोणेरं घरिष्केच १।४।७। १०। ४।९।८।१२ पापाः पुत्रे ५ जीवस्त द्वृहं ९।१२ चार्म जार्से येयेमा-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वाः स्वामिसद्भिर्यते ध्यास्तेषां तेषां वृद्धिरीशोः सुवीर्यैः पापे हानिर्व्य-त्ययोर्घ्यष्टमात्ये ८११२। ६ प्रायोमित्रस्वोच्चपुष्टे कुलेशःशुभैर्लमात् स्वायुः भर्न र मनुजसो ख्यं ३ यहसुखं ४ सुविद्या ५ ससुत्रो परिषु भयमथ स्त्रीसुरवमदो चिरायुः ८ पुण्यर्धि ९ निजकुलपता १० लाभ ११ हतयो १२ विधोल मेछिद्रे १। ८ जिंडिसहजते-येत्रशुमवत् पापैर्लमा द्रोगःतानिः स्वता २ स्याद्विकांतत्वं ३ सीख्य ४ पुत्रा ५ रिना इ। ६ स्त्र-र्ता अरोगा द पापचितं ९ चडोोर्यं १० लाभो ११ हानिः १२ स्वोच्चिमित्रे-ल्पदीरव्यं व्यर्कीज्यतोर्थेर्सुनफा नफांते १२ इयो २।१२ ग्रहादीरुधिरो-र्थदोन्यः के गुद्रमोर्त्ये यहकें दइंद्री तो वोशिवेशित्यभयेष्टदोर्कात्-शुकः खलां तरगतः सरवलः सिताद्वापापाः सुखारतमृतिगा ४।७।८ रमणीहराःस्युः लग्नव्ययांबुनिधनास्त १।४।१३।८।७ कुजोमिथोघः रत्रीणां मदाष्टमखलो ७। ८ विधवलकारी ता तोर्कोनवमं ९ ततीथ जननीचंद्र स्ततोमित्रभ भ्रातासृक्चतृतीय३ मत्रदाशिजः स्यान्मा-तुलोतोरिमं ६ जीवोतोमतिरात्मजा भृगुरतरत्रीस्त्री ७ शनिश्चाष्ट-म = मायुः सत्पति दृग्युतेः सुखमतः पायारिभि रत्त द्वतिः ॥ त्र्यथकाक विष्टाविचारः फलित पुष्पितपछि तेतराविष सदुग्धमरबद्भमसंस्थितः सुसितिषि करोयदिवायसो धनसुखायच शांतदिगुन्मुखः त्याधा-रहीनोविरसद्वमस्थोज्वलिहगास्योप्यथदिसणास्यः कष्णांचिथिष्टा प्रकरोतिकाको व्ययायशोकायचने धनाय शीर्षमृतिर्वाशयुगेरु जा-र्त्तिर्भुजे मियार्ति भ्युदरे चर्ताकः गुर्धे सुनार्तिः किलवाह नार्तिर्जे घो रुदेशे पदयोः प्रवासः कट्यां स्त्रियोर्तिः खलु पृष्टदेशे किर्नि तंबेच

लतास्यदास्यात् त्याधारहीने विरसदुमेपि शुक्काहिविष्टालघुदोषदात्री रनानं सहोमं तिलहोमधेनुर्माषप्रदानं विद्धीतधी मान् काकीयमंत्रेर्ब-लिभुग्वलिंच दलायति हु भाष्यमुच्येत् त्र्यथसंकातीनां विचारः दि-वाचेन्मेषसंक्रांति रनर्थकलहमदा रात्रीसुभिक्षमारोग्यं संध्यायो र्वृ-ष्टिरुत्तमा रकेसंक्रमणेयाते यदिचेद्भ सुते शनी तत्रमासे भयं घोरं दु-र्भिक्षं दृष्टिचीरजं प्रभाकरस्य संक्रांति यहिंद्रोनेंदुनाभवेत् तन्मासि-ता ह्यांप्राहः शुभाशुभफलं नृणां पूर्वसंकातिनक्षत्रात्परसंकातिभय-दि दिनिसंख्यं समर्घस्या तुर्यपंचमहर्धता षष्टेलोका भ्रमंतीह यु-हीलाखर्परंकरे मासिमासिविचार्येवंग विलाफलंबदेत् यदत्रसं-कमेमोक्तं यथाभूषणवाहनं विनाशोजायते तस्यवस्त्रादीनां महर्ध-ता ॥मीनसंकातिः ॥ सूर्यच वहते वायु भीमेपीडाचतुष्पदां दुर्भि-क्षशानिवारेण यदिमीनगतारिव कदाचिद्वेवयोगेन बुधवारोयदाभ-वेत् रीरवं छत्रभंगंच महामारी उपद्रवाः चैत्रेतुव्याधिमामोति यहो मंडलकारकः युरुः शुक्तस्तथाचंद्र त्र्यतिचारीयदाभवेत् सुभिक्षंजाय-तेतत्र उत्सवंच गृहे गृहे ॥ वृश्विकसंक्रांतिः ॥ भानोरित प्रवेदो केंद्रे स्तस्माच्छुभग्रहाकांतेर्व द्भिः सोम्येर्वानिरीक्षिते ग्रे ष्टमराशिगतेर्के गुरुशशिनोः सिंहसंस्थितयोः सिंहघटसंस्थयोर्वा निष्पत्ति श्रीष्मशस्यस्य त्यर्कासिते हितीयेबुधेथवा युगपदे ववास्थित-योः व्ययगतयोरितहन्तिप्यत्ति रतीवगुरुदृष्या शुभमध्ये छिनिसूर्या-दुरु शशिनोः सममेपरासपत् व्यल्यादिस्थेसवितरि युरो हितीयर्थ निष्यतिः लाभिहवुकार्थ्ययुक्ते ः सूर्योदलिगान्सितेंदु शाशि पुत्रेः सस्य-

स्यपरासंपत् कर्मणिजीवे गवांचा ध्योकुं भेगुरुर्गवि शशीसूर्योि मु-रवे कुजार्कजोमकरे निष्पत्तिरास्तिमहती पश्चालरचकरोगभयं मध्येपा-प ग्रहयोः सूर्यः शस्यं विनाशयतिगः पापः सप्तमंरशो जातंजातंष-नारायति त्यर्थस्थानेकूरः सीन्यरिनरीक्षितः प्रथमजातं रास्यं निहंतिप-श्वादुमं निष्पादयेद्यकं जामित्रकेंद्र संस्थोकूरो सूर्यस्य श्रीधकस्थ-स्य शास्यविपत्तिं कुरुतः सोम्येर्द्दष्टीनसर्वत्र वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्त-मषष्टोपगो यदाकूरोभवत तदानिष्यतिः शस्यानामर्घपरिहानिः वि-धिनानेनेव वृषप्रवेदोद्यारत्समुत्यानां विद्येयः दास्यानां नाद्यायशिवा-यवातजङ्गेः त्रिषुमेषादिषुसूर्यः सोम्ययुनोवीिक्षनोपियाविचरन्येषि-क्धान्यं कुरुतेसमर्थ मुभयोपयोग्यंच कार्मुक मृगघट संस्थः शारदस्य तहदेवरिक्संग्रहकाले द्रोयोविपर्ययः क्रूरदो योगात्॥ अर्घविचारः॥ एकादश्यांकार्तिकस्य यदिमेधः समीक्ष्यते आषादेचयदा वृष्टिर्जाय-ते नात्रसंशयः मार्गशीर्षस्यचाष्टम्यां दृश्यते विद्युतीयंदा तदावृष्टिः शा-वणच मासेसंजायते ध्रवं रूष्णपक्षेदशम्याँच वृष्टिशोषस्यजायते त-दाभाद्रपदेमा सिच्छिर्भवतिभूयसी आषाढपूर्णिमायांयत्तनक्षत्रं वि-चारयेत् पूर्वाषाढे सुभिक्षांस्यान्यूले दुभिक्षमु चकेः उत्तराषाढकेस्वातां पीडाकटकसंगतिः ज्येष्टस्य प्रथमेपक्षे प्रतिपद्यांयदाभवेत् रिववारस्त-दावायु वातिवृक्षां तकारकः अत्यंतिवयहोमीमे बुधेदुर्भिक्षमुचकेः अन नावृष्टिः शनेवरि जलंकापिनदृश्यते सीम्यशुक्रसुरेज्यानां यदिवार प्र-जायते धनधान्यसुतोत्पत्ति रुत्सवंच गृहे गृहे षोषमास स्यसंकातो रवेवरियदाभवेत धान्यस्यिहियुणंमोल्यं भीमवारेचतुर्युणंत्रियुणंग्रा-CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

निवारेच बुधेशुके समंभवेत् सुराचार्थ्यचसोमेच मौल्यमर्धसुनिश्चितं मार्गकार्तिक संकाती वृष्टिर्वषितिमध्यमं पोषेमा घेसुखं नृणां शस्यपूर्ण वसुंधरा चैत्रफाल्युनवैशाख ज्येष्टानां संक्रमे घनः यदिवर्षतिसर्वत्र सुभिक्षंचप्रजायते त्राषाढसंकमे वृष्टो ज्याधिश्वश्रावणेसुरवं भाद्रेचव-हवोरोगाः शुभं सर्वत्रचाधिने ॥ स्रथकुह्योगः ॥ नक्षत्रेयस्यदशिते विषनाड्यांमवेद्यदि कुहूयोगइतिख्यातो व्याधिमृत्युभयादिकृत्॥ अ-थयहभोगाः ॥ मासंशुक्रबुधादित्याः सपादिद्वपादिद्विनंदादीभोम स्त्रिपक्षं जीवोष्ट्रतिष्टेत्यंचायनं रानिः राहुकेलोश्वविज्ञेयं श्रयनंच सदाबुधैः अथसामुद्रिकं ॥ उन्मानमानगतिसंहतिसारवर्णस्नेह स्वरप्रकृतिर्सल्मनूकमादीक्षेत्रं मुजांचकु रालो विधिव दिलोक्य सामु-द्रविहद्तियातमनागतंच ऋश्वेदनी मृदुतली कमलो दराभी श्लेषांगु-ठी रुचिर ताम नखों सुपार्शिउ थे।। शिराविरहितों सुनि गूढ युक्ते। कूर्मीन्नतीचचरणीमनुजेश्वरस्य शूर्पाकारिक क्षपांडुरनरवी वकी-विरा संतती संशुष्को विरलां गुलीच चरणी दारिखदुः रवपदी मार्गायो-रकटकी कषायस हशी वंशस्यविच्छितिदो ब्रह्मद्यीपरिपक मृटसुति तलोपीताबगम्यारतो ३ प्रविरलतनुरोम वृत्तजं घा हिरदकर प्रतिमे वे-रोरुभिश्च उपचित समजानवश्च भूपा धनरहिता श्वसृगाल तुल्यजंघाः ४ रोमेकेकं कूपके पार्थिवानां हे हे जेये पंडित श्रोत्रियाणां आधीर्निस्वा मानसदुःरवभाजः केशाश्चैवंनिंदिताः पूजिताश्च ५ निर्मासजानुर्फि यते प्रवासे सो भाग्यमत्येविक टेर्द्रिहाः स्त्री निर्जिता श्वापिभवंति निम्ने राज्यं समांसेश्चमहद्भिरायः ६ हिंगेत्ये धन्वानपत्यरहितःस्थू-

लेबिहीनोधनै भेंद्रेवामनते सुतार्धरहितो वकेन्यधापुत्रवान्दारिद्रं वि-नतेलधोल्पतनयोछिगेशिरासंतते स्थूलग्रंथियुतेसुर्गिमृद्करोत्यंतं प्रमेहादिभिः ७ कोशनिमुद्देर्भूपादीर्धेर्भभेश्विनपरिहीनाः ऋजुवृ-त्तकोफसोलघुः शिरालाशिशाश्वधनवंतः ६ जलमृत्युरेकवृषणोिक ष्मेः स्त्रीचंचलःसमेक्षितिपः -हस्वायुश्चोद्वत्धेः प्रलंबवृषणस्यज्ञान मायुः ९ रक्ते राढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याः पांडुरेश्यमितनेश्यसुखिनः स-शब्द मूत्रानिः स्वानिशब्दधाराश्च १० दित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणाव-ितमूत्राभिः पृथिवीपतयो ज्ञेया विकीर्ण मूत्राश्चधनहीना एके वमूत्र धारा वितानुपप्रधान सुतदात्री रिनेग्धोन्न तसममण योधनविता रत्नभोक्तारः १२ मणिभिश्वमध्यनिमोः कन्यापितरोभवंति निःश्वा-श्च बृहुपराभाजोमध्योन्नतेश्चनात्युल्वणेर्धनिनः १३ परिशुष्कवास्त शीर्षधं नुरहितादुर्भगाश्चविज्ञेयाः कुसुमसमगंधशुकाविज्ञातच्यामः हीपालाः १४ मधुगंधेबद्धविनामत्यसगंधेबहून्यपत्यानितनुशुकः स्त्रीजनको मांससगंधी महामोगी १५मदिरागंधे यज्वा ज्ञारसगंधेचरेत सिदरिद्राः शीघं मेथुनगामीदीर्घायु रतोन्यथाल्यायुः १६ निस्बोति-स्थूलस्फिक् समांसलस्फिक् सुरवान्विताभवति व्याघांतोध्यधिस्फिमं-इकस्फिङ्ग राधिपतिः १७ सिंहकटिर्मनुजेंद्रः किपकरभकर्धिनैःप-रित्यक्त समजवराभोगयुताघटपिठरनिभोदरानिः स्वाः १८ त्र्यविक-लपार्था धनिनोनिम्नेर्वकेश्वभोगसंत्यकाः समकुक्षाभोगाब्यानि निमाभिभौगपरिहीनाः १९ उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मा-नवा विषमकुक्षाः सपीदरादरिद्राभवंति बद्धाशिनश्चेव २०परिमंड-

लोन्ननाभिर्विस्तीर्णाभिश्वनाभिभिः सुखिनः स्वल्पा त्व दृश्यनिम्नाना-भिः क्लेशावहाभवति २१ बिसध्यगताविषमा श्लावार्धकरोतिनैः स्वंच दााट्यं वामावर्ता करोतिमेधां प्रदक्षिणतः २२ पार्श्वायत्ताचिरायुषमुपरि-षाचे यरंगवा ढ्यमधः अतपन्नकर्णिका भाना भिर्मनुजे यरं कुरुते १३ शस्त्रांनं रत्रीभोगिनमाचार्यबहुसुतं यथासंख्यं एक हित्रिचतुर्भिवली भिर्विद्यान्नृपंत्वबितं २४ विषमवलयोमनुष्याभवंत्यगम्याभिगामिनः पापाः ऋजुवलयः सुखभाजः परदारहेषिण श्रीव १५ मांसल मृद्भिः पार्श्वें अदिशणाचर्तरोमिभर्भूपा विपरीतेर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीनाः पर प्रेच्याः २६ सुभगाभवंत्य नुबद्धचुकानिर्धनाविषमदीर्घैः पीनोपचित निममेः क्षितिपतयश्च चुकैः सुखिनः १० हृदयं समुन्ततं पृथुनवेपनं मां-सलंच नृपतीनां अधमानां विपरीतं खररोमचितं शिरालंच २८ समय-क्ष सोर्थवंतः पीनेः शूरास्विकंचनास्तनुभिः विषमंवक्षोयेषां तेनिः स्वाःशस्त्रनिधनाश्च २९ विषमेर्विषमो जत्रुभिरर्थविहीनोस्थिसंधिप-रिणाहै उन्नतजनुर्भागीनिम्नेर्निःस्वोर्थवान्यानैः २० विषिदग्रीवोनिः स्वः शुष्कास् शिराचयस्यवाग्रीवामहिषग्रीवः शूरः शस्त्रांतो वृषसम श्रीवः ३१ कंबुश्रीवोराजाप्रलंब कंठ प्रभक्षणोभवति पृष्टमभममरोम समर्थवतामशुभदमतोत्यत् ३२ श्रास्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसं-कुलाकक्षा विज्ञातच्याधनिनामतोन्यथार्थे विहीनानाम् ३३ निर्मासी रोमचिनोभमावल्योचिर्निधन्स्यांशोविषुलावव्युच्छिनोसुश्विषोसी-ख्यवीर्यवर्ता १४ करिकरसहशो धृत्तावाजान्व व लं विनी समीपीनी वा-हृष्थिवीशानामधमानारोमशोन्हस्वो ३५ हस्तांगुलयो दीर्घाश्चिरायु

षामविताश्चसुभगानां मेधाविनांचसूक्ष्म्याश्चिपिटाः परकर्मनिरता नां ३६ स्थूलाभिर्धनरहिताबहिर्नताभिश्वदास्त्रनिर्वाणाः कपिसद्दरा कराधनि नो व्याघ्रोपमपाणयः पापाः ३७ मणिवधनै निगृदे हदेश्यस्-श्लिष्टसंधिभिर्भूपाः हीनेहरत्छेदः श्लेषेः सत्राब्देश्चनिर्द्रच्याः ३८पितृ चित्तेनविहीनाभवंतिनिम्नेनकरतलेननराः संवृत्तिनिम्नेर्धनिनः प्रोतानक-राश्चदातारः ३९ विषमेप्रिषमानि खाश्च करतलेरी चरास्तु लाक्षाभैःपी-तेरगम्यवनिताभिगामिनोनिर्धनारूक्षेः ४० तुषसद्यानखाङ्घीबाधि-पिटेः स्फुटितेश्ववित्तसंत्यक्ताः कुनखवर्णेः परतर्कुकाश्चताम्रेश्वभूप-तयः ४१ त्रयंग्रष्टयवेराख्याः सुतवंतोसुष्टमूलगेश्ययवः दीर्घागुलिप-र्चाणः सुभगादीर्घायुषश्चेव ४२ सिग्धानिम्नारेखाधनिनांतद्व्यत्यये निः स्वानां विरलां हु लयोनिः स्वाः धनसंचियनोधनां गुलयः ४३ ति-स्रोरेखामणिबंधनोत्थिताः करतेलपगान् पते मीनयुगांकि तपाणिर्नि-त्यं सत्प्रदोभवति ४४ वज्राकाराधनिनां विद्याभाजांतु भीनपुच्छनि-भा शंखातपत्रशिविकागजाश्वपद्मोपमान्यतेः ४५ कलशमृणाल पताकां कुशोपमाभिर्भवंतिनिधिपालाः दामनिभाभिश्वादधाः स्वस्ति-करूपाभिरेश्वर्य४५ चकासिपरश्वतोमरशक्तिधनः कुंतसिनभारे-रवाकुर्वतिचमूनाथं यज्वानमुळूखलाकाराः ४७ मकरध्वजकोष्ठागर सनिमाभिर्धनोपेताः वेदिनिभेनचैया मिहोत्रिणो ब्रह्मतीर्थन ४० या-पीदेव कुला चैर्ध में कुर्वितचित्रको ए।। भः अंगुष्ट मूलरेखाः पुत्राः स्यु-र्दारिकाः सूक्ष्मा ४९ रेखापदेशिनीगाशतायुषां कल्पनीयमूनाभिः छिन्नाभिर्द्रमपतनं बहुरेखारेखिणोनिख्ना ५० अपिक आदी धींचि-

वुकेर्निद्रव्यामांसले धनोपेताः विंवोपे ते रवकेरधरेभूयास्तनुभिरस्याः ५१ श्रोष्टेः स्फुटिन विखंडिन विवर्ण रूक्षेश्यधनपरित्यक्ताः स्भिग्धा घ-नाश्चदशनाःस्तीक्ष्णदंष्ट्रासमाध्यशुभा ५२ जिव्हारकादीर्घाश्वक्ष्ण सुसमाच भोगि नां ज्ञेया श्वेतारुष्णापरुषानिर्द्रव्याणां तथाता छ ५३ व-कंसोम्यं सं वृतममलं श्लक्ष्णंसमंच भूपानां विपरीतं क्रेश भुजां महामु-खंदुर्भगाणांच ५४ स्त्री मुखमनपत्यानां शाट्यवतां मंडलपरिज्ञेयंदी-र्घनिद्रव्याणां भीरुमुखाः पापकर्माणः ५५ चतुरस्त्रं धूर्तानां निष्नं वन कंचतनयरहितानां रूपणानामतिन्हस्वंसंपूर्णभोगिनांकांतं ५५ अ स्कृटितायं सिग्धं समञ्जुश्रमं मृदुचलन्तंचेव रक्ते प्ररुषे श्रीराः शमश्रु भिरत्येश्वविज्ञेयाः ५७ निर्मासीः कर्णे पापमृत्यवश्वपरैः सुबहुभोगाः रूपणाश्च-हस्वकर्णाः शंकुश्रवणाश्चभूपतयः ५८ रोमशकर्णादीर्घा युषस्तुधनभागिनोधिपुलकर्णाः क्रुराः शिरापिन द्वे व्यत्तिं वैमासलेः सुखिनः ५९ भोगीलिनिम्नगंडोमंत्रीसंपूर्णमांसगंडोयः सुखभाक् शु-कसमनास्थिरजीवीशुकनादाश्च ७० छिनानुरूपयागम्यगामिनो दीर्घयातुसीभाग्यं आकुंचितयाचीरः स्त्री मृत्युःस्याचिपिटनासः धा धनिनोयवकनासादिक्षणवकाः प्रभक्षणाः क्र्राः ऋ ज्वीस्वल्यछिद्रा सुयुटानासासभा ज्ञानी ७२ धनिनां क्षतं सकत् हित्रिपिं डितंत्हासादि सानतादंच दीर्घायुषां प्रमुक्तां विज्ञेयंसंहतंचैव ७३ पद्मदलानधिन-नोरक्तांतिवलोचनाः श्रियोभाजः मधुपिंग लर्महार्थामार्जारविलोचन नाः पापाः ६४ हरिए।। क्षामंडल लोचनाश्च जिह्ने श्वलोचनेश्चीराः कू-राकिकरनेत्रागजसद्दशह्यश्यभूपतयः ६५ ऐश्वर्यगंभीरेनीलोत्पल

कांतिभिश्वविद्वांसः अतिकष्णतारकाणां मक्ष्णामुत्पाटनंभवति ७५ मित्रस स्थुल हुआंश्यावाक्षाणांचभवति सोभाग्यंदीनाहृनिः स्वानां सिग्धाविपुला-र्थ भागवतां ६७ अभ्युन्नताभिरलसायुषोविशालो नताभिरतिसुरिवनः विषमभुवोदरिद्रावालेंदु नतभुवः सधनाः ६८ दीर्घासंसक्ताभिधीनेनः खंडाभिरर्थपरिहीनाः मध्यविनतभ्रवोयेतेशक्ताः स्त्रीधुगम्यासु ६९उ-न्नतिषुरोः शंरवेर्धन्यानिमनेः सुतार्थसंयक्ताःविषमललादाविधनाध-नवंतो धेन्दु सहशेन ७० शक्ति विशालेशचार्यता शिरासंततेरधर्मरता उन्नतिशराभिराखास्यस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ७१ निम्नललादावधवं धभागिनः कूरकर्मनिरताश्वन्त्रभ्युन्नतेश्वभूपाः रूपणाः स्युः संकट लला टाः ७२ रुदितमदीनमन किन्धं चशुभावहं मनुष्याणां रू संदी-नं प्रचुराश्चरोवनशुभप्रदेषुंसां ७३ हासितंशुभदमकं पंसिनिमीिक तलो-चनंचपापस्य हष्टस्य हित मुस कत्रो न्माद स्यास क्यात्ये ७४ ति-स्त्रोरेखा रातजीविनां छलाटायताः स्थितायदिना खत स्भिरवनीश बंनवतिश्वायुःसपंचाब्दाः७५ विच्छिन्नाभिश्वागम्यगामिनोभवतिर-प्यरेविणकेशां तोपगता भीरेखा भिरशीतिवर्षायुः ७६ पंचभिरायुः समितरेकायावास्थिताभिरपिषष्टीः बहुरेखेण राताधेचलारिरात्र्य वन काभिः ७७ त्रिं बादभुलमाभिर्विवातिकश्चेकवामवकाभिः क्षुद्राभिः स्वल्पायुर्न्यनोभ्यश्चांतरेकल्प्यम् ७८ परिमंड ले ग्वाढ्या १छ त्राकारेः बिरोभि रवनी बाः चिपिटैः पितृमातृधाः करोटिबिरसांचिरान्मृत्युः ७९ घटभूर्घाध्वानरुचिर्दिमत्तकःपापरुद्देनेस्यक्तः निम्नंतु शिरोम-हतां ब हुनिम्नमनर्थदं भवति द० एकेकभवैः स्निग्धेः कणी राकुंचि-

तेरभिनायेर्मृदुभिर्नचातिबहुभःकेशेः सुरवभाक्नरेंद्रोवा =० बहुमूल विषमकपिलाः स्थूलस्फिटितायपरुषप्रास्वाश्चन्यतिकुटिलाश्चातिषः नाश्चमूर्धजावित्तहीनानां द्ययद्वात्रंस क्षं मांसाविहीनं शिरायनहंच तत्तदनिष्ट्रपोक्तं विपरीतमतः शुभंसर्व ६३ त्रिषु विपुलो गंभीर स्त्रीष्वे-व षडलतश्चतुर्इस्यः सप्तरुक्तोराजापंचसुदीर्घश्च सूक्ष्मश्चट४ नाभि स्वरः सत्विमितिप्रदिष्टंगंभीरमे तान्त्रीतयं नराएाां उरोल लाटंबदनंच पुंसां विस्तीर्पमितिन तयंप्रशस्तं ६५ व क्षो थकक्षानरवनामिकास्यं रुकारिकाचेतिषडुन्नतानिन्हस्यानिचालारिचिछिंगपृष्टं श्रीवाचजंघे चहितप्रदानि ८६ नेत्रांतपादकरताल्वधरोष्टि जिव्हारकानखाश्चरव-खसप्तसुरवावहानि सूक्ष्माणिपंचदशनांगुि पर्वकेशाः साकंखवाकार रुहाश्चनदुः खितानां ८७ हतुलोचनवाहुनासिकास्तनयोरंतरमत्रपं ्यमं इतिदीर्घमिदंतुपंचकंनभवत्येव नृणांमभूभृताम् ८८ क्षेत्रं छाया शुभाश्वभफलानि निवेदयंति ॥ लक्ष्यामनुष्यपशुपिकशुलक्षणज्ञे स्तेजोयुणा-बाहिरपिपविकाश्यंति दीपप्रभास्फटिकरत्नधटास्थिते-यद ९ सिमहिजल इस्वरोमकेशः छाया सुगंधाचमही समुत्था तु-ष्ट्यर्थलाभाभ्युदयान्करोतिधर्मस्यचाहन्यहिन प्रवृत्तिं ९० स्निग्धासि-ताच्छहरिता नयनाभिरामा सोभाग्यमादिव सुखाभ्युदयान्कसेति सर्वार्थसिद्धिजननीजननी वचार्था छायाफलंतनु भृतां शुभमाद धाति ९१ चंडाधृष्यागदाहेमानिवर्णा युक्तातेजो विक्रमेस प्रतापेः त्यामे यीतिमाणिनां स्याज्जयाय क्षिमसिद्धि गांछितार्थस्य धत्ते ९२ मिलन परुषं रुष्णापापगं धानि लोत्या जनयति वधवं ध च्याध्यनर्थार्थना शान्

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

स्फटिकसदशस्या भाग्ययुक्तात्युदारा निधिरिवगगनोत्या श्रेयसांस्वछ वर्णा ९३ छायाकमेण कुजलाध्यनिलांबरात्थाः केचि इदंति दराना श्यय-थानुपूर्व्या सूर्या अनाभ पुरुहृत यमोहपानां तुल्यास्तुलक्षणफलेरिति तत्समास ९४ सृजाकरि वृषरेथो घमेरी मृदंगसिंहा ब्दिनः स्वाना भूपाः गर्दभजर्जर रु क्षस्वराश्वधनसीरव्यसंत्यकाः ९५ ॥स्वरः॥ सप्तभ-वंतिचसारा मेदो मज्जा लगस्थिशुका शिरुधिरं मां संचेति प्राणभूतांत त्समासफलम् ९६ ताल्बा घदं तपािक जिन्हाने त्रांतपायुका चरणेः र-कैस्तुरकसाराबहुसुखबनितार्थपुत्रयुताः ९७ स्निग्धलकाधनिनो मृदुभिः सुभगाविचक्षणास्तनुभिर्मज्जामेद साराः सुशारीराः पुत्रवित युताः ९८ स्थूलास्थिरस्थिसारो बलवान् विद्यांतकः सुक्तपश्च बहुगु-स्र शुकाः शुभगावि हां सो रूपवंतश्च ९९ उपचितदे हो विहान् धनीसु-रूपश्चमांससारोपः इतिसारः ॥ संघातः॥ इतिचसुन्धिष्टसंधिताः सुरव भुजो झेयाः १०० इतिसंहतिः ॥ स्नेहः पंचसुलक्ष्योग्वाजिव्हा नेत्र नखसंस्थः सुनधनसोभाग्ययुताः स्निग्धेस्तेर्निर्धनारू क्षेः १ इतिस्नेहः द्यु तिमान्वर्णः स्निग्धः क्षितिपानां मध्यमः सुतार्थवतारु क्षोधनहीनानां शुर्धः शुभदोनसंकीर्णः २ इतिवर्णः साध्यमनूकं यक्षा द्रोवृषदाार्लिसंहगरुडमुखा न्यप्रतिहत प्रतापाजितरिपवोमानवेद्रा-श्च ३ वानरमहिष वराहाजतुल्यवदनाः सुतार्थसुखभाजः कर्षभकर-भप्रतिमेर्मुखेः शरीरेश्विनःस्वमुखाः ४ इत्यनकं श्रष्टशतंभवति परिमाणं चतुरशी तिरितिपुंसां उत्तम समही नानामं गुल संख्यास्वमा-नेन ५ इत्युन्मानं भारार्धतनुः मुखभाक् तुलितोतोदुः स्वभाग्मवत्यूनः

भारोतिवाद्यानामध्यर्धः सर्वधरणीयाः ५ विंदातिवर्षीनारी पुरुषः खलुपं-चित्रातिभिरद्वेः ऋईतिमानोन्मानं जीविनभागे चतुर्थेवा ७ इतिमानं भूजलिशिसानिलांबरसुरनररक्षः पिचाचकातरथांसत्वेनभवतिपुरुषाल क्षणमेतद्भवत्येषां व महिस्यभावः शुभपुष्यगंधः संभोगवान्सुश्वसनः-स्थिरश्च तोयस्यभायोवहुतोयपायीप्रियाभिलाषीरसभोजनश्व ९ ऋ प्रिष्ठत्याचपरोतिनीक्षणश्चंडक्षुधाकु बहुभोजनश्च वायोः स्वभावेन-चल रुवाश्वि मंचको अस्यवशं प्रयाति १० रवम रुति निषुणो विद्वता-स्यः शब्दगतेः कुशलः सुरिवरांगः त्यागयुतः पुरुषो मृदुकोपः स्नेहातश्च भवेत्सुरस्तः ११ मर्त्यसत्यसंयुतोगीतभूषणप्रियः संविभागशीलवा-नित्यमेवमानवः १२ तीक्ष्णप्रकोपः खळचेष्टितश्च पापश्चसलेननिशा चराणां विशाचसत्वश्चपलोमलाको वऊपलापीचसमुह्मणांगः १३ भी-रुक्षधालुर्बहुभुक् चयः स्यात् ज्ञेयः ससलेननरस्तिरश्चां एवं नराणां प्रकृतिः प्रदिष्टाय छक्षणज्ञा प्रवदंति सत्वं १४ इतिप्रकृतिः शार्दू लहंस समदिद्वपंगापतीनांतुत्याभवंतिगतिभिःशिखीनांचभूपाःयेषांचशब्दरितंस्तिमितं ययनंतेपीश्वरादुतपरिदुतगादरिद्राः १५ इतिगतिः श्रांतस्ययानमञ्जनं चबुभुक्षित-स्यपानं तृषापरिगतस्यभयेषुरक्षा एतानियस्यपुरुषस्यभवंतिकालेधन्यं वहंतिरव <u> उतंनरतक्षण्इाः १६ पुरुपतक्षणं मुक्तनिदंमयामुनिमतान्यवलोक्यसमासतः इद</u> मधीत्यनरोत्रपसम्मिनोभवतिसर्वजनस्यच वलभः १७ इतिपुरुषल-क्षणं ॥ त्र्यथरत्रीलक्षणम् सिन्धोन्नतात्रतत्ततात्रनस्वो कुमार्याः पादी समोपचित चारु नियू उगुल्यो श्लिष्टां गुलिक मलकां तितलीच यस्याता मुद्दहे घदिभुवोधि पतित्वमिछेत् १ मत्स्यां कु शाज्ययववज्रह् CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ठासिचिन्हावस्वेदनो मृदुत्रलोचरणो प्रशस्तो जंघेचरोसहिते विशिरेसु वृ-ते जान्द्यं सममनुल्यए। संधिदेशं १ उद्दर्धनोकरिकर प्रतिमावरोमावः अत्थप त्रसहशं थिए लंच गृह्यं श्रोणी ललाट गुरुकूर्म समुन्तनंच गूढोम-शिश्वविषु छां श्रियमाद्धानि ३ विरनीर्णमांसो पचिनो निनंबो गुरुश्वध-ने रसना कलापं नाभिग्भीरा विप्रलांगनानां प्रदक्षिणावर्तगताप्रशास्ता ४ मध्यस्त्रिया स्त्रियिकताथमरोमशंच वृनोधनायविषमो कटिबायुर-स्यो रोमापवर्जित मुरो मृदुचांगनानां श्रीवाचकं यु निचितार्थ सुखानिध-ते प् वंधुजीव कुसुमोपमोधरों मांसलो रुचिरिवंबरूपधृक् कुंदकु हुल निभाःसमाहिजा योषितांपतिसुरवामितार्थदाः ५ दाक्षिण्ययुक्तमग्रठं परपृष्ट इंस बत्सुत्रभाषितमदीनमनल्पसीरव्यं नाशासमासमपुरारु-चिराप्रशस्ता ७ द्वीलनीरजल्युसुतिहारिणीच ७ नोसंगतेनातिपृथ नलं वशस्ते भ्रुवी वाल शशांकवके अधेंदुसंस्थानमरोमशच शस्तल-लाटं ननतंनतुंगं ८ कण युग्ममिपयुक्तमांसलंशस्यतेमृदुसमंसमा हितं सिन्धनील मृदुकुंचिते कजामूर्धजाः सुखकराः समंशिरः ९ भृंगा रासनवाजिकुंजरतथश्रीवृक्षपूपेषुभिर्मालाकुंडलचामरांकुरायवैःशे लेध्व जैस्तोरणे मत्स्यस्यस्तिकयेदिकाव्यजनकेः शंखानपत्रां युजेःपा-देपाणितले पिवायुवतयो गछंतिराज्ञीपदं १० नियूदमणिबंधनी तरु-णपद्मगर्भीपमो करोन्पतियोषितां तत्विकष्टपर्वागुठी निम्नर्मात नोन्नतं करतलं सुरेखानिनं करोत्यविधवांचिरंसुनक्तरवार्थसंभोगि-नी ११ मध्यांयुलिंयामणिबंधनोत्थारेखागतापाणितलेंगनायाः उ-र्ध्वस्थिता पाणितलेथवाया पुंसोथवाराज्यक्तरवायसास्यात् १२

किनिष्ठिकामूलभवागताया भदेशिनीमध्यमिकांतरालंकरोतिरेखाप-रमायुषः साममाणमूना नुतदूनमायुः १३ त्रांगृष्टमूले प्रसवस्यरेखाः पुत्र वृहत्यः प्रमदास्तुतन्व्यः अधिनदीर्घा बृहदायुपांताः स्वल्पा युषां धिन लघुपमाणाः १४ इतीर मुक्तं शुभमंगना मतो विपर्यस्त मनिष्ट मुक्तं विशे-षतो निष्टफलानियानि समासतस्तान्यनुकीर्तयामि १५ कनिष्टिकावात दनंतरावामहिनयस्याः स्पृश्तीस्त्रियाः स्यात्गतायवांगुष्टमतीत्ययः स्याः पदेशिनी साकुटिलातिपापा १५ उद्दाभ्यांपीडिकाभ्यांशिराले शुष्केजंघेरोमशेवातिमांसे वामावर्त्त निम्नमल्यंच युखं कुंभाकारंचोदर दुःखितानां १७ -हस्वयातिनिः स्वतादीर्घयाकु रुक्षयः ग्रीवयापृथ्यस्थ यायोषितः प्रचंडता १८ नेत्रेयस्याः केकरेषिंगले वासादुः शीलाश्यावलोले क्षणाच कूपोयस्यगंडयोध्यास्मितेषुनिः संदिग्धं वंधकी तांवदंति १९ प्रविलंबिनिदेवरं ललादेश्वकरं हंत्कदरे स्किजोः पतिंच त्रितिरोम चयाचिनोत्तरोष्टीनशुभाभर्तुरतीवयाचदीर्घा २० स्तनीसरोमी म-विनान्वणीच क्षेत्रांदधाते विषमोचकणी स्थूठा कराठा विषमाध्य दंताः क्षेत्रायचौर्यायच रुष्णमां साः २१ कव्यादरूपे वृककाककंक सरिसृपोऌक समानचिन्हैः शुष्केः शिरालै विषमेश्वहस्ते भवंतिनार्यः सुखिवनहीनाः २२ यातूनरोष्टेनसमुन्ततेन रु क्षायकेशीकलहिन यासा प्रायोविद्धपासुभवंति दोषा यत्राकृतिस्तत्र गुणावसंति २३ पादीसगुल्को प्रथमंप्रदिष्टी जंघे दितीयेचसजानुचके मेढ्योरसुष्कं-चत्तसस्तृतीयं नाभिः कटिश्चेतिचतुर्थमाहुः २४ उदरं कथयंति पंच-मंहद्यंषष्टमतः स्तनान्यितं अथसप्तममंशजञ्जणीकथयंत्यष्टमं

मोष्टकपरे२५ नवमंनयनेचस्रुणीसललाटंद्रामंशिर्रतथा य शुभेषुशुभंद्शाफ्रंचरणाघेषुशुभेषुशोभनं २५ इतिस्त्रीलक्षणं॥ अ-था शिवास्वरिवचारः श्वभिः शृगालाः सहगाः फलेनिवशेष एपांशिशि-रेमदािमः हू हरुतां तेपरतश्च टाटापूर्णस्वरोन्येकथिताप्रवी माः १ ला-माशिकायाः खद्धकक्षशब्दः पूर्णस्यभावप्रभवः सतस्याः येन्येस्वरा-स्ते प्रकृतेरपेताः सर्वेचदीसा इतिसंप्रदिष्टाः २ पूर्वोदीच्योः दीवारा-स्तात्रांतासर्वत्रपूजिताः धूमिताभिमुखीहित स्वरदी मादिगीधरान् ३ सर्वदिक्षुशुभादी माविशेषेणाह्यशोभना पुरेसेन्येपसव्याचकष्टा सूर्योन्युरवीशिवा ४ या हीत्यिमिभयंशास्ति टाटे निमृतवेदिकाधि-धिरग्दुकृतमाचष्टे सज्वालादेशनाशिनी ५ नेवदारुणनामेकेसज्या-लायाः प्रचक्षते अर्काद्यनव्यतस्याय कंलालास्यभावतः ५ अथप्रति-हतायाम्यासो द्वं धमृतशंसिनी यारुण्यनिरुनासेवशंसने सिठिले मु-तं ७ त्रक्षो भः श्रवणंचेष्टधनमाप्तिर्धनागमः क्षोभ प्रधानभेदश्चयाः हनानांचसम्पदः - फलमासप्तमादेतद्व्याद्यंपरतोरुतं याम्यायां निह्पर्यस्तं फलंषरूपंचमा हते ९ यारोमांचं मनुष्याणां शक्नमूत्रं चवाजिना रावात्रासंचजनयेत्साशिवानशिवष्रदा १० मीनंगताप्र तिरुते नरिहरदवाजिनां याशिवासाशिवंसेन्ये पुरेवासंप्रयच्छितिश भे मेतिशिवाभयंकरी भो भो व्यापद मादिसे चसा मृतवं धनिवेदिनी-फिफहूहूचात्सहिताशिवास्वरे १२ शांतात्ववर्णात्यरमीवहंति ६। ६ मुदीर्णामिति वाश्यामाना ॥ टेटेच पूर्व परतश्च थेथेतस्याः स तुष्टि प्रभवंरुतंतत् १३ उचीं घीरं वर्णमुचार्यपूर्व पश्चाकोशे कोष्टुकस्या

नुरूपंया साक्षेमं प्राइपित्तस्य चापिसंयोगंया प्रीषितेनप्रियेणा। १४॥ इ-नि शिवारुतं ॥ अथोद्करुतं हुं हुं गुण्छिगितित्रियामिलषको शत्युद्ध-को मुदा पूर्णस्यादुरु छ मदी समिपच हो यं सदा कि स्कि सिर्वि हो यः कल हो यदा वलवलं तस्यासक हाशितं दोषायेषटट हटेतिन शुभाः शेषाः प्रदीसा न्यराः अथवयस्य गृहोपरिकोशिकः प्रतिरुतं कुरुतेनिशिवादिनेप्रिति गेहपतेर्मरणं भवे इनकलन्न पशुक्षयकारकः गोज्ञालायां गवांनाज्ञो धान्या गारेतुत्रीहिणाम् तस्मात्तत्रशांतिर्विधेया कल्पोक्ताएवमेवेतरस्मिन्ययु लातेपि अलभियताप्रबंधेन विज्ञेषु मुहूर्तरलाकरनामधेयः सुसंग्रहोयंरि-तः प्रयत्नात् कह्यालकेः बोडशभिः समेतः पीतां बरः पर्युगे समर्पितः १ या-ह्याश्राह्मविचारा रव्यकछोलन्यादिसंज्ञकः मुहूर्वसंज्ञकस्त्रस्मात्संकांत्याख्य ततःपरः शोचरसंस्काराख्योपरिणयन वधुवेशकों प्रिरागमनं स्रन्यथानन रेशाभिषेचनो यात्रिकं वास्तु १पवेशाख्यस्ततो मिश्रः प्रभसं इश्वकीर्तितः संकी र्णाख्यस्ततश्चेमेषोडशप्रितामया ४रेभ्यात्रिहारितयंथांस्तथान्या नृषि-भिः छतान् दृश्वायं संयहः सूक्ष्मः कतोलोकिहतायच ५ श्रीमन्मेहरचंद्रेणः विद्याविस्तारकारिणा कारितोयंशकेवेदव्योमेभाजा १००४ सितेश्रभे ७ऊ र्ण रूणात्रयोदस्यां कालं शरिसंज्ञके जगामपूर्णतांपत्रान्मतःश्रीयुरुसे-वयाभ्यातेस्तथामते हीं साहिरुक्तं वाहिरुक्तं कं न्य्रायीमात्सर्यमुत्सायीव-यार्यरचयंतुतत् पितृचरणसरोजसेवयाकिमपिममाभवदुज्ज्वलामतिः श्रकरवमहमेनमादरादिदमखिलंमिहिरंदुमित्रसात् इतिश्रीमद्भावडान्वयोद्ध-विमहरचंद्रकारितेमुङ्गरिलाकरेषोडशकछोलः १६ शुभंभवतूभयोः विस्तार मायात्चश्रीजगदंब कृपातःदेवभूतेः कीर्तनेननंदपुत्रनमस्ययाकृतंसर्वशुभंभूया च्छिष्यायपाठकायच् अथ पूर्वार्धेचतुर्योक्षिरिवते उत्तरार्थेचिहिधा उभिधानंचकमा इवनीति वाध्यम् छ

शुद्धाशुद्धि पत्रम् •

त्रशुद्	शुद्ध	मृ-	पं	अश् ह	शन्द	पृः	पं
मानदिनम्	दिनमानम्	2	9	र्या	या	90	ध्य
इ शेरि	दशी	8	9	चा	घा	90	90
योगः शुभः	योगोशुभः	R	8	घसु	वस्तु	90	18
सवर्ता	सम्बर्ना	R	4	र्श्रव	श्रव	90	964
याग	योग	8	9	युव	उ न	99	3
ऋय 💮	ऋयम्	8	4	श्वा	स्वा	99	ex
लमाशुभः	उम्मान्यश्रुभा नि	8	9	जबु	जंबु	99	92
नृतीय	नृतय	B	99	रुपानि	रुह्यानि	99	२३
रविवार	रविवारचंद्रस्योप			30	६०	99	२२
	रागश्राद्वादिषुचदंत		- 1	प द	पू.द	92	a
	धावनम्बर्ज्यम्	ч	90	र०६०	परद	92	9
वाराएग	वाराणाम्	थ्र	5	नागेचैवसदारुण-		Jun 1	-
वंध	वध	w	95	निहरणं सी भाग्य	सोभाग्यकर्मशुभ		
परायो	परायो	ध्य	24	कर्मशुभपुष्टिवृद्धि	पुष्टिवृद्धिमंगलकर		
ध	स्य.	9	3	मांगत्य करणानि	णानि-	92	16
सं	स	6	9	नार्थ	तार्थी	92	20
ध् स सं	स्रा.	0	90	तिष्ठा	तीश	13	4
प्य	थ	6	92	चापाक	र्चापाक	93	6
वभे '	वारे	6	94	त्रं	স	98	छर्
र्यो	र्या	9	98			98	9
तोन	तोन्न	6	8	च्यः	<u>ब्या</u>	98	92
स्तूपयना	स्तूपना	6	9	नर	पु ब्या नरेः	98	92
चाष्ट	त्वाष्ट	9	2	ग्रासेसा	यासेमा	94	3
विषे	विद्ये	9	2	मामासा	मासा	94	3
धेम	थेभ	19	3	योत्धर्म	योखं	984	
स्थापयनो	स्थापनो	19		त्यातम	त्यातभम्	981	1
यह	पह	18	99	धनुश्चनु	धनुषः	900	1
दुक्षामा		90		चतु कोणं		94	
वध	दुमा वंध	90	150		तस्रवुकरः	980	May 1
: A 19			1,	पुरुष	पुरुषः		150

त्र्रशुद्ध-	-युद्ध-	प्र-	पं		अ.इ.	T g.	पं
पिच	पिन	980	20	दुर्लभी	दुर्छभे	23	-
वषुच	वेषुच	90	9	ज्ञाना	ताना	23	984
बल्येच .	वाल्येच	90	2	नाना	ताणा	23	
वर्षेय	चर्षघ	90	99	वासरें	वासरे	28	
श्राकर्ण	द्याकर्ण	95	20	धारणभु	धारणमु	28	LIP
संशयद	संशयं	95	y	सुभन्	सुभम्	28	94
म्लेंख	म्लेख	90	9=	श्रमृत	त्रमृतयोगे	28	99
विनष्टक	विनष्टम्	90	ब्र	योगा	योग	28	98
स्यादि	रयादि	95	ख	भोगश्रुभः	भोगः सुभः	24	9
	भागीरधी	95	9	अबस	श्रयब्रह्म	२५	13
श्रन्याऽसुमाः	श्रान्येसुभाः	95	93	यागे	योगे	284	9
	पणफर	95	29	वेरारायां	वेण्यां	२६	9
हापार	हापर	95	20	पद्मीणां	पक्षिणां	24	1
	पारिघः	98	5	द्रेष्काणशु	द्रेफाणः सु	२६५	
पिज्ये झेयी	पेत्रोज्ञेयः	98	9	पराण्य	पण्य	20	98
त्र्यत्राह्मी है	रेज्यब्राह्मी	98	9	त्र् <u>या</u> श्ले	त्र्यश्ले	20	964
	भिजिन	98	90	कर्काद्यह	कर्काधर	28	9
The second second	दुष्ट	20	ध्य	ध्येंच	ध्येयं	30	4
1	वासरे	20	92	समस्ते	मस्ते	30	5
मुहर्न	मुहूत	20	900		(पुछेहानिः	30	99
The second secon	राहित्ये	29	9	<u></u>	४ पृछेलक्मीनाशः	30	94
न्दध्या :	न्दध्या	29	8	पूष्य	पुष्य	30	99
वार्षु	गरेषु	29	99	मुहुत्त	सुहूर्त		984
		29	- 1	(41.41	स्थाप्याः	39	20
		29	ध्य	तिथ्यो	तिथ्योः	33	98
•	ज लभी	२२	0	चलचर	चर	33	94
	याम्यायां ।	२२	93	नछी	वली	33	99
नंबधी :	नबधे		984	सूर्ये	चूर्ये:	38	2
क्राति:भा	रुतिः सुभा	23	9	रान	रात्तंः	38	96
सुर्यादि र	<u>वूर्पादि</u>	23	9	पार्वां शका	पापांद्राकः	38	20
हेरिन ह	मि	23	9	0	0	•	•
		.		4		1	

F	<i>ऋ</i> शुद्ध	शुद्ध-	叓.	पं	- अशुद्ध	गुद	폏.	ų.
2	गत्रो रू	यात्रोक्त	Account to the last	29	श्रम्ब ।	_{त्र्यस्त्र}	५9	. 9
2	विगत	रविगतभाद्गणना			मधा	मघा	49	96
1		वोध्या .	39	964	रिष्टदः	रिष्टद	49	90
¥	ांधर्ष्य ।	संघर्ष	39	98	मूलार्ध	मूलाच	५२	8
	ग्रास्य 💮	शस्य	80	a	घाटिकाद्यं	घटिकार्घ	43	8
1	देय	देयमथवामृखुंजय	80	9	घटी घटी	घटी	५३	a
1	कृपांबु	क्पांबु	80	92	मातुः ना	या तुर्ना	५२	६५
2	वीवुधी	रविबुधी	80	98	पादे ५	पादेच	43	3
1	धस्यानि	धि ष्णानि	80	90	घन	चट्यः	५३	3
H	पूपास्वी	प्रषास्वी	80	98	हाष्ट	दाष्ट	५३	9
1	हाद शेः	हादशः	80	95	यद्योग	यद्योज	48	ध्य
1	छे खत	ि खित	89	٦	मूंल	मूरतं ।	48	93
	जीववंध	वीजवंध	85	4		पहरुव	५२	2
-	पक्षं	पक्ष	83	984	निवेदयेत्	निधापयेत्	44	3
	मधुका 💮	मधुक	83	9	शलेयं	शैलेयं 🔭	प्रप	92
	ज् <u>याह</u> त	श्राहुत	83	94	The second secon		५५	92
	होमेदिरा	होमें दिरा	83	984	हरिद्रा३	हरिद्रेष	44	99
	ग्रह पते	यहयझे	83	29	मृदः १०	मृदः ७		92
1	स्रवः	सः	88	9	स्थान १२	स्थान १	44	93
	कुट	कुष्ठ	84	9	गोष्टः ७	गोष्टः अप्तधा		
	प्रियुंय	प्रियंगु	84	9		-यानि	34	93
	विह	बहिर्	84	2	81=139	E 19192	410	9
	तक्षाः	तस्णः	84	6	अंत्यज्ञानं		d's	9
	कार्यकार्य	कारकार्य	80	92	10	ट पतीन्	yo	3
	वलव	वछवयो	80	98	मेषा	मेषं	40	-
	वैत्रयं	वेड्य	80	R	त्रमीता	मिता	30	90
	तियुषु	तिथिषु	RE	96		खिल	46	ध्य
	परीक्षादीनां	परी झारता दीनां	88	8	रव्यादिनां	रव्यादीनांसकांती	40	9
	चद्री	चंद्री	86	8	पुण्यदा	पुण्यदाः	40	90
-	सब्ध्य	तव्याश्च	do	90		रहितः	40	90
*	वारत्रं	वरबं	cy o	99		<u>स्थालन</u>	40	99
		/			49		1	1

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्रशुद्ध	श्रदः	इ	पं-	প্রসম্ভন্ত	शुद्ध .	र्घः	प
कर्रपू	कर्ष	48	9	सूर्य	सूर्ययहे	६६	3
गोसुत्र	गोसूत्र	५९	c	चंद्र	चंद्रमहे	द्ध	3
धन	घन	49	8	चेद्रुरुः	चेद्गहः	६७	4
वन	घन	49	9	यहणं	त्र: यहण	छ्ड	9
एगसु	चरणायु	६०	٦	ससमवर्षेश	सहमषोड्या.	६७	3
परत्वें	परत्वे	६०	9	सत्हक्	सद्क	६७	9
अभं	भुभं 🔭	६०	4	कृष्णं	कुच्रो	६८	99
_	जातयः	ध्र	c	गुम	श्रुभः	६१	90
सं ३०	संन्	840	9 84	पक्षे	पक्षः	६१	95
जन्मभाव	जन्मभांतं '	840	93	ज	. 0	00	8
त्र्यादक्षे	३ दक्षे	६०	9 84	इति	ऋभि	90	4
= पक्षे	टपदो:	٤, ٩	9	जेति	जानि	90	ध
c	', 9	६१	9	कर्मताः	कर्मना	00	घ
समत	संमत	६१	53	सुखता	सुखना	00	६
सजन्म	जज्जन्मः	६२	98	नकित्य	निर्देखं	90	98
स्वर्गाः	रवगाः	६२	98	षस्मिन	यस्मिन्	90	90
सलमः	सलगाः	६३	98		ऋग्निभी	99	२२
युग्म	चुग्भं	६२	29	बोध्या	बोधा	pq	99
श्रे	श्रो	६३		निष्करे	विश्व हे	43	ध
मा१	पा१	६३	3	श्रुभे	भुभम्	03	६
প্সা	भे	E 3	9	0	३ सुखं	७५	6
रवं-	ख	83	99	घ-षा-	0	७५	93
<u>इ.च</u>	दुय	83	6	पू	3	oq	93
भिजु	मि	६३	4	त्र्यतः	श्चांत:	ou	94
रवुरवो	खुखं	63	9	द्वेषा	हेप्या	थर	99
臣	हुं.	६३	3	कमे	कभे	थ्र	93
व	य	६३	10000	न्भोजयेत	न्भोजयेत्	35	E
1921919	921219	६४	90		भ्यंजने	30	93
जीवेस	जीवचेधः	६५	3	स्नातां	स्नाता	90	20
द्वादश	हादशः	8,4		राशिनी	राशिती	90	8
यहाश्चे	यह स्वे	६्ष	9	तद्या	तथा	90	99
		earch l	nstitu	te. Digitized by eGar			

Т		bi	-	÷	77.57	W-3-		1=	7
-	ऋशुद्धः	शुद्धः	यू.	पं	त्रम्य द मथमो द्धें	प्रथमोद् <u>य</u> े	E .	el essan	1
	पूस	पुंस	60			त्र यमा ब्द्रा	60		
	श्रुभेंषु	श्रुभेषु	CO	98	मार्गभे_	मावुर्गर्भ	100	4	
	रावीवाः	राष्ट्रीश:	Co	984	नाशयेत्	नाचरेत्	100		İ
	धातदः	घानदः	Co	१६५	हिंजा	द्विजा:	6		
	सू व् खला	सूबूखना	<9	9	रोश्च	रम्य रवी	60	9	I
	नो भुंक्त	नो मुक्त	59	a	रखो		69	8	1
	तिंडुका	तिं दुका	< 3	w	चुहि	चुद्धि	63	1	1
3	मूलचतुरम	मू ला चनुत्य	C 2	18	प्रवी	पूर्वी	63	13	
	मालोक्यं 💮	मालोक्य	CZ	98	सर्प	शुक	63	8	
	त्रिधाशीचं	त्रिष्वाशोचं	CZ	984	पंच	पंच ।	43	90	
	स्वाद्या	खास्रो	=8	E.	चेबेदिकं	देविकं	93	99	
	कुछे	कुल	58	0	सहित	सहितो	63	90	
	सर्वे षु	सर्वेषु	28	9	त्रितये	ि त्य	63	٦9	
	तद्यक्रं	तद्द्यक्षरं	58	9	वटो	चटो:	63	29	
	भिषमाते	भिषंगते	58	6	वर्णाधिपते	वर्णाधिपे	63	29	
	सूतकांत	सूतकां तः	58	U	जिने ।	जिते	९४	8	
	कन्या	क्त्यां 🔹	28	90	कुछिका	किछ का	68	5	
	नामी	नाम्नीं	68	99	ब्रतें ।	वतं	68	98	
	ततोव्याधि	ततो ५ व्याधि	८४	20	नबंधु	निबदु	68	94	
	तः	ततः	58	२०	युगिभतं	युगाश्रितं ।	68	94	
	वेस्यते	वस्येते	टप	90	मधुग	मयुग	68	90	
	वर्षि	वर्जिय	८५	29	रविं हो	रवीं हो	98	95	
	दीन्या	दी न्य	८५	29	केतुद्रमो	केतूद्रमो	88	95	
	वालायो	वालमे	56	90	नानि	नादि	98	95	
	दारभ्य	दारभ्य	टस्	93	प्रयाते	मपाने	98	29	
	गर्मा	गर्मा	484	90	वेन	वेव	९५	Eq	
	जीवव	जीच	EE	29	शंखंसु	शंखस्तु	९५	8	
	सिताचा	सि तानां	00	8	90	9	94	0	
	गदा	गद	00	U	नदे	रंधे	98	8	
	संभूमी	सुभूमी	45	9		न्मानु	98	Eq	
	त रू	सावनाद्धां	00	90	स्मानु रोगीणां	रोगियां	98	-	
	सनास्	(गानुगान्द्रा	1	1	(विवादिवा :				

व्याचान	<u>- 1</u> 2	ΨT.	ų .	=1461-1			पं
श्रमुद्ध. सट	शुद्ध राहो		29	न्त्रशुद्ध -	गुद्ध.	मृ.	4.
राहुः देवारभः		-		promise to	최 - - - - - - - - - - - -	THE	720
-यसेत्	वेदारंभः		13	959	कं कं कं	107	
नेपत्त सेषे	-यस्यते		14		. 片方家	11/1	14
सुखें	शेषे शुद्धे		3		उन्हें चुरुम् उन्हें स्ट्रेस् अस्ति स्ट्रेस्		114
अम			12		中京市中	808	29
विधेही	अमः बुधेदू	10.00	90	September 1	बा कि जम माड	1	
	उपद		-	and the second	मं अं लं च्		
सूयभात् पृति	सूर्यभात् सति	900	4		क्र ये त्व		0.50
रुभ	सुभे				म भ स्र	NA.	
पुरना	पुंस्ता		93	HALL A	सं सं क्षं	*	
रव्यर्च	रभ्यर्च		95	+6			
यशकी	पंश्व			नाडि	नाडी	908	20
युत्राकीं चंद्रे	पुंखली चंद्रे	1000	w v	दोभाग्यं	दीर्भाग्यं	904	3
युणा	य प्र			न्यसेते	-यस्येते	904	9
धिक्	युष	903		.युणाः —	गु व णाः	904	95
हीत्वा	धिक			पतिःश्रेष्टे	पतिः श्रेष्ठो	904	-
वरवोः	हिला			राशिर्वरभ	रादोर्बर्भं	904	20
	वररादोः	306	all.	लादपी	त्यात्तदपी	908	4
गुणा	युण	900	1	दुःकर	दुरकं	906	
उभे अं	उभ	305		चिष् रा	दुरकं धिष्णा	308	3
	अ	100		मिति	मान	308	3
स्वसीलं मारो	स्वजीतं	305		दयं	देयं	306	-
	भांदो	908	0	हिंद्दान्यद	हिर्हाद	308	90
चित्य	चिंत्य	308	c	यथों ,	ययो	908	99
दशम्	दशमे	308		त्र्या <u>ज</u> ों	श्रा जी	908	92
समक्ये	सप्तकेय	308	98	स्ता	स्ता	906	93
कुभं	कुंभे	808		ध्वी	घ्वी	9060	98
न्बिताः	न्वितः	908		ास्म	से	906	9 84
दंशकाद्वातः	दं बाका हूरतः	308		एं	र्णीं	900	2
युंसों श	पुंसों शः	308	30	विचाहाः	विवाहः	900	94
0 0	0 0		nct't	पुरिष् te. Digitized by eGar		900	9 84
	CC-U Kashmir Res	earch	nstiti	ie. Digitized by eGar	igotri	1	

श्रयगुद्ध.	अंट	1	पं.	्याका च	WI-1	T =	1	1
ह्मडा	सुद्ध.	१०८		श्रयसुद्ध. चतस्त्री	सुद्ध- चतस्त्रो	र्व.	-	
त्र्याः	सूरा	900	1	यतस्त्रा गुणिताः	गुणितः	996	1 ,	
	श्चरया च्या	906				995		10-31-00
-चूडा	मुंडा	906		सीम्यर्सगराशि	सोम्यर्सगः शशी	995	1	
मुव गोड	संव	*	-61	यमः	पमः	995		İ
*	गोड	100	98	राहुकेतो	राहुकेत्वोः	995		
सुस्म रावसा	सुस	306		त्रमेदिनी ————————————————————————————————————	प्रमोदिनी	336		1
	रवश		964	The state of the s	राश्च	936		1
द्वा ज्यति	ब्स	TO THE	90	नोहि	तोहि	999	10	1
the same of the same of	त्र्याति	15	95	ताहा	तो ह	336	100	1
राज्ञा	राझा		98		व्ययस्य	350		1
इंति	दीनि	306		धनस्योपो	धनस्ययो	350		
<u>ज</u>	व		ध	11 11 11 11	समांशले	920		
मा	मर	990		एकार्गलोपि	एकार्गलोप	920		
ऋणा	त्ररण	100		ज्यामित्र	जामिञ	920	9	0
माघ	माघ	990	94	म्युद्ये	भ्युद्ये	350	6	
फाल्यन	फाल्यन	990	The	मुहूर्नी	मुहूर्ना	950		
यद्यदा धज्येष्ठि॰	यद्युदा	990	11.2	चुलिकां -	धूलिकां		90	
चे व	बर्ज्य १०	990			गो घूछिः	929	3	
त्तरे	त्तर	999		91914	91214	929	90	
मृतं	अरुत	13	ध्य	C 190	8 190			
प्रोत्ध	<u>प्रोह्य</u>	999	ख	धाणाना	धाषापा	1		
	विधयः	999	8	भारव	भांतरव	922		
वाइय	वास्या	999	9.8	विधमाः	विद्यमाः	922		
वेधे	वेधे	998	200	उदी	नुदी	853	3	
दुष्टा	दुष्टा ,		-	विभा	रविभा	353	93	
त्याज्यो	त्याज्यो	994		भागा	भागाः		92	
पक	पक:	998	100	कोपि	कीर्य	924	93	
चादा	नाश 💮	996	95	२ ।२।३।	312131	926	93	1
योघ	परे	996	R	95 101	99161	926	90	
इर्षणोत्यादितुं	हर्षणेत्यादितु	996	8	घटिका	घटिकाः	936	.0	
विचित्य	विचित्यः	9919	96	मोक्षां	मोक्षं	233	R	
		1 1			TANK TO SEE	20		

मशुद्धः	भुद्रः	멸.	पं.	• श्र <u>यशुद्धः</u>	श्रद	평.	पं.
पन्ना	पना	-	99	उंग	बुंग ।	986	99
भर्त्त	भर्चगृह		8	कार	कारकाः	986	99
बांस	बाल	934	હ	कास्य	कायेस्युः	386	99
न्तारी	भारी	338 .	94	जयः	जयं	988	ध्
वध्याः	वध्या	338	9=	यत्स	यच्छ	986	9
पह	पद	930	8	सुन	सुनः	360	4
युद्धं	पुच्छे	930	10	राहु	राहुः	363	ध्य
मज	गज	930	70000	चिरण	चिरेण ं	949	9
भुकच	श्रकेन	883		चिया	र्थिया	949	984
दोषो	दोषोन	982	4	मृतजीव	मृत	१५१	२०
सद	यु द	982		चंद्रो	चंद्री	949	29
याता	याता	383	9	तदपि	तदापि	१५१	29
चु मा	नुगा	983	3	स्याई	स्था पी	962	२
भ मा	प्रदा	386	5	स्यातृ	स्यात्	942	ध्य
पत्रे	पत्ते	980	9	वश्य	वश्यं	१५३	6
सक्य	शक्य	980	100	भक्ता	भुक्ता	963	90
पति	वति	980	213	न सो वापि	नलेवापि	942	12
98	94	980	99	शोभने	शोभनो	१५४	8
द्रष्ट	दष्ट	980	92	शुन्यंशः	शन्यंशः	848	100
A CONTRACTOR	दसेपृष्टेशुभःराव	†	*	द्रियुभे	द्रियमे	१५६	ध्य
	संसुखिक्कीय		10	रादे	रादे:	949	9-
4	पश्चिमत्राभेषाति		1	देवा	इयः	946	3
	चारो राहोबोध्य		92	हद्यंगद्या	ह द्यंबाधा	980	2
टिका	टिकाः	980	95	वर्ज	वज्वे	969	4
धी दुः	धीं दुः	186	9	गर्जित	गर्जित	989	6
34	उष:	980	9	निद्योष	निर्घाष	969	3
शस्त	शस्य	986	9	दिगी	दिगी	१६१	92
त्तरा	त्तरा	980	9	धराणी	धराणि	१६३	3
सिद्धि	सित्धः	986	Eq	1 . 4	जी प	363	2
कुंभी "	कुंभ	986	1	रीतां	रीताः	१६३	90
एक	एका	986	95	ब्रास्था	श्राह्मणाः	963	984
	No. of the last of	esearch I	 nstit	ute. Digitized by eGar			

			. Family	`		** 1 5A		110
	श्रयशन्दः	शहः	पृ-	पः	প্রস্থান্ত্-	शुद्ध.	평-	٩
	सकुना	सेकुनाः	963	90	संधि	संधिं	902	
	जान	जात	984	3	हर्ति	हूर्नि	903	3
	र्वित	र्वत्नी	984	4	सक्षे	संक्षे 🔻	903	8
	वक	वके	१६६	9	माती	मानो	903	G.
	पार्थ	पार्श्व	966	9	यामार्घाः	वाराः	963	6
	योश्यः	योश्यः	988	2	ज्वार्घ	लवा ७०	908	3
	स्त॰षः	स्तन्ध	966		Co	90	300	9
	भूरव	स्त्रूख	१६६	ध्य	उल्क	उक्त	१७५	9
	শিষ্ট	मिष्ट "	१६६	<	वृति 🐣	वृत्तिः	१७५	3
	नह	नहं ।	986	93	नेड	नेंडू	900	9
	स्त्रिमि	रन्त्रीभिः	980	5.44 10	कमाक मध	कमप्र	906	3
	स्यश्वो	स्यो	98,0	3	नग	गन	904	4
	भवं	भषं	950	Fa cella		तदापिजयः	908	Ç.
	र्वासि	वादी	१६७	0	पद्या	पद्य	966	6
	न्य्रा ति	त्रात -	98/0	90	चेंद्र	चेद्र	9006	99
	भवति	भवतिन्य्रथवर्णश्चर	956		भुव	भूव	904	18
	रव्यंत	णंत 🗼 🌞	956	3		उदयाद्री द्रमादित	वे।	W
	प्यन	थन	956	De Victor		मेत्रंसोमेमुहूर्तकं अ	न 🔻	
-	स्बिई	स्तिउ	956	0	W. W. S. C.	यदेवं भी मवारे तुरदे	वं	N
To the last	ह	दे	950		NAME OF STREET	बुधेतथा रावणं शुरु	वा	
	त्ययो	न्ययोः पक्षयोः	386	9		रचभार्गवेचिबभीषा	जं •	
	वाढे	सोढे	986	0.00		रानी यममुहूर्तच्छा	ट	
	दवं	दयं	900			काइयसंमितं दिनां	ने	
	तैव	तेच	900	3		यःसमायातितस्मा		
	नदा	तेच नंदा	90	99		कातरे धुवं रात्रेश दी		alc/
-	अनू	श्रमु	90	94		जानी यात्य ट छे पूर्य	5	
	प्रभा	प्रमा	90	0 95	u	सोमदिने सत्वंरजे		
**	00	राक्षका	1000	0 99		गारके भृगीरंबि		
	00	92	4-1	0 99	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	द्युधेष्टेश्चमोनाः	The second second	
	क्रारो	स्वरा	**	9 91		चतु ष्टयं उद्देशाल		C. P.
	स्वरो	एव	2 2007	9 91		नारोगालाभाश्रम	Control of the contro	1
	124	2.1	1	1		1 11 11 11 11 34		
				11		THE RESERVE OF THE PARTY OF THE	1	1

विशुसुर

-	-	**	1	16 **	•		μ	
	ऋशुद्धः	शुन्ह-	. E-	पः		शुद्ध-	Ā-	-
	一个, 新水	लाचला बाराखष्ठी		No.	ज्यं	ज्य	988	95
		वे द्वारोनि शास्वे वंत्र	न	Y	नाभि	नाभि	360	3
	At . 1 25	मः समृतः नभः प्रा		1.4	वाङ	वाङ्	990	5
	The state of	तिभिःश्चन्यंगणपत	4		षसु	षडु	960	93
	A SHEET STATE	धरिधेतुः मृत्युपदा	दे		पूजा	पूजा	960	90
1	建设分 相 3	शहेस्तुवणे शोरिक	4-		युत	युनः	990	20
-		मादिजीः अमृतं वि			पन	पनः	360	29
1		वर्णेश्च द्वेयमत्रिक	111		यनी 🎎	वंती	१९८	3
		नता 💮 💮	900	90	विधी	विधी	996	6
	कम्मिति	कमतोमति	954	વ્ય	लयें	लये	१९८	
N.	पृष्ठ	पृष्ठे	990	94	श्चात्तरे	श्चोत्तरे	996	93
H	निद्	निर्दे	999	9	दक्षिणा	दक्षिणाः	995	20
	সন্থ	मुष्टः	960	9	र्घ	र्घ	996	21
	२स्कृढिता	स्कुरिताच	969	(a)	कंडिक	कंटिक	999	-
	या वाणीः	यावाणे:	999	984	रपं	त्परं	966	92
	EG	इंड	989	94	फन	पन	999	93
	ततु	तत्तु ं	999	94	the second secon	द्याः	998	98
1	वक्र	वक	999	90	विल्वादाडिमकें इा-		45	
	त्रपा	नूपो *	999	20	रैर्मध्यगेरपि हर्षज	रैर्मध्यमे रिपनवे	999	94
	क	क्ता	999	20	नकाः किसुतोगृहेषु	(104,111,111,111)		
	ब्:	बर्	993	y	स्माभि	स्वामि	999	96
	ब्: क्षाः	क्षः	993	100000	इास्थानं	द्वारस्थानं	200	4
	भिगु 💮	भिर्श	968	99	द्वार		200	
5116	ष्य	षि -	994	a	यहारं	यहाउँ	२०१	9
	भिगु ष्यं सर्व	षि . सर्व	994	~	३म	असध्य	209	Eq
	भ्रव	भ्रवं .	994		भ प्र इष इज र्मितो	हारं यहारं ३ मध्य सु दूष्य कुंजरा मिती	202	3
	कर्कटं	ध्रुवं कर्क टे	984	6	दण्य	3	202	8
	निद्य	निद्य	994	99	केज	2 4	203	,
-	क्षस	क्षंस	998	60 14	भिनो	De alst	3	9
	क्षस मुखे	मरवे	986		दोग्रह	ने दि	203	90
	33	क्षंसं मुखे इंड	१९६	90	रचन	दोर्ग्रह	203	93
1		3.2		1		रचन	208	

	300	*	()					
	म अगुद्धः	श्रद्धः	र्फ.	प	-ऋशुद्ध-	शुन्ह-	र्ब.	पः
	सिनम्	न	503	18	क र	He 6	234	98
	37	सनम्	203	94	व्यः	च्फ:	२१८	29
	त्रिभ	गर	२०३	984		त्य	299	9
	उरो	আথি	२०३	90	शुभो	शुभे	299	4
	द्रोमे	उरी	२०३	95	ह्ये	त्धे	296	9
	मरागं	दशने	508	a	चंद्रे	बंद्रे	299	20
	गाल '	विरागं	508	984	पापा	पापाः	598	29
6	भेदा <u>ष</u> ं	शाले 💮	208	w	युक्त	गुरुः	296	37
	धामि	भेदाःष	508	5	लमे	र्हमे	220	9
-	मन	धामि	208	3	पत्या	पस्या '	2,23	8
	र्ध्या	मना ः	208	29	तो	ते	२२०	8
- 1	3	र्था	२०५	ď	सीम्या	सीम्याः	२२०	20
	अभा रोप	શુમાં	500	v	रित्य	रिक्ष	२२१	5
	राप	रीप	200	U		रंध्रे	229	90
	गर्नपश्मवज्ञीए	पुरनगरमवेशयोः	200	98	तिची	तीची	229	90
	कल '	फलः		94	मंदे •	मदे 💮	२२२	3
F	इट े	हट्ट	200	ध	रद	दंड "	२२२	ex
	त्र्यतिं	श्रक्षिं	209	9	मिप्रि	no.	२२२	100
	सीती	सिती	293	9	नेष्य	जेष्य.	233	
100	प्रती	श्रती	293		हर	हरतः	533	92
1	मंच ।	पंच	Park of the Park	90	में बो	मेशे	ररर	193
-	र्	सः	293	17	कंठ	कंट	ररः	193
F.	पुर्व	पूर्व	598	7	कि	ल्कि	-	196
1	देव	दये	२१६	3		सप्तमपः	223	
F	पुर्व देव बः		29€	1000	समम	शुभदृष्या	223	Y
1	बंद्री	हाः 	296		युगं द्या	श्रुभे	223	4
1	बद्री द्रोषः	चंद्री	390	ex		दृष्ट्या	22	
1		शेषाः	290	94	हण्या	वृष्टिंदिः स्वभावेः	- 2	
	गृह	ग्रह	290	29	वृष्टिः	दिनोत्तरं वृष्टिः	53	1
	नशः	नाशः	290	29		A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH		
1	तत्स	तस्स	290	3		चंद्र	53.	
1	सरिष्यी	Hechaelmir E	296	hline	titute. Digitized by eG	जलार्थ	53.	1 3
		, co o quantini i	- Caro	1113		-1.9001		

श्र <u>य</u> श्रद्	शुन्ह-	पृ-	प-	श्रश्च हु-	शह-	पृ	पः
र्वशदो	यशस्रो	२२३	94		जघन्येः	226	8
बंद्र	चंद्रे.	२२३	9 84	क्षां	क्षा	२२८	20
चद्री	चंद्री .	ररर	95	वर्णा	वर्ण	526	3
पष्टो	पृष्टी 🐾	223	98	श्वीन	श्चीन	२२९	99
यादी	यदी	223	29	उत	लते	२३०	2.
पाप	पापै:	228	3	त्य	पु 🐞	230	च्य
परां	परांबां 💮	२२४	4	यथा	ह्मथ	230	93
द्राशी क	द्राशि	228	93	नाला	नाला 💮	230	900
दोष	शेषुः	558	94	दि निम	दिनमिति	239	3
शर्व	सुखं	228	95	भवांति	भवति	२३१	3
ष्टिच	एश्च	238	99	जेत	जेत्	539	3
भावे	भाव	238	98	नृण	तृष 🔭 🌲	२३१	8
येत	येत्	228	29	याप्य	याम्य	२३२	98
र्चुम	र्चर्च	224	3	सोम्या	सीम्याः	२३१	94
दीष-	वेष	224	9	कुयु	कुर्व	232	95
धां	धरं	224	3	क्षाश	क्षांश	233	3
क :	क	224	90	सयो	संयो	233	a
दीर्घस्की ना नरी	दार्घस्वरे:	२२६	=	र्वस्थे	वित्थों	२३३	8
श्रा. ए.	त्र्या- ऐ	238	15	9	95	२३३	90
रबरा	स्वरा	238	12	गता	गताः ।	२३३	93
काला 💮	कालाः	३२७	4	0	सप्तनाडीचकम्	२३४	ag
पाञ	पादाञ्ज	२२७	4	यतत्ते	पनने	538	-
शाले	बाले:	२२७	99	फल	फलं.	२३५	2
सैगो	र्थंगो ।	२२८	ex	থি			
हिन	हती	226	6	र्ज	द्याधि र्य	३३५ ३३५	8
	The state of the s	-	in the	Deliver to the second		30	

TT -	7		No. in the	-		The State of the last	-2-1					16 0				SIL PLAN
"	65	20		820	3	दि	ह	11	3	रव	रवे	२५२	99	a	न	
905	33	125	bur.	w	90	: 75		933	9	2	A. 18	1	39	e de	1	1
"	n	भ्रं	Ł.	VI.	98	ल	7	11	94	9	E E	,	1	et de	न नि	
90	28	E	77.6	11	93	नर	वर्	63.8		न की	भूत द्वी ^प	84X	33	त	The same	
31	"	सीं	सो	656	a	का	कर	१३५		ल . म	H		B	े के	तु को	
60	2	वां	चं	u	A	द्या	दिश्चि	63.2		. H	A	643	2	. I	Ħ.,	
66	R	जह	सर	11.	66	F	ति	11	3	.16	नं	11	92	OFF OFF	(25)	
63	3 3	MAN	र्	633	83	OF.	.हि	,,	E	0	u	,,	38	19	के. ध	
1 "	3	े जे	जो	71	25	R	F	652	-	वनिग	वनिग	१५५	1000	घल	प्रसन	
. 8	2 9	龙上	À		62	3	24.	"	90	15.00	PA	u	"	श्यव	विम्	
19	3 2	नंहर ०	अपन त	1 1	28	धरन	धर्म	1 63	E 3	ग्वार	गेर्हे	64.	र १८	का	बुद्ध	
1		, हिं	1 PE	63.	3 98	18%	1	63.	7 3		तनरे	100	6 9	कर	1 0	
9	१५	3	F		30	नोत	मोन	- 11		1	रू		११६	दा	भ्या	
1	it .	9 7	4	63	8 25	5	B	68	0 4	ह	हों	29	3 63	धरे	धरे	
" २ वियन विनयन " " के के ९४९ ९५ ह्यु ह्यु " ९४ करके केकर																
	" १३ वि वि १२५ ३ भवनि भवन " १८ सी सी " १५ हैं ह															
	" १७ भाल भल " २९ तन तव " २४ प्रणाम प्रमाण १७६ ४ री डी															
	388	3	1 3	9	35	E 3	1 3	1 9	BB.	७ मं	च सि	मंच १	99	6 3		11
	11	प् म	भ म		1		E F		१४५	स् म	न्मा म		623	4 6	E PE	1 3
	11		414					n	683	,		न्य		+	+	-1
	н	68	+		286		The state of the s	लि	11	90	R.		94	ति स	मान्न	
	11								64.		中	五二年				
	99:		व्यम उ		11	53	雪	कर	53		2	त				
	56		3	3	630			,	1		\$ A	C CR		442		
1	00	230	17.31	R	111	A	उत्तर	उत्तर			जिन	ज्ञां	A		94.3	
	L	1	H	स	1631	1	इस्मा	व्य	3 6	1 4	1111	T.	1	1		-

CC-0 Kashmir Research Institute, Digitized by eGangotri